परमेश्वर का भवन

परमेश्वर का ब्लू प्रिंट के अनुसार स्थानीय कलीसिया निर्माण करना

आशीष रायचूर

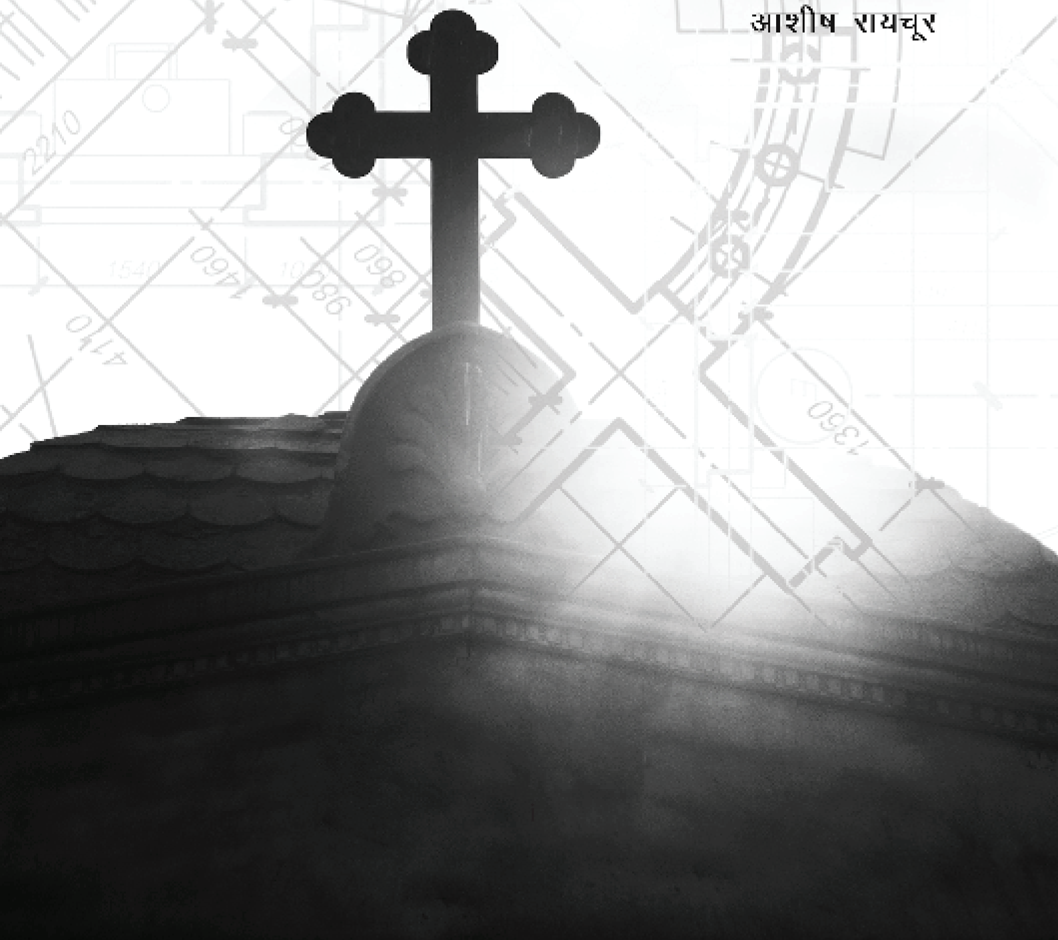

केवल मुफ़्त वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2022

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: apcwo.org

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सभी अधिकार आरक्षित।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

मुफ़्त संसाधन

उपदेश: apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबिल कॉलेज: apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श: chrysalislife.org | **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंस:** apcworldmissions.org

(Hindi - The House of God)

परमेश्वर का भवन

विषयसूची

भाग एकः उदय और उद्देश्य **03**

1. कलीसिया–इसका आत्मिक और स्वाभाविक पहलू 05
2. स्थानीय कलीसिया का उद्देश्य–इसका कार्य, संदेश, तरीका 15
3. स्थानीय कलीसिया का शासन और रचना 24
4. उन्नति और विकास की अवस्थाएं 43
5. मज़बूत स्थानीय कलीसिया कैसे बनती है? 52
6. कलीसिया की उन्नति के सिद्धांत 64

भाग दोः परमेश्वर की रूपरेखा (ब्लू प्रिन्ट) **73**

7. स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर का रुपरेश 75
8. स्थानीय कलीसिया–मसीह की देह 79
9. स्थानीय कलीसिया–परमेश्वर का परिवार 87
10. स्थानीय कलीसिया–सत्य का स्तम्भ 108
11. स्थानीय कलीसिया–एक सेना 113
12. स्थानीय कलीसिया–दुल्हन 122
13. स्थानीय कलीसिया–प्रार्थना और आराधना का भवन 135
14. स्थानीय कलीसिया–परमेश्वर का आराधनालय 150
15. स्थानीय कलीसिया–सियोनः परमेश्वर के चुने हुए लोग 166
16. स्थानीय कलीसिया–दाखलता और डालियां 172

17. स्थानीय कलीसिया–दीवट 176

18. परमेश्वर की योजना के अनुसार निर्माण करना 181

भाग तीनः ईश्वरीय व्यवस्था 187

19. कलीसिया के विधि संस्कार 189

20. कलीसिया का अनुशासन 196

21. कलीसिया की सभाओं व्यवस्था 208

22. सेवकाई में स्त्रियां 212

भाग चारः सेवकाई, संगठन और विकास 221

23. स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत पद्धतियां और प्रक्रियाएं 223

24. विश्वसियों का पोषण और परिशिक्षण 233

25. परिपोषण करना और अगुवों को तैयार करना 238

26. कलीसियाई प्रशासन 245

27. छोटे समूहों को संगठित करना 254

28. विशाल कलीसिया और विभिन्न स्थानों में कार्यरत् कलीसिया 258

भाग पांचः बाहर जाकर सुसमाचार सुनाना 263

29. अन्य कलीसियाओं की तुलना में स्थानीय कलीसिया 265

30. शहर के चरवाहे बनना 267

31. शहर में सुसमाचार प्रचार कार्य 272

32. कलीसिया स्थापन और मिशन 277

भाग छः अंतिम विचार 285

33. इन फंदों से बचेंः सात कलीसियाओं से सबक
नमूने जिन्हें आप बदल सकते हैं 287

समर्पण

यह पुस्तक भारत के हमारे सुंदर देश की मसीह की मण्डली, परमेश्वर के लोगों को समर्पित की जाती है। हमारी प्रार्थना यह है कि हमारे संपूर्ण देश के पासबान और परमेश्वर के सभी सेवक और उनकी मण्डलियों के विश्वासी परमेश्वर की योजना के अनुसार एक साथ मिलकर स्थानीय कलीसियाओं का निर्माण करेंगे। ऐसा करने हेतु जब पासबान और विश्वासी आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण होकर एक साथ काम करेंगे, तब हमारा राष्ट्र पहले के समान नहीं रहेगा!

परिचय

ब्लू प्रिन्ट (रुपरेखा)

जब हम कुछ बनाना चाहते हैं, तब मार्गदर्शक के रूप में उसका ब्लू प्रिन्ट तैयार करते हैं। यह एक अभिकल्पना या नमूना होता है, जिसका अनुसरण किया जा सकता है। जब हम बैठकर किसी कार्य का निर्माण करते हैं, तो सामान्य तौर पर हम उसकी रुपरेखा बनाते हैं, और उस डिज़ाईन के अनुसार आगे बढ़ते हैं। रुपरेखा या ब्लू प्रिन्ट यह निर्धारित करने में आपकी सहायता करता है कि क्या किया जाए। "परमेश्वर का भवन" नामक इस पुस्तक में, हमारा लक्ष्य स्थानीय कलीसियाओं और विश्वासियों के स्थानीय समुदायों के लिए परमेश्वर के रुपरेखा को खोज निकालना है। हम परमेश्वर के रुपरेखा के अनुसार स्थानीय कलीसियाओं के निर्माण करने के व्यवहारिक तरीके भी बताना चाहेंगे।

हमारा लक्ष्य "प्रणालियां" या "तकनीकें" प्रस्तुत करना नहीं है, परंतु यह जानना है कि परमेश्वर स्थानीय कलीसियाओं को क्या बनाना चाहता है। हम में से हर एक को परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार हमारी स्थानीय मण्डलियों का विकास करते समय परमेश्वर के साथ अपना सफर तय करना है। हम में से हर एक को हमारे स्थानीय समुदायों में अपने इस रुपरेखा की अभिव्यक्ति खोज निकालना होगा। क्योंकि परमेश्वर सृजनहार परमेश्वर है, उसके पास उसके रुपरेखा के कई तरीके और कई अभिव्यक्तियां हैं।

एक सामान्य बात यह है कि हम सभी प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के लिए समान रुपरेखा का अनुसरण कर रहे हैं। रुपरेखा परमेश्वर की अभिकल्पना का वर्णन करता है। यह परमेश्वर का मूल उद्देश्य है। वह मुख्य विशेषताओं को महत्व देता है। वह मुख्य गुणों का वर्णन करता है। वह मुख्य लक्ष्य क्षेत्रों की ओर निर्देश करता है। जब हम उसके रुपरेखा का अनुसरण करते हैं, तब हम जानते हैं कि हम सही दिशा में जा रहे हैं और अंततः हमारी स्थानीय कलीसियाओं के लिए सही स्थान में पहुंच जाएंगे।

आपकी सेवकाई और परमेश्वर का रुपरेखा

आंतरिक तौर पर या स्थानीय कलीसिया के सम्बंध में आपकी सेवकाई चाहे जो भी हो, यह महत्वपूर्ण है कि जो कुछ आप कर रहे हैं, वह परमेश्वर के लोगों के लिए उसके रुपरेखा के अनुसार हो। पासबान/वरिष्ठ पासबान होने के नाते, आपकी ज़िम्मेदारी इस बात का ध्यान रखना है कि स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के रुपरेश के अनुसार सब प्रकार से बढ़ रही है और उन्नति कर रही है। प्रवासी सुसमाचार प्रचारक, शिक्षक, भविष्यद्वक्ता या प्रेरित होने के नाते, जब कभी आप मण्डली की सेवा करते हैं, आपका लक्ष्य होता है, स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर के अभिकल्प के अनुसार कलीसिया को किसी तरह दान वरदानों का प्रतिदान करना और उसकी बढ़ौत्तरी करना। चाहे आप युवा पासबान हो, आराधक अगुवे हों, बच्चों की कलीसिया में, महिलाओं की सेवकाई में हों, पुरुषों की सेवकाई में या छोटे समूहों में हों, आप उस स्थानीय कलीसिया में उसके लोगों के जीवनों में परमेश्वर के रुपरेखा को स्थापित कर रहे हैं।

परमेश्वर के डिज़ाईन या योजना का सूक्ष्मता के साथ अनुसरण करें और आप कभी गलत नहीं होंगे!

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

भाग 1

उदय और उद्देश्य

1

कलीसिया—इसका आत्मिक और स्वाभाविक पहलू

"मैं अपनी कलीसिया खुद बनाऊंगा"

मत्ती 16:15-19
15 उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप जीवित परमेश्वर के पुत्र मसीह हैं।"
17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है! क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18 और मैं तुझसे कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा; और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 मैं तुझे स्वर्ग राज्य की कुंजियां दूंगाः और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

यीशु मसीह है (मसाया, परमेश्वर का अभिषिक्त), जीवित परमेश्वर का पुत्र है, यह सच्चाई प्रकाशन द्वारा दी गई। प्रभु यीशु ने कहा कि वह वास्तव में जो है, इस प्रकाशन (चट्टान) पर अपनी कलीसिया बनाएगा।

यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा"। कलीसिया परमेश्वर की कल्पना है। संस्थाएं या फिरके मनुष्यों द्वारा बनाए गए हैं।

यीशु ने कहा, "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा"। कलीसिया परमेश्वर की है। कोई भी मनुष्य या संस्था यह दावा नहीं कर सकती कि कलीसिया (परमेश्वर के लोग) उसकी है।

"फाटक" उस स्थान को दर्शाते हैं जहां पर प्रवेश नियंत्रण में है। पुराने नियम के समयों में, फाटक नगर की रक्षा करते थे। कुछ नगर के फाटक इतने बड़े थे कि उनमें उन सिपाहियों को रहने की जगह थी जो प्रवेश द्वार

की रक्षा करते थे। उसी तरह, इसी फाटक पर अगुवे बैठ कर समस्याओं को सुलझाते थे, लोगों का न्याय करते थे और उन्हें न्याय देते थे। इसलिए जब प्रभु यीशु "नरक के फाटक" इस संज्ञा का उपयोग करता है, तो मुख्य रूप से यह शैतान और दुष्टात्माओं द्वारा नियंत्रित "सत्ता केन्द्रों" को दर्शाता है। फाटक स्थिर होते हैं–हम फाटक के पास जाते हैं; फाटक हमारे पास नहीं आते। यीशु जो कलीसिया बनाता है वह एक सामर्थी कलीसिया होगी जो बलपूर्वक नरक (दुष्टात्माओं की सामर्थ) के फाटकों (सत्ता केन्द्रों) के पास जाएगी। स्थानीय समुदाय या नगर में हम सचमुच दुष्टात्मा के सत्ता केन्द्रों को–प्रथाओं, कल्पनाओं, स्थानों, सामाजिक रचनाओं आदि को पाते हैं–जो इस समय दुष्टात्माओं की सामर्थ से बल प्राप्त और उनकी प्रभुता में हैं। कलीसिया को इनके विरोध में आगे बढ़ना है, अंधकार की शक्तियां उस कलीसिया के आगे बढ़ने को नहीं रोक सकती जिसे यीशु बना रहा है।

कुंजियां अधिकार को दर्शाती हैं। प्रकाशित वाक्य 1:18 में, प्रभु यीशु मसीह घोषणा करता है कि उसके पास अधोलोक और मृत्यु की कुंजियां हैं। जिस कलीसिया को यीशु बना रहा है, उसमें राज्य का अधिकार समाहित है। जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खोला जाएगा इसका सही अनुवाद "यह है कि हम पृथ्वी पर वही बांधते हैं जिसे स्वर्ग में बंधा हुआ" घोषित किया गया है, और हम पृथ्वी पर वही खोलते हैं जिसे स्वर्ग में खोला हुआ घोषित किया गया है। अतः जबकि राज्य का अधिकार हममें समाहित है, हम (कलीसिया) यहां पृथ्वी पर उस बात को अमल में लाते हैं जो परमेश्वर ने स्वर्ग में निर्धारित की है।

"कलीसिया" शब्द का अर्थ

कलीसिया यूनानी *"इक्लेसिया"* *इक*=से, *क्लेसिस*=बुलाहट, बुलाना

- राज्य के मामलों की चर्चा करने हेतु एकप्रित नागरिकों की मंडली के लिए यूनानियों के मध्य उपयोग किया जाता था।

- किसी निश्चित उद्‌देश्य से बुलाई गई इस्राएलियों की "मंडली" के रूप में।
- उसके शाब्दिक अर्थ में, 'कलीसिया' शब्द उन लोगों के इकट्ठा होने को सम्बोधित करता है जिन्हें निश्चित उद्देश्य के लिए बुलाया गया है।
- बुलाए गए–वे लोग जो स्वर्गीय बुलाहट के प्रति प्रतिक्रिया प्रगट करते हैं।
- बाहर बुलाए गए–वे लोग जो संसार में से बाहर निकल आए हैं।
- इकट्ठा होने के लिए बाहर बुलाए गए–वे लोग जो व्यक्तियों के रूप में नहीं, परंतु एक साथ मिलकर चलते हैं।
- एक निश्चित उद्देश्य के लिए इकट्ठा होने हेतु बाहर बुलाए गए–स्वर्गीय उद्देश्य रखने वाले लोग।

कलीसिया के आत्मिक आयाम

पवित्र शास्त्र कलीसिया के विषय में कई बातें प्रगट करता है। हम कलीसिया के आत्मिक आयाम के कुछ पहलुओं पर विचार करेंगे। कलीसिया के अन्य कई पक्ष होंगे जिन पर हम 'परमेश्वर की रुपरेखा' इस भाग में विचार करेंगे।

कलीसिया मसीह की देह है

कुलुस्सियों 1:18,24
18 और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।
24 अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिए, अर्थात् कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।

इफिसियों 1:22,23
22 और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।
23 यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

आत्मिक रीति से प्रत्येक विश्वासी प्रभु से जुड़ा हुआ है (1 कुरिन्थियों 6:17)। पवित्र आत्मा ने हमें मसीह की देह में बपतिस्मा दिया है (डुबाया, या जोड़ दिया) (1 कुरिन्थियों 12:13)। कलीसिया मसीह की देह है। हम उसके अंग हैं, उसके साथ जोड़े गए हैं, उसके साथ एक हैं।

जब कोई हमें ग्रहण करते हैं, तब वे यीशु को ग्रहण करते हैं (मत्ती 10:40)। जब कोई हमें सुनते हैं, तब वे उसे सुनते हैं। यदि वे हमारा इन्कार करते हैं, तो वे उसका इन्कार करते हैं (लूका 10:16)।

जब कोई हमें हानि पहुंचाते हैं, तब वे मसीह को हानि पहुंचाते हैं (प्रेरितों के काम 9:5)।

उसकी देह होने का क्या अर्थ है उसके कुछ और पहलू यहां दिए गए हैं।

कलीसिया सनातन है, क्योंकि उसका सिर मसीह सनातन है

कलीसिया मसीह की देह है और मसीह सनातन है, इसलिए कलीसिया भी सनातन है। हम हमेशा, सर्वदा, उसकी देह रहेंगे–वह जो कुछ है उसका अंश रहेंगे।

कलीसिया एक अस्थायी प्रबंध नहीं है, परंतु परमेश्वर की सनातन हस्तकला है, जो हमेशा परमेश्वर के बहुतायत के अनुग्रह की ओर संकेत करने का उद्देश्य रखती है।

इफिसियों 2:7
कि वह अपनी कृपा से, जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।

कलीसिया परमेश्वर के उद्देश्यों को अमल में लाने का मसीह का साधन है

सिर या प्रधान जो आदेश देता है, उसे देह अमल में लाती है, इस वर्तमान युग में और हज़ार वर्षों के राज्य में भी (दानिएल 7:18)। कलीसिया सक्रिय, सामर्थी, कार्यकारी तत्व है। हमें पृथ्वी पर निष्क्रिय, जीवनरहित और उदासीन नहीं रहना है। प्रभु यीशु पृथ्वी पर जो करने की इच्छा रखता है, उसे पूरा

करने के लिए हम यहां हैं। इसलिए जो कुछ वह कहता है उसे हमें सक्रिय रूप से सुनना है और उन बातों को पूरा होते हुए देखने का प्रयास करना है। उससे सुनने के बाद, हमें यह समझना है कि उस कार्य को यहां पृथ्वी पर अमल में लाने हेतु सर्वशक्तिमान परमेश्वर का पूरा अधिकार और सहारा हमें दिया गया है। हमें कोई भी बात नहीं रोक सकती।

परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को, या अपनी सृष्टि की अन्य कई वस्तुओं को उपयोग कर सकता था, परंतु उसने हम लोगों को खुद का अंश बनाने के लिए चुना है, ताकि हम यहां पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी करें जैसे स्वर्ग में पूरी होती है।

कलीसिया

इफिसियों 1:23
यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

इफिसियों 1:23 (मेसेज बाइबल)
आप देखेंगे कि कलीसिया संसार के लिए बाह्य नहीं है; संसार कलीसिया के लिए बाह्य है। कलीसिया मसीह की देह है, जिसमें वह बोलती और कार्य करती है, जिसके द्वारा वह सबकुछ अपनी उपस्थिति से भर देता है।

इफिसियों 1:23 (एम्प्लिफाईड बाइबल)
जो उसकी देह है, उसकी पूर्णता जो सब में सबकुछ भर देता है (क्योंकि उस देह में उसकी पूर्ण रचना वास करती है जो सबकुछ पूरा करता है, और जो खुद से सबकुछ सर्वत्र भर देता है)।

कलीसिया मसीह की पूर्णता है। मसीह की पूर्ण रचना कलीसिया के द्वारा प्रगट होती है। कलीसिया के द्वारा, प्रभु यीशु का यहां पृथ्वी पर प्रतिनिधित्व किया जाता है। वह कलीसिया के द्वारा बोलता और कार्य करता है।

कलीसिया का हर एक अंग उसकी पूर्णता से भरपूर है। मसीह हर एक सदस्य को खुद से भर देता है। हम में से हर एक देह का अंग होने के नाते यीशु को संसार के समक्ष प्रगट करता है।

हर एक विश्वासी मसीह की देह—सनातन कलीसिया का अंग है

1 कुरिन्थियों 12:27
इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग-अलग उसके अंग हो।

हर एक विश्वासी मसीह की देह–कलीसिया का अंग है। हमें पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा मसीह की देह में लाया गया, जिसने हमें एक देह में बपतिस्मा दिया (डुबोया, जोड़ दिया) (1 कुरिन्थियों 12:13)।

कलीसिया का एक हिस्सा स्वर्ग में है, और उसका एक हिस्सा पृथ्वी पर है

इफिसियों 3:14,15
14 मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं,
15 जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।

जो विश्वासी मर गए हैं और प्रभु के साथ रहने के लिए चले गए हैं, वे अब भी स्वर्ग में कलीसिया का–ारमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। हम जो यहां हैं, यहां पृथ्वी पर कलीसिया–परमेश्वर के परिवार को बनाते हैं।

कलीसिया के स्वाभाविक पहलू

1 तीमुथियुस 3:14,15
14 मैं तेरे पास जल्द आने की आशा रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिए लिखता हूं,
15 कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।

प्रेरित पौलुस तीमुथियुस को लिख रहा है जो इफिसुस की कलीसिया का रखवाला है। इफिसुस के विश्वासियों के स्थानीय समुदाय को सम्बोधित करते हुए, प्रेरित पौलुस उसी शब्दों का उपयोग करता है जिससे वह मसीह की आत्मिक देह का उल्लेख करता है। वह स्थानीय कलीसिया को “परमेश्वर का घर” और “जीवित परमेश्वर की कलीसिया” कहता है।

स्थानीय कलीसिया आत्मिक कलीसिया की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

स्थानीय कलीसिया को "परमेश्वर का घर" कहा गया है

"परमेश्वर का घराना" या "विश्वास का घराना" ये शब्द स्थानीय कलीसिया और आत्मिक कलीसिया दोनों के लिए प्रयुक्त किए गए हैं जैसा कि हम इफिसियों 2:19 और गलातियों 6:10 में देखते हैं।

इफिसियों 2:19
इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।

गलातियों 6:10
इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों (घराने) के साथ।

घर या घराना शब्द परिवार को सम्बोधित करता है। जब हम "परमेश्वर के रुपरेखा" इस भाग में परमेश्वर के परिवार के रूप में स्थानीय कलीसिया का अध्ययन करेंगे, तब हम इस विषय में और चर्चा करेंगे।

स्थानीय कलीसिया को "जीवित परमेश्वर की कलीसिया" कहा गया है

मसीह की आत्मिक देह और स्थानीय कलीसिया दोनों का उल्लेख जीवित परमेश्वर की कलीसिया के रूप में किया गया है। आत्मिक कलीसिया के विषय में कही गई कई बातें इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय कलीसिया को लागू होती हैं।

स्थानीय कलीसिया एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में मसीह की आत्मिक देह की अभिव्यक्ति है

अतः हम भरोसे के साथ कह सकते हैं कि स्थानीय कलीसिया एक विशिष्ट क्षेत्र में मसीह की आत्मिक देह की भौतिक अभिव्यक्ति है। मुझे यकीन है कि जब प्रभु यीशु मसीह एक विशिष्ट क्षेत्र की ओर देखता है, तब वह हमारे फिरकों, नामों, और अन्य बातों की ओर नहीं देखता या ध्यान नहीं देता जिनका उपयोग हम यहां पृथ्वी पर खुद की पहचान के रूप में करते हैं। वह हम सभों को ऐसे लोगों के रूप में देखता है जो उसके लोहू में

धुल चुके हैं। जैसे प्रभु हमें एक शहर (या एक क्षेत्र में) देखता है, वैसे एक कलीसिया है–शहरव्यापी कलीसिया, जिसमें सभी स्थानीय कलीसियाओं के सभी विश्वासी हैं। शहर में या किसी क्षेत्र में सेवा करने वाली कई स्थानीय कलीसियाएं, सेवक और सेवकाइयां हैं। परमेश्वर हम में से हर एक को हमारी विशिष्ट भूमिकाएं, बुलाहट और प्रभाव का क्षेत्र सौंपता है। शहर में परमेश्वर कलीसिया में और कलीसिया के द्वारा जो कुछ हासिल करना चाहता है, उसका हम हिस्सा बनें ऐसा परमेश्वर चाहता है। हर एक स्थानीय कलीसिया और जो लोग उस स्थानीय कलीसिया के अंग हैं, उनके शहरव्यापी कलीसिया में और कलीसिया के प्रति कुछ कर्तव्य हैं।

एक निश्चित स्थान की स्थानीय कलीसिया सनातन कलीसिया के सदस्यों से बनती है

स्थानीय कलीसिया उन विश्वासियों से बनती है जो मसीह की आत्मिक देह, सनातन कलीसिया के अंग हैं।

एक निश्चित स्थान की स्थानीय कलीसिया उस क्षेत्र में मसीह के उद्देश्यों को अमल में लाने का मसीह का साधन है

जैसा कि आत्मिक देह के विषय में बताया गया है, किसी निश्चित स्थान, क्षेत्र या शहर की कलीसिया उस क्षेत्र के लिए और उस क्षेत्र से परे उसके उद्देश्यों को पूरा करने का मसीह का साधन है। हम उस क्षेत्र में उसके हाथ, पांव, और आवाज़ बन जाते हैं। अतः, प्रत्येक स्थानीय कलीसिया को खुद को एक स्वर्गीय ज़िम्मेदारी के तहत देखना चाहिए। हमें परमेश्वर के प्रति और हमारे समाज और उससे परे जो यीशु ने किया, उसे करने की ज़िम्मेदारी है।

एक निश्चित स्थान की स्थानीय कलीसिया उस क्षेत्र में स्वयं मसीह की प्रतिनिधि है

किसी निश्चित स्थान या क्षेत्र के लोग विश्वासियों के स्थानीय समुदाय की ओर, स्थानीय कलीसिया की ओर देखकर उसमें यीशु को देख सकें। उसकी देह होने के नाते, हम उनके लिए मसीह की अभिव्यक्ति हैं। हम आसपास के लोगों के लिए उसके प्रेम और आशीष का जरिया हैं।

एक निश्चित स्थान की स्थानीय कलीसिया उस स्थान में परमेश्वर का परिवार है

स्थानीय कलीसिया वह स्थान है जहां पर हम परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में–परमेश्वर के परिवार के रूप में एक साथ रहते हैं। विश्वासियों के स्थानीय समुदाय में, चाहे छोटा हो या बड़ा, हम अर्थपूर्ण रिश्ते बनाते हैं, एक दूसरे की सेवा करते हैं, एक दूसरे की देखभाल करते हैं और मसीह की समानता में बढ़ने हेतु एक दूसरे का परिपोषण करते हैं।

आपको स्थानीय कलीसिया का हिस्सा क्यों बनना चाहिए?

यह सच है कि विश्वासी किसी भी स्थानीय कलीसिया का अंग हो सकता है, फिर भी हमें स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित होने के महत्व को समझना है।

स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत, हम अपने प्रतिदिन के जीवन में मसीह की आत्मिक देह–कलीसिया में अपनी सदस्यता को जीते हैं। आत्मिक देह के भागी होना एक बात है, जहां व्यक्तिगत् तौर पर हम में से हर एक को स्थानीय कलीसिया में कार्य, बुलाहट, अभिषेक और वरदान दिए गए हैं। परंतु उसका मूल्य हो इसलिए हमें उन सारी बातों को प्राद्भतिक संसार में जीना है। स्थानीय कलीसिया वह लघु ब्रम्हाण्ड है जिसके अंतर्गत हम वास्तव में और व्यवहारिक तौर पर उस स्थान और कार्य को पूरा करते हैं, जो प्रभु ने हमें अपनी देह में दिए हैं। जिस प्रकार प्रभु निर्धारित करता है, हम में से कुछ लोगों की भूमिका कई स्थानीय कलीसियाओं में आगे बढ़ती है, शायद राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर भी।

शरीर के अंग यहां वहां बिखरे नहीं रहते, परंतु एक साथ रहते हैं। स्थानीय कलीसिया (उदाहरण, कुरिन्थुस की कलीसिया) की तुलना मानव देह से की गई है। हर एक विश्वासी देह के अंग के समान है। यदि हम इस उदाहरण का उपयोग कुछ व्यवहारिक विचारों को प्रस्तुत करने के लिए करें, तो एक अत्यंत स्पष्ट अनुमान यह है कि देह के अंग बिखरे नहीं फिरते। वे 'जुड़े हुए' अर्थात् भौतिक देह के प्रति 'समर्पित' हैं। जी हां, हम

यह समझते हैं कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में, देह के अंगों का प्रत्यारोपण किया जा सकता है। परंतु मानक यह है कि शरीर के अंग एक दूसरे से बिछुड़कर यहां वहां नहीं घुमते। इसी तरह, यह कहना बाइबल आधारित है कि विश्वासियों को विश्वासियों की स्थानीय देह के प्रति, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, समर्पित रहने की ज़रूरत है।

समाज के संदर्भ में मसीही जीवन में कई बातें घटित होती हैं—एक साथ रहना, एक साथ बड़े होना और एक साथ काम करना। जिस प्रकार मानव देह में, देह के कुल अस्तित्व और उन्नति के लिए हर एक अंग को दूसरे अंग की ज़रूरत होती है उसी तरह स्थानीय कलीसिया में यदि हम सभों को परमेश्वर के राज्य के लिए बढ़ना है, परिपक्व होना है, विकसित होना है, और फलवंत होना है, तो हमें एक दूसरे की ज़रूरत है। हमारी प्राथमिक निर्भरता स्वयं प्रभु यीशु मसीह पर है। इसके अलावा, उसने यह निर्धारित किया है कि हम एक दूसरे को बल और पोषण भी प्रदान करें।

- जब हम एक दूसरे को कुशाग्र बनाते हैं, तो हमारे चरित्र का विकास होता है।
- जब हम एक दूसरे से सीखते हैं, तब परिपक्वता आती है।
- जीवन की बुलाहट में हमारा सफर अकेले नहीं होता, परंतु जब दूसरे हमें उसमें आगे बढ़ने में हमारी सहायता करते हैं, तब पूरा होता है।
- नया दाखरस गुच्छों में होता है (यशायाह 65:8)। अकेला अंगूर थोड़ा रस देता है। परंतु जब गुच्छे को दबाया जाता है, तब हमें ज्यादा दाखरस मिलता है।
- परमेश्वर का अभिषेक और आदेशित आशीष उन लोगों के समुदाय में मुक्त की जाती है, भाइयों के बीच जो एकता में रहते हैं (भजन 133:1-3)।
- यदि हम उन्नति करना चाहते हैं, तो हमें रोपे जाने की ज़रूरत है। *"वे यहोवा के भवन में रोपे जाकर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे"* (भजन 92:13)।

2

स्थानीय कलीसिया का उद्देश्य–इसका कार्य, संदेश, तरीका

कार्य (मिशन)

मत्ती 28:18-20

18 यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।
19 इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है,
20 मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" अमीन।

महान आदेश में प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को यह आदेश दिया कि वे सभी राष्ट्रों में जाकर शिष्य बनाएं। उसने उन्हें बताया कि वे पवित्र आत्मा की सामर्थ पाएंगे। परंतु, जाकर प्रचार करने और सिखाने के अलावा उसने उन्हें दूसरी कोई निश्चित कार्यविधि नहीं दी।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं, हम परमेश्वर की रणनीति को स्पष्ट होते हुए देखते हैं। सुसमाचार प्रचार के साथ, लोग मसीह के विश्वास में लाए जाते हैं। फिर विश्वासियों के समुदाय, जिन्हें कलीसिया कहा जाता है स्थापित होते हैं ताकि जो कुछ आरम्भ हुआ है उसे मज़बूत बनाया जाए, लोगों को शिष्य बनाया जाए और बहुगुणित किया जाए। इस प्रकार महान आदेश का पूरे किए जाने के परिणाम स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना में होता है।

स्थानीय कलीसिया विश्व सुसमाचार प्रचार और शिष्यता के लिए परमेश्वर की रणनीति है। स्थानीय कलीसिया का प्राथमिक कर्तव्य या मिशन विश्व में सुसमाचार प्रचार और शिष्यता है जो स्थानीय कलीसियाओं के

–प्रत्येक सुसमाचारित क्षेत्र के विश्वासियों के समुदायों के अंतिम संस्थापन द्वारा पूरा होता है।

संदेश

सुसमाचार

हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार प्रचार करना है। सुसमाचार

यीशु मसीह के क्रूस का संदेश है–कार्य जो उसने पूरा किया और जो कुछ उसने किया उस कारण हमने पाया उद्धार, चंगाई, छुटकारा और मुक्ति।

1 कुरिन्थियों 1:17-24
17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे
18 क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।
19 क्योंकि लिखा है, "कि मैं ज्ञानवालों के ज्ञान को नाश करूंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा"।
20 कहां रहा ज्ञानवान? कहां रहा शास्त्री? कहां इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया?
21 क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।
22 यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं।
23 परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है।
24 परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी, क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है।

प्रेरित पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि उसका मुख्य कार्य सुसमाचार प्रचार करना था, जो मसीह के क्रूस का संदेश है। हमारे श्रोता चाहे जो चाहते हों–"चिन्ह" या "ज्ञान," हमारा संदेश वही है। हम क्रूसित मसीह का प्रचार करते हैं। भले ही कुछ लोग इस विषय में ठोकर खाएं और अन्य उसे

मूर्खता समझें, क्रूस का संदेश परमेश्वर का ज्ञान और परमेश्वर की सामर्थ है।

परमेश्वर की सम्पूर्ण मंशा

परमेश्वर के सेवक होने के नाते, हमें परमेश्वर की सम्पूर्ण मंशा के विषय में सिखाना और घोषणा करना है। हमें "ठोस शिक्षा" देना है जिसमें लोगों को यह सिखाना शामिल है कि यीशु मसीह का नाम लेकर चलने योग्य जीवन कैसे बिताया जाता है।

पेरितों के काम 20:20,21,27
[20] और जो जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर घर सिखाने से कभी न झिझका।
[21] वरन् यहूदियों और यूनानियों के सामने गवाही देता रहा, कि परमेश्वर की ओर मन फिराना, और हमारे प्रभु मसीह पर विश्वास करना चाहिए।
[27] क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।

1 तीमुथियुस 4:6,16
[6] यदि तू भाइयों को इन बातों की सुधि दिलाते रहेगा, तो मसीह यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा; और विश्वास और उस अच्छे उपदेश की बातों से, जो तू मानता आया है, तेरा पालन-पोषण होता रहेगा।
[16] इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।

गलत शिक्षा की हर एक बयार के विरोध में सुरक्षा

हमारे प्रचार और शिक्षा के भाग के रूप में हमें इस बात का ध्यान रखना है कि विश्वासी अजीब शिक्षाओं और मनुष्यों के गलत तत्वज्ञान से सुरक्षित रखे जाएं और बचाए जाएं।

हम गलत शिक्षा पर विजय पाने के लिए सत्य के विषय में विस्तार से बताते हैं। हम गलत शिक्षा के विषय में केवल समझाते नहीं, परंतु सत्य

के विषय में समझाकर गलत शिक्षा पर जय पाते हैं। जब लोग सत्य को समझेंगे, तब वे गलत को पहचान पाएंगे और उससे दूर रहेंगे।

इफिसियों 4:14,15
[14] ताकि हम आगे को बालक न रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से उनके भम की युक्तियों की, और उपदेश की, हर एक बयार से उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते हों,
[15] वरन् प्रेम से सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं।

1 तीमुथियुस 6:3-5
[3] यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है, और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है,
[4] तो वह अभिमानी हो गया, और कुछ नहीं जानता, वरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिनसे डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें, और बुरे बुरे सन्देह,
[5] और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिनकी बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है।

पद्धति (तरीके)

जो तरीके या पद्धतियां हम अपनाते हैं, वे परमेश्वर के वचन में निर्धारित मानकों और निर्देशों के अनुसार हों। हम सुसमाचार प्रचार की घोषणा करने हेतु और स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना करने हेतु शारीरिक साधनों का उपयोग नहीं कर सकते।

शुद्ध

जो तरीके हम अपनाते हैं वे परमेश्वर और मनुष्यों के सामने शुद्ध हों। हमें अपने उद्देश्यों को हासिल करने हेतु छल या हथकंडों का उपयोग नहीं करना है।

परमेश्वर के वचन को सुनाने का हमारा तरीका शुद्ध हो। हमें उसे ईमानदारी के साथ और ऐसे प्रस्तुत करना है मानो हमें उसे परमेश्वर के सामने कर रहे हैं। हम अपने व्यक्तिगत् लाभ के लिए हमारे अपने कार्यक्रमों को पूरा करने हेतु परमेश्वर के वचन का उपयोग नहीं करते।

2 कुरिन्थियों 2:17
क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।

2 कुरिन्थियों 4:1,2
[1] इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाव नहीं छोड़ते।
[2] परन्तु हमने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।

सेवकाई में हम जिस प्रकार का आचरण करते हैं, उसमें हमें सावधान रहना है, ताकि किसी प्रकार से सेवकाई की बदनामी न हो। परंतु हमारे सारे आचरण में हम प्रगट करते हैं कि हम परमेश्वर के सेवक हैं।

2 कुरिन्थियों 6:3,4
[3] हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, ताकि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।
[4] परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से।

सेवकाई में हम जिस रीति से कार्य करते हैं उसमें हमें कितना सावधान रहना है, उसका यहां पर एक उदाहरण है। यरूशलेम और यहूदिया के विश्वासियों की ज़रूरतों के संबंध में उन्हें सहायता करने हेतु कुरिन्थ की कलीसिया से पैसा इकट्ठा करने के लिए तीतुस कुरिन्थ जाने के लिए तैयार था। परंतु, पौलुस ने तीतुस के साथ दूसरे भाई को भेजा, जिसका न केवल अच्छा नाम था, पैसा लाने के लिए तीतुस के साथ यात्रा करने के लिए वह कलीसिया द्वारा चुना गया था। पौलुस समझाता है कि उसने ऐसा इसलिए किया ताकि उन्होंने खुद के लिए वह पैसा लिया है ऐसा दोष उन पर (पौलुस या तीतुस पर) न आए। उसने इस बात का ध्यान रखा था कि वह न केवल परमेश्वर की दृष्टि में सही हो, बल्कि मनुष्यों की दृष्टि में भी सही हो।

2 कुरिन्थियों 8:18-21
[18] और हमने उसके साथ उस भाई को भेजा है जिसका नाम सुसमाचार के विषय में सब कलीसिया में फैला हुआ है।
[19] और इतना ही नहीं, परन्तु वह कलीसिया से ठहराया भी गया कि इस दान के काम के लिए हमारे साथ जाए और हम यह सेवा इसलिए करते हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे मन की तैयारी प्रगट हो जाए।
[20] हम इस बात में चौकस रहते हैं कि इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए।
[21] क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं, हम उनकी चिन्ता करते हैं।

ठोकर का कारण न बनें, और न समझौता करें

सेवकाई में हमारा तरीका और हमारा प्रचार जानबूझकर लोगों को ठोकर या चोट पहुंचाना न हो। हमारा उद्देश्य यीशु मसीह के व्यक्तित्व और परमेश्वर के वचन में सत्य की ओर संकेत करना है। हम सत्य के साथ समझौता नहीं करते, परंतु उसे प्रेम के साथ बोलते हैं। और हमारे प्रेम के साथ सत्य निवेदन करने पर भी यदि लोग सत्य से ठोकर पाते हैं, तो उसके लिए हम और कुछ नहीं कर सकते।

1 कुरिन्थियों 10:32,33
[32] तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर के कारण बनो।
[33] जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं, कि वे उद्धार पाएं।

आत्मा और सामर्थ के साथ

मसीही सेवकाई वास्तव में परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर के आत्मा का कार्य है। इस कारण वह अलौकिक है। हमारे द्वारा कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ का परिणाम चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्मों में होगा। प्रभु यीशु ने इसी प्रकार सेवकाई की और इसी प्रकार सेवकाई करने की शिक्षा उसने अपने शिष्यों को दी। प्रारंभिक कलीसिया, जो उस प्रकार की कलीसिया का

प्रतिनिधित्व करती है जिसे बनाना यीशु ने आरंभ किया, आत्मा और सामर्थ में सेवकाई करती रही।

1 कुरिन्थियों 2:4,5

4 और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था,

5 इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो।

1 कुरिन्थियों 4:20

क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है।

यह सच है कि आज हमारे पास आधुनिक संसाधन, कार्यविधियां हैं और हमने सेवकाई के लिए कई संगठनात्मक कौशल और तकनीक प्राप्त किए हैं—फिर भी आत्मा और सामर्थ में सेवकाई करने का स्थान ये बातें नहीं ले सकती और न ही उन्हें लेना चाहिए।

आत्मा से निर्देशित

सेवकाई में स्थानीय कलीसिया द्वारा उपयोग की जाने वाली योजनाएं, रणनीतियां और तरीके पवित्र आत्मा के निर्देश में होने चाहिए। प्रेरितों के काम की पुस्तक हमारे लिए इस बात को अत्यंत स्पष्ट रूप से वर्णन करती है। जब विश्वासी उस कार्य को करने निकल पड़े जो वे जानते थे कि उन्हें क्या करना है, तब हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा उन्हें विशेष निर्देश देता है, समय समय पर उनकी योजनाओं को बदल देता है और इस प्रकार जो कुछ हो रहा है, उसमें वह अंतिम निदेशक है। आज भी, जब हम योजना बनाते हैं, रणनीतियां तय करते हैं और उन्हें अमल में लाते हैं तब हमें परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई और निर्देशों की अधीनता में चलना है।

प्रेरितों के काम 8:29

तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।

प्रेरितों के काम 11:12
तब आत्मा ने मुझ से उनके साथ बेखटके हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस मनुष्य के घर में गए।

प्रेरितों के काम 16:6-10
[6] और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया।
[7] और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।
[8] इसलिए मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए।
[9] और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर।
[10] उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।

युक्तिपूर्ण

स्थानीय कलीसिया को उसकी पद्धतियों के विषय में युक्तिपूर्ण होना चाहिए। युक्तिपूर्ण होने का अर्थ परमेश्वर के साथ आगे बढ़ना, उसके साथ कदम बढ़ाकर चलना, उसके समयानुसार चलना, और उसकी अगुवाई में चलना है, ताकि हम सही समय में, सही स्थान में हों, लोगों की सेवा करने हेतु सही कार्य करते रहें। परमेश्वर हमेशा उद्देश्य के साथ और सही समय में काम करता है।

- उद्देश्यपूर्ण–सही काम करना जो परमेश्वर चाहता है
- समयानुसार–सही समय में वह करना
- अनुकूल–परमेश्वर के निर्देश के अनुसार अपना तरीका बदलना। विभिन्न प्रकार के लोगों के लिए विभिन्न पद्धतियां
- सुनियोजित–बातों का पूर्वज्ञान और दूरदृष्टि और तैयार रहना
- सही रीति से पूरा करना–उत्तमता के साथ काम करना ताकि परमेश्वर को महिमा मिले।

उपयुक्त

परमेश्वर हमसे इस तरह से बातें करता है जिससे हम उसे समझ सकें। वह हमारी भाषा बोलता है। उसी प्रकार स्थानीय कलीसिया को समाज के लोगों की भाषा बोलना है और लोगों तक इस रीति से पहुंचना है जो आज की दृष्टि में उपयुक्त है।

1 कुरिन्थियों 9:19-23

[19] क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैंने अपने आप को सब का दास बना दिया है, कि अधिक लोगों को खींच लाऊं।
[20] मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं; जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं, उनके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं।
[21] व्यवस्थाहीनों के लिए मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं।
[22] मैं निर्बलों के लिए निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं; मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं।
[23] और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।

- हमें संदेश के साथ समझौता न करते हुए उपयुक्त बने रहना है।
- हमें ऐसी पद्धतियों और साधनों का उपयोग करना है जिससे लोगों को संदेश समझने और उसे लागू करने में सहायता प्राप्त हो।
- हमें सम्बंधित संस्कृति के प्रति संवेदनशील बने रहना है, परंतु उस संस्कृति के नियंत्रण में नहीं रहना है। परमेश्वर संस्कृति से बड़ा है।

3

स्थानीय कलीसिया का शासन और रचना

स्थानीय कलीसियाई प्रशासन और रचना का उदय और विकास

जब प्रभु यीशु ने सारे राष्ट्रों में जाकर शिष्य बनाने का महान आदेश दिया, तब उसने अपने अनुयायियों को केवल आज्ञा दी थी कि वे सामर्थ्य से परिपूर्ण होने हेतु पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए यरूशलेम में रुके रहें ताकि उसके गवाह बनें। लूका लिखता है कि यीशु के पुनरुत्थान और उसके स्वर्गारोहण के बीच के चालीस दिनों के दौरान, प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को दर्शन दिया और (परमेश्वर के राज्य से संबंधित बातों) *"के विषय में बातें की"* (प्रेरितों के काम 1:3)। यह बातें क्या थी इस विषय में हमारे पास लिखा नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने उस समय उन रणनीतियों के विषय में चर्चा नहीं की कि वे किस प्रकार महान आदेश को पूरा करने वाले हैं, और न ही यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया, और उससे आगे में स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना करने के विषय में। इसलिए, यरूशलेम की कलीसिया का बिना इस स्पष्ट निर्देश के जन्म हुआ कि उसका प्रशासन और रचना किस पर आधारित होनी चाहिए। पेरितों के काम की पुस्तक में हम यह प्रगट होते हुए देखते हैं कि जैसे जैसे समय आगे बढ़ता गया, स्थानीय कलीसिया का प्रशासन और रचना का उदय और विकास कुछ थोड़ी स्पष्ट रूप से परिचित भूमिकाओं के साथ हुआ। इसके आगे, नए नियम की कलीसिया एक निश्चित प्रशासनिक संरचना या आवश्यक भूमिकाओं, उपाधियों और पदों निर्धारित नहीं करती।

इसलिए हमारा तरीका स्थानिक कलीसिया के कार्यसंचालन के लिए नया नियम जो प्रस्तुत करता है उन्हें समझना है और उसके बाद प्रशासन और रचना की परिभाषा करने हेतु दी गई परमेश्वर की बुद्धि का उपयोग करें जो नए नियम द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली बातों को उत्तम रीति से अमल में लाते हैं। मेरा मानना है कि प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के पास

इस तरह से कलीसियाई प्रशासन और संरचना को अमल में लाने हेतु आज़ादी होनी चाहिए जो उसके कार्यसंचालन के अनुरूप हो। इस पुस्तक में बाद में, हमने कुछ तरीकों को बताया है जिनके द्वारा हमने प्रशासन और संचरना पर अमल किया है और उन बातों के विषय में हमने लिखा है जो हमने सीखी। ये बातें हम केवल अपनी शिक्षा आप तक पहुंचाने हेतु आपके साथ बांटते हैं, उसकी आपको पूर्ण रूप से नकल करने की आवश्यता नहीं है। हमारा आधार वाक्य यह है कि स्थानीय कलीसिया के लिए हम चाहे जिस प्रशासन या रचना का उपयोग करें, उसके द्वारा स्थानीय कलीसिया के परमेश्वर के रुपरेशा को पूरा किया जाए।

पहली स्थानीय कलीसिया–यरूशलेम की कलीसिया

- यरूशलेम में केवल एक कलीसिया थी और इसलिए वह एक स्थानीय कलीसिया थी जो शहरव्यापी कलीसिया भी थी।
- पिन्तेकुस्त के दिन 120 लोग थे जिन्होंने मेम्ने के बारह प्रेरितों को अपने अगुवों के रूप में पहचाना। पिन्तेकुस्त लगभग सन् 30 में गठित हुआ।
- पतरस प्रारंभिक अगुवा प्रतीत होता है, या कम से कम मुख्य अगुवों में से एक है जिसने पिन्तेकुस्त के दिन उत्तम संदेश दिया और उसके बाद उस नगर के धार्मिक अगुवों के आकर्षण का केन्द्र बन गया। बाद में पतरस यहूदिया जाता है और याकूब यरूशलेम की कलीसिया का नेतृत्व भार सम्भालता है।
- बाद में, पेरितों के काम 15 में (सन्49) जैसे जैसे समय बढ़ता जाता है, यरूशलेम की पहली परिषद् में हम प्रेरित याकूब को यरूशलेम की कलीसिया के मूल अगूवे के रूप में अंतिम निर्णय लेते हुए देखते हैं।
- पौलुस जब यरूशलेम को आता है तब उसकी भेंट व्यक्तिगत तौर पर याकूब से होती है (पेरितों के काम 21:8) और अपनी पत्री में वह प्रमुख अगुवे के रूप में पहले याकूब को संबोधित करता है (गलातियों 2:9)।

डीकनों का उदय

यरूशलेम की कलीसिया के आरंभ में जो बारह प्रेरित अगुवों के पद पर थे, उनके पश्चात जिस पहली भूमिका का उदय हम देखते हैं, वह है डीकन।

प्रेरितों के काम 6:1-6
1 उन दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।
2 तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें।
3 इसलिए हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।
4 परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।
5 यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, फिलिप्पुस और प्रुखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।
6 और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

प्रति दिन के भोजन वितरण में सहायता करने के लिए सात पुरुषों को चुना गया था। इन सात पुरुषों को इसलिए चुना गया था क्योंकि उन्होंने निम्नलिखित कसौटियां पूरी की थीः

- सुनाम
- पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
- ज्ञान से पूर्ण
- प्रति दिन के भोजन वितरण की ज़िम्मेदारी स्वीकार की

यह अत्यंत दिलचस्प है कि उन पुरुषों के लिए ऐसी ऊंची आत्मिक योग्यताएं निश्चित की गई जो प्रति दिन के भोजन वितरण जैसा नित्यक्रम और काम करने वाले थे।

हम जानते हैं कि इस समय प्रेरितों के काम 6 में इन सात पुरुषों को “डीकन” यह नाम नहीं दिया गया था, परंतु हम यह जानते ळैं कि जो भूमिका इन लोगों ने अदा की, उस पर से वे “डीकन” नाम से जाने गए। विभिन्न कलीसियाओंः रोम (करीब सन 60), फिलिप्पी (करीब सन 64), तीमुथियुस को (करीब सन 67), को लिखी गई पत्रियों में पौलुय ने “डीकन” की भूमिका को मान्यता दी है। तीमुथियुस को लिखी गई अपनी पासबानीय पत्री में पौलुस स्थानीय कलीसियाई प्रशासन के एक भाग के रूप में “डीकन” की भूमिका को मान्यता देता है और 1 तीमुथियुस 3 में डीकन्स की योग्यताओं के रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

डीकन यूनानी *“diakonos”* = सहायक, सेवक, टहलुआ, जो दूसरों के आदेशों का पालन करता है। ये मुख्य रूप से अगुवे होते हैं जो स्थानीय कलीसिया के प्रशासनीक मामलों पर ध्यान देते हैं। उनकी भूमिका सम्भवतः ”मदद करने वाले” (उपकार) और “प्रशासन” (प्रधान) से सम्बंधित पदों का निर्वहन करना है जिसके विषय में 1 कुरिन्थियों 12:28 में बताया गया है।

रोमियों 16:1,2
[1] मैं तुमसे फीबे के विषय में, जो हमारी बहन और किंखिया की कलीसिया की सेविका है, बिनती करता हूं,
[2] कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुमसे प्रयोजन हो, उसकी सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की, वरन् मेरी भी उपकारिणी हुई है।

फीबे किंखिया की स्थानीय कलीसिया की सेविका (यूनानी “*Diakonos*”) थी। महिलाएं भी डीकन हो सकती हैं। वह कलीसिया के कुछ प्रशासनीक बातों के लिए (कारोबार सम्बंधित) ज़िम्मेदार थी, और इस तरह वह कई लोगों की बड़ी सहायता करती थी।

फिलिप्पियों 1:1
मसीह यीशु के दास पौलुस और तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों और सेवकों समेत।

पौलुस फिलिप्पी के विश्वासियों का अभिवादन करता है और अगुवों को बिशप और डीकन करके सम्बोधित करता है।

1 तीमुथियुस 3:8-13

8 वैसे ही सेवकों को भी गम्भीर होना चाहिए, दोरंगी, पियक्कड़, और नीच कमाई के लोभी न हों।

9 परंतु विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें।

10 और ये भी पहले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक का काम करें।

11 इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्भीर होना चाहिए; वे दोष लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हों।

12 सेवक एक ही पत्नी के पति हों और लड़केबालों और अपने घरों का अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों।

13 क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिए अच्छा पद और उस विश्वास में, जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं।

डीकन्स को स्थानीय कलीसिया के आत्मिक अगुवों के समान ही धार्मिक मानकों का पालन करना था।

डीकन्स आत्मिक सेवा कर सकते हैं

कुछ डीकन आत्मिक सेवकाई में भी शामिल थे। स्तिफनुस चिन्ह और चमत्कार करता था (प्रेरितों के काम 6:8) और फिलिप्पुस ने बाद में सामरिया में कलीसिया की स्थापना की।

डीकन आत्मिक सेवकाई के साथ-साथ प्रशासनीक कामों में भी हिस्सा ले सकते हैं। हमें डिकन्स को केवल प्रशासन और सहायता के कामों तक ही सीमित नहीं रखना है। परमेश्वर जब उन्हें सामर्थ देता है, तब हमें भी उन्हें अनुमति देना है कि वे आत्मिक सेवकाई में लग जाएं।

नई कलीसियाएं स्थापित हुई

जैसे-जैसे हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में आगे बढ़ते हैं, हम यरूशलेम में सताव को बढ़ते हुए देखते हैं जिससे विश्वासी उस शहर से बाहर

तितरबितर हो जाते हैं। उसके फलस्वरूप विभिन्न स्थानों में नई कलीसियाएं स्थापित होती हैं।

- प्रेरितों के काम 8 (सन 32)–फिलिप्पुस, एक डीकन को परमेश्वर ने चिन्ह और चमत्कारों के साथ प्रचार करने हेतु, और सामरिया में कलीसिया की स्थापना करने हेतु उपयोग किया।
- प्रेरितों के काम 9:31,32 (सन 37-45)–अन्य क्षेत्रों में, जैसे यहूदिया, सामरिया, गलील, और लुद्दा में कलीसियाओं की स्थापना हुई।
- प्रेरितों के काम 11:19-27 (सन 45)–अंताकिया में स्थानीय कलीसिया तैयार हुई। एक ही नाम के दो नगर थे, एक आशिया माईनर के पिसिदिया में बसा हुआ था (देखें प्रेरितों के काम 13:14); और यहां पर जिस अंताकिया का उल्लेख है वह ओरोन्टेस नदी पर बसा हुआ था, और लम्बे समय तक सीरिया की राजधानी था।

ये सारी स्थानीय कलीसियाएं सामान्य विश्वासियों द्वारा संस्थापित की गई थी जो यीशु के नाम में प्रचार करते हुए और चिन्ह और चमत्कार करते हुए घुमते फिरे। इसमें कई महत्वपूर्ण तथ्य हैः

- यरूशलेम की कलीसिया में, न केवल प्रेरित, बल्कि विश्वासी भी सुसमाचार का प्रचार और चिन्ह और चमत्कार करते थे और ऐसा करने के लिए सुसज्जित किए गए थे।
- प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के बगैर भी कलीसियाओं को स्थापित किया जा सकता है। किसी स्थान में स्थानीय कलीसिया की स्थापना करने हेतु परमेश्वर किसी का भी उपयोग कर सकता है। पवित्र आत्मा स्थानीय कलीसियाओं को आरम्भ करने हेतु आम पवित्र जनों और डीकनों का उपयोग करता है। दूसरी ओर, एक या दो स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना करने हेतु परमेश्वर किसी का उपयोग करता है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह प्रेरित बन गया है।

प्राचीनों का उदय

यरूशलेम के प्राचीन

प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में (सन 46)–हम यरूशलेम के अगुवों को प्राचीनों के रूप में सम्बोधित करते हुए देखते हैं। *"उन्होंने ऐसा ही किया, और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया"* (प्रेरितों के काम 11:30)। "प्राचीन" न केवल प्रेरितों को शामिल किया, बल्कि बरनबास जैसे आत्मिक अगुवों को और अगबुस जैसे भविष्यद्वक्ताओं (प्रेरितों के काम 11:27) और अन्य लोगों को भी शामिल किया जो यरूशलेम की कलीसिया में इस समय तैयार हो गए थे।

नये प्राचीनों की नियुक्ती

अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान (सन 47,48), पौलुस और बरनबास विभिन्न स्थानों के नये विश्वासियों के समुदाय के पास लौट गए और उन्होंने प्राचीनों को नियुक्त किया।

प्रेरितों के काम 14:21-23

21 और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए।

22 और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे, कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे कि हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।

23 और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके, उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

नियुक्त करने (युनानी *"cheirotoneo"*) या ठहराने का अर्थ है हाथ आगे बढ़ाकर या उठाकर पद पर नियुक्त करना, या मत देना, इसलिए इस शब्द का सरल अर्थ है किसी भी पद पर नियुक्त करना, चुनना, या पदासीन करना। यह शब्द यहां पर प्राचीनों की नियुक्ती या चुने जाने मात्र को दर्शाता है।

ये "प्राचीन" उसी समाज से चुने जाते थे। यह स्पष्ट है कि उस समय ये "प्राचीन" स्वयं युवा विश्वासी थे, परंतु शायद उम्र में (बड़े) थे, और आत्मिक परिपक्वता के लक्षण उनमें दिखाई देते थे। ठहराना इस शब्द के उपयोग से यह भी दिखाई देता है कि लोगों की यह सर्वसम्मति होती थी कि ये प्राचीन कौन होने चाहिए। प्राचीनों का नियुक्त किया जाना उपवास और प्रार्थना से होता था, और इसलिए यह मात्र प्रशासनीक नियुक्ती नहीं थी, परंतु आत्मिक कसरत थी।

प्राचीन (युनानी *"presbuteros"*) यूनानी *"presbus"* का अर्थ है उम्र में बड़ा, बूढ़ा, वरिष्ठ, जेठ़ा।

"प्राचीन" यह शब्द यूनानी भाषा के *"presbuteros"* से आता है जिससे हमें प्रेस्बिटर यह शब्द मिलता है जो इन दिनों कुछ कलीसियाओं में उपयोग किया जाता है। उसके मूल अर्थ में, प्रेस्बिटर शब्द आत्मिक अगुवे का संबोधित करता है और आत्मिक अगुवों के लिए उपयोग किया जाता है।

प्रेरित और प्राचीन–एक नेतृत्व दल

बाद में, यरूशलेम की पहली सभा (सन 49) में हम प्रेरितों के साथ यरूशलेम में प्रेरितों को भी इस समस्या पर विचार विमर्श करते हुए देखते हैं कि अन्यजाति विश्वासियों का क्या मूसा की व्यवस्था के अनुसार खतना किया जाए।

प्रेरितों के काम 15:1,2,6,22
1 फिर कितने लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे कि यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।
2 जब पौलुस और बरनबास का उनसे बहुत झगड़ा और वाद-विवाद
हुआ तो यह ठहराया गया कि पौलुस और बरनबास और हममें से कितने और व्यक्ति इस बात के विषय में यरूशलेम को प्रेरितों और प्राचीनों के पास जाएं।
6 तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिए इकट्ठे हुए।
22 तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा कि अपने में से कई मनुष्यों को चुनें, अर्थात् यहूदा, जो बरसब्बा कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें।

इससे यह ज्ञात होता है कि यरूशलेम में कई आत्मिक अगुवे थे उन्हें यरूशलेम में अगुवों के रूप में तैयार किया गया था और वे अगुवों के रूप में काम कर रहे थे। प्रेरित और प्राचीन इस गम्भीर विषय पर चर्चा करने हेतु इकट्ठा हुए, इससे यह दिखाई देता है कि इन नये अगुवों को उनके नेतृत्व के लिए मान्यता दी गई थी और उनका आदर किया जाता था। यरूशलेम की कलीसिया, उसी तरह नये स्थानों में जो नई कलीसियाएं तैयार हो रही थीं प्रेरितों और प्राचीनों दोनों के नेतृत्व को मान्य करती थी (प्रेरितों के काम 16:4)।

इफिसुस के प्राचीन

बाद में, प्रेरितों के काम 20 में, प्रेरित पौलुस उसे मीलेतुस में मिलने के लिए इफिसुस के कुछ प्राचीनों को बुलाता है, जहां पर पौलुस यरूशलेम जाते हुए रुका हुआ था। इफिसुस में उसके द्वारा की गई दो वर्ष की सेवकाई का वह पुनः बयान करता है, और इन अगुवों को अपने अंतिम शब्द देता है।

प्रेरितों के काम 20:17,28
17 और उसने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया।
28 इसलिए अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो, जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।

"अध्यक्ष" यह शब्द यूनानी भाषा के "*episkopos*" से आता है जिसका अनुवाद "बिशप" भी किया गया है (1 तीमुथियुस 3:1,2; तीतुस 1:7; 1 पतरस 2:25)।

इस प्रकार प्राचीन और प्रेस्बिटरों को अध्यक्ष या बिशप भी कहा जाता था। उन्हें भेड़ों की रखवाली (यूनानी "*poimaino*") जिसका अर्थ है चरवाहे के समान देखभाल करना, जिससे हमें पासबान यह शब्द मिलता है (इफिसियों 4:11 यूनानी "*poimen*")

नये नियम में बिशप, प्राचीन, प्रेस्बिटर, अध्यक्ष इन शब्दों को अदल-बदल कर उपयोग किया गया है (तीतुस 1:5-9; 1 तीमुथियुस 3:1-7; 1 पतरस 5:1-4)। सभी को आत्मिक रीति से परमेश्वर के लोगों को खिलाना था या उनकी पासबानी करना था। प्रेरितों के साथ-साथ प्राचीन भी स्थानीय कलीसिया में सिखाने और आत्मिक सेवकाई में लगे हुए थे।

पांच प्रकार के सेवा पदाधिकारियों को भी प्राचीन कहा गया है (उदाहरण, भविष्यद्वक्ता यहूदा और सिलास, प्रेरितों के काम 15:27,32), परंतु प्रत्येक प्राचीन को पांच प्रकार की सेवा करने वाला नहीं माना जाता है।

"प्राचीन" की भूमिका (प्रेस्बिटर, बिशप, रखवाला) का सम्बंध तीन महत्वपूर्ण बातों से थाः

- आत्मिक परिपक्वता–मसीह जीवन का ईश्वरीय उदाहरण प्रस्तुत करना।
- आत्मिक सेवकाई–वचन और शिक्षा में परिश्रम।
- आत्मिक रखवाले–भेड़ों की रक्षा करना।

स्थानीय कलीसिया में सेवकाई के दलों का उदय

यद्यपि यरूशलेम की कलीसिया का आरम्भ अगुवों के रूप में बारह प्रेरितों से हुआ, फिर भी जल्द ही हम यरूशलेम की कलीसिया में प्रेरितों और प्राचीनों दोनों को अगुवों के पद पर देखते हैं। वे अगुवों की टीम के रूप में एक साथ मिलकर लोगों की सेवा करते थे।

उसी प्रकार, अंताकिया की कलीसिया में, वहां पर बरनबास को पहले अगुवे के रूप में नियुक्त किया गया था, और अपने साथ शामिल होने के लिए वह पौलुस को ले आया (प्रेरितों के काम 11:25,26)। बरनबास और पौलुस ने नवनिर्मित कलीसिया में वचन की शिक्षा दी। फिर प्रेरितों के काम 13:1 में, दो वर्षों के अंतराल में, हम तीन और लोगों को स्थानीय कलीसिया में भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों (या भविष्यद्वक्ता शिक्षक) को इस टीम का हिस्सा बनते हुए देखते हैं। इस प्रकार वहां अंताकिया की कलीसिया में

पांच प्राचीन थेः बरनबास, शिमोन, लुसियस, मनाहेन, शाऊल। यह बहु-सांस्द्भतिक टीम थी जो अंताकिया की स्थानीय कलीसिया की सेवा कर रही थी। बरनबास एक पूर्व लेवी याजक था, शाऊल ने यहूदा धर्म में उच्च शिक्षा पाई थी, मनाहेन की परवरिश राजा हेरोदेस के दरबार में हुई थी, लुसियस लीबिया के उत्तर में स्थित कुरेनी से था।

वरिष्ठ अगुवों/पासबानों का उदय

जैसे-जैसे नये नियम की कलीसिया परिपक्व होती जाती है, हम वरिष्ठ अगुवों और पासबानों को प्राचीनों में से उदय होते हुए देखते हैं जो स्थानीय कलीसिया के लिए पूर्ण रूप से ज़िम्मेदार थे।

जैसा कि हमने पहले ही बताया है, प्रेरितों के काम 2 में, (सन 47) यरूशलेम की कलीसिया के पास प्राचीनों या आत्मिक अगुवों की एक टीम है। इसमें प्रेरित और अन्य आत्मिक अगुवे भी शामिल हैं। फिर हम उनके बीच देखते हैं कि प्रेरित याकूब वरिष्ठ या प्रमुख अगुवा बनता है। प्रेरितों के काम 15 में, हम याकूब को यरूशलेम की कलीसिया के प्रमुख अगुवा के रूप में देखते हैं और यरूशलेम की पहली सभा में वही अंतिम निर्णय लेता है (प्रेरितों के काम 21:8)। याकूब जब यरूशलेम आता है, तब पौलुस भी उससे मिलता है (प्रेरितों के काम 21:8) और अपनी पत्री में प्रमुख अगुवे के रूप में याकूब को सम्बोधित करता है (गलातियों 2:9)।

तीमुथियुस को इफिसुस की स्थानीय कलीसिया का पासबान नियुक्त किया गया है (1 तीमुथियुस 1:3)। तीमुथियुस को कलीसिया में डिकनों और बिशप को नियुक्त करना था (1 तीमुथियुस 3:1)। तीमुथियुस को प्राचीनों का अगुवा नियुक्त किया गया है (1 तीमुथियुस 5:1,17,19)।

नये नियम की अंतिम पुस्तक, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सन 96 में लिखी गई। अध्याय 2 और 3 में प्रभु यीशु अपने संदेशों को हर एक स्थानीय कलीसिया के दूत या संदेशवाहक को सम्बोधित करता है। इससे यह सूचित होता है कि सम्बोधित की गई हर एक स्थानीय कलीसिया के लिए एक

व्यक्ति ज़िम्मेदार था। वह हर एक स्थानीय कलीसिया का दूत था जिसे यीशु ने अपने दाहिने हाथ में थाम रखा था (प्रकाशितवाक्य 1:16,20)।

प्रकाशितवाक्य 2:1
इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि,

यूनानी शब्द एन्जेलॉस का अर्थ है दूत और वह या तो स्वर्गदूत है, या मनुष्य जो संदेशवाहक का काम करता है। यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि प्रभु यीशु मसीह स्वर्गदूत को सम्बोधित नहीं कर रहा होगा। इसके कई कारण हैं। नये नियम में हम कहीं पर भी स्वर्गदूत को स्थानीय कलीसिया या कलीसिया के अधिकारी के रूप में नहीं देखते। हर एक कलीसिया को दिए गए विशिष्ट निर्देश और चेतावनियां केवल मनुष्य को लागू होते हैं, स्वर्गदूत को नहीं। यह कहना सुरक्षित है कि प्रभु यीशु मसीह हर क्षेत्र की स्थानीय कलीसिया के प्रमुख अगुवे को अपना संदेश सम्बोधित करता है।

इस प्रकार इफिसुस की स्थानीय कलीसिया ने उन्नति की और वहां पर प्राचीनों के बाद (प्रेरितों के काम 20:17) अगुवों के स्थान पर और उस स्थानीय कलीसिया के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति के रूप में अब वरिष्ठ अगुवे हैं (प्रकाशितवाक्य 2:1)।

स्थानीय कलीसिया का प्रमुख अधिकारी वरिष्ठ अगुवा है जो स्थानीय कलीसिया की रखवाली और मार्गदर्शन दोनों बातों के लिए ज़िम्मेदार है। स्थानीय कलीसिया में होने वाली हर एक बात के लिए प्रभु यीशु वरिष्ठ अगुवे को ज़िम्मेदार ठहराएगा। वरिष्ठ अगुवा पांच सेवाकार्यों में से एक हो सकता है, अर्थात्, प्रेरित हो सकता है, पासबान हो सकता है, या प्रेरित या पासबान दोनों हो सकता है, जिस प्रकार प्रभु ने उसे बुलाहट दी है, उसके अनुसार। अतः वरिष्ठ अगुवे को पासबान, वरिष्ठ पासबान आदि के रूप में भी सम्बोधित किया जा सकता है। स्थानीय कलीसिया में, प्राचीन, डीकन और अन्य पांच प्रकार की सेवकाइयां वरिष्ठ अगुवे के नेतृत्व में एक साथ रहती थी और एक साथ कार्य करती थी।

पांच प्रकार के सेवक और दल

प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम जो अनोखी विशेषता देखते हैं, वह है तीन सेवकाई–जहां प्रेरित, प्राचीन और पांच प्रकार की सेवा वरदानों में कार्य करने वाले सभी स्थानीय कलीसिया को मज़बूत बनाने हेतु और नई कलीसियाओं की स्थापना और परवरिश के द्वारा परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने हेतु एक साथ मिलकर काम करते थे।

अंताकिया की कलीसिया एक दिलचस्प केस स्टडी साबित होती है और यहां पर अंताकिया की कलीसिया से हम कुछ महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं।

- स्थानीय कलीसिया वह स्थान है जहां पर सेवकाइयों का जन्म होता है, उन्हें तैयार किया जाता है और सेवा के लिए मुक्त किया जाता है।
- आत्मिक ताज़गी और उत्तरदायित्व के लिए सभी सेवकाइयों, पांच प्रकार की सेवकाइयों और अन्य सेवकाइयों को स्थानीय कलीसिया में दृढ़ होने की ज़रूरत है।
- सभी सेवक, पासबान, प्राचीन, डीकन और अन्य पांच प्रकार की सेवकाइयां और विश्वासी स्थानीय कलीसिया में एक साथ रहते हैं और एक साथ कार्य करते हैं और एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा न करते हुए एक दूसरे के लिए पूरक साबित होती है, और स्थानीय कलीसिया को सहारा देती है और समृद्ध बनाती है।
- कुछ लोगों की बुलाहट और सेवकाई के कारण उन्हें संसार में जाना होगा या मसीह की सर्वव्यापी मण्डली में जाना होगा, जबकि अन्य लोगों को उनकी स्थानीय कलीसिया में सेवा करने के लिए बुलाया गया है।

कलीसियाई रचना के विभिन्न स्वरूप

पुरोहिती रचना

- मेनलाईन पारम्परिक फिरके, उदाहरण, एंग्लीकन, मेथोडिस्ट, बैप्टिस्ट आदि।

- पासबान और सर्वसामान्य विश्वासी के बीच अंतर। अधिकतर कार्य पासबान द्वारा किया जाता है।
- स्थानीय धर्मप्रांत के पासबान उनके ऊपर नियुक्त पुरोहित रचना के अधीन रहते हैं।
- स्थानीय धर्मप्रांत के पासबानों का अन्य धर्मप्रांतों में तबादला होता रहता है।
- सामान्य तौर पर एक तीहरी रचना होती हैः बिशप, पासबान, डीकन।

प्राचीन प्रणाली

- प्राचीनों की अगुवाई से चलता है।
- उत्तम स्थानीय कलीसिया की स्थापना में इन्होंने काफी सफलता दिखाई है।
- सहकारितापूर्ण नेतृत्व, कुछ मामलों में, एकमात्र दर्शन प्रदान करने में मुश्किल खड़ी कर सकता है, जिस कारण उन्नति धीमी हो जाती है या रूक जाती है। परंतु, जब एकता और सर्वसम्मति होती है, तब दल के अगुवे सामर्थी बनते हैं।

स्वतंत्र स्थानीय कलीसिया

- पासबानों की दल के साथ व्यक्तिगत पासबान की अगुवाई में संचालित।
- दर्शन, सृजनात्मकता और उन्नति के लिए काफी जगह।
- परंतु, तानाशाही अगुवे का खतरा, जो कि बहुत हानिकारक हो सकता है।
- कुछ मामलों में उचित उत्तराधिकार का अभाव, जो वर्षों के परिश्रम को बर्बाद कर सकता है।

कलीसियाओं का नेटवर्क

- असेम्ब्लीज़ ऑफ गॉड, विनयार्ड, न्यू लाईफ चर्चेस, अन्य कई।

- प्रत्येक नेटवर्क भिन्न-भिन्न तरीके से संगठित होता है। कुल मिलाकर एक उपयुक्त नमूना।
- कुछ मामलों में, बहुत अधिक नियंत्रण, गलत उपयोग का खतरा होता है, नेटवर्क के अंतर्गत कार्यरत् कलीसियाओं में प्रतिस्पर्धा।

अपॉस्टालिक नेटवर्क

- प्रेरित से सम्बंधित कलीसियाओं का नेटवर्क।
- एकमात्र दर्शन को बहुगुणित करने और भौगोलिक दृष्टि से ध्यान केंद्रित करने का लाभ होता है।
- मनुष्य पर केंद्रित होने का खतरा।
- सत्तावादी होने का खतरा।
- कुछ मामलों में, वाचा के रिश्ते पर ज़ोर (पहले से हमारे पास मसीह में जो है उसको छोड़), कल्ट (सम्प्रदाय) की ओर झुकाव।

घरेलु क्लीसियाए

- बड़ी कलीसियाओं से असंतोष (या) बड़े पैमाने पर इकट्ठा न हो पाना।
- निकट रिश्ते, निगरानी, और परवरिश के लाभ प्राप्त होते हैं।
- यदि देखरेख करने वाले विशाल नेटवर्कस् से जुड़े न हो तो उत्तरदायित्व और सहायता का अभाव होता है। परंतु कई घरेलु क्लीसियाए की देखरेख करने के लिए बहुत प्रयासों की ज़रूरत होती है।
- सीमित संसाधनों के अभाव में विशाल संदर्भ में कार्य न कर पाना और बड़े पैमाने पर समाज पर प्रभाव न डाल पाना।

सेल आधारित कलीसियाएं

- बड़ी बढ़ती हुई मण्डलियों के विषय में अत्यंत सफल और फिर भी समुदाय की प्रबल भावना बनाए रखती हैं। शायद सर्वोत्तम रचनाओं में से एक।

- आवश्यक मानसिकता में भारी परिवर्तन के कारण, या कार्य-संस्कृति के कारण कुछ संदर्भों में इसे कार्यरूप में लाना कठिन होता है।
- विच्छिन्न समूहों के निर्माण होने और मुख्य मण्डली से अलग हो जाने के खतरे के कारण कुछ पासबान इस प्रकार की रचना नहीं अपनाना चाहते।

मेगा चर्चेस

- सफल कलीसियाएं जल्द ही 2000 से अधिक संख्या वाली मण्डलियों के साथ मेगा चर्चेस में बदल जाती हैं (डिनॉमिनेशनल या स्वतंत्र कलीसियाएं हो सकती हैं)।
- मेगा चर्चेस में सामान्य तत्वः वे मज़बूत शिक्षक/उपदेशक की अगुवाई में चलते हैं, जो एक मज़बूत दार्शनिक और संगठनात्मक तौर पर कुशल होता है। पासबानीय तत्व पर कम अमल किया जाता है, और वरिष्ठ अगुवे को कम महत्वपूर्ण होता है और अक्सर टीम का प्रतिनिधित्व दिया जाता है।
- समाज और राष्ट्र पर मुख्य प्रभाव डाल सकते हैं। संचार माध्यम का उपयोग कर सकते हैं, राष्ट्र का ध्यान अपनी ओर खींच सकते हैं, स्थानीय और विश्व मिशन के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं।
- मेगा चर्चेस बुरे या खतरनाक नहीं होते। इन्हीं समस्याओं से छोटी मण्डलियां और मेगा चर्चेस भी प्रभावित होते हैं (उदाहरण, अगुवे का नैतिक पतन, पैसों का दुरूपयोग आदि) परंतु, उनकी दृष्यमानता के कारण मेगा चर्चेस की किसी भी प्रकार की भूल/समस्या मिडिया का ध्यान आकर्षित करती है और लोगों की आलोचना का शिकार होते हैं, जबकि छोटी मण्डलियों की गलतियां लोगों के ध्यान में नहीं आती।

मल्टीसाईट चर्चेस (विभिन्न स्थानों में स्थित)

- एक ही शहर के विभिन्न भागों में कार्यरत् एक ही कलीसिया। कुछ दूसरे शहरों में भी होती हैं।

- कई लोगों को भौगोलिक दृष्टि से सुविधा प्राप्त होती है।
- अधिक लोगों की सेवा का अवसर प्रदान करती है, और अगुवे तैयार होते हैं।
- मण्डली मिशन कार्य में आसानी से कार्यरत् हो सकती है—सुस्थापित स्थानीय कलीसियाई मॉडल के माध्यम से और कलीसियाओं का रोपण करने के द्वारा।
- साझा संसाधन, साझा शिक्षक का लाभ प्रदान करती है।

हर प्रकार के कलीसियाई मॉडल में गुण अवगुण, कमियां और घटियां होती हैं। कोई सिद्ध रचना नहीं है। कलीसियाई रचना का जो भी स्वरूप हो, हमें सावधान रहना है और—उसी तरह हमें सम्भावनीय खतरों के विषय में भी सावधान रहना है और उनके विरोध में खुद की रक्षा करना है।

कलीसियाई संरचना में सुधार

नई मश्कों की आवश्यकता

लूका 5:37,38
37 "और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएंगी।
38 "परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिए।

प्रभु यीशु ने यहां पर सरल परंतु महत्वपूर्ण सत्य प्रस्तुत किया हैः नये दाखरस के लिए नई मशकें आवश्यक होती हैं।

सन 1400 से, मसीह की देह में परमेश्वर की बेदारी के तीन मुख्य पुनर्स्थापक कार्य देखे हैं:

- ईश्वरविज्ञान में सुधार जिसका आरम्भ मार्टिन लूथर से हुआ। इसने हमारे परमेश्वर के विषय के ज्ञान को बदल दिया।
- आत्मिकता में सुधार जिसका आरम्भ 18वीं सदी में हुआ। इसने परमेश्वर के हमारे अनुभव को बदल दिया।

- रचना में सुधार। पिछले 30 वर्षों से। हम एक दूसरे की और संसार की कैसे सेवा करते हैं इसमें इसके द्वारा बदलाव आया।

जैसे जैसे प्रभु यीशु मसीह अपनी कलीसिया को बनाता है और उसे परिपक्वता के स्थान में लाता है, वैसे वैसे हमें खुद को अनुकूल बनाना है–हमारी स्थानीय कलीसियाई प्रशासन और रचना जो कुछ वह कर रहा है, उसका अनुसरण करने पाए।

संतों को तैयार करना

मसीह का उद्देश्य यह है कि हर एक विश्वासी सेवा का काम करे (इफिसियों 4:11,12)। कलीसियाई प्रशासन और रचना की अधिकतर पुरानी व्यवस्था (मशक) इसकी अनुमति नहीं दे पाई। कलीसियाई रचना के सुधार में जिसे हम देख रहे हैं, कलीसियाई सेवकाई करने का एक नया तरीका, जिसमें प्रत्येक विश्वासी को सेवा के कार्य में सहभागी किया जा सकता है, और कलीसिया एक ब्लू प्रिंट में विकसित होती है जो मसीह ने हमें पवित्र शास्त्र में दिया है।

हमारी स्थानीय कलीसियाओं की मशकें (प्रशासन और रचना), जैसे जैसे हम पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने को प्राप्त करते हैं और उसके राज्य को बढ़ाते हैं, स्वयं भी उन्नति और विस्तार के लिए तैयार खड़े रहें। इसका अर्थ यह है कि जैसे जैसे स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के साथ यात्रा करती है, और जैसे जैसे परमेश्वर विभिन्न समयों में विभिन्न व्यवहार करता है, हमारी मशकों (प्रशासन और रचना) को इनके अनुकूल बनने की ज़रूरत होगी।

परमेश्वर के रूपरेखा–ब्लू प्रिन्ट का अनुसरण करना

जैसा कि हम अगले भाग में देखेंगे, पवित्र शास्त्र स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर के मानचित्र (रुपरेशा) को प्रगट करता है। स्थानीय कलीसिया या डिनॉमिनेशन चाहे जिस स्वरूप, प्रशासन और रचना का अनुसरण करना चाहे, हमारा मुख्य उद्देश्य परमेश्वर ने कलीसिया के लिए जो उद्देश्य रखा है उसे पूरा करना होना चाहिए। अगले भाग में हम जिस रुपरेशा का अध्ययन करेंगे, वह हमारे लिए इस बात को प्रगट करता है।

संस्थागत, गैर-संस्थागत, स्वतंत्र और प्रेरिताई की कलीसिया

स्थानीय कलीसियाओं की रचना/संलग्नता चाहे जो हो, हमें संस्थाओं का आदर करना और उनके साथ कार्य करना सीखना चाहिए।

हमें लोगों के डिनॉमिनेशन या अन्य कलीसियाई संलग्नता के कारण लोगों को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। वास्तविक प्रश्न है, क्या वे वास्तव में परमेश्वर के राज्य का भाग है और क्या वे उस में चल रहे हैं?

हमें हर एक कलीसिया या डिनॉमिनेशन को प्रोत्साहित करना है कि वे स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर के रुपरेशा का अनुसरण करें।

4

उन्नति और विकास की अवस्थाएं

जिस प्रकार मनुष्य नन्हें बालक से दुड़की चाल चलने वाला बच्चा, और उसके बाद खेलने वाला बच्चा, उसके बाद नवयुवक, उसके बाद जवान, और उसके बाद प्रौढ़ मनुष्य बनता है और उसके बाद अपनी वृद्धावस्था में प्रवेश करता है, उसी तरह स्थानीय कलीसियाओं को उन्नति और विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

हम यरूशलेम की कलीसिया और अन्ताकिया की कलीसिया का अध्ययन करेंगे और देखेंगे कि जैसे जैसे वे बढ़ती गई, वैसे वैसे इन स्थानीय कलीसियाओं में कौन से पड़ाव आए, और उसके बाद स्थानीय कलीसियाओं के लिए आम तौर पर मान्य उन्नति के प्रतिमान की हम चर्चा करेंगे।

केस स्टडीः यरूशलेम की कलीसिया

- पिन्तेकुस्त के पर्व के दौरान जन्मी।
- सामर्थ के साथ आरम्भ हुई, चिन्ह और चमत्कारों के द्वारा बड़ी तेज़ी से बढ़ती गई।
- घर-घर में छोटे समुहों की सभाओं में इकट्ठा होने पर ज़ोर, वे आराधनालय में भी एक साथ मिलते थे।
- प्रारम्भ में कलीसिया में होने वाली हर एक बात प्रेरितों द्वारा की जाती थी–जबकि स्थानीय कलीसिया में हज़ारों लोग थे।
- बाद में भोजन के बटवारे के लिए डीकनों को नियुक्त किया गया। ये डीकन आत्मा में मज़बूत थे और सेवकाई में शामिल थे।
- सताव के कारण लोगों की संख्या बढ़ती गई।

- आरम्भ में, भले ही अन्य विश्वासी और डीकन तितर-बितर हो गए, लेकिन प्रेरित यरूशलेम में बने रहे।
- कुछ बढ़ौत्तरी तो पवित्र आत्मा के द्वारा की गई।
- कुछ वर्षों के बाद, यरूशलेम की कलीसिया में प्राचीन थे जो अगुवे भी थे।
- भविष्यद्वक्ता सेवकाई दल अन्य स्थानों में सेवा करने हेतु यरूशलेम की कलीसिया द्वारा भेजी गई।
- आरम्भ में तेज़ी से होने वाली बढ़ती संख्या को वे सम्भाल पा रहे थे। तेज़ी से बढ़ने वाली संख्या के दौरान, छोटे समूहों की सभाओं का प्रभावी रूप से उपयोग किया गया।
- विश्वासियों को दृढ़ करने हेतु सामर्थी चिन्ह और चमत्कार एवं मज़बूत शिक्षा के मध्य उत्तम संतुलन बनाया गया।
- सामुहिक और सांझे की वस्तुओं की मज़बूत भावना स्थापित की गई।
- आंतरिक संघर्षों को उत्तम रीति से सुलझाया गया।
- मूल स्थान को मज़बूत बनाए रखने के लिए प्रेरित यरूशलेम में बने रहे।
- प्रेरितों और प्राचीनों ने सैद्धांतिक–शिक्षा के विषयों का उत्तम रीति से सुलझाया।
- दूसरे और तीसरे स्तर के अगुवों को तैयार करने में थोड़े धीमे दिखाई दिए। शायद मुख्य अगुवों पर (प्रेरितों) पर ज्यादा ध्यान था।
- नई कलीसियाओं की स्थापना में प्रेरित प्रत्यक्ष रूप से सहभागी होते हुए नहीं दिखाई देते।

केस स्टडीः अंताकिया की कलीसिया

- सताव के कारण तितर-बितर हुए विश्वासियों द्वारा आरम्भ की गई।

- अलौकिक प्रदर्शनों द्वारा स्थापित हुई।
- यरूशलेम से भेजे गए अगुवे को स्वीकार किया गया (बरनबास) ताकि वे दृढ़ हो सकें। बरनबास अंताकिया की कलीसिया का पहला पासबान हुआ।
- उन्हें दृढ़ करने हेतु बरनबास द्वारा लाए गए दूसरे अगुवे को उन्होंने स्वीकार किया।
- शिक्षा के द्वारा नये विश्वासियों को शिष्य बनाया गया।
- मसीह के नाम से पहचाने जाने लगे। विश्वासियों को सर्वप्रथम अंताकिया में मसीही कहा गया।
- भविष्यद्वक्ता की सेवकाई प्राप्त की (यरूशलेम से आया हुआ अगबूस)। उन्होंने दूसरी सेवकाइयों को कलीसिया में आने की और कलीसिया के जीवन में योगदान देने की अनुमति दी।
- सामाजिक कार्य में सहभागी हुए—यरूशलेम की कलीसिया को सहायता भेजी।
- उन्होंने दो वर्ष में नये और अगुवों का उदय होते हुए और सेवकाई की टीमों को बढ़ते हुए देखा।
- अगुवे एक दूसरे के साथ संगति करते थे और प्रभु की सेवा करते थे।
- मिशन कार्यों में सहभागी थे—उन्होंने नवीन कलीसिया की स्थापना के लिए प्रेरितों की टीमों को भेजा। उन्होंने अपने वरिष्ठ अगुवों को प्रेरित की सेवा के लिए मुक्त किया।
- प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं और मिशनरी टीमों के लिए एक प्रेरिताई का मिशन स्थान बन गया (प्रेरितों के काम 15:36)।
- दो प्रमुख अगुवों, पौलुस और बरनबास के बीच उत्पन्न हुए विवाद के कारण ये दोनों अगुवे एक दूसरे से न केवल अलग हो गए, परंतु शायद अन्ताकिया की कलीसिया से भी दूर हो गए (प्रेरितों के काम

15:35-41)। हम बहुत समय तक उनके विषय में अन्ताकिया को लौटते हुए नहीं सुनते, पौलुस बहुत समय बाद इस स्थान को भेंट देता है (प्रेरितों के काम 18:22)। ऐसा लगता है कि कलीसिया आगे बढ़ती चली गई, परंतु उसके दो मुख्य अगुवों के बगैर। उसके बाद अन्ताकिया की कलीसिया के विषय में बहुत अधिक नहीं कहा गया है।

उन्नति की अवस्थाएं

स्थानीय कलीसिया को निष्क्रिय नहीं होना चाहिए, अन्यथा वह सब प्रकार की गलत बातों के पनपने का स्थान बन जाएगी, जिस प्रकार रुका हुआ जल कई प्रकार के रोगों के उत्पन्न होने का कारण बनता है।

कलीसिया को सामान्य तौर पर उन्नति और विकास के कई स्तरों से होकर गुजरना पड़ता है, यदि वह ऊंचे क्षेत्र में उन्नति करना जारी रखती है तो। अपनी पुस्तक 'अपॉस्टॉलिक स्ट्रॅटेजिज़ ॲफेक्टिंग नेशन्स' डॉ. जोनाथन डेविड ने उन विभिन्न अवस्थाओं की रूपरेखा तैयार की है जिसमें से सामान्य तौर पर कलीसिया गुजरती है। यहां पर हमने कुछ मुख्य बातों को प्रस्तुत किया है।

नई कलीसियाओं का आरम्भ करने की अवस्था

- कलीसिया का रोपण करने वाली टीम और अगुवे ऐसे स्थान के लिए प्रतिबद्ध होते हैं जहां पर प्रभु ने उन्हें भेजा है।
- प्रार्थना, मध्यस्थी, सुसमाचार प्रचार, जहां उन्हें सेवकाई करना है उस समाज में पुल तैयार करना आदि के द्वारा प्रारम्भिक कार्य करना।
- यह बुनियाद डालने वाली अवस्था होती है। आप ऊपर आने के बजाए, नीचे जाते हैं। परंतु भविष्य की उन्नति के लिए एक मजबूत और गहरी बुनियाद आवश्यक है। विशिष्ट तौर पर, आप जितना अधिक ऊंचा निर्माण करेंगे, उतनी गहराई से आपको बुनियाद डालने के लिए खोदना होगा।

प्रशासनिक/संगठनात्मक/रचनात्मक अवस्था

- जैसे जैसे कलीसिया बढ़ना आरम्भ होती है, वैसे वैसे लोगों की सेवा करने हेतु सुपरिभाषित प्रणालियों और प्रतिभाओं को स्थापित करें।
- विभिन्न सेवाओं के लिए भूमिकाओं और कार्यों को नियुक्त करना जो प्रभु आपके मध्य में भेजता है। आपकी सेवकाई टीम के लिए ईश्वरीय मानकों और निर्देशों को स्थापित करना ताकि आने वाले नए सदस्य इन मूल्यों का पालन करें।
- संख्या में बढ़ने के बाद भी जो आप करेंगे उसे अभी करें जब आपके पास पचास लोग होते हैं, तभी से आप अपनी प्रक्रिया को स्थापित करें, जो आप उस समय में भी बनाए रखेंगे जब आपके पास 500 या 5000 लोग होंगे।
- आत्मा के द्वारा एक या दो तरह से नवीन सेवकाइयों का निर्माण किया जा सकता हैः अ. जो कुछ किया जाना चाहिए उसका प्रभु दर्शन देता है और जब आप उस दर्शन को घोषित करते हैं तब परमेश्वर ऐसे लोगों को खड़ा करता है जो उस दर्शन में प्रवेश करेंगे और उसे पूरा करेंगे। ब. प्रभु कुछ गुणों और बुलाहटों के साथ लोगों को खड़ा करेगा या भेजेगा और इन्हें पहचानने और उन्हें कार्य करने के लिए आप अवसर दें, और एक नई सेवकाई (सेवकाइयां) जन्म लेगी।

पासबानीय टीम अवस्था/टीम सेवकाई/सीनियर पासबान अवस्था

- अगुवों की ऐसी टीम तैयार करें जो सेवकाई के विभिन्न कार्यों को पूरा सकें।
- संस्थापक पासबान वरिष्ठ पासबान की भूमिका अपनाता है और उन्नति और विस्तार के लिए सर्वकश दर्शन और अभिदिशा प्रदान करता है।
- परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन को समझने वाले और उस दर्शन के प्रति समर्पित अगुवों को तैयार करने हेतु लगातार अवसर और स्थान निर्माण करें। नए अगुवों की परवरिश के लिए समय व्यतीत करें।

- जितना अधिक विश्वास आप करेंगे, उतने अधिक आपके अगुवे विश्वासयोग्य बनेंगे।

तैयार करने वाली अवस्था/निर्माण अवस्था/प्रशिक्षक अवस्था

- संतों को तैयार करने पर ध्यान दें ताकि संपूर्ण कलीसिया सेवकाई में सक्रिय हों। अब न केवल अगुवे सेवकाई करते हैं, परंतु उसमें हर कोई सहभागी होता है।
- अलौकिक सेवकाई पर ज़ोर और प्रत्येक को चिन्ह और चमत्कारों, और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई में आगे बढ़ना।
- वरिष्ठ पासबान सेवकों को तैयार करने और वरदानों को प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है, और अधिकतर पासबानीय/निगरानी की सेवकाई पासबान की टीम के अन्य लोगों द्वारा प्रदान की जाती है।
- कलीसिया समाज में प्रवेश करने लगती है और मिशन के लिए दर्शन प्राप्त करती है।
- विश्वासी एक दूसरे की और समाज के सेवा करने लगते हैं।

प्रेरिताई के कार्य की अवस्था

- प्रेरिताई की मानसिकता स्थापित करें। आंतरिक देखभाल पर ध्यान केंद्रित करने के बजाए बाहर पर ध्यान केंद्रित। पवित्रजनों को तैयार करने की सेवकाई जारी रखने के लिए बाकी सारी प्रक्रियाएं शुरू।
- वरिष्ठ पासबान और अन्य लोग बाहर जाने के लिए स्वतंत्र हैं, और परमेश्वर के राज्य के लिए नये स्थानों को प्राप्त करते हैं।
- अपने क्षेत्र से परे कलीसिया सक्रिय रूप से दूसरी कलीसियाओं को जन्म देती है।
- विश्वासियों में प्रेरित की मानसिकता है और वे त्याग करने के लिए, नये स्थानों में जाने के लिए और अन्य क्षेत्रों में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिए तैयार हैं।

- स्थानीय कलीसिया आत्मिक बालगृह बनने के बजाए 'मिशन स्थान' बन जाता है।

विभिन्न अवस्थाओं से मण्डली की अगुवाई करना

पासबान होने के नाते विभिन्न परिर्वतनों के द्वारा हमारी मण्डलियों (स्थानीय कलीसिया) हमें बहुत बुद्धि, अभिषेक और अनुग्रह की आवश्यकता है। परिवर्तन ज़रूरी है। तभी कलीसिया बढ़ सकती है और परिपक्व हो सकती है। पासबान/वरिष्ठ अगुवों के नाते हमें बदलना होगा, उसी प्रकार मंडली को भी। अगुवे होने के नाते हमें विशुद्ध रूप से चरवाहे के रूप में निगरानी करने वालों की भूमिका से पेरित के रूप में अगुवाई करने की ओर बढ़ना है। हमारी मंडली को मात्र देखभाल पाने की उम्मीद से आने वाले लोगों से आगे बढ़कर पेरिताई के अभिषेक वाले लोग बनना है जिनमें बाहर जाकर परमेश्वर के राज्य के लिए नई भूमि पर कैंज़ा करने हेतु आक्रमक और अग्रणी होने का भाव रखना है। इन परिवर्तनों से गुजरना आसान नहीं है, परंतु यदि स्थानीय कलीसिया को सचमुच समाज में नमक और ज्योति बनना है, तो यह आवश्यक है।

यहां पर दो सूचक दिए गए हैं जो इस यात्रा को करते समय हमारी सहायता करेंगे।

लोगों को निरंतर आगे बढ़ाते रहना

लोगों को निर्देश करें कि उन्हें कहा जाना है। जहां पर हैं वहां पर ही हम आरामदायक महसूस करते हैं और वही पर स्थित होना पसंद करते हैं। परंतु, उन्नति करने के लिए हमें यहां और अभी को छोड़ने के लिए तैयार रहना होगा और आगे क्या है इसकी ओर बढ़ना होगा। अगुवे होने के नाते हमें लोगों को यह निरंतर स्मरण दिलाना है कि हमें परमेश्वर में नए स्तरों और नए क्षेत्रों की ओर आगे बढ़ना है ताकि हम उनमें प्रवेश कर सकें।

दो स्तरों के मध्य पुल बनाना (सम्बंध)

लोग जहां पर है वहां पर उनकी सेवा करें और उन्हें अगले स्तर की ओर ले जाएं। हमें उद्देश्यपूर्ण ढंग से आत्मिक रीति से लोगों को अगले स्तर

की ओर ले जाना चाहिए। इसलिए हमारी शिक्षा और प्रचार उनकी आत्मिक क्षमता को बढ़ाए पाएं। हम शिशु को केवल दूध पिलाते हैं। परंतु फिर धीरे धीरे हम उसे ठोस भोजन देते हैं, और उसके बाद और ठोस, इत्यादि। इसी तरह, हमें परमेश्वर के लोगों को गहरे सत्य की ओर, आत्मा में ऊंचे क्षेत्र की ओर ले जाना है, आराधना, प्रार्थना और मध्यस्थी में ऊंचे क्षेत्रों की ओर ले जाना है, और परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिए और आक्रामक अभियान में। हम एक सीढ़ी से, दसवीं सीढ़ी की ओर नहीं बढ़ सकते। इसलिए हम धीरे धीरे, स्थिरता के साथ सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हैं।

परिवर्तन की ओर अगुवाई

जब हम जानते हैं कि अब परिवर्तन का समय आ गया, तब हमें मण्डली को परिवर्तन की ओर ले जाने में सहायता करने हेतु अगुवों के रूप में कदम बढ़ाना चाहिए। परिवर्तन की स्थिति से गुजरते हुए हमें बहुत धीरज का उपयोग करना होगा। हमें मण्डली के विभिन्न प्रकार के लोगों से विभिन्न प्रतिक्रियाओं का सामना करना होगा। कभी कभी लोगों को बदलाव अच्छा नहीं लगता। कभी कभी लोग बदलाव की जरूरत नहीं महसूस करते। कभी कभी लोगों को महसूस होता है कि वे बदलाव के लिए तैयार नहीं है। हमें धीरज के साथ उन्हें परमेश्वर के वचन से दिखाना है कि परमेश्वर कहा चाहता है कि उसके लोग जाएं और वह क्या चाहता है कि उसके लोग बनें? लोगों को यह देखने में सहायता करें कि हम परमेश्वर के उद्देश्यों में बढ़ रहे हैं। परिवर्तन के लिए जोखिम उठानी पड़ती है। लोगों को बदलाव के लिए तैयार होने में सहायता करें।

सही समय में सही स्थान में सही लोग

कभी कभी बदलाव हो इसलिए हमें किसी सेवा क्षेत्र में अगुवों को बदलने की ज़रूरत पड़ती है। कभी कभी वर्तमान अगुवा थक चुका होता है और सारी बातों को अगले स्तर पर ले जाने के लिए अयोग्य या अनिच्छुक होता है। हम में इस बात को पहचानने की योग्यता होना चाहिए और बड़े अनुग्रह और ज्ञान के साथ उस सेवाक्षेत्र के लिए जिम्मेदारी उठाने हेतु नए अगुवे को तैयार करें, ताकि सारी बातें नए स्तर की ओर बढ़ सकें।

नये स्तरों की चुनौतियों के अनुसार बदलाव लाना

जितनी बार आप उन्नति के नए स्तर में परिवर्तन की ओर बढ़ेंगे, उतनी नई चुनौतियां होंगी। तैयार रहें। यदि आप अगुवे के रूप में खुद को तैयार कर रहे हैं, तो आप निश्चित रूप से इन चुनौतियों का सामना करने खड़े रह सकेंगे। परमेश्वर की बुद्धि को प्राप्त करें, उसी तरह अन्य परिपक्व और अनुभवी परमेश्वर के सेवकों से परामर्श लें। उदाहरण के तौर पर, यदि आप अपनी कलीसिया को और भविष्यात्मक बनने के लिए, परमेश्वर की ओर से सुनने के लिए, जो कुछ परमेश्वर कह रहा है उसे करने और बोलने के लिए आगे ले चलते हैं, तो हमें कुछ ऐसे लोग मिल सकते हैं जो इस सत्य के साथ साकार रूप से आगे बढ़ सके। हो सकता है कि वे हर एक बात के लिए "परमेश्वर ने मुझे बताया" इन शब्दों का प्रयोग करें, वचन से या ईश्वरीय परामर्श से निर्देश सुनने के लिए अनिच्छुक हो। हो सकता है कि लोग भविष्यद्वाणी को न परखे और मुश्किल में पड़ जाएं। इस प्रकार इस परिवर्तन के साथ चुनौतियां होंगी। परंतु, ये बातें हमें भविष्यात्मक के क्षेत्र में बढ़ने से, निश्चित रूप से परमेश्वर की सुनना सीखने से, और जो कुछ आत्मा कह रहा है उसके साथ आगे बढ़ने से न रोकने पाए।

कुल मिलाकर, उन्नति और विकास के विभिन्न स्तरों से स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करना चुनौतीपूर्ण है, परंतु रोमांचकारी भी है। पीछे मुड़कर हम कहां थे यह देखना, और परमेश्वर ने हमें कहां लाया है यह देखना हमेशा हमें परमेश्वर के प्रति धन्यवाद, और भययुक्त आदर से भर देता है! और उसके बाद भविष्य की कल्पना करना और उसकी ओर बढ़ना, यह अपने आप में बड़ा साहस है।

5

मज़बूत स्थानीय कलीसिया कैसे बनती है?

बड़ी मंडली बनने पर ध्यान देने से पहले, हमें मजबूत स्थानीय कलीसिया बनने पर ध्यान देना चाहिए। हमें स्थानीय कलीसियाई मंडली को मजबूत बनाना चाहिए। मजबूत स्थानीय मंडली स्वाभाविक तौर पर बढ़ती जाएगी और अपने समाज पर, और उसेस परे क्षेत्रों में प्रभाव डालेगी। यदि हमारे पास केवल बड़ी संख्या में लोग हैं, जो बालक ही बने हुए हैं, तब तो हमारे पास केवल एक बड़ शिशुगृह है जिसे निरंतर उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। परंतु, यदि हमारे पास मजबूत लोगों की मंडली है, तो वे बाहर जाकर परमेश्वर के राज्य के लिए बहुत कुछ करेंगे। हम परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने वाली एक मजबूत सेना बन जाते हैं।

एक मजबूत स्थानीय कलीसिया की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं यहां दी गई है।

कलीसिया जहां परमेश्वर द्वारा दिए गए दर्शन के साथ मज़बूत नेतृत्व है

परमेश्वर स्थानीय कलीसिया में और स्थानीय कलीसिया के द्वारा क्या करवाना चाहता है, और परमेश्वर स्थानीय कलीसिया को क्या बनाना चाहता है इसका परमेश्वर द्वारा दिया गया दर्शन होना महत्वपूर्ण है। इस दर्शन के बगैर, हम निष्फल है (नीतिवचन 29:18)। हम गोल गोल घुमते जाते हैं, और कहां जाना है यह न जानते हुए निरूद्देश्य भटकते रहते हैं।

दर्शन का आरंभ अगुवे से होता है। यदि अगुवे के पास स्पष्ट दर्शन न हो, तब मानो एक अंधा दूसरे अंधे की अगुवाई करता है। *"और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे"* (मत्ती 15:14)। अगुवा

होने के नाते हमें अपना दर्शन सपष्ट रूप से लोगों को निवेदन करना है ताकि लोग जान सकें कि परमेश्वर हम सब की कहा अगुवाई कर रहा है, खुद उस दर्शन के साथ समान्तर बना लें और उसकी ओर कार्य करना आरंभ करें। हमें दर्शन को बार बार दोहराना है क्योंकि लोग उसे भूल जाते हैं।

परमेश्वर की ओर से स्पष्ट दर्शन के अलावा, हमें मजबूत नेतृत्व की भी आवश्यकता है, जिसके पास साहस, यत्नशीलता, और उस दर्शन को पूरा करने की ओर लोगों की अगुवाई करने हेतु अनुशासन है। अगुवे महत्वपूर्ण है। यदि चरवाहा चुक जाता है, तो भेड़ें तितर बितर हो जाती है (जकर्याह 13:7)। एक अच्छा, धर्मी अगुवा लोगों को उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उत्तम की ओर ले जाता है, जबकि गलत अगुवा लोगों को विनाश की ओर ले जाता है। *"क्योंकि जो इन लोगों की अगुवाई करते हैं वे इनको भटका देते हैं, और जिनकी अगुवाई होती है वे नाश हो जाते हैं"* (यशायाह 9:16)।

कलीसिया जहां वचन और आत्मा पर संतुलित ज़ोर दिया जाता है

हमें परमेश्वर के वचन से और पवित्र आत्मा के कार्य से बल प्राप्त होता है। परमेश्वर का वचन हमारी उन्नति करता है (प्रेरितों के काम 20:32)। परमेश्वर हमारे भीतरी मनुष्यत्व में अपने आत्मा के द्वारा हमें बल देता है (इफिसियों 3:16)। हमें स्थिरता के साथ परमेश्वर के वचन में और पवित्र आत्मा के साथ उनके रिश्ते में लोगों का परिपोषण करने की ज़रूरत है।

जब हम ऐसा करते हैं, तब पांच लक्ष्य क्षेत्र होते हैं जहां पर हमें स्थानीय मंडली को मजबूत बनाना है। (1) सुसमाचार प्रचार। (2) शिष्यता। (3) प्रार्थना और आराधना (4) सहभागिता। और 5. सेवकाई के लिए सुसज्जित करना।

1. सुसमाचार प्रचार

हम सुसमाचार बांटने के लिए और दूसरों को प्रभु यीशु मसीह के विश्वास में जीतने के लिए परमेश्वर के लोगों को तैयार करते हैं। स्थानीय कलीसिया को निरंतर कई तरह से उद्धार न पाए हुए लोगों को सुसमाचार सुनाना है।

2. शिष्यता

शिष्य वह होता है जिसने चरित्र, आचरण और सेवा में मसीह के सदृश्य बनने की शिक्षा पाई है। इसलिए हम लोगों को सीखाते हैं कि प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर के वचन के अनुसार कैसे जीवन बिताएं, हमें जीवन, विश्वास और आचरण के सभी क्षेत्रों को संबोधित करना है।

3. प्रार्थना और आराधना

मंडली होने के नाते, हमें निरंतर प्रार्थना और आराधना में बढ़ते जाना है। जब हम इकट्ठा होते हैं, प्रार्थना और आराधना आत्मिक सेवकाई का वातावरण तैयार करती है। परमेश्वर आराधना और प्रार्थना करने वाली मंडली के मध्य बातें करता है। प्रार्थना और आराधना के द्वारा, हम अपने शहर के आत्मिक वातावरण को बदल देते हैं।

4. संगति

संगति मात्र प्रतिदिन के जीवन में उस रिश्ते को जीना है जो परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में हैं। हम एक ही परिवार के अंग है और हम एक दूसरे का ध्यान रखते हुए सच्चे व्यवहारिक रीति से इसके अनुसार जीवन बिताते हैं, एक दूसरे को सहारा देते हैं, सहायकता करते हैं और परवरिश करते हैं।

5. सेवा के लिए सुसज्जित करना

प्रत्येक सदस्य को अपनी बुलाहट पूरा करने हेतु पूर्ण रूप से सुसज्जित होना है, सक्रिय बनना है और स्वतंत्र होना है। हम विश्वासियों की यह समझने में मदद करने के द्वारा आरंभ करते हैं कि हर एक का मसीह की देह में एक स्थान और कर्तव्य है। हर एक विश्वासी एक सेवक है। फिर हम उन्हें यह दिखाते हैं कि वे अपने गुणों और वरदानों को खोज निकालें, और उन्हें कलीसिया के भीतर और बाहर सेवा करने के अवसर प्रदान करें।

हमें पवित्र आत्मा के अलौकिक कार्य में विश्वासियों को तैयार करना है। हमें विश्वासियों को प्रोत्साहन देना है कि वे समाज पर और अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव डाले। हमें उन्हें सशक्त बनाने की और यह करने हेतु उन्हें मुक्त करने की ज़रूरत है। हमें सेवकों को बाहर भेजना है और जो कुछ परमेश्वर हमारे मध्य में कर रहा है उसे फिर उत्पन्न करना है।

मंच सेवकाई के लिए तैयारी करना

उपर्युक्त पांच क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए, हमें अपने मंच की सेवकाई को गंभीरता के साथ ग्रहण करना है। परमेश्वर के वचन की सेवा करने और पवित्र आत्मा के कार्य के लिए जो अवसर हमें मिलता है, उसे हमें एक निश्चित उद्देश्य से पूरा करना है। हम केवल रविवार की आराधना या साप्ताहिक आराधना में अपना समय पूरा नहीं कर रहे हैं जितनी बार हम सेवा करते हैं, हम इन पांच क्षेत्रों में से एक में लोगों की परवरिश कर रहे हैं।

मैं तीन क्षेत्रों में परमेश्वर के वचन की शिक्षा और प्रचार के मध्य संतुलन बनाना चाहूंगाः

- मसीही जीवनः लोगों को सिखाना कि वे मसीही जीवन कैसे जिएं। उदाहरण के तौर पर प्रार्थना के अनुशासन, परमेश्वर का वचन पढ़ने, विश्वास की चाल, अधिकार हम मसीह में कौन है और इसके समान अन्य विषयों के संबंध में अपने अनुशासन का विकास करना।

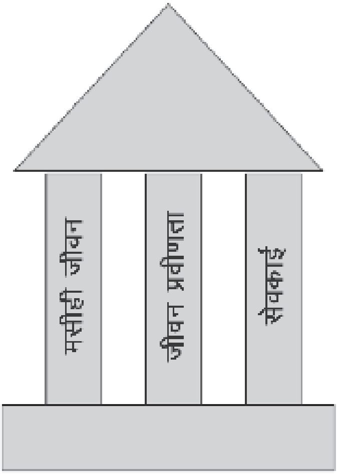

- जीवन कौशलः लोगों को यह सिखाना कि वे अपने प्रतिदिन के जीवनों में परमेश्वर के वचन को कैसे जिएं, स्कूल, कॉलेज, निर्णय लेना, विवाह, करिअर, परिवार, पैसों का व्यवहार और अन्य विषय।

- सेवकाईः लोगों को यह सिखाना कि वे परमेश्वर के अभिषेक और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ कैसे दूसरों की सेवा करें।

मैं मंच से क्या प्रचार करता हूं और सिखाता हूं इस पर मैं ध्यान देता हूं और इस बात को ध्यान में रखता हूं कि इन तीनों क्षेत्रों में परमेश्वर के लोगों को बढ़ाने हेतु हम पर्याप्त समय दे रहें हैं।

परमेश्वर अंत की बात आदी से और प्राचीन काल से बताता आया है। (यशायाह 46:10), इसलिए मैं केवल एक उद्देश्य के लिए नहीं, परंतु संपूर्ण वर्ष के लिए पेरणा पाने की कोशिश करता हूं। कलीसिया को कहां जाना चाहिए इस विषय में मैं उस साल की और आने वाले सालों की योजना बनाता हूं और लोगों को वहां जाने के लिए तैयार करता हूं। मैं सामान्यतौर पर एक योजना बनाता हूं कि हम उस वर्ष क्या प्रचार करेंगे/सिखाएंगे और स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर लोगों को जहां ले जाना चाहता है उसके अनुसार उन्हें वहां ले जाने के लिए रविवार के सन्देश तैयार करता हूं।

बैंगलोर में, हम एक ही कलीसिया हैं, परंतु हमारी कई मण्डलियां हैं जो विभिन्न स्थानों में इकट्ठा होती है। हमें हमारे शहर के विभिन्न स्थानों में स्थित कलीसियाओं से, और विभिन्न विभागों से (आराधना, कला, ऑडियो/विडियो, संचारमाध्यम आदि) के मध्य समन्वय बनाना पड़ता है, अतः हम दो से तीन महीने पहले ही अपने संदेश के विषय/शीर्षक तैयार करके रखते हैं और अपनी टीम को बताते हैं कि क्या होने वाला है, ताकि उस दृष्टि से हम सभी तैयार हो सकें। हम यह सब कुछ पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति संवेदनशील बनकर करते हैं। प्रभु हो अनपेक्षित बदलाव लाने की इच्छा रखता है, उसके लिए हम अपने मनों को तैयार रखते हैं और उसके अधीन होते हैं, और परमेश्वर हमें जिस दिशा की ओर हमारी अगुवाई करता है, उसकी ओर हम आगे बढ़ते हैं।

ऐसी कलीसिया जहां लोग एक मन और एक चित्त हैं

1 कुरिन्थियों 1:10
हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुममें फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

मरकुस 3:25
और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?

किसी भी स्थानीय कलीसिया में होने वाली सर्वाधिक विनाशकारी बातों में से एक है मतभेद और विभाजन। जब स्थानीय कलीसिया में किसी भी प्रकार का संघर्ष होता है जिसमें उसमें आंतरिक फुट पड़ जाती है, तो उससे मसीह की देह कमजोर हो जाती हे, काफी समय और प्रयास बर्बाद हो जाते हैं, लोग दुखी हो जाते हैं और कलीसिया टूटने लगती है।

कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखी हुई अपनी पत्री में पौलुस विश्वासियों को प्रोत्साहित करता है कि के एक बात कहें, एक चित्त हो, परिपूर्ण एकता में चलें और इस बात का ध्यान रखें कि उनके मध्य कोई फुट न हो। मुझे विश्वास है कि यह संभव है, अन्यथा पवित्र आत्मा ने विश्वासियों से इस बात की मांग न की होती। पासबान और अगुवे होने के नाते हम अपने लोगों को एक मन और एक चित्त होना सिखाएं। लोगों को सिखाएं कि वे राज्य की मानसिकता रखें और शुद्ध इरादों से और प्रभु की महिमा के लिए काम करें। लोगों को निरंतर प्रोत्साहन दें कि वे दल के साथ मिलकर काम करें, एक साथ काम करें और एक दूसरे के बल को मिलाकर काम करें। हम दल की सफलता का उत्सव मनाते हैं और दल की कार्य संस्कृति का निर्माण करते हैं। यदि हमें किसी प्रकार का संकेत मिलता है या हम विभाजन करने वाले गुटों को तैयार होते हुए देखते हैं, तो हमें तुरंत उस समस्या को संबोधित करना है और ऐसी प्रवृत्तियों को लोगों को मिटाने के लिए कहना है।

बहुत सारी बातें पासबान/अगुवे पर निर्भर है। यदि पासबान/अगुवा स्वयं ही असुरक्षित है, लोगों को निराश कर देता है, फुट डालने वाले स्वभाव का

है, चालबाज है, हथकंडे अपनाता है, 'तोड़ो और राज करो' वाला तरीका अपनाता है, निंदा करता है, नियंत्रण करता है, लोगों की बदनामी करता है, तो स्थानीय कलीसिया भी वैसी ही होगी। ऐसे मामले में, अगुवे के हृदय में परिर्वतन होना चाहिए, अन्यथा स्थानीय कलीसिया विभाजन और लड़ाई का मैदान बन कर रहेगी। परंतु, अगुवे होने के नाते यदि हम सुरक्षित है, हमारे पास शुद्ध हृदय है, खराई के साथ चलते हें, पक्षपात नहीं करते, और अच्छे मन से कार्य करेंगे, तब लोग इसी बात को ग्रहण करेंगे और मण्डली में यही दिखाई देगा।

ऐसी कलीसिया जो लोगों को परमेश्वर द्वारा नियुक्त कार्य हेतु लोगों को तैयार करना और भेजना

इफिसियों 4:11,12
11 और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया,
12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए।

उपर्युक्त पांच सेवा वरदानों में एक हर एक का उद्देश्य है 'पवित्र जनों को तैयार करना' ताकि पवित्र जना सेवा का कार्य कर सकें। परमेश्वर नहीं चाहता कि लोग आत्मिक बालक बनें रहे। नए विश्वासियों को शिष्य बनाने की ज़रूरत है और फिर उन्हें परमेश्वर के सेवक बनने के लिए तैयार करना है। अन्ततः उनमें से कई लोग परमेश्वर के भवन में अगुवे बनेंगे। एक मजबूत स्थानीय कलीसिया उद्देश्यपूर्ण रीति से लोगों को इस उन्नति के पथ पर ले चलेगी।

इन चार अवस्थाओं को मैं एक सड़क के नक्शे के रूप में प्रस्तुत करना चाहूंगा। लक्ष्य है लोगों को निरंतर उनके विकास में बढ़ाते जाना, शिक्षा और प्रचार के द्वारा उनका परिपोषण करना, उनके लिए अवसरों का निर्माण करना, उन्हें ज़िम्मेदारियां देना ताकि वे अपनी बुलाहट में सेवा कर सकें और बढ़ सकें।

कुछ लोग स्थानीय कलीसिया के अन्दर परमेश्वर की सेवा करेंगे, कुछ लोग स्थानीय कलीसिया के बाहर सेवा करेंगे, और अन्य कुछ स्थानीय कलीसिया के अन्दर और बाहर दोनों में सेवा करेंगे। चाहे जो हो, हमारा लक्ष्य धीरे धीरे हर एक को यह जानने में सहायता करना है कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या योजना बनाई है और सेवकों के नाते वे अपनी बुलाहट पूरी करें। हम निरंतर इस बात पर जोर देते हैं कि 'हर एक विश्वासी सेवक है।' हम एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करने का प्रयास करते है। जहां हर एक व्यक्ति चाहे जिस तरह से हो सके प्रभु की सेवा कर सके।

ऐसी कलीसिया जो उस संसार के लिए उपयुक्त है जिसमें वह रहती है

1 कुरिन्थियों 9:19-23

19 क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैंने अपने आप को सब का दास बना दिया है, कि अधिक लोगों को खींच लाऊं।
20 मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं; जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं, उनके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं।
21 व्यवस्थाहीनों के लिए मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूं) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं।
22 मैं निर्बलों के लिए निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊं; मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना हूं, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं।
23 और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊं।

परमेश्वर जिनसे बात करता है उन लोगों की भाषा बोलता है। प्रेरित पौलुस इस बात का वर्णन करते हुए कि उसने कैसे सेवकाई की, सारांश रूप में कहता है, *"मैं सब लोगों के लिए सबकुछ बन गया, ताकि मैं किसी न किसी रीति से कुछ का उद्धार करू।"* मैसेज बाइबल का अनुवाद मुझे

अच्छा लगता है: *"हर एक की मांगों और अपेक्षाओं से स्वतंत्र होने पर भी, मैं स्वेच्छा से सबका और हर बात का दास बन गया ताकि व्यापक तौर पर लोगों के पास जा सकूं; धर्मियों, अधर्मियों नैतिकतावादियों, हारे हुओं, उदास मन वालों–हर प्रकार के लोगों के लिए। मैंने उनकी जीवनशैली नहीं अपनाई। मैं मसीह में बना रहा–परंतु मैंने उनके संसार में प्रवेश किया और उनके दृष्टिकोण से बातों को अनुभव करने का प्रयास किया। जिन लोगों से मैं मिलता हूं उन्हें परमेश्वर के उद्धार के जीवन में लाने मेरे हर प्रयास में मैं हर प्रकार का दास बन गया"* (वचन 19-22)। उसके बाद, पौलुस ने हर प्रकार से यह बताने का प्रयास किया कि जिन लोगों तक पहुंचने का प्रयास वह कर रहा था, वे सुसमाचार को सुनें, और उस सुसमाचार को उसमें देखें भी।

हमारे आस पास का संसार बदल रहा है। हम सुसमाचार के संदेश को नहीं बदलते, फिर भी हमें इस अनुकुल बनना है कि हम लोगों को कैसे सुसमाचार सुनाते हैं, ताकि हमारे संसार के लोग उस संदेश को समझ सकें और उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें। स्थानीय कलीसिया को उस समाज से सम्बद्ध रहना है जिसमें वह रहती है। हमें वास्तविक जीवन की परिस्थितियों और लोग जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं उन्हें परमेश्वर के वचन से संबोधित करने की भी जरूरत है हमें लोगों को यह जानने में सहायता करना है कि वे अपने संसार में वचन को और परमेश्वर की बातों को कैसे लागू करें।

यदि हम प्रासंगिक न रहें, तो हम क्या बता रहे हैं इसे लोग समझ नहीं पाएंगे। हम परमेश्वर के वचन के सनातन सत्य का प्रचार करते रहेंगे, परंतु यदि वह लोगों की भाषा में नहीं रहा, तो जो कुछ उन्हें दिया जा रहा है, उसे वे नहीं समझ पाएंगे।

प्रासंगिक होने का अर्थ यह भी है कि वर्तमान समयों को संबोधित करने के हमारे तरीके में हम बदलाव लाएं और अनुकुलन कर लें। संदेश बदलता नहीं है। परंतु हम कैसे उसे निवेदन करते हैं, उसे निवेदन करने के तरीकों का हम कैसे उपयोग करते हैं, वह हमारे समय के साथ बदलते जाते हैं।

ऐसी कलीसिया जो अगुवों को तैयार कर रही है

गलातियों 2:9

और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को दाहिना हाथ देकर संग कर लिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएं, और वे खतना किए हुओं के पास।

अगुवे परमेश्वर के भवन के खम्भे हैं। बड़े घर या भवन के लिए कई खम्भों की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ यह है कि हमें मजबूत स्थानीय कलीसिया के निर्माण के लिए कई अगुवों ज़रूरत होगी।

उत्तम अगुवों का निर्माण करने के लिए समय लगता है। उसके लिए यह भी आवश्यक होता है कि वरिष्ठ पासबान / वरिष्ठ अगुवे होने के नाते हमारे आस पास के अगुवों के परिपोषण के लिए हमारे पास हृदय हों। हमें असुरक्षित नहीं होना चाहिए। हमें दूसरों को उन्नति करने के लिए जगह और अवसर देना चाहिए। हमें कुछ ज़िम्मेदारियों और कामों को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए, ताकि अन्य लोगों को उन ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करने का अवसर प्राप्त हो। हमें अगुवों की निगरानी करना है, उनकी गलतियों को लेकर धीरज रखना है, पेम के साथ उन्हें सुधारना है। और उनकी उन्नति के लिए उन्हें प्रोत्साहन देना है। अगुवों को तैयार करने की प्रक्रिया में हमें दुख और पीड़ा का सामना करना होगा। हर कोई वैसा नहीं होगा जैसे उन्हें होना चाहिए। परंतु यह प्रयास के लायक है। स्थानीय कलीसिया के पास जितने ज्यादा अगुवे होंगे, उतनी वह मजबूत होगी। स्थानीय कलीसिया के पास जितने अधिक अगुवे होंगे, उतनी अधिक वह देह के रूप में कार्य करने में सक्षम होगी।

ऐसी कलीसिया जो निरंतरता स्थापित कर सकती है

2 तीमुथियुस 2:1,2

1 इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा।
2 और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

वरिष्ठ अगुवे/वरिष्ठ पासबान होने के नाते हमें यह याद रखना है कि हम स्थाई नहीं है। ऐसा समय आएगा जब हमें आगे बढ़ना होगा, प्रभु हमें जिस मिशन क्षेत्र की ओर ले जाना चाहता है उस ओर, या उसकी अनंत महिमा में। हमारे जाने के विषय में हमें सोचना और योजना बनाना प्रारंभ करना है। हमें निरंतर हमारे बाद लोगों को तैयार करना है, हमारे बाद आने वाली एक, दो या तीन पीढ़ियों (दशकों) को देखना है। इसलिए उदाहरण के तौर पर, यदि वरिष्ठ अगुवा इस समय चालीस वर्ष का है, तो उससे बड़े अगुवों और साथियों के अलावा, उसे उन लोगों का भी परिपोषण करना है जो 30,20 वर्ष के हैं और कुछ नवयुवक है। अर्थात, हम जिन अगुवों को तैयार करते हैं वे बढ़ेंगे, परिपक्व होंगे और आगे बढ़ेंगे, शायद कलीसिया की बाहर की बातों के लिए। हम नहीं जानते और लोगों के जीवनों और उनके भविष्यों को हम नियंत्रित नहीं करते। परंतु, हम निरंतर युवा अगुवों की परवरिश कर लगातार इस बात का ध्यान रखते हैं कि हम अपनी भूमिका पूरी करें। जब हमारा आगे बढ़ने का समय आएगा, तब परमेश्वर हमारा स्थान लेने के लिए उनमें से एक को चुनेगा। आदर्श तौर पर हमें हमसे बीस और पच्चीस वर्ष छोटे लोगों को तैयार करना है और उनकी परवरिश करना आरंभ करना है, क्योंकि वे उस उम्र के हो सकते हैं जिनमें से परमेश्वर अगले अगुवों को तैयार करेगा, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर के कार्य को आगे ले चलेंगें।

न्यायियों 2:7-11

7 और यहोशू के जीवन भर, और उन वृद्ध लोगों के जीवन भर जो यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और देख चुके थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे बड़े काम किए हैं, इस्राएली लोग यहोवा की सेवा करते रहे।
8 निदान यहोवा का दास नून का पुत्र यहोशू एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया।
9 और उसको तिम्नथेरेस में जो एप्रैम के पहाड़ी देश में गाश नाम पहाड़ की उत्तर अलंग पर है, उसी के भाग में मिट्टी दी गई।
10 और उस पीढ़ी के सब लोग भी अपने अपने पितरों में मिल गए; तब उसके बाद जो दूसरी पीढ़ी हुई उसके लोग न तो यहोवा को जानते थे और न उस काम को जो उसने इस्राएल के लिये किया था।

[11] इसलिये इस्राएली वह करने लगे जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और बाल नाम देवताओं की उपासना करने लगे.

यह महत्वपूर्ण है जब तक हम यहां दुनिया मैं हैं तब तक हम हमारे बाद आने वाली जितनी पीढ़ियों को प्रभावित कर सकते हैं करें, ताकि प्रभु का कार्य हमारे जाने के बाद भी लम्बे समय तक चलता रहें। अन्यथा ऐसी पीढ़ी तैयार होगी जिन्हें पहले के दिनों के विषय में और प्रभु ने इतिहास में क्या किया है इस विषय में कोई जानकारी नहीं होगी। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि हम युव अगुवों कौ तैयार करने की संस्द्भति निर्माण करें ताकि हर कोई यह करने की ज़रूरत को समझ सके और सक्रिय रूप से ऐसा करें। हिमें आने वाली पीढ़ियों को आशीषित करने के लिए एक विरासत छोड़ जाना है। हमें मुख्य शिक्षाओं को, केन्द्रिय सच्चाइयों को, स्थानीय कलीसिया की बुलाहट और अभिषेक की समझ आदि बातों को पीछे छोड़ जाना है, ताकि हमारे बाद आने वाली पीढ़ियां आसानी से इन बातों को समझ सकेंगी और उनमें बनी रह पाएंगी। ऐसा करने का एक उत्तम तरीका हमारे प्रचार और शिक्षा को रिकार्ड कर रखना है, और उसे सभी लोगों के लिए उपलब्ध कराना है। दूसरा तरीका उन बातों को प्रकाशित करना है ताकि हमारे बाद आने वाले जो कुछ प्रभु ने हमें दिया है उसे पढ़ सकें और सीख सकें।

मैं जानता हूं कि अधिकतर पासबान चाहेंगे कि उनके बच्चे उनकी सेवकाई जारी रखें। यदि उन्होंने परमेश्वर की ओर से सचमुच बुलाहट, अभिषेक और वरदान पाया है, तो यह ठीक है। परंतु यदि परमेश्वर ने उन्हें किसी और कार्य के लिए बुलाहट, अभिषेक और वरदान दिया है, उदाहरण, कारोबार या कोई और पेशा, तो केवल परिवार में सेवकाई को बनाए रखने के लिए हम उन्हें सेवकाई को आगे बढ़ाने के लिए जबरदस्ती करना अनुचित होगा।

6

कलीसिया की उन्नति के सिद्धांत

प्रभु चाहता है कि हम सभी फलवन्त हों। जब हम फलवन्त होते हैं, तब पिता की महिमा होती है (यूहन्ना 15:8)। स्थानीय कलीसिया को जिस एक पहलु में फलवन्त होना है, वह है प्रभु के लिए निरंतर आत्माओं को जितना और संख्या में बढ़ते जाना। कई शहरों और नगरों में ओर उनके आस पास लाखों लोग रहते हैं। यीशु मसीह का सुसमाचार स्वयं तक सीमित रखना अनुचित है, ताकि हम एक छोटी और आरामदायक स्थानीय कलीसिया बने रहें। यदि हम सुसमाचार प्रचार नहीं करते और नए लोगों को परमेश्वर के राज्य में नहीं लाते और उन्हें स्थानीय कलीसिया की मंडलियों में इकट्ठा नहीं करते, तो हम प्रभु यीशु मसीह के प्रति, जो कीमत उसने चुकाई है उसके प्रति और जो कार्य उसने हमें सौंपा है उसके प्रति अन्याय करते हैं।

आत्मिक और स्वाभाविक प्रयासों के स्वस्थ संयोग से कलीसियाई उन्नति होती है। हमें आत्मिक क्षेत्र में कुछ कार्य करने हैं और स्वाभाविक क्षेत्र में खुद को संगठित बनाने हेतु कार्य करने की ज़रूरत है। परमेश्वर विभिन्न और अनोखे तरीकों से हममें से हर एक के द्वारा कार्य करेगा, और जब हम आत्माओं को जीतने के लिए और स्थानीय कलीसियाओं की उन्नति होते हुए देखते हैं, तो हमें कुछ आम सिद्धांत लागू करना है।

डेविड यॉंगी चो दक्षिण कोरिया के यॉयिडो फुल गॉस्पल चर्च (वाय.एफ.जी.सी.) के सहसंस्थापक और वरिष्ठ पासबान है। 1958 में एक फेंके हुए पुराने सेना के तम्बू का उपयोग करके उन्होंने केवल पांच सदस्यों के साथ कलीसिया आरंभ की। 30 वर्षों के अन्दर उस कलीसिया की संख्या बढ़कर 8 लाख हो गई। यह विश्व की और मसीही इतिहास की सबसे बड़ी कलीसिया है।

जो पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं और कलीसियाई उन्नति के सेमिनारों में दी गई उनकी शिक्षा के माध्यम से, याँगी चो प्रभु द्वारा उन्हें सिखाए गए और उनके द्वारा उपयोग किए गए मुख्य सिद्धान्तों को बांटते हैं, ताकि हम अपनी कलीसिया की उन्नति देख सकें। हमने यहां पर इन मुख्य सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

एक विशाल बढ़ने वाली कलीसिया का दर्शन प्राप्त करें कलीसिया की बढ़ौत्तरी या उन्नति का आरम्भ आपके हृदय में होता है। अपने हृदय में दर्शन रखकर आरम्भ करें। दर्शन और स्वप्न कलीसिया की उन्नति की बुनियाद हैं। कलीसिया का निर्माण आपके हृदय में होता है। आपकी कलीसिया के लिए मुझे अपना दर्शन दिखाएं, और मैं आपको आपके भविष्य की कलीसिया दिखाऊंगा। कलीसिया आपके दर्शनों और स्वप्नों के द्वारा बढ़ती है।

दर्शन सामर्थी है क्योंकि यह पवित्र आत्मा की भाषा है। आपको आपकी आत्मा में आपकी कलीसिया को स्पष्ट रूप से देखना है और पवित्र आत्मा वास्तव में उसे पूरा करेगा। दर्शन और स्वप्न आत्मा के साथ वार्तालाप करने की पवित्र आत्मा की भाषा है।

जब आप दर्शन को थाम लेंगे, तब दर्शन आपको थाम लेगा। आप दर्शन को नहीं बनाते, परंतु दर्शन आपको बनाता है। जब आपके हृदय में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित दर्शन होगा, तब यह दर्शन आपको बनाएगा। दर्शन आपको बदल देगा। दर्शन आपकी सहायता करेगा।

जो आप देख सकते हैं, उसे आप पूरा कर सकते हैं। जो वस्तुएं हैं ही नहीं, उन्हें परमेश्वर ऐसे बुलाता है मानो वे हैं (रोमियों 4:17)।

जो आप देख सकते हैं उसे आप पा सकते हैं। परमेश्वर ने अब्राहम को बताया, जो भूमि तुम देख सकते हो, उसे मैं तुम्हें दूंगा (उत्पत्ति 13:14-18)।

परमेश्वर एक असीम जलकुण्ड के समान है। यदि आप एक छोटा सा पाईप इस जलकुण्ड से जोड़ देते हैं तब आपको कुछ थोड़ी सी बूंदे मिलेंगी। परंतु आप इस जलकुण्ड से एक बड़ा पाईप जोड़ देते हैं तो आपको पानी

की बहती नदियां मिलेगी। पाईप आपके दर्शन और स्वप्न है जिन्हें आप परमेश्वर से जोड़ देते हैं।

चौथा आयाम वह आत्मिक क्षेत्र है जहां पर त्रिएक परमेश्वर वास करता है। इसलिए पवित्र आत्मा को अनुमति दें कि वह आपको पवित्र आत्मा की भाषा सिखाए–स्वप्नों और दर्शनों की भाषा। फिर उन दर्शनों की रखवाली करें। उन स्वप्नों की रखवाली करें। पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करें। आपके जीवन में उसकी अगुवाई का पालन करें। परमेश्वर के दर्शनों और स्वप्नों में जीएं। आश्चर्यकर्मों के अनुसार सोचें। अंद्रियास की पाठशाला हमें न्योता देती है कि हम परमेश्वर का दर्शन सुनें, संभावना की दृष्टिकोण से विचार करें, जो हमारे पास है उसे विश्वास से दें और बाकी का काम प्रभु को करने दें।

विशाल बढ़ती हुई कलीसिया के लिए मज़बूत प्रज्वलित इच्छा रखें

आपके मन में आपकी कलीसिया को बढ़ते हुए देखने की प्रज्वलित इच्छा और उमंग होनी चाहिए।

आपकी इच्छा उस दर्शन को सामर्थ प्रदान करती है, और आपका दर्शन आपकी इच्छा को बढ़ाता है।

जब आपके पास इच्छा होगी, तब आप रात और दिन प्रार्थना करेंगे, आप अथक परिश्रम करेंगे और काम करेंगे।

लगातार प्रार्थना में और आत्मिक युद्ध में लगे रहें

बेदारी पाने के लिए प्रार्थना करें।

प्रार्थना शैतान के सामर्थ को तोड़ देती है और पवित्र आत्मा की उपस्थिति ले आती है। आपको उस बलवान व्यक्ति को बांधना होगा, ताकि आप लोगों को उसके चंगुल से बाहर निकाल सकें। प्रार्थना के द्वारा हम शैतान को और उसकी दुष्ट सेनाओं को पवित्र आत्मा की सामर्थ में बांध सकते हैं।

हमें प्रार्थना करने वाली कलीसिया बनना है। हमें प्रार्थना करने में आनन्दित होना है। हमें प्रार्थना को कभी बोझ नहीं समझना है।

जितने अधिक समय तक हम प्रार्थना करेंगे, पवित्र आत्मा के साथ हमें आत्मिक एकता का उतना ही अनुभव होगा।

प्रार्थना की सामर्थ सुसमाचार प्रचार करना और वचन सुनाना आसान बना देती है।

परमेश्वर में मज़बूत विश्वास बनाए रखें

दर्शन को पूरा होते हुए देखने के लिए विश्वास में खड़े रहने हेतु आपको दृढ़ संकल्प बनना है। विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है (इब्रानियों 11:1)।

हो सकता है कि आप विश्वास को महसूस न कर पाएं–विश्वास भावना नहीं है। विश्वास एक चुनाव है। आप विश्वास करने का चुनाव करते हैं। आपके पास पहले ही विश्वास का एक प्रमाण है (रोमियों 12:3)। आपके विश्वास के आकार के विषय में चिंता न करें (मत्ती 17:20)।

आपको अपने विश्वास को बोलना है। जो वस्तुएं हैं ही नहीं उन्हें ऐसे सम्बोधित करें मानो वे हैं (रोमियों 4:17)।

कलीसिया की उन्नति के दौरान आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना होगा। आपको परमेश्वर के वचन पर खड़े रहना है और परमेश्वर पर भरोसा रखना है।

पवित्र आत्मा के साथ निकट संगति करें

पवित्र आत्मा कलीसिया में वास करता है। पवित्र आत्मा कलीसिया का निर्माण करता है।

हमें पवित्र आत्मा के साथ गहरी संगति करना है (2 कुरिन्थियों 13:14)। वह हमारा सीनियर पार्टनर–वरिष्ठ सहयोगी है। हमें उस पर निर्भर रहना है। हमें उसके साथ निकट और व्यक्तिगत् रिश्ता बनाने के लिए बुलाया गया है।

जब हमारे पास पवित्र आत्मा की उपस्थिति होगी, तब हम यीशु के चमत्कारों को देखेंगे। हमें पवित्र आत्मा को पहचानना है, उसे अनुमति देना है कि वह अपने वरदानों को कलीसिया में प्रगट करे।

सबसे पहले, हमें पवित्र आत्मा के साथ समय व्यतीत करने के द्वारा, उसकी बातों को सुनने के द्वारा, और हमारी भावनाओं और विचारों को बताने के द्वारा उसके साथ हमारी संगति बढ़ाना है।

दूसरी बात, हमारे सभी कामों में हमें पवित्र आत्मा के साथ अपनी साझेदारी बढ़ाना है। पवित्र आत्मा हमारा सीनियर पार्टनर है। हम उसके ज्युनियर पार्टनर–छोटे साझेदार हैं। हमारी ज़िम्मेदारी हमारे सीनियर पार्टनर की सुनना है। दर्शन उसकी ओर से आना चाहिए। हमें केवल उसकी योजना को पूरा करना है।

तीसरी बात, हमें परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को हम तक लाने के लिए पवित्र आत्मा के परिवहन का लाभ उठाना है, और हमारा प्रार्थना और निवेदन परमेश्वर के पास ले जाना है।

अंत में, हमें हमेशा यह स्मरण रखना है कि हम पवित्र आत्मा के साथ एक हो गए हैं। अब हम पवित्र आत्मा को छोड़ अलग व्यक्ति नहीं रहे।

पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए दर्शन के जन्म की चार चरणों वाली प्रक्रियाः

- सबसे पहले, सेने या जन्म देने का काम पवित्र आत्मा के साथ निकट रिश्ते के संदर्भ में और विश्वास में किया जाना चाहिए, जन्म देने की प्रक्रिया भी विश्वास में होनी चाहिए।
- दूसरी बात, आपको स्पष्ट उद्देश्य पूछना चाहिए। हमें स्पष्ट रूप से और निश्चित रूप से पूछना है।

- तीसरी बात, आश्वासन के लिए प्रार्थना करें।
- चौथी बात, जब हम आश्वासन पाते हैं, तब हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना है और हमारे मुंह से हर एक बात की सकारात्मक रूप से घोषणा करना है।

कलीसिया की उन्नति मात्र हमारी मानव योग्यताओं और रणनीति पर आधारित नहीं है। कलीसिया की उन्नति विचारों, सिद्धांतों और तकनीकों से अधिक है। कलीसिया पवित्र आत्मा की है, कलीसिया केवल तब बदल सकती है, जब दर्शन पवित्र आत्मा की ओर से हो।

परमेश्वर की सामर्थ का प्रदर्शन करने हेतु प्रचार करें, जरूरतों को पूरा करें और आशीष प्रदान करें

आपका प्रचार पृथ्वी पर स्वर्ग लाने पाए। आपके प्रचार के द्वारा इसी समय प्रभु यीशु के द्वारा लोगों की ज़रूरतें पूरी हों। हमें क्षमा, चंगाई का प्रचार करना है, चंगाई देना है, क्षमा प्रदान करना है, दुष्टात्माओं को निकालना, भूखों को भोजन खिलाना है—सब कुछ जो परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है।

परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मा शरीर और प्राण में सफल और संपन्न हों। सफल जीवन और संपन्नता का अर्थ है तिहरी आशीषें: आत्मिक आशीष, भौतिक आशीष और स्वास्थ्य में आशीष।

संपन्नता और लोभ के बीच के फर्क को समझें। संपन्नता परमेश्वर के बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करने, परमेश्वर को महिमा देने और दूसरों को आशीष देने के लिए परमेश्वर की आशीष है। लालच शैतान का गुण है।

विश्वासियों को सेवकाई के लिए तैयार करें, उन्हें सेवकाई में उपयोग करें

हम मछली के कांटे की सहायता से लोगों को नहीं बचा सकते। हमें जाल का उपयोग करना होगा। इस प्रकार हमें मंडली के सभी विश्वासियों को उपयोग करना होगा।

वाय.एफ.जी.सी. की सेल प्रणाली का आरम्भ 1964 में हुआ और वह प्रत्येक विश्वासी को सहभागी होने का अवसर देती है। आम विश्वासियों को आत्माओं को जीतना और लोगों की देखभाल करना सिखाएं। सेल प्रणाली प्रेम का मकड़ जाल है।

सीनियर पासबान होने के नाते योंगी चो मुख्य लक्ष्य प्रार्थना और वचन की सेवा पर है। उनके सभी सहायक पासबान उनके क्षेत्र के सेल अगुवों की निगरानी रखते हैं। सेल अगुवे घरों को भेंट देते हैं और लोगों की देखभाल करते हैं। लोग एक दूसरे से प्रेम करते हैं, आत्माओं को जीतते हैं और एक दूसरे का ध्यान रखते हैं।

ईस्ट एशियन पास्टोरल इन्स्टियूट के सुतृस्ना विद्जजा अपने प्रबंध लेख में इस प्रकार सारांश प्रस्तुत करते हैंः (डेविड योंगी चो के अनुसार कलीसिया की अवधारणा)।

रविवार की प्रत्येक सात सभाओं में योईडो फुल गॉस्पल चर्च (वाय.एफ. जी.सी) 75,000 लोगों को बैठाने की क्षमता रखता है। उनकी आराधना सभाएं प्रार्थनापूर्ण, आनन्दमय, अच्छी तरह से तैयार की हुई, प्रासंगिक और जीवन परिवर्तनकारी होती हैं। वाय.एफ.जी.सी. में, सम्पूर्ण कलीसिया सेल प्रणाली के इर्दगिर्द संगठित है। सेल प्रणाली कलीसिया की बुनियाद और मुख्य कार्यक्रम है। सभी विभागों और गतिविधियों को सेल प्रणाली की सहायता करना है कि उसके द्वारा बेहतर काम हो। कलीसिया की इमारत एक तरह का प्रशिक्षण केन्द्र है, परंतु कलीसिया की सेवा मुख्य रूप से कलीसिया की इमारत के बाहर की जाती है।

कलीसिया घरों में, इमारतों में, दतरों में, और कारखानों में है। आराध ाना सभा एक साथ मिलकर उत्सव मनाने का समय है, परंतु अधिकतर वास्तविक सेवकाइयां सेल ग्रुप में होती हैं। कलीसिया की इमारत को गिराया जा सकता है, पासबान के बदले दूसरे को लिया जा सकता है, परंतु सेल ग्रुप कलीसिया की ताकत बने रहेंगे।

वाय.एफ.जी.सी. के लिए, यीशु मसीह से उद्धार का संदेश सेल ग्रुप में साकार तरीके से अनुभव किया जाता है। सेल ग्रुप नये नियम की कलीसिया के स्वभाव वाली कलीसिया है (पेरितों के काम 2:42-47; 4:23-25)। यह पांच से दस परिवारों की कलीसिया है जो साप्ताहिक तौर पर घर घर मिलती है। यह एक मसीही समाज प्रदान करती है जहां पर लोग एक साकार मसीही संस्द्भति को अनुभव कर सकते हैं। वे एक दूसरे को जानते हैं और भावनात्मक और आत्मिक प्रेम भी प्रदान करते हैं। उनके सेल में, मसीही लोग प्रेम करना और सहारा देना, एक दूसरे के देखभाल करना और एक दूसरे की परवरिश करना सीखते हैं। जब किसी को ज़रूरत होती है, तब कई लोग तुरंत उनकी मदद करेंगे। जब कोई बीमार होगा, तब वे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करेंगे। कई चंगाइयां होंगी। सेल प्रणाली प्रतिदिन के जीवन में उद्धार और आशीषों का साकार अनुभव प्रदान करती है। सेल प्रणाली एक समुदाय प्रदान करती है जहां मसीही लोग और परिपक्व मसीही बनने के लिए एक दूसरे की सहायता करते हैं। कई लोग पहली बार अपने सेल में यीशु मसीह को व्यक्तिगत् रीति से ग्रहण करते हैं। सेल अपने सदस्यों की सहायता करता है कि वे यीशु को और गहराई से जानें और पवित्र आत्मा के साथ और व्यक्तिगत रिश्ता बनाएं और कलीसिया के रूप में जीएं। बाइबल अध्ययन, प्रार्थना सभाओं और संगतियों के द्वारा आत्मिक उन्नति में सहायता मिलती है।

सेल प्रणाली सुसमाचार प्रचार का भी माध्यम है। सदस्य अपने विश्वास के विषय में दूसरों को बताने और यीशु मसीह को ग्रहण करने हेतु दूसरों को न्योता देने के लिए उत्सुक रहते हैं। कई नये विश्वासी सेल के सदस्यों की गवाही के द्वारा यीशु मसीह को जानने लगते हैं। सेल प्रणाली नये विश्वासियों को पकड़ने का एक तरह का एक बड़ा मछली का जाल है। एक दूसरे को पहचानने वाले मसीहियों को प्रचार करना बड़ा आसान है। बाद में नये विश्वासियों की परवरिश करना भी आसान होता है। अर्थात्, कभी कभी वाय. जी.सी. बड़ी सुसमाचार सभाओं का (क्रूसेड) आयोजन करता है। परंतु फिर भी चो को यकीन है किः परंतु हमारी कलीसिया मुख्य रूप से होम सेल ग्रुप प्रणाली के द्वारा (घरों में होने वाली आराधना) सुसमाचार प्रचार

करता है। हर एक सेल ग्रुप अपने पड़ोस में बेदारी का केन्द्र बन जाता है, क्योंकि सेल ग्रुप वहां है जहां उस पड़ोस में वास्तविक जीवन पाया जाता है। जब होम सेल की सभा जीवन से परिपूर्ण होती है और जब लोग खुश रहते हैं और अपने विश्वास को बांटते हैं और जो कुछ परमेश्वर ने उनके जीवनों में किया है, इसकी गवाही देते हैं, तो अन्य लोग उनकी ओर खींचे जाते हैं। अविश्वासी उत्सुक होते हैं। वे जानना चाहते हैं कि मसीही लोगों के इस छोटे समूह इतने आनन्दित क्यों हैं जबकि उनके चारों ओर कई परेशानियां हैं... ऐसे समूह अपने पड़ोस में चुम्बक बन जाते हैं।

सारांश रूप में, हम कह सकते हैं कि कलीसिया की उन्नति (संख्या में बढ़ती) मात्र एक उपोत्पाद है। जब कलीसिया वास्तव में पवित्र आत्मा की कलीसिया बन जाएगी जो पवित्र आत्मा के साथ निकट संगति करेगी; जब कलीसिया प्रार्थना करने वाली और चौथे आयाम वाली (फोर्थ डायमेन्शनल चर्च) कलीसिया बन जाएगी; जब कलीसिया लोगों की ज़रूरतों का ध्यान रखेगी; जब कलीसिया आत्मिक आशीषों, भौतिक आशीषों, स्वास्थ में आशीषों वाली कलीसिया बन जाएगी; और कलीसिया "सामान्य विश्वासी–सेल प्रणाली केन्द्रित" कलीसिया बन जाएगी, तब कलीसिया अवश्य ही बढ़ती जाएगी।

डेविड योंगी चो के पुस्तकों की अल्प सूचि

The Fourth Dimension (Vol. I): The Key to Putting Your Faith to Work for a Successful Life

The Fourth Dimension (Vol. II): More Secrets for a Successful Faith life

The Holy Spirit, My Senior Partner: Understanding the Holy Spirit and His Gifts

More Than Numbers: Principles of Church Growth

Prayer, Key to Revival

Prayer that Brings Revival

भाग 2

परमेश्वर की रूपरेखा (ब्लू प्रिन्ट)

7

स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर का ब्लू प्रिन्ट (रूपरेखा)

इकहरे ब्लू प्रिन्ट के लिए दस दृष्टिकोण

परमेश्वर स्थानीय कलीसिया को कैसे देखता है इसकी नए नियम में कई प्रतिमाएं और चित्र हैं। हम नए नियम में पाए जाने वाली कलीसिया के दस चित्र पहचान सकते हैं, जिनके विषय में हम इस भाग में चर्चा करेंगे। इनमें से कुछ का उद्‌गम पुराने नियम में है। सामुहिक तौर पर हम इन्हें स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर का ब्लू प्रिन्ट कहते हैं।

ब्लू प्रिन्ट कुछ बनाने हेतु तैयार की गई मार्गदर्शिका होती है। यह अभिकल्प या नमूना होता है जिसका हमें अनुसरण करना है। जब हम किसी कार्य का निर्माण करने हेतु तैयार होते हैं, तब हम सामान्य तौर पर ब्लू प्रिन्ट से आरंभ करते हैं। ब्लू प्रिन्ट आपको यह तय करने में सहायता करता है कि आपको क्या करना है।

हम देखेंगे कि ब्लू प्रिन्ट स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना का वर्णन करता है। यह परमेश्वर का मूल उद्देश्य है। यह मुख्य विशेषताओं पर ज़ोर देता है। वह मुख्य विशेषताओं को वर्णित करता है। यह महत्वपूर्ण लक्ष्य क्षेत्रों की ओर संकेत करता है। जब हम उसके ब्लू प्रिन्ट का अनुसरण करते हैं, तब हम जानते हैं कि हम सही दिशा में जा रहे हैं और अंततः हम हमारी स्थानीय कलीसियाओं के लिए सही स्थान में आ पहुंचेंगे।

हमारा लक्ष्य है हमारी स्थानीय कलीसिया की मंडली को इन दस में से हर एक क्षेत्र में बढ़ाना। हमारे स्थानीय समाज में हमें इस मानचित्र की हमारी अपनी अभिव्यक्तियां हमें खोजनी होगी। परमेश्वर सृजनहार है। अतः उसके पास उसके ब्लू प्रिन्ट के कई तरीके और कई अभिव्यक्तियां

हैं। इसलिए एक ही तरह की प्रणालियों या एक ही तरह की तकनीकों का उपयोग करने की बात नहीं है।

बल्कि यह परमेश्वर के साथ काम करने की बात है यह देखने के लिए कि परमेश्वर हमारी स्थानीय कलीसिया की मंडली में इन तीन पक्षों में से हर एक का कैसे विकास करना चाहता है।

आपकी सेवकाई और परमेश्वर का ब्लू प्रिन्ट

आपकी सेवकाई भीतर से या स्थानीय कलीसिया के संबंध में जैसी हो, यह महत्वपूर्ण है कि जो आप कर रहे हैं वह परमेश्वर के लोगों के लिए उसके ब्लू प्रिन्ट के अनुरूप हो। पासबान/वरिष्ठ पासबान होने के नाते, आपकी ज़िम्मेदारी इस बात का ध्यान रखना है कि स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार सभी दृष्टि से बढ़ रही है और विकसित हो रही है। भमणकारी सुसमाचार प्रचारक, शिक्षक, भविष्यद्वक्ता या प्रेरित होने के नाते, जब कभी आप मंडली की सेवा करते हैं, आपका लक्ष्य स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना के अनुसार किसी न किसी रीति से प्रतिदान करना और मंडली की उन्नति करने में सहायता करना है। चाहे आप युवाओं के पासबान के रूप में, आराधना अगुवे के रूप में, बच्चों की सेवा में, महिलाओं की सेवा में, पुरुषों की सेवा में, छोटे समूहों में, या और किसी भी रीति से सेवा करते हों, आप आपकी स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर के लोगों के जीवनों में परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट को स्थापित करने के लिए कार्य कर रहे हैं।

हम किस तरह से निर्माण करते हैं औ-र किस से निर्माण करते हैं इस विषय में सावधान रहें

1 कुरिन्थियों 3:10-15

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नेव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है; परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

[11] क्योंकि उस नेव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नेव
नहीं डाल सकता।
[12] और यदि कोई इस नेव पर सोना या चान्दी या बहुमोल पत्थर या काठ या घास
या फूस का रद्दा रखे,
[13] तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा, क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए
कि आग के साथ प्रगट होगा, और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है?
[14] जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।
[15] और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच
जाएगा, परन्तु जलते जलते।

1 कुरिन्थियों 3:10-15

[10] परमेश्वर ने एक उत्तम शिल्पकार के रूप में मुझे जो वरदान दिया है उसका उपयोग
करते हुए, मैंने ब्लू प्रिंट्स बनाए। अप्पुलोस दीवारें खड़ी कर रहा है। काम पर आने
वाला हर एक बढ़ई बुनियाद पर निर्माण करने के विषय में सावधान रहे!
[11] स्मरण रखें कि केवल एक ही बुनियाद है, जो पहले से डाली गई है: यीशु मसीह।
[12] बिल्डिंग का पुराना सामान उठाने के विषय में ध्यान दें।
[13] अंत में इन्स्पेक्शन (जांच) होने वाला है। यदि तुम सस्ता या घटिया सामान उपयोग
करते हैं तो तुम पकड़े जाओगे। इन्स्पेक्शन सम्पूर्ण और कड़ाई के साथ होगा। तुम
बच नहीं सकोगे।
[14] यदि तुम्हारा काम इन्स्पेक्शन में पास हो गया, तो ठीक;
[15] यदि नहीं, तो तुम्हारी इमारत का हिस्सा गिरा दिया जाएगा और फिर से शुरू करना
होगा। परंतु तुम्हें मिटाया नहीं जाएगा; तुम बच जाओगे–परंतु जैसे तैसे।

सरल शब्दों में, प्रेरित पौलुस यह कहता है कि हम सब को यह आम बुनियाद या मानचित्र दिया गया है। परंतु हम सब को सावधान रहना है कि हम कैसे निर्माण करते हैं और किस वस्तु से निर्माण करते हैं। हम कैसे निर्माण करते हैं यह महत्वपूर्ण है। हम मनुष्य निर्मित कल्पनाओं से निर्माण कर सकते हैं या हम परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार निर्माण कर सकते हैं। हम अपने शारीरिक तर्क के अनुसार चल सकते हैं या हम आत्मा की अभिदिशा में चल सकते हैं। उसी तरह, हम किस वस्तु से निर्माण करते हैं यह भी महत्वपूर्ण है। जो आत्मा का और वचन का है उससे यदि हम परमेश्वर के भवन का निर्माण करेंगे, तब हमारे पास ऐसा काम होगा जो

परमेश्वर द्वारा मान्य किया जाएगा। यदि हम पृथ्वी या संसार की वस्तुओं से, शारीरिक बुद्धि, चालाकीपूर्ण कारोबार और इस जैसी बातों से परमेश्वर के भवन का निर्माण करेंगे, तो ये बातें परमेश्वर की परीक्षा के सामने टिक नहीं पाएंगी।

इसलिए इस भाग में हम इस बात पर ज़ोर देंगे कि हमें परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार और आत्मा और वचन के द्वारा निर्माण करना है।

8

स्थानीय कलीसिया–मसीह की देह

कुलुस्सियों 1:18
और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

कलीसिया उसकी देह है–मसीह की देह।

उसकी देह होने के नाते, हमारा जीवन और पहचान उसी से आते हैं

हमारा उससे क्या नाता है यही कलीसिया है। उसके साथ हमारे रिश्ते के बगैर कोई कलीसिया नहीं है। सिर के बगैर शरीर न तो जीवित रहता है और न ही कार्य करता है। उसके साथ हमारे रिश्ते से ही हम एकदूसरे से और संसार के साथ संबंध बनाते हैं।

पेरितों के काम 17:28
क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं।

व्यक्तिगत रीति से और सामुहिक रीति से हमें उसके साथ निकटता का अनुसरण करना है। हमारी पहचान उसी से है। हम मसीह में जो हैं, वही हम वास्तव में हैं। हमारी पहचान हमारे डिनॉमिनेशन में, किसी सिद्धान्त में, कार्य करने के किसी तरीके में या किसी संसारिक बात में नहीं है। हम उसकी देह हैं और इसीलिए हम केवल उसका नाम लेकर चलते हैं।

उसकी देह होने के नाते, हम यीशु के प्रतिनिधि हैं, हम यीशु को प्रगट करते हैं

इफिसियों 1:22,23
[22] और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया।

[23] यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

कलीसिया मसीह की पूर्णता है। कलीसिया मसीह का पूर्ण प्रतिनिधित्व है। व्यक्तिगत रीति से और सामुहिक रीति से–कलीसिया द्वारा मसीह संसार को दिखाए दे और यथार्थ रूप से वर्णन किया जाना चाहिए। हम संसार में उसका प्रतिनिधित्व करते हैं।

"जैसा वह है" इस शब्द का प्रेरित यूहन्ना अपनी पहली पत्री में, 1 यूहन्ना में करीब सात बार प्रयोग करता है।

- ज्योति में चलें, जैसा वह ज्योति में है (1:7)।
- वैसे ही चलें, जैसा वह चला (2:6)।
- जैसा वह है, वैसा उसे देखेंगे (3:1)।
- खुद को वैसा ही शुद्ध करें, जैसा वह शुद्ध है (3:3)।
- धार्मिकता पर चलें, जैसा वह धर्मी है (3:7)।
- जैसा उसने हम से प्रेम किया और प्रेम करने की आज्ञा दी, वैसे ही हम प्रेम करें (3:23)
- जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं (4:17)।

सरल शब्दों में, मसीह हमारा आदर्श, हमारा मानक, हमारा नमूना है। सही ढंग से उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए हमें निकटता से उसका अनुसरण करना होगा।

उसका प्रतिनिधित्व करने की हमारी योग्यता इस बात से आती है कि वह हम में से हर एक को अपने से भर देता है। मसीह हर एक सदस्य को खुद से भर देता है।

कुलुस्सियों 2:9,10
[9] क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है;

[10] और तुम उसी में भरपूर हो गए हो, जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

हम उसमें पूर्ण किए गए हैं। यह स्थित्यात्मक सत्य है। स्थित्यात्मक सत्य का अर्थ यह आत्मिक क्षेत्र में एक सच्चाई है–परंतु हमें परमेश्वर के साथ हमारे प्रति दिन के जीवन द्वारा उसे वास्तविकता बनाने की ज़रूरत है। इसीलिए पौलुस गलातिया के विश्वासियों के लिए चाहता है कि *"मसीह का रूप में उनमें बने"* (गलातियों 4:19)।

मसीह मुझे खुद से भर देता है। परंतु प्रति दिन के जीवन में मुझे उसे भरने की अनुमति देना चाहिए, क्षण प्रति क्षण जीवन के हर क्षेत्र में। वह मुझे ऐसा करे की सामर्थ देता है।

पिता ने मसीह को कलीसिया के लिए सारी बातों का प्रधान ठहराया है। देह के पास वही अधिकार होता है जो सिर के पास होता है (मत्ती 28:18)। उसकी देह होने के नाते यहां पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार हममें निहित है।

उसकी देह होने के नाते, हम उसके हाथ और पांव हैं, हम उसकी इच्छा पूरी करते हैं

कलीसिया मसीह के उद्देश्य को अमल में लाने का साधन है। शरीर उस बात को अमल लाता है जो सिर आज्ञा देता है। हमें उसकी सुनना है और फिर जो वह कहता है उसमें आगे बढ़ना है। हमें वहां जाना है जहां जाने के लिए वह हमें निर्देश देता है। हमें वही करने है जिसे करने का वह हमें निर्देश देता है।

मत्ती 10:40
जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।

यीशु खुद को हमारे द्वारा विस्तारित देखता है।

यूहन्ना 20:21
यीशु ने फिर उनसे कहा, तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।

यीशु ने हमें अपना मिशन दिया है और हमें संसार में भेजा है। हमें समाज के हर क्षेत्र में प्रवेश करना है और हर स्थान में हमें अपना स्थान ग्रहण करना है ताकि यीशु जिस कार्य को पूरा करने की इच्छा रखता है, उसे वहां पूरा कर सकें। इसे प्रतिदान करने का सर्वोत्तम तरीका है उसका नमूना पेश करना। जब विश्वासी अन्य विश्वासियों को संसार में मसीह के हाथ और पांव के रूप में देखेंगे, तब वे भी ऐसा ही करेंगे।

उसकी देह होने के नाते, हमारा एकदूसरे के साथ रिश्ता है

हम एकदूसरे के साथ जुड़े हैं, हम एक दूसरे की ज़रूरतें पूरी करते हैं और हमें एक दूसरे की ज़रूरत है।

1 कुरिन्थियों 12 में, प्रेरित पौलुस मसीह की देह होने के विषय में कई महत्वपूर्ण सच्चाइयों के विषय में बताता है।

1 कुरिन्थियों 12:12-27
12 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।
13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वंतत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।
14 इसलिए कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं।
15 यदि पांव कहे कि मैं हाथ नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं?
16 और यदि कान कहे कि मैं आंख नहीं, इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं है?
17 ॰यदि सारी देह आंख ही होती, तो सुनना कहां होता? यदि सारी देह कान ही होती, तो सूंघना कहां होता?
18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।

19 यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती?
20 परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।
21 आंख हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरी आवश्यकता नहीं, और न सिर पांवों से कह सकता है कि मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं।
22 परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।
23 और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं, उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं; और हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत शोभायमान हो जाते हैं।
24 फिर भी हमारे शोभायमान अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को घटी थी उसी को और भी बहुत आदर हो।
25 ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
26 इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं; और यदि एक अंग की बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग आनन्द मनाते हैं।
27 इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और उसके अलग अलग अंग हो।

(i) शरीर के कई अंग होते हैं (12:12,14)।

देह में हमारी विभिन्न भूमिकाएं और कर्तव्य हैं। हम समान नहीं हैं।

(ii) हम में से हर एक देह का सदस्य है (12:27)।

हम में से कोई भी ऐसा नहीं है जिसकी ज़रूरत नहीं है।

(iii) हम स्वतंत्र नहीं हैं। हमें एक दूसरे की ज़रूरत है (12:15,16)।

(iv) देह में विभिन्न कार्य होते हैं (12:17)।

हम सब के समान कार्य नहीं है। हमें एक दूसरे के वरदानों और कार्यों की सराहना करना है और उत्सव मनाना है।

(v) परमेश्वर ने हर एक को उस स्थान में रखा है जहां हमें रखना उसे सर्वोत्तम लगा और जो उसे अच्छा लगा (12:18)।

हम अपने स्थान को पहचाने और जो भूमिका और कर्तव्य मसीह ने हमें दिया है उसका आनन्द उठाएं हम किसी और के वरदान, भूमिका और कर्तव्य से ईर्ष्या न रखें।

(vi) कइयों से मिलकर–हम सबसे मिलकर–एक सम्पूर्ण बन जाता है (12:19,20)।

इस बात को समझें कि हम सबके बगैर देह पूरी नहीं होती। हम स्थानीय कलीसियाई देह का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। इसलिए हमें एक साथ जुड़े रहना है और देह के साथ योगदान देना है।

(vii) हम कभी स्वतंत्र होने का दावा नहीं कर सकते (12:21)।

इस बात को पहचानें कि आपके जीवन में योगदान देने हेतु अन्य लोगों को आपके आसपास रखा गया है और उनके जीवनों में योगदान देनपे के लिए आपको उनके पास रखा गया है। मुझे अन्य लोगों की ज़रूरत है और अन्य लोगों को मेरी ज़रूरत है।

(viii) जिसके पास कम आदर होता है, उसे परमेश्वर और आदर देता है (12:22,24)।

जो निर्बल दिखाई देता है, वह वास्तव में आवश्यक होता है और इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। जो छिपा हुआ दिखाई देता है वास्तव में उसे ज्यादा आदर मिलता है और इसलिए उसके साथ तुच्छता का व्यवहार न किया जाए।

(ix) परमेश्वर उसकी देह में किसी प्रकार का विभाजन या संघर्ष नहीं चाहता, परंतु यह कि हम आपसी प्रेम प्रगट करें और एक दूसरे का ध्यान रखें (12:25,26)।

स्थानीय कलीसिया में इसे अमल में लाने के कुछ तरीके

1) उसकी देह होने के नाते, हमारा जीवन और पहचान उसी से आते हैं।

- विश्वासियों को सिखाएं कि वे खुद की पहचान को हमेशा यीशु में देखें और अपने डिनॉमिनेशन में या स्थानीय कलीसिया के नाम में नहीं।
- इस बात का ध्यान रखें कि जो कुछ हम स्थानीय कलीसिया के रूप में करते हैं वह उसके साथ रिश्ते और निकटता के स्थान से प्रवाहित होता है। सिर के बिना, देह निर्जीव है। हर एक बात में, यीशु के साथ निकटता को आवश्यक और बुनियादी स्थान दें।

2) उसकी देह होने के नाते, हम यीशु के प्रतिनिधि हैं, हम यीशु को प्रगट करते हैं।

- विश्वासियों को प्रोत्साहन दें कि जहां कहीं वे जाते हैं वहां यीशु के प्रेम, तरस, क्षमा, सामर्थ और अधिकार को प्रगट कर यीशु को प्रगट करें।

3) उसकी देह होने के नाते, हम उसके हाथ और पांव हैं, हम उसकी इच्छा पूरी करते हैं।

- सिर जो आज्ञा देता है उसे शरीर पूरा करता है। विश्वासियों को उसके निर्देशों को सुनना सिखाएं, और फिर वास्तविक और व्यवहारिक तरीके से बाहर जाकर संसार में वही करें जो वह चाहता है।

- उसने पहले से पवित्र शास्त्र में जो आज्ञा दी है, उसे करने के द्वारा हम आरंभ करते हैं। इसके अलावा हम कुछ निश्चित बातों को करते हैं जो स्थानीय कलीसिया के रूप में वह हम से कहता है।

4) उसकी देह होने के नाते, हमारा एक दूसरे के साथ रिश्ता है।

- सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन दें कि वे स्थानीय कलीसियाई देह में अपनी भूमिका और कर्तव्य को जानें।

- टीम कार्य के गहरे एहसास को बढ़ाएं। हम सभी टीम में महत्वपूर्ण हैं। हमें कार्य करने के लिए टीम (स्थानीय कलीसिया में) में एकदूसरे की ज़रूरत है।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

संस्कृति एवं सामाजिक पृष्ठभूमि की चुनौती

कुछ स्थानीय कलीसियाओं में ऐसे लोग हो सकते हैंजो विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कभी कभी लोगों को यह अंतर मिटाकर एक मन एक चित्त से एक देह के रूप में इकट्ठा होना मुश्किल लगता है। ऐसा होने के लिए समय लगता है। सीनियर पासबान/अगुवा होने के नाते बातों के विषय में संवेदनशील बनें। लोग उन्हीं समूहों में रहना पसंद

करते हैं जहां वे आरामदायक महसूस करते हैं। इसलिए लोगों को प्रोत्साहन दें कि वे अपने समूहों से बाहर निकलकर दूसरों से वार्तालाप करें। राज्य की संस्कृति हो प्रोत्साहन दें। किसी एक संस्कृति, समाज या भाषा समूह को दूसरे से अधिक महत्व न दें। हर एक के साथ समान व्यवहार करें। सेवकाई के हर क्षेत्र में इस बात पर ध्यान दें कि सभी लोगों को समान अवसर दिया जाए।

एक देह होने के विषय गलत लागूकरण

कभी कभी लोग एक देह होने के सत्य को गलत रीति से लागू करते हैं। वे एक स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित नहीं रहते, और अपनी मर्ज़ी से शहर की विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं में भटकते फिरते हैं। कुछ लोग अन्य कारणों से स्थानीय कलीसियाओं में भटकते हैं, जैसे नेटवर्क बनाना और सम्पर्क प्राप्त करना, अपनी सेवकाई को बढ़ाना आदि। जब कभी आप ऐसे लोगों से मिलते हैं, उन्हें एक स्थानीय कलीसिया के प्रति समर्पित होने के महत्व को समझाकर बताएं। उन्हें यह तस्वीर समझ लेने में सहायता करें कि शरींर के अंग यहां वहां तैरते नहीं फिरते, परंतु एक ही देह से जुड़े रहते हैं।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. हम इस सच्चाई के साथ कैसे संतुलन बनाते हैं कि हम एक ही स्थानीय कलीसिया के हैं और फिर भी सामुहिक रीति से मसीह की एक देह के अंग हैं?
2. अगुवे होने के नाते, हम कैसे हमारी अपनी स्थानीय कलीसिया के लिए जिसकी हम अगुवाई कर रहे हैं, एक दर्शन लेकर चलते हैं, उसी तरह एक बड़े दर्शन के भी भागी बनते हैं जो शहरव्यापी कलीसिया की सेवा करता है और शहर में सुसमाचार पहुंचाने का कार्य करता है?

9

स्थानीय कलीसिया–परमेश्वर का परिवार

परमेश्वर का भवन–आत्मिक घर

पवित्र शास्त्र में कई स्थानों में, परमेश्वर का भवन या घराना इन शब्दों का उपयोग मसीह की सामुहिक देह का और उसी तरह स्थानीय कलीसिया का उल्लेख करने के लिए किया गया है।

गलातियों 6:10
इसलिए जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

इफिसियों 2:19
इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।

1 तीमुथियुस 3:15
कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।

1 पतरस 2:5
तुम भी आप जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

"घर" यह शब्द के लिए यूनानी भाषा का शब्द है "*वपावे*" और परिवार के अर्थ से घर का उल्लेख करता है। हम परिवार हैं, परमेश्वर का परिवार। विश्वासी होने के नाते, हम सब ने परमेश्वर से जन्म पाया है, आत्मिक रूप से हमने परमेश्वर के बेटे और बेटियों के रूप में जन्म लिया है, हम परमेश्वर के एक ही परिवार के हैं (यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 5:1)। आत्मिक रीति से हम एक परिवार हैं।

प्रभु यीशु परिवार का मुखिया या घर का स्वामी है।

मत्ती 10:25
चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है। जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को और क्या न कहेंगे!

"घर का स्वामी" यूनानी में *"oikodespotes"* परिवार का मुखिया, घर का अधिकारी।

इब्रानियों 3:5,6
5 मूसा तो उसके सारे घर में सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा, कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था, उनकी गवाही दे।
6 परंतु मसीह पुत्र के समान उसके घर का अधिकारी है, और उसका घर हम हैं, यदि हम साहस पर, और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

मूसा जैसे सेवक था, उसके विपरीत प्रभु यीशु अपने घर में पुत्र है। अतः, पुत्र के नाते, वह अपने घर में महिमा के लायक है, जिस प्रकार घर बनाने वाला घर से बड़ा होता है (इब्रानियों 3:3)। और हम उसका घर हैं। हम उसका परिवार हैं।

स्थानीय कलीसिया परिवार है इसके तीन महत्वपूर्ण अर्थ

अ. परिवार में आपका उचित आचरण

जैसा कि पौलुस ने 1 तीमुथियुस 3:15 में कहा है, हमें सीखना है कि हम परमेश्वर के भवन में कैसे आचरण करें, अर्थात परमेश्वर के परिवार के अंग होने के नाते। परमेश्वर के लोगों को यह सिखाने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के परिवार के अंग होने के नाते उन्हें कैसे आचरण करना चाहिए। कुछ बातें हैं जो हमें करना है, कुछ बातें हमें नहीं करना है। यदि हम में से हर एक अनुशासन को दूर करेगा, परमेश्वर द्वारा नियुक्त सीमाओं को तुच्छ जानेगा और जो वह चाहता है वही करेगा, तो परमेश्वर का भवन उलझन, विद्रोह, और गड़बड़ी का स्थान बन जाएगा।

आ. स्वाभाविक और आत्मिक के मध्य सीमाएं

1 थिस्सलुनिकियों 3:6-16

6 हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता।

7 क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले।

8 और किसी की रोटी सेंत में न खाई; परंतु परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, ताकि तुममें से किसी पर भार न हो।

9 यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं; परंतु इसलिए कि अपने आप को तुम्हारे लिए आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो।

10 और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए।

11 हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, परंतु औरों के काम में हाथ डाला करते हैं।

12 ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।

13 और तुम, हे भाइयो, भलाई करने में हियाव न छोड़ो।

14 यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो;

15 तौभी उसे बैरी मत समझो, परंतु भाई जानकर चिताओ।

16 अब प्रभु जो शान्ति का सोता है, आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

थिस्सलुनीका में प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों को स्पष्ट आज्ञाएं दी कि उन्हें कैसे आचरण करना है और कौन सी बातों को अनुचित आचरण माना जाएगा।

आत्मिक परिवार होने और हम में से हर एक हमारे स्वाभाविक संसारिक परिवार होने के मध्य संतुलन बनाए रखते हुए और स्पष्ट रेखा निर्धारित करते हुए हमें बुद्धिमानी के साथ चलना है। उदाहरण के तौर पर, कोई यह नहीं कह सकता, मैं तुम्हारा आत्मिक भाई हूं, इसलिए मैं तुम्हारे

घर में घूम फिर सकता हूं और तुम्हारे घर में रह सकता हूं। या कोई यह नहीं कह सकता कि, मैं तुम्हारी प्रभु में बहन हूं, और इसलिए तुम्हारी सारी स्वाभाविक विरासत पर मेरा आत्मिक दावा है। कोई आपके आत्मिक पिता या आपकी आत्मिक माता होने का दावा करके आपको यह नहीं बता सकता कि आपको अपना जीवन कैसे जीना है, किसके साथ विवाह करना है, कौन सा काम करना है, क्या खाना है, कौन से कपड़े पहनना है, आदि। वे आपको सलाह दे सकते हैं और परामर्श दे सकते हैं, परंतु उन्हें आपके लिए जीवन नहीं बिताना है। आप अपने स्वाभाविक संसारिक जीवन के लिए ज़िम्मेदार हैं। परमेश्वर के आत्मिक परिवार होना स्वाभाविक परिवार की सीमाओं को लांघने की अनुमति नहीं देता।

इ . परिवार की संस्कृति, मूल्य, उद्देश्य और स्वप्न होते हैं

हर एक घराने या परिवार की एक निश्चित संस्कृति होती है जो उसके मूल्यों, उद्देश्यों और स्वप्नों द्वारा परिभाषित की जाती है। सामान्य तौर पर, घराने का मुखिया घर में जो कुछ होता है उसमें महत्वपूर्ण स्थान रखता है, और इसलिए वह घर की संस्द्भति को परिभाषित करता है।

उसी तरह, स्थानीय कलीसिया की अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है जो उसके मूल्यों, उद्देश्यों, स्वप्नों से निर्धारित होती है। दो स्थानीय कलीसिया के बीच की संस्कृति अत्यंत भिन्न हो सकती है (या समान भी हो सकती है)। विशिष्ट तौर पर, सीनियर पासबान और अगुवे की टीम स्थानीय कलीसिया की संस्कृति का निर्माण करते हैं। वे स्थानीय कलीसियाई समुदाय के मूल्यों, उद्देश्यों और स्वप्नों को परिभाषित करते हैं।

संस्कृति महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लोगों को एक दूसरे को समझने में मदद करती है और हमें यह दिखाती है कि एक विशिष्ट वातावरण में कार्य करने का स्वीद्भत तरीका क्या है।

ए.पी.सी. में हमारी संस्कृति, मूल्य, उद्देश्य, स्वप्न

यहां बैंगलोर के ऑल पीपल्स चर्च (ए.पी.सी.) में, हमारी एक सुपरिभाषित पारिवारिक संस्कृति है। हमारे मूल्य, उद्देश्य और स्वप्न स्पष्ट हैं।

हमारी संस्कृतिः

- सहज, समकालीन, सृजनात्मक
- हर कोई सेवक है
- वचन पर आधारित, आत्मा की अगुवाई में
- आत्मिक, फिर भी व्यवहारिक
- सक्रिय, सामर्थी, प्रबल

हमारे मूल्यः

- खराई
- उत्तमता
- परमेश्वर जो कर रहा है उस अगुवाई में बने रहें
- हर एक के लिए अवसर
- एकता और सम्बंद्धता
- रिश्ते

हमारे उद्देश्यः

- यीशु के नाम को महिमा दें और ऊंचा उठाएं–ए.पी.सी. मनुष्य, डिनॉमिनेशन या संस्था का कार्य नहीं है। परंतु यह प्रभु का, उसके आत्मा के द्वारा, उसके लोगों के माध्यम से किया जाने वाला कार्य है।
- प्रभाव डालें–बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति बनें, भारत देश और अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज़। आत्माओं को जीतें और हर समय, हर स्थान में, शिष्य बनाएं।
- प्रत्येक विश्वासी को तैयार करें–हर एक विश्वासी को परिपक्वता की ओर लाएं, सेवा के लिए तैयार करें और मुक्त करें। ए.पी.सी. में हर एक विश्वासी सेवक है।

हमारे स्वप्नः

- पांच मज़बूत कलीसियाओं को तैयार करना, बैंगलोर में हर एक कलीसिया में 50000 से अधिक लोग हों, हर एक कलीसिया समाज के सभी स्तरों में एक सामर्थी प्रभाव रखे।
- इस सम्पूर्ण राष्ट्र में कई कलीसियाएं तैयार करना–शहरों, नगरों, और गांवों में, हज़ारों को परमेश्वर के राज्य में इकट्ठा करना और उन्हें शिष्य बनाना।
- अन्य राष्ट्रों में जाना–संसार के विभिन्न क्षेत्रों को सुसमाचार से प्रभावित करना, कलीसियाओं को स्थापित करना, बाइबल कॉलेजेस स्थापित करना और परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों के जीवनों में अंतर लाना।

स्थानीय कलीसिया में तीन महत्वपूर्ण पारिवारिक आदतें

परिवार में, कुछ बातें ऐसी होती हैं जो अक्सर की जाती हैं और उन्हें महत्वपूर्ण समझा जाता है। उदाहरण के तौर पर, हो सकता है कि परिवार हमेशा एक साथ भोजन करता हो। परिवार हर शाम एक साथ मिलकर आराधना करता हो। परिवार हर रविवार एक साथ मिलकर चर्च जाता हो। परिवार एक साथ मिलकर रविवार के दोपहर का भोजन हर एक के लिए एक विशेष अवसर बनाता हो, शायद वे हर रविवार की दोपहर बाहर होटेल में खाना खाते हों। ये बातें परिवार नियमित रूप से करेगा, और ऐसा करना है यह बोलने की भी आवश्यकता नहीं होगी। यह अपने आप होता है।

उसी तरह, क्योंकि स्थानीय कलीसिया एक परिवार है, इसलिए कुछ आदतें ऐसी होती हैं, जिनका हमें निरंतर पालन करना है और उन्हें इस तरह से 'सहज' बनाना है, जैसे हम अपने परिवार का जीवन जीते हैं। यहां पर कुछ बातें बताई गई हैंः

अ. भाईचारे के प्रेम में चलें

1 थिस्सलुनीकियों 4:9,10

[9] किन्तु भाईचारे की प्रीति के विषय में यह अवश्य नहीं, कि मैं तुम्हारे पास कुछ लिखूं; क्योंकि आपस में प्रेम रखना तुमने आप ही परमेश्वर से सीखा है।

[10] और सारे मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो, परंतु हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं कि और भी बढ़ते जाओ।

प्रेरित पौलुस इस बात को पहचानता है कि थिस्सलुनीकिया के विश्वासी सचमुच प्रेम में चलते थे और उसने उन्हें प्रोत्साहन दिया कि वे उसमें और अधिकाधिक बढ़ते जाएं। हम भाईचारे के प्रेम में बढ़ सकते हैं, उस प्रेम में हम चल सकते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के परिवार के हैं।

हम एक दूसरे के प्रति दयालुता बताकर और दूसरे को खुद से बेहतर जानकर भाईचारे के प्रेम में चल सकते हैं (रोमियों 12:9,10)। हम विश्वास के घराने के लोगों की भलाई करके अपने भाईचारे के प्रेम में चल सकते हैं (गलातियों 6:10)। हम निर्बल को सहारा देकर और गिरे हुए को उठाकर भाईचारे के प्रेम में चल सकते हैं (रोमियों 15:1,2; गलातियों 6:1,2)।

आ. आत्मा की एकता और सहभागिता बनाए रखें

इफिसियों 4:3

मेल के बन्ध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

'यत्न करना' यूनानी *"spoudazo"* अर्थ है गति का उपयोग करना, अर्थात्, प्रयास करना, फुर्तिला या आग्रहपूर्ण होना–ध्यान देना, तत्पर रहना, प्रयास करना, परिश्रम करना, अध्ययन करना।

हमारे रिश्तों को मज़बूत बनाकर, उन कामों को करके एक साथ जुड़ जाना जो हमारे मध्य शांति, और मेल को लाते हैं (समन्वय, विश्राम) और इसके द्वारा उस एकता को बनाए रखने का हर तरह से प्रयास करें जो पवित्र आत्मा लाता है।

हम मेल के बंधन में आत्मा की एकता बनाए रखने का प्रयास करते हैं।

हम उन बातों को त्याग देते हैं जो विभाजन और कलह ले आती हैं क्योंकि विभाजन या फूट हमें निर्बल कर देता है। *"और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?"* (मरकुस 3:25)।

निंदा से दूर रहें, एक दूसरे के विषय में शिकायत करना और कुड़कुड़ाना आदि बातों से दूर रहें। *"एक दूसरे पर दोष न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो, देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है"* (याकूब 5:9)।

हम कोई भी कार्य स्वार्थपूर्ण इच्छा से या खुद को बढ़ावा देने के लिए नहीं करते। *"विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो परंतु दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो"* (फिलिप्पियों 2:3)।

जब एक व्यक्ति कुछ व्यक्तिगत और निजी जानकारी किसी को देता है, तो हम उसे जाकर अन्य लोगों के साथ उस विषय में चर्चा नहीं करते! *"जो दूसरे के अपराध को ढांप देता, वह पेम का खोजी ठहरता है, परन्तु जो बात की चर्चा बार बार करता है, वह परम मित्रों में भी फूट करा देता है"* (नीतिवचन 17:9)।

हर एक की अपनी राय हो सकती है, परंतु जब फैसला लिया जाता है, तब हम सबको एक साथ चलना सीखना है–*"एक मन रहो, और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो"* (फिलिप्पियों 2:2)।

इ . हर कोई काम करता है

विशिष्ट तौर पर परिवार में, घर को चलाने में छोटे बच्चों को छोड़ हर कोई कुछ न कुछ ज़िम्मेदारी उठाता है। उसी तरह परमेश्वर के घर में भी, हम सभी जो स्थानीय कलीसियाई परिवार के अंग हैं, इस बात को समझते हैं कि हमें कुछ करना है। हम उठकर परमेश्वर के भवन के कार्य के लिए अपनी भूमिका निभाते हैं।

घर में काम करना होता है और हर एक को कुछ न कुछ काम सौंपा जाता है (मरकुस 13:34)।

हम सभी सेवा करवाना नहीं चाहते, परंतु सेवा करना चाहते हैं।जैसे कि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे (मत्ती 20:28)।

गलातियों 6:2-5
2 तुम एक दूसरे के भार (बोझ, वजन) उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो।
3 क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।
4 परंतु हर एक अपने ही काम (प्रयास, परिश्रम जैसे व्यवसाय में) को जांच ले, और तब दूसरे के विषय में नहीं, परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा।
5 क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ (कार्य, सेवा) उठाएगा।

कुछ बातों में हमें एक दूसरे की मदद करना चाहिए और कुछ बातों के विषय में हमें व्यक्ति होने के नाते हमें ज़िम्मेदार रहना है। हमें दबाने वाली बातों को उठाकर चलने में हमें एक दूसरे की सहायता करना है। ये जीवन की चुनौतियां, संघर्ष, मुश्किल परिस्थितियां और ऐसी बातें हो सकती हैं जिनका सामना समय समय पर किसी को भी करना पड़ सकता है। हमें इन बातों में एक दूसरे की मदद करने की ज़रूरत है।

परंतु, दूसरी ओर, जब उन कामों को करने की बात आती है, जैसे, कार्य, ज़िम्मेदारियां, व्यवसाय, हम इस बात को समझते हैं कि हम में से हर एक अपना काम करता है और अपनी ज़िम्मेदारियों को उठाता है। हमें अपना बोझ उठाना है, अर्थात् अपने कर्तव्यों को पूरा करना है।

स्थानीय कलीसियाई परिवार में पिता, माता, बेटे और बेटियां

परिवार में सामान्य तौर पर विभिन्न उम्र के और परिपक्वता के लोग रहते हैं–पिता/माता, जवान पुरुष/स्त्रियां और छोटे बच्चे।

यद्यपि प्रेरित पौलुस ने अपनी पहली पत्री किसे सम्बोधित की, लोगों के समूह को, या कलीसिया को या कलीसियाओं के समूह को, हम नहीं जानते, फिर भी हम उसे तीन प्रकार के लोगों को सम्बोधित करते हुए देखते हैं, जिन्हें वह सम्बोधित करता है, "छोटे बच्चों" "जवानों, और पिता"।

- छोटे बच्चों (1 यूहन्ना 2:1,12,13,18,28; 3:7,18; 4:4; 5:21)।
- जवान पुरुषों (1 यूहन्ना 2:13,14)।
- पिता (1 यूहन्ना 2:13,14)।

स्थानीय कलीसिया में हमारे पास विभिन्न आत्मिक उम्र और परिपक्वता के लोग होंगे। हम उनसे कैसे व्यवहार करते हैं, क्या अपेक्षा करते हैं, लोगों को कौन से काम सौंपते हैं यह उनकी आत्मिक परिपक्वता की उम्र पर आधारित होगा।

उदाहरण के तौर पर, स्वाभाविक क्षेत्र में, हम छोटे बच्चों के विषय में अधिक सहनशीलता रखते हैं। हम उनकी गलतियों को नज़रअंदाज करते हैं, उनकी ज़रूरतों पर अधिक ध्यान देते हैं। जैसे जैसे लोग बड़े होते जाते हैं, हम उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे अपनी ज़िम्मेदारी से काम करें, उन्हें अधिक देखभाल की ज़रूरत न हो, और कुछ ज़िम्मेदारियों को उठाने में वे हमारी सहायता करें।

गलातियों 4:1,2
1 मैं यह कहता हूं, कि वारिस जब तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है, तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं।
2 परन्तु पिता के ठहराए हुए समय तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है।

जब हम बच्चे होते हैं, तब हमारे अधिकार और ज़िम्मेदारियां प्रौढ़ बेटे/बेटियों से भिन्न होते हैं। बच्चे जब तक परिपक्व बेटे और बेटियों के रूप में बड़े नहीं हो जाते, तब तक उन्हें आत्मिक अगुवों और प्राचीनों की अधीनता में रहना पड़ता है।

हमें हर एक की परवरिश करना है ताकि वे परमेश्वर के भवन में पिता और माता बनने हेतु बड़े हो जाएं।

"पुत्र की मानसिकता" बनाम "दास की मानसिकता"

लोग परमेश्वर के भवन स्थानीय कलीसिया के साथ कैसे व्यवहार करते हैं इसमें वे खुद को कैसे देखते हैं इस आधार पर बड़ा अंतर होता है। जो लोग परमेश्वर के भवन के साथ अपनत्व की भावना रखते हैं, स्थानीय कलीसिया परिवार का हिस्सा मानते हैं, उनमें पुत्र की मानसिकता होती है। जिनका स्थानीय कलीसियाई परिवार के साथ ऐसा रिश्ता नहीं होता, वे अक्सर "दास की मानसिकता" रखते हैं।

यूहन्ना 8:35
और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।

फिलिप्पियों 2:19-22
19 मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले।
20 क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे।
21 क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की।
22 पर उसको तो तुमने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया।

दास घर में प्रतिफल पाने के लिए काम करता है, परंतु पुत्र घर में इसलिए काम करता है क्योंकि घर के प्रति उसकी अपनत्व की भावना होती है।

दास का समर्पण बदल सकता है और वह दूसरे घर में काम करने के लिए एक घर को छोड़ सकता है। पुत्र अपने समर्पण में दृढ़ होता है। वह जानता है कि वह किस घर से है। दास को उसके काम के लिए प्रतिफल मिलता है, परंतु पुत्र को विरासत या उत्तराधिकार मिलता है, क्योंकि वह उस घर का है।

हमें "पुत्र की मानसिकता" रखने में लोगों की मदद करना चाहिए। उनमें स्थानीय कलीसियाई परिवार के प्रति अपनत्व का बोध हो, परमेश्वर जो कुछ कर रहा है, उसका वे हिस्सा बनें, क्योंकि वे समझते हैं कि वे परमेश्वर के भवन का अभिन्न अंग हैं।

यदि पासबान/अगुवा होने के नाते, हम परमेश्वर के लोगों के साथ बेटे और बेटियों के रूप में बर्ताव करेंगे, तो वे उस भावना में बढ़ेंगे। उनमें पुत्रत्व की भावना होगी। परंतु यदि हम उनके साथ दासों जैसा व्यवहार करेंगे, तो वे दास की मानसिकता में बढ़ेंगे। पासबान/अगुवा होने के नाते, यह महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के भवन में परमेश्वर के लोगों पर अधिकार जताने के बजाए, हम स्वयं सच्चे माता-पिता बनना सीखें। पिता और माता के पास बेटे और बेटियां होती हैं। स्वामी और अधिकारियों के पास दास या सेवक होते हैं। हम कौन हैं, यह इस बात को निर्धारित करेगा कि परमेश्वर के भवन में हम किस प्रकार के लोगों की परवरिश करते हैं।

घर के बेटे और बेटियों के गुण

घर के बेटे और बेटियों के कुछ गुणः

1. विश्वासयोग्यता दर्शाना

- वे परिवार के प्रति विश्वासयोग्य होते हैं। वे दिए गए दर्शन और अभिदिशा से जुड़े रहते हैं।

2. बेटे और बेटियों के रूप में सेवा करना

- वे घर के अगुवे के दर्शन और अभिदिशा के साथ एक मन रखते हैं।
- वे प्रेम के कारण सेवा करते हैं और विवशता में नहीं।
- वे अगुवे के हृदय को समझते हैं और प्रतिबिम्बित करते हैं, वे अपनी कल्पनाओं और अभिरूचियों के विषय में नहीं बोलते।
- वे परिवार में/परमेश्वर के भवन में लोगों का स्वागत करते हैं और उन्हें परमेश्वर की भवन की ओर खींचते हैं, खुद की ओर नहीं।

फिलिप्पियों 2:19-22

19 मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले।
20 क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे।
21 क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की।
22 पर उसको तो तुमने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया।

- "मेरे जैसे स्वभाव का"–समान भाव/आत्मा रखनेवाला (स्ट्रॉन्ग का शब्दकोष)

- फिलिप्पि में एक कलीसिया का निर्माण करने में पौलुस के साथ तीमुथियुस ने काम किया। उसने पौलुस के साथ विश्वासयोग्यता से सेवा की, इतनी कि पौलुस उसे मेरे जैसे स्वभाव का और "जैसा पुत्र पिता के साथ" इस प्रकार के शब्दों का उसके लिए उल्लेख करता है। बाद में, तीमुथियुस ने अपनी सेवकाई आरम्भ की, वह इफिसुस की कलीसिया का पासबान बन गया।

3. अच्छे मन से ताड़ना को स्वीकार करना

- जिस प्रकार हर एक अच्छा पिता बड़े प्रेम के साथ अपने बच्चों की ताड़ना करता है (इब्रानियों 12:7-13), उसी प्रकार बेटे और बेटियां परवरिश की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में ताड़ना को समझते और ग्रहण करते हैं। घर का बेटा या बेटी बिना दुखी हुए ताड़ना को स्वीकार करेगा।

4. घर के माता और पिता का आदर करना

- बेटे और बेटियां परमेश्वर के भवन में माता-पिता का, अगुवों का आदर करते हैं।

- उत्पत्ति 9:18-27 में नूह और उसके बेटों की एक दिलचस्प घटना है। सबसे पहले जहां तक हम जानते हैं शराब (दाखमधु) की खोज लगाने वाला नूह ही है। नूह ने बहुत शराब (दाखमधु) पीकर बड़ी

गलती की। इस घटना के बाद उसने कभी इस प्रकार फिर शराब पी और मतवाला हुआ इसका कोई संकेत नहीं है। खैर, जब हाम ने अपने पिता को नग्न पड़ा हुआ देखा, तब उसने बाहर जाकर अपने भाइयों को बताया। पूरी सम्भावना है कि उसने ऐसा उपहास करने की भावना से किया, परंतु, शेम और यापेत ने कपड़ा लिया, और पीछे चलते हुए गए और उन्होंने अपने पिता की नग्नता ढांपी। नूह जब नींद से जाग उठा और जो कुछ हुआ था उस विषय में जाना, तब उसने शेम और यापेत को पिता की आशीष दी।

- सच्चे बेटे और बेटियां निन्दा नहीं करते, बदनामी नहीं करते और लोगों के बीच में घर में होने वाली गलतियों की चर्चा नहीं करते। ईमानदारी के साथ की हुई गलतियों को क्षमा किया जा सकता है, भुला दिया जा सकता है और ढांप दिया जा सकता है, अर्थात् लगातार किए जाने वाले पापों को सबके सामने लाया जाना चाहिए और उनका न्याय करना चाहिए।

परमेश्वर के भवन में माता और पिता

हम पिता इस शब्द का उपयोग बिना किसी लिंग भेद के कर रहे हैं, उसमें माता का भी समावेश है। परमेश्वर अंतिम पिता है। सारा पितृत्व उसी की ओर से आता है (इफिसियों 3:14,15)। उसके बच्चे होने के नाते हम उसी स्वभाव में चलते हैं जो हमें दूसरों के लिए माता/पिता बनाता है। आत्मिक पिता होना परमेश्वर के पितृत्व का विस्तार है।

पौलुस के आत्मिक बेटे/बेटियां थीं। उसने तीमुथियुस, तीतुस, कुरिन्थुस, गलातिया और थिस्सलुनीका के विश्वासियों को अपने आत्मिक बेटे/बच्चे कहा (2 तीमुथियुस 1:2; तीतुस 1:4; 1 कुरिन्थियों 4:14-17; गलातियों 4:19; 1 थिस्सलुनीकियों 2:10-12)।

यह देखना दिलचस्प है कि जब पिता के हृदय बच्चों की ओर नहीं होते और बच्चों के हृदय पिता की ओर नहीं होते, तब यह श्राप के लिए द्वार खोल देता है (मलाकी 4:5,6)। शायद कई स्थानीय कलीसियाएं इस

बात को तब अनुभव करती हैं जब बेटे और बेटियों के बीच और पिता और माता के बीच कलह होता है।

सच्चा आत्मिक पिता/माता वह है जो व्यक्ति को आत्मिक बालकपन से प्रौढ़ता की ओर ले जाता है। आत्मिक पिता और माता अपने बच्चों के लिए आत्मिक विरासत छोड़ जाते हैं (2 कुरिन्थियों 12:14)। वे आत्मिक उत्तराधिकारी को आगे बढ़ाते हैं (2 तीमुथियुस 1:3-5)। मुख्य रूप से, आत्मिक पिता/माता होने का अर्थ हम लोगों का ऐसे स्थान में परिपोषण करते हैं जहां पर वे वह सबकुछ पा सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

अर्थात्, कोई सिद्ध माता-पिता नहीं हैं। आत्मिक माता और पिता गलतियां कर सकते हैं, परंतु सच्चे पिता/माता कबूल करेंगे कि उन्होंने गलती की और वे अपनी भूल को सुधारेंगे।

यहां कुछे तरीके हैं जिससे हम माता और पिता बन सकते हैं जहां पर हम लोगों की परवरिश कर सकते हैं और उन्हें परिपक्वता की ओर ले जा सकते हैं।

- व्यक्तिगत रिश्ता बनाएं ताकि उस रिश्ते के आधार पर हम लोगों के जीवनों में बोल सकते हैं।
- एक ऊपरी सतही तौर के रिश्ते से आगे ऐसे स्थान में बढ़ जाएं जहां पर हम लोगों को प्रेम के साथ सुधार सकते, डांट सकते, अनुशासित कर सकते और मार्गदर्शन कर सकते हैं, ताकि भीतरी मनुष्य को शिक्षा दे सकें, ताकि वे परमेश्वर के वचन के अनुसार ढल सकें।
- लोगों पर सकारात्मक प्रभाव डालें और उन्हें उनकी आत्मिक उन्नति, आचरण, प्रतिदिन की जीवनशैली और सेवकाई के लिए उत्तरदायी समझें।
- लोगों के वरदानों पर कार्य करने अधिक, उनके चरित्र में सुधार लाने के विषय में कार्य करें। मात्र लोगों के वरदानों का उपयोग करने के बजाए सच्चे और खरे हृदय के साथ व्यक्ति की उन्नति करें।

- लोगों को प्रोत्साहन दें कि वे स्वयं आगे बढ़ें। और जहां हम हैं वहां से यदि वे आगे बढ़ जाते हैं, तो हम असुरक्षित महसूस नहीं करते। सच्चे आत्मिक पिता/माता शाऊल के समान नहीं होंगे जो दाऊद की उपलब्धियों से ईर्ष्या रखता था।
- लोगों को परमेश्वर द्वारा नियुक्त उनके भवितव्य के लिए प्रशिक्षित करें, और सही समय में बिना किसी नियंत्रण के उन्हें सेवा के लिए मुक्त करें।

परिवार बनना–समाज का विकास करना

परमेश्वर के भवन के रूप में जीवन बिताने का प्रयास करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है, विश्वासियों के ऐसे समाज को उत्पन्न करना जो वास्तविक और व्यवहारिक रीति से हमारे पारिवारिक रिश्ते को जीए। हम केवल रविवार के दिन या आराधना के दौरान जब हम इकट्ठा होते हैं, तब परमेश्वर का परिवार नहीं हैं। हम सप्ताह के हर एक दिन परमेश्वर का परिवार हैं, अतः सप्ताह के हर दिन वास्तविक और व्यवहारिक तरीके से इसके अनुसार हमें जीवन बिताना चाहिए।

परंतु हमें मसीही समाज के सच्चे स्वरूप को समझना है, अन्यथा हम दूसरा सामाजिक समूह निर्माण करेंगे, और संसार जो करता है, उससे भिन्न नहीं होंगे। फिर परमेश्वर ने हमें अपना परिवार होने के लिए जिस उद्देश्य से बुलाया है, उस उद्देश्य का हम खो बैठेंगे।

मसीही समाज क्या है

यह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह से व्यवहार करते हैं जिसमें प्रभु यीशु केंद्रिय स्थान पर है, उसके कारण उसके लिए और उसके द्वारा हम एक साथ मिलकर सबकुछ करते हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां आत्मिक बातों में आत्मिक पोषण और आत्मिक उन्नति पर ज़ोर दिया जाता है। इसलिए इसे एक साथ प्रार्थना, आराधना, परमेश्वर का वचन बांटना लोगों के मध्य जो कुछ होता है उसका महत्वपूर्ण भाग हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां एक जीवन से दूसरे जीवन का परिपोषण होता है ताकि लोगों के जीवनों में मसीह के समान चरित्र का निर्माण होता है। लोग ईश्वर भक्ति में एक साथ बढ़ते हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां हम प्रेम और तरस के साथ एक दूसरे की सेवा करते हैं, एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने में सहायता करते हैं, और विपत्ति के समय एक दूसरे को सहारा देते हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां पर हम संसार में एक दूसरे को सक्षम बनाते हैं और एक दूसरे को तैयार करते हैं। हम समाज में और संसार में अपने विश्वास के अनुसार जीने के लिए व्यवहारिक तरीके एक दूसरे के साथ बांटते हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां हम प्रेम में और भले कामों में एक दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं, ताकि हम एक साथ मिलकर अपने पड़ोसियों को, अपने शहर और राष्ट्र को सुसमाचार सुना सकें।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जो एक दूसरे के साथ इस तरह व्यवहार करते हैं जहां पर हम महान आदेश को पूरा होते हुए देखने के लिए एक साथ काम करते हैं। हम आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने के लिए सारे संसार में जाते हैं।

वह विश्वासियों का ऐसा समाज है जिनके मध्य और जिनके द्वारा हम परमेश्वर के राज्य को प्रगट होते हुए देखते हैं। परमेश्वर का राज्य हमारे बीच में है।

हम प्रारंभिक कलीसिया में इसकी एक झलक देखते हैं जब यरूशलेम की कलीसिया का जन्म हुआ था। यह सच है कि तब परिस्थितियां भिन्न

थीं, कई लोग अपने निवास स्थानों से निकलकर यरूशलेम को पिन्तेकुस्त का पर्व मनाने के लिए आए थे, उन्होंने उद्धार पाया था और उन्होंने वहां रहने का निर्णय लिया था। परिवार के परिवार के रूप में उन्होंने किस तरह जीवन में अपनी भूमिका निभाई, यहां हम देखते हैं:

पेरितों के काम 2:44-47
44 और वे सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी, बांट दिया करते थे।
46 और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।
47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

- उन्होंने अपने संसाधनों को आपस में बांटा।
- वे आराधना, प्रार्थना और सिखाने के लिए इकट्ठा हुए।
- उन्होंने एक दूसरे के घरों में भोजन खाया।
- उन्होनें एक दूसरे के घरों में एक साथ परमेश्वर की आराधना की।
- सब लोग उनसे प्रसन्न थे–उद्धार न पाए हुए लोगों के साथ भी उनके स्वस्थ संबंध थे।
- उन्होंने प्रति दिन विश्वासियों को उनमें शामिल होते देखा।

यह सच्चे मसीही समाज का उत्तम उदाहरण है।

मसीही समाज क्या नहीं है

यह महत्वपूर्ण है कि हम ऐसा समाज बनाने के फंदे में न पड़ें, जो सच्चा मसीही समुदाय नहीं है। यदि हम सही नहीं करते हैं तो हम संसार के समान कर बैठते हैं, या संसार से भी बहुत बुरा क्योंकि हम ऐसा बनने का बहाना करते हैं जो हम हैं नहीं।

संसारिकता के लिए मसीही पहनावा नहीं

हम मसीही संगति के नाम में इकट्ठा होकर ऐसे काम न करें जो विश्वासियों के लिए उचित नहीं है। उदाहरण के तौर पर, यदि विश्वासी इकट्ठा होकर अश्लील सिनेमा देखते हैं, तो यह बात उन्हें सच्ची मसीही संगति नहीं बनाती। *"एक साथ बैठकर संदेहास्पद बातों को बांटना या गंदे हास्यविनोद सच्ची मसीही संगति का निर्माण नहीं करते।और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। और न निर्लज्जता, न मूढ़ता की बातचीत की, न ठट्ठे की, क्योंकि ये बाते सोहती नहीं, वरन् धन्यवाद ही सुना जाए"* (इफिसियों 5:3,4)।

शिष्य बनाने हेतु संसार में जाने के लिए कोई और बचाव नहीं

मसीही समाज को सुसमाचार बांटने हेतु संसार में जाने से छिपने का स्थान या बचाव नहीं होना चाहिए। अक्सर हमें इकट्ठा होना बड़ा आरामदायक महसूस होता है। परंतु यदि हम ऐसा हमेशा करते रहें, तब हम संसार पर प्रभाव नहीं डाल सकते। हमें जानबूझकर यीशु मसीह के लिए लोगों तक पहुंचने की ज़रूरत है।

सच्ची आत्मिक संगति का स्थान दूसरी कोई बात नहीं ले सकती

एक साथ समय बिताना, एक साथ काम करना, एक दूसरे से सीखना, आपस में भोजन बांटकर खाना, शुद्ध हास्य विनोद करना, और अन्य अच्छी बातें हम एक साथ कर सकते हैं। परंतु यदि हम विश्वास, प्रार्थना, आराधना और अन्य वस्तुएं जिन पर हमने पहले महत्व दिया है, और एक साथ रहने का महत्वपूर्ण भाग है, दूसरों के साथ नहीं बांटते, तो हम अन्य सामाजिक दलों से भिन्न नहीं हैं।

परमेश्वर घर को साफ करता है

1 पतरस 4:17

क्योंकि वह समय आ पहुंचा है कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उनका क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं मानते?

हमें यह ध्यान में रखना है कि परमेश्वर अपने भवन, स्थानीय कलीसियाई परिवार को सुव्यवस्थित चाहता है। ऐसा समय आएगा जब कई बातें ठीक नहीं होंगी, और परमेश्वर को अपने घर को साफ करने की ज़रूरत होगी। न्याय परमेश्वर के भवन से आरम्भ होता है। परमेश्वर के भवन को सुव्यवस्थित बनाए रखना बेहतर है, ताकि ऐसा कुछ भी न हो जिस पर परमेश्वर का न्याय प्रगट हो।

स्थानीय कलीसिया द्वारा इस पर अमल करने के व्यवहारिक तरीके

- परमेश्वर के भवन के विषय में, परमेश्वर के परिवार के विषय में अपनत्व की भावना उत्पन्न करें। स्थानीय कलीसिया मात्र आराधना में भाग लेने का स्थान न हो। वह परिवार बनने पाए, ऐसा स्थान जिसके विषय में हर एक में अपनत्व की भावना होती है।
- लोगों को "सेवक की मानसिकता" के साथ नहीं, परंतु "पुत्र की मानसिकता के साथ" सेवा करने हेतु प्रोत्साहित करें।
- लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे प्रभु के घर में पिता और माता बनें।
- पिता और माता को प्रोत्साहित करें कि वे छोटे बच्चों की परवरिश करें।
- सच्चा मसीही समाज तैयार करें। इसके लिए समय लगेगा, परंतु यह आवश्यक है। समाज का पोषण करने का उत्तम तरीका है, लोगों को प्रोत्साहन दें कि वे नियमित रूप से छोटे समूहों में इकट्ठा हों, और कलीसिया के बाहर भी अनौपचारिक तौर पर आपस में मिलें।
- विशिष्ट सेवा करने वाली (स्वयंसेवकों की टीम, आराधना टीम, संचार माध्यम टीम और अन्य टीमें) टीमों के मध्य सच्चे मसीही समाज का निर्माण करना समाज की परवरिश करने का दूसरा तरीका है।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- जो स्थानीय कलीसिया का हिस्सा है उनमें से हर एक ज़रूरी नहीं कि आत्मिक परिवार का हिस्सा बनने की या समाज तैयार करने की आवश्यकता महसूस करे। कई लोग दो घण्टे की रविवार की आराधना में आत्मिक अनुभव पाकर भी संतुष्ट होते हैं। परमेश्वर का भवन बनना क्या होता है और परमेश्वर के परिवार बनने की इच्छा रखना इन बातों को समझने में लोगों की सहायता करना और इस विषय में उन्हें सिखाना आदि बातों के लिए काफी धीरज की आवश्यकता होती है।
- कई सैकड़ों लोगों की मण्डली, शायद हज़ारों लोगों की मण्डली वाली विशाल कलीसिया में, लोगों के लिए एक दूसरे के प्रति दूरी, अकेलापन, आदि महसूस करना आसान होता है। छोटे समूह उपलब्ध होने पर भी, छोटे समूहों के साथ जुड़ने में लोगों की सहायता करना एक चुनौती है।
- इसमें गुटबाजी या संभांत लोगों के समूह तैयार करने का खतरा हो सकता है। ये समूह आपस में समुदाय का आनन्द उठा लेते हैं, परंतु बड़े परिवार से खुद को अलग रखते हैं, जिससे भलाई के बजाए हानि ही होती है।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. स्थानीय कलीसियाई मण्डली सचमुच परमेश्वर का भवन बन रही है और परिवार होने का अनुभव कर रही है या नहीं इसका परीक्षण और मूल्यांकन करने के कुछ तरीके क्या हैं?
2. हम परवरिश की ऐसी संस्कृति का कैसे निर्माण कर सकते हैं जहां पिता और माता स्वयं ही छोटे बच्चों की निगरानी और परवरिश करते हैं।

10

स्थानीय कलीसिया–सत्य का स्तम्भ

1 तीमुथियुस 3:15
कि यदि मेरे आने में देर हो, तो तू जान ले कि परमेश्वर का घर, जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उसमें कैसा बर्ताव करना चाहिए।

स्थानीय कलीसिया को पाप से पीड़ित, भ्रष्ट अंधकारमय और अधर्मी संसार में सत्य का खंभा और आधार होना चाहिए, सत्य को उठाए रखने वाला, मानक को उठाकर रखने वाला सत्य की बुनियाद होना चाहिए। जब लोग सही क्या और गलत क्या है यह जानना चाहते हैं तब उन्हें संदर्भ बिंदु के रूप में उनके समाज में स्थित स्थानीय कलीसिया की ओर देखना चाहिए।

सत्य के प्रति पंक्तिबद्ध और समर्पित

यूहन्ना 17:17
सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।

स्थानीय कलीसिया समुदाय और जिस समाज में वह रहता है, उसमें सत्य की समर्थक और बुनियाद है। परमेश्वर का वचन सत्य है। स्थानीय कलीसिया को परमेश्वर के वचन, सत्य के अनुरूप और उसके प्रति समर्पित होना चाहिए। अर्थात इसका आरंभ स्थानीय कलीसिया के अगुवों से होता है जो परमेश्वर के पवित्र वचन के प्रति समर्पित होते हैं। यदि अगुवे समझौता करते हैं, तब बाकी कलीसिया की देह के लिए सत्य को उठाए रखना मुश्किल होता है।

स्थानीय कलीसियाओं के पासबान और अगुवे होने के नाते, हमें बिना किसी समझौते के परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित रहना है और बिना लजाए उसके वचन का समर्थन करना है। जब वर्तमान विषयों पर बोलने के लिए कहा जाएं, तब हमें बड़े हियाव के साथ और बिना लजाते हुए

उस बात की घोषणा करना है जो परमेश्वर का वचन इन विषयों के संबंध में बोलता है।

ऐसे लोगों को खड़ा करें जो सत्य को थामे रहेंगे

यूहन्ना 17:15-19

15 मैं यह बिनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।
16 जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।
17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर; तेरा वचन सत्य है।
18 जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा।
19 और उनके लिए मैं अपने आप को पवित्र करता हूं, ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं।

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों के लिए और हम में से जो उस पर विश्वास करने वाले थे उनके लिए प्रार्थना की, और यह अंगीकार किया कि हम संसार के नहीं थे, फिर भी हमें संसार में भेजा जा रहा था, तब प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, *"सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है।"*

यदि हम परमेश्वर के लोगों को तैयार करने वाले हैं जिन्हें संसार में भेजा जा सकता है और फिर भी जो संसार के नहीं है, पहले उन्हें सत्य के द्वारा–परमेश्वर के वचन से पवित्र होने की ज़रूरत है। पासबान होने के नाते हमें हर सप्ताह, निरंतर परमेश्वर के विशुद्ध, बिना समझौते वाले स्पष्ट और संपूर्ण वचन का प्रचार करना है, सिखाना है और घोषित करना है। परमेश्वर का वचन लोगों को पवित्र करेगा और उन्हें संसार में जाने की और फिर भी उसका हिस्सा न बनने की सामर्थ देगा। उन्हें वे संसार/समाज में सत्य के समर्थक बनेंगे जहां पर वह सचमुच मायने रखता है।

पासबान होने के नाते हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमारा प्रचार करना और सिखाना इस संसार में सत्य को उठाए रखने हेतु परमेश्वर के लोगों को प्रेरित करता है, सामर्थ देता है और तैयार करता है।

समझौते से बचें

यूहन्ना 17:16
जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।

मत्ती 5:13
"तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

पासबान और अगुवे होने के नाते हम परमेश्वर के वचन के सत्य को बताने समय सौम्य, और अच्छे बनने का और जबरदस्ती करने का दबाव महसूस करेंगे, विशेषकर जब उन क्षेत्रों की बात आती है जहां पर लोग हमें नहीं चाहते कि हम–हमें समझौते से सावधान रहना है। हम इस संसार के नहीं है, और इस संसार के साथ अनुकुलन बनाने के लिए हम सत्य को नहीं त्याग सकते। यदि हम सत्य के साथ समझौता करते हैं, तो हम ऐसा नमक बन जाते हैं जिसका साथ हो चुका है। हम अन्तर लाना बंद कर देते है। जो कुछ हम सिखाते हैं और प्रचार करते हैं उसमें यदि हम पासबान होने के नाते, समझौता करते हैं, तब पूरी संभावना है कि हमारी मंडली भी ऐसा ही करेगी।

वर्तमान समस्याओं के लिए बाइबल की प्रतिक्रिया प्रदान करें

1 कुरिन्थियों 14:8
और यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा?

लोग आज जिन मुश्किल विवादों का सामना कर रहे हैं, उनके विषय में परमेश्वर का वचन क्या कहता है यह लोग जानना चाहते हैं। हमें आज के समस्याओं के लिए परमेश्वर के वचन को लागू करना है। हमें आज की चुनौतियों के लिए परमेश्वर के वचन से उत्तर देना है। हमें इस दिन और युग के लिए परमेश्वर के सनातन सत्य को प्रसंगोत्तिच बनाना है। हमारे उत्तर स्पष्ट, यर्थात होने चाहिए और अनिश्चित स्वर के समान नहीं। अन्यथा, भले ही हमारे पास सत्य हो हम संसार को प्रभावित नहीं कर सकते।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती हैः

- इस बात का ध्यान रखें कि मंच से प्रचार और शिक्षा सही, और बिना समझौते वाली हो।
- वास्तविक जीवन के विषयों, समस्याओं और चुनौतियों को परमेश्वर के वचन से संबोधित करें। पेम के साथ सत्य बोले।
- विश्वासियों को सामर्थ दें और प्रोत्साहित करें कि वे संसार में वहां सत्य के साथ जीवन बिताएं जहां वह सचमुच मायने रखता है।
- विश्वासियों को प्रोत्साहित करें कि वे समाज में अर्थपूर्ण ढंग से रहें ताकि परमेश्वर के सत्य को संसार के सामने प्रस्तुत किया जा सके।
- लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे सार्वजनिक स्थानों और मंच पर परमेश्वर के राज्य के मूल्य और राज्य के दृष्टिकोण लाने के अवसरों का उपयोग करें।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- पेचिदा समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं जिनके लिए परमेश्वर के वचन का गंभीर अध्ययन और परमेश्वर के वचन को सही रीति से निवेदन करने हेतु परमेश्वर से सुनने की ज़रूरत होती है (उदाहरण, भ्रष्टता, समलैंगिकता, तलाक, सुखमृत्यु, गर्भपात, सार्वत्रिक उद्धार आदि)।
- विश्वासियों के मनों पर लोगों की राय का प्रभाव हो सकता है और इसलिए विश्वासियों को परमेश्वर का वचन किसी निश्चित विषय पर क्या कहता है, उसे लागू करना या स्वीकार करना मुश्किल हो सकता है।
- समझौता करने वाले मसीही अगुवों की आवाज़ अन्य लोगों से ऊंची हो सकती है, और उनका समझौता करने वाला संदेश भी स्वीकार किया जाता है जो कई विश्वासियों को गुमराह करता है। पासबान होने के नाते, हमें परमेश्वर के वचन के साथ दृढ़ खड़े रहना है (उदाहरण,

मसीही देशों के कुछ भाग समलैंगिकों को भी परमेश्वर के सेवकों के रूप में ऑर्डेन (नियुक्त) करते हैं। इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता)।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. वे कौनसे एक या दो गंभीर विषय हैं जिनसे आपकी मंडली के विश्वासी जूझ रहे हैं?
2. यदि आपकी मंडली का एक भाग (उदाहरण, जवान) कुछ विषयों के संबंध में सवालों से संघर्ष कर रहे हैं, तो उस समूह को अलग सम्बोधित करना बेहतर है या आपको उस विषय में संपूर्ण कलीसिया के सामने चर्चा करना चाहिए?

11

स्थानीय कलीसिया–एक सेना

कलीसिया एक सेना (सैनिक) है

नए नियम में, कलीसिया और व्यक्तिगत विश्वासी दोनों को सैनिक शब्दों में सम्बोधित किया गया है। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि आत्मिक अर्थ से कलीसिया एक सेना, फौजी ताकत है जो आत्मिक युद्ध में लगी हुई है। हमने पहले अध्याय में मत्ती 16:15-19 के वचनों का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जहां पर प्रभु यीशु ने कलीसिया का वर्णन देह के रूप में किया जिसे स्वर्ग द्वारा अन्धकार की शक्तियों के विरोध में बान्धने और खोलने का अधिकार दिया गया है।

प्रेरित पौलुस अपनी पत्रियों में फौजी चित्रों का उपयोग करता है जहां पर वह आत्मिक संघर्ष में लगे हुए विश्वासियों का वर्णन करता है। इफिसियों 6 में, दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के साथ लड़ते हुए वह हमें जिन आत्मिक हथियारों का पहनना है, उनका पूर्ण वर्णन देता है। यहां पर कुछ और संदर्भ दिए गए हैं जहां पर विश्वासी के जीवन का वर्णन फौजी या सेना संबंधी संज्ञाओं में किया गया है :

फिलिप्पियों 2:25
परंतु मैंने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों में मेरी सेवा टहल करनेवाला है, तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा।

1 तीमुथियुस 1:18
हे पुत्र, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे।

1 तीमुथियुस 6:12
विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिए तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

2 तीमुथियस 2:3,4

3 मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा।

4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता।

2 तीमुथियुस 4:7

मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है।

आत्मिक युद्धप्रियता का बोध

व्यक्तिगत विश्वासियों के नाते और स्थानीय कलीसिया के नाते हमें आत्मिक युद्ध प्रियता के बोध के साथ जीवन बिताने की ज़रूरत है। हम एक आत्मिक संघर्ष में है। आत्मिक युद्ध में कैसे दाखिल होना चाहिए इस विषय में हमें शिक्षा और प्रशिक्षण पाने की ज़रूरत है।

व्यक्तिगत स्तर पर विश्वासियों को यह जानने की ज़रूरत है कि शैतान और उसकी युक्तियों का कैसे सामना करें, परीक्षाओं पर कैसे विजय पाएं और उनके जीवनों में शैतान को कैसे प्रवेश न दें। शैतान हमारी ओर जो अग्निमय तीर छोड़ता है उन्हें बुझाने के लिए विश्वास की डाल का कैसे उपयोग करें यह हमें जानना है।

1 पतरस 5:8,9

8 सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।

9 विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुख भुगत रहे हैं।

इफिसियों 4:27

और न शैतान को अवसर दो।

स्थानीय कलीसियाई मण्डली होने के नाते हमें यह समझने की ज़रूरत है कि शैतान विभाजन और कलह लाकर और अन्य समस्याओं और परिस्थितयों का लाभ उठाकर घुसपैठ करने का प्रयास करेगा। हमें एक

दूसरे से लड़ना बंद करना है, और हमारे वास्तविक शत्रु पर ध्यान लगाना है। *"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं"* (इफिसियों 6:12)। *"हमें शैतान की युक्तियों क विषय में अनजान नहीं रहना है,कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं"* (2 कुरिन्थियों 2:11)। शैतान अगुवे के पद पर परासीन लोगों को भी गिराने का प्रयास कर सकता है। शैतान जानता है कि यदि वह चरवाहे को मारेगा, तो वह भेड़ों को तितरबितर कर सकता है (जकर्याह 13:7)।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते आत्माओं को जीतने के और शिष्य बनाने के हमारे मिशन कार्य में आत्मिक युद्ध शामिल है। आत्माओं के लिए आत्मिक लड़ाई है। परमेश्वर ने हमें जो हथियार दिए हैं उनका उपयोग कर शैतान के कामों को कैसे हराना है और कैसे युद्ध लड़ना है यह हमें सीखना है, ताकि हम लोगों को परमेश्वर के अद्‌भुत प्रकाश में आते हुए देख सकें।

2 कुरिन्थियों 4:3,4
3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिए पड़ा है।
4 और उन अविश्वासियों के लिए, जिनकी बुध्दि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।

पेरितों के काम 26:17,18
17 और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूंगा, जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए भेजता हूं,
18 कि तू उनकी आंखे खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें, कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।

आत्मिक युद्ध कला में प्रशिक्षित विश्वासी

स्थानीय कलीसिया सिपाहियों की सेना है जो आत्मिक संघर्ष में व्यस्त हैं। अतः स्थानीय कलीसिया को एक अर्थ से छावनी बनना है, तैयार करने और प्रशिक्षण देने का केन्द्र जहां पर सिपाहियों को आत्मिक युद्ध लड़ने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इफिसियों को लिखी हुई पौलुस की पत्रियों में, वह विश्वासियों को प्रोत्साहन देते हुए लिखता है कि, वे शत्रु के विरोध में दृढ़ होकर खड़े रहें और उन्हें उन आत्मिक हथियारों के विषय में सिखाता है जिनका उन्हें उपयोग करना है। *"निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम शैतान की युक्तिओं के सामने खड़े रह सको"* (इफिसियों 6:10,11)।

हथियारबंद और खतरनाक

परमेश्वर ने हमें ऐसे आत्मिक हथियार दिए हैं जो सामर्थी हैं। विश्वासी होने के नाते, हम हथियारबंद हैं और यदि हम परमेश्वर द्वारा दिए गए हथियारों का उपयोग करना जानते हैं, तो हम शत्रु के लिए खतरा हैं।

2 कुरिन्थियों 10:3-5
3 क्योकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।
4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिए परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।
5 इसलिए हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह की आज्ञाकारी बना देते हैं।

विश्वासी होने के नाते हमारे पास जो हथियार हैं उनमें से कुछ यहां दिए गए हैं, जिनका उपयोग करने का प्रशिक्षण हमें दिया जाना चाहिए:

- यीशु का नाम
- परमेश्वर का वचन
- यीशु का लोहू और क्रूस पर उसके द्वारा पूरा किया गया कार्य

- मसीह में हमारा स्थान
- परमेश्वर के सारे हथियार
- प्रार्थना और मध्यस्थी
- स्तुति और आराधना
- पश्चाताप और धार्मिकता

व्यक्तिगत् विश्वासी के नाते, इन आत्मिक हथियारों का उपयोग करते हुए आरम्भ में हमें विजयी और जयवंत जीवन जीना सीखना है, अंधकार के कामों को नाश कर, हम लोगों की सेवा भी करते हैं, उनके जीवन पर से शैतान के नियंत्रण को हटाकर हम उन्हें स्वतंत्र करते हैं और उन आत्माओं को हम अंधकार से बाहर निकालते हैं।

युद्ध के लिए अभिषिक्त

हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ से अभिषेक किया गया है। अभिषेक जुएं को तोड़ता है और बोझ को हटाता है (यशायाह 10:27)। आत्मा की सामर्थ से हम दुष्टात्माओं को निकालते हैं और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं (मत्ती 12:28)। हम बलवान पुरुष को बांधते हैं, ताकि हम उसकी वस्तुओं को लूट सकें (मत्ती 12:29)।

स्थानीय कलीसिया को जानबूझकर नरक के फाटकों के विरोध में आगे बढ़ना है

उनके समाज, शहर, क्षेत्र के अंतर्गत स्थानीय कलीसिया को शैतान की प्रभुता के अधिकार केन्द्रों के विरोध में आक्रमक भूमिका अपनाना है। सामुहिक और व्यक्तिगत तौर पर विश्वासियों को परमेश्वर के आत्मा के सामर्थ के द्वारा शैतान के कामों को नाश करने में लगे रहना है। प्रभु यीशु शैतान के कामों को नाश करने आया (1 यूहन्ना 3:8) और हमें भी इसी मिशन पर भेजा गया है (यूहन्ना 20:21)। अंधकार के कार्य हैं, जिन्हें हर विश्वासी पराजित कर सकता है–बीमारों को चंगा करना, दुष्टात्माओं को निकालना, कैदियों

को आजाद करना, अंधकार से आत्माओं को परमेश्वर की ज्योति में लाना, आदि। उसी तरह स्थानीय कलीसियाई मण्डली को आम लोगों को आत्मिक युद्ध के द्वारा अंधकार की सामर्थ से मुक्त होते हुए देखने के लिए सामुहिक रीति से युद्ध में दाखिल होना है। हमें सामुहिक तौर पर शैतान के अधिकार केंद्रों के विरोध में आक्रमण करना है जो कि सामाजिक बुराइयों में दिखाई देते हैं (उदाहरण, नशीले पदार्थ और शराब की लत, आत्महत्या, वेश्यावृत्ति, अपराध, भष्टाचार, और इसी प्रकार की अन्य बुराइयां), जो समाज और क्षेत्र में प्रचलित हो सकती हैं। अंतः, हमारा लक्ष्य लोगों को शैतान की सामर्थ से निकालकर प्रभु यीशु मसीह के राज्य में लाते हुए देखना है।

स्थानीय कलीसिया की सेना में दर्जा, क्रम, अनुशासन

हम आत्मिक संघर्ष में व्यस्त सेना हैं इस सत्य को ध्यान में रखते हुए, सेना कैसे कार्य करती है, इससे हम कुछ युद्धनीतिक अंतर्दृष्टियां पा सकते हैं, और उसे फिर समझा सकते हैं कि स्थानीय कलीसिया की मण्डली को कैसे आचरण करना चाहिए।

दर्जा और क्रम बनाएं रखें

योएल 2:7,8

7 वे शूरवीरों की नाई दौड़ते, और योद्धाओं की भांति शहरपनाहों पर चढ़ते हैं। वे अपने अपने मार्ग पर चलते हैं, और कोई अपनी पांति से अलग न चलेगा।

8 वे एकदूसरे को धक्का नहीं लगाते, वे अपनी अपनी राह पर चलते हैं; शस्त्रों का सामना करने से भी उनकी पांति नहीं टूटती।

सेना में दर्जा, क्रम और अनुशासन होता है। परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया की मण्डली में अगुवों को नियुक्त किया है, ताकि वे उन्हें आगे ले जाएं। हमें सभी स्तर के अगुवों को मान्यता और आदर देना है। परंतु, हम समझते हैं कि नये नियम की आज्ञाकारिता हमेशा प्रभु में है। इसका अर्थ यह है कि पूर्ण आज्ञापालन केवल प्रभु के लिए रखा गया है, क्योंकि मनुष्य के अगुवों के लिए सम्भव है कि वे गलती करें। पृथ्वी पर हम प्रयोगात्मक तरीके से हम जिस अधिकार से चलते हैं, वह राजा के प्रति हमारे आधीनता

के अनुपात में है। परमेश्वर द्वारा नियुक्त किए गए अगुवों के प्रति हमारी आधीनता, मुख्य रूप से उसके (परमेश्वर) प्रति हमारी आधीनता है।

याकूब 4:7
इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

सैनिक मानसिकता

हम युद्ध में हैं अतः हमें अति सावधान (हाय एलर्ट) रहने की ज़रूरत है। हम शत्रु को मौका देने से इन्कार करते हैं। हम शत्रु को अपना स्थान देने से इन्कार करते हैं (1 पतरस 5:8,9; इफिसियों 4:27)।

सैनिक जीवनशैली

हम सिपाही के समान जीते हैं। हमारे संसारिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए, हमें इस संसार के मामलों में व्यस्त होने से बचे रहना है।

2 तीमुथियुस 2:3,4
3 मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुख उठा।
4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिए कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फंसाता।

सैनिक अनुशासन

हम अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को आत्मा, शरीर और प्राण को अनुशासन में रखते हैं।

सेना के पास एक रणनीति होती है

जब हम व्यक्तिगत् स्तर पर और सामुहिक स्तर पर लड़ाइयां लड़ते हैं, तब हमें एक रणनीति अपनाना चाहिए। हम हवा में तीर न छोड़ें, इस आशा से कि हमें हमारा लक्ष्य मिल जाएगा। अतः, स्थानीय कलीसिया जिस कार्य में भाग लेती है, वह उद्देश्यपूर्ण और युद्धनीतिक होना चाहिए।

सेना अपने घायलों की निगरानी करती है

यह सम्भव है कि स्थानीय कलीसिया की मण्डली में ऐसे लोग होंगे जो चुनौतियों, संघर्षो और पराजय का सामना कर रहे हैं। कुछ लोग प्रबल व्यक्तिगत संघर्ष में जी रहे होंगे। कुछ लोग गलतियां करते हुए गिर सकते हैं। हम उन लोगों को सहारा देते हैं जो लड़ाई में घायल होते हैं। हम अपने लोगों को उनकी असफलता के कारण मार नहीं डालते। हम लोगों को स्वस्थ होने और फिर से बल पाने में सहायता करते हैं।

हम प्रत्येक विजय में सहभागी होते हैं और विजय का उत्सव मनाते हैं।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- लोगों को हमारे आत्मिक अधिकार, हमारी आत्मिक पहचान, क्रूस, लोहू, हमारे युद्ध के हथियार, प्रार्थना और मध्यस्थी, स्तुति और आराधना और अन्य बातों के विषय में सिखाएं।
- लोगों को सिखाएं कि अपने आत्मिक अधिकार का सही उपयोग कैसे करना है, चंगाई और छुटकारा कैसे प्रदान करना है, किस प्रकार उचित रीति से प्रार्थना और मध्यस्थी करना है।
- लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे समाज, शहर, या प्रांत में रहने वाले लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना और मध्यस्थी करें। इसे पूर्ण रणनीतिक योजना के साथ पूरा करें।
- सम्बंधित क्षेत्र के आत्मिक वातावरण को प्रभावित करने हेतु आराधना और स्तुति में अधिक समय बिताएं।
- विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करें और स्थानीक कलीसियाई मण्डली के रूप में सामुहिक रूप से उस लक्ष्य का अनुसरण करें। ये लक्ष्य कुछ आत्माओं की संख्या हो सकती है, विशिष्ट समाज का परिवर्तन हो सकता है, विशिष्ट सामाजिक समस्याओं में बदलाव हो सकता है, और इसी प्रकार के परमेश्वर द्वारा निर्दिष्ट लक्ष्य हो सकते हैं।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- हमेशा प्रभु यीशु मसीह पर अपना ध्यान लगाएं रहें, शैतान क्या कर रहा है इस पर नहीं। कभी कभी लोग अपनी हद से आगे बढ़ जाते हैं और प्रभु पर ध्यान देने के बजाए और हम मसीह में कौन हैं, इसमें कार्य करने के बजाए शैतान के विषय में ज्यादा सोचने लगते हैं। कुछ लोग डरपोक आत्मिक बन सकते हैं और उन्हें समझाना बहुत मुश्किल होता है।
- गलत रीति से आत्मिक युद्ध में शामिल होना। हमें जिन बातों पर अधिकार दिया गया है उनका सामना करते रहें।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. व्यवहारिक तौर पर, हम स्थानीय कलीसिया में "पारिवारिक मानसिकता" और "सैनिक मानसिकता" के मध्य संतुलन कैसे बनाकर रख सकते हैं?
2. हम स्थानीय कलीसिया में "पारिवारिक मानसिकता" और "सैनिक मानसिकता" के मध्य सही संतुलन न बनाने के कुछ खतरे क्या हो सकते हैं?

12

स्थानीय कलीसिया–दुल्हन

शायद कलीसिया की सर्वाधिक सुंदर तस्वीर यह है कि वह मसीह की दुल्हन है।

नए नियम में कलीसिया के साथ परमेश्वर का व्यवहार कई तरह से पुरानी वाचा के अंतर्गत उसके लोग इस्राएल के साथ प्रभु के व्यवहार के समकक्ष है। उनमें कुछ अंतर है, परंतु कई समानताएं भी हैं।

उदाहरण के तौर पर अंतर होगाः

- पुरानी वाचा के अंतर्गत, उसने व्यवस्था के अंतर्गत व्यवस्था के अंतर्गत उनके साथ व्यवहार किया। वह अनुग्रह के आधार पर हमारे साथ व्यवहार करता है।
- पुरानी वाचा के अंतर्गत, हर कोई अपने जीवनों में व्यक्तिगत रीति से पवित्र आत्मा का अनुभव नहीं करता था। परंतु नई वाचा के अंतर्गत, प्रत्येक विश्वासी व्यक्तिगत उपस्थिति और आत्मा के कार्य को अनुभव करता है।

परंतु उनमें कई समानताएं भी हैंः

- दोनों वाचाओं में, परमेश्वर ने एक जाति को चुना जिसके द्वारा वह इस संसार के राष्ट्रों को अशीष दे सके।
- दोनों वाचाओं में, परमेश्वर के लोग राजपदधारी याजक हैं जिन्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाया गया है।

दोनों वाचाओं के अंतर्गत एक समानता यह है कि, परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते को अपनी दुल्हन के दुल्हे के रूप में करता है।

वह दुल्हा परमेश्वर है, और हम उसके लोग उसकी दुल्हन हैं।

इसलिए हम पुराने नियम से आरंभ करते हैं और नए नियम में जाते हैं, और परमेश्वर की दुल्हन के रूप में कलीसिया (परमेश्वर के लोग) की भूमिका से कुछ अंतदृष्टियां प्राप्त करते हैं।

पुराने नियम के तीन भविष्यद्वक्ताओं–यिर्मयाह, होशे, यशायाह–ने परमेश्वर के लोगों के साथ उसके रिश्ते के विषय में बताया, अपनी दुल्हन के साथ ब्याहे हुए दुल्हे के रूप में।

तेरे विवाह के समय का प्रेम

यिर्मयाह 2:2,3

[2] और यरूशलेम में पुकारकर यह सुना दे, यहोवा यह कहता है, तेरी जवानी का स्नेह और तेरे विवाह के समय का प्रेम मुझे स्मरण आता है कि तू कैसे जंगल में मेरे पीछे पीछे चली जहां भूमि जोती-बोई न गई थी।

[3] इस्राएल, यहोवा के लिये पवित्र और उसकी पहली उपज थी। उसे खानेवाले सब दोषी ठहरेंगे और विपत्ति में पड़ेंगे, यहोवा की यही वाणी है।

परमेश्वर उस दिन के विषय में बोलता है जब इस्राएल का उसके साथ ब्याह (सगाई) हुआ था–जिस दया, प्रेम और सुख की खोज का उन्होंने प्रदर्शन किया था। जो राष्ट्र उसके लिए पवित्र था, उसका पहला फल। इस्राएल को मिस्र को बाहर लाने के बाद, वाचा के देश की ओर या करते समय, जंगल में सीनै पर्वत पर इस्राएल का उसके साथ ब्याह हुआ।

यिर्मयाह 3:14

हे भटकनेवाले लड़को लौट आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा स्वामी हूं; यहोवा की यह वाणी है। तुम्हारे प्रत्येक नगर पीछे एक, और प्रत्येक कुल पीछे दो को लेकर मैं सिय्योन में पहुंचा दूंगा।

परमेश्वर भटके हुए लोगों को अपने पास वापस बुलाता है, यह घोषणा करते हुए कि उनके साथ उसका विवाह हुआ है।

यिर्मयाह 31:3,4
3 यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हुं; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।
4 हे इस्त्राएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बसाऊंगा; वहां तू फिर सिंगार करके डफ बाजने लगेगी, और आनन्द करनेवालों क बीच में नाचती हुई निकलेगी।

यिर्मयाह 31:32
वह उस वाचा के समान न होगी जो मैंने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्त्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली।

परमेश्वर भटके हुए लागों को अपने सनातन प्रेम का आश्वासन देता है। वह अपनी प्रेममय करूणा से अनुनय करते हुए उन्हें वापस अपने पास बुलाता है। वह उन्हें आश्वासन देता है कि उन्हें फिर पुनर्स्थापित किया जाएगा और फिर उन्हें बनाया जाएगा।

वह उस वाचा के विषय में बोलता है जो उसने अपने लोगों के साथ बान्धी, उनका पति होने के अर्थ से–ऐसी वाचा जिसे वह नहीं तोड़ेगा।

तुम मुझे "मेरा पति" कहोगी

होशे की संपूर्ण पुस्तक इस विषय पर केन्द्रित है - परमेश्वर, पति अपनी गुमराह पत्नी को वापस बुलाता है।

हम कुछ वचनों की ओर देखते हैंः

होशे 2:16,17
16 और यहोवा की यह वाणी है कि उस समय तू मुझे ईशी कहेगी और फिर बाली न कहेगी।
17 क्योंकि भविष्य में मैं उसे बालदेवताओं के नाम न लेने दूंगा; और न उनके नाम फिर स्मरण में रहेंगे।

समर्पित पत्नी के रूप में, परमेश्वर विश्वासयोग्यता की उम्मीद करता है–दूसरे देवताओं के पीछे न जाएं।

होशे 2:19,20
[19] और मैं सदा के लिए तुझे अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा, और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करूणा, और दया के साथ करूंगा।
[20] और यह सच्चाई के साथ की जाएगी, और तू यहोवा को जान लेगी।

परमेश्वर ने जिसके साथ विवाह किया है उसके साथ वह कैसे व्यवहार करता है इस विषय में ये वचन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं:

- सदा के लिए मेरी–हम सदा के लिए उसके हैं।
- धर्म–वह हमें खुद की ओर पवित्रता और शुद्धता में खींच लेता है।
- न्याय–परमेश्वर हमें हर प्रकार के जुल्म और अन्याय से छुड़ाता है।
- करूणा–परमेश्वर हम पर अपना प्रेम और दया प्रगट करता है।
- दया–हमारी सारी असफलताओं के बावजूद, जैसे हम हैं वैसे परमेश्वर हमें ग्रहण करता है।
- सच्चाई (विश्वासयोग्यता)–उसका प्रेम विश्वसनीय है।
- निकटता (तू यहोवा को जान लेगी)–वह हमें खुद के साथ निकटता के स्थान पर लाता है।

तेरा कर्ता तेरा पति है

यशायाह 54:4-8
[4] मत डर, क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटेगी; मत घबरा, क्योंकि तू फिर लज्जित न होगी और तुझ पर सियाही न छाएगी; क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जाएगी, और, अपने विधवापन की नामधराई को फिर स्मरण न करेगी।
[5] क्योंकि तेरा कर्त्ता तेरा पति है, उसका नाम सेनाओं का यहोवा है; और इस्राएल का पवित्र तेरा छुड़ानेवाला है, वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा।
[6] क्योंकि यहोवा ने तुझे ऐसा बुलाया है, मानो तू छोड़ी हुई और मन की दुखिया और जवानी की त्यागी हुई स्त्री हो, तेरे परमेश्वर का यही वचन है।
[7] क्षण भर ही के लिये मैंने तुझे छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे रख लूंगा।
[8] क्रोध के झकोरे में आकर मैंने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करूणा से मैं तुझ पर दया करूंगा, तेरे छुड़ानेवाले यहोवा का यही वचन है।

यशायाह इस्त्राएल के लिए आशा की भविष्यद्वाणी करता है–वह पति के रूप में परमेश्वर के अनंत प्रेम का इस्त्राएल को आश्वासन देता है।

यशायाह 62:4-7
4 तू फिर त्यागी हुई न कहलाएगी, और तेरी भूमि फिर उजड़ी हुई न कहलाएगी; परन्तु तू हेप्सीबा और तेरी भूमि ब्यूला कहलाएगी; क्योंकि
यहोवा तुझ से प्रसन्न है, और तेरी भूमि सुहागिन होगी।
5 क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरुष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा।
6 हे यरूशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो,
7 और, जब तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो।

हेप्सीबा का अर्थ है, मेरी प्रसन्नता। **ब्यूला** का अर्थ है, विवाहित। जिस प्रकार दुल्हा दुल्हन से हर्षित होता है, उसी प्रकार परमेश्वर तुझसे प्रसन्न होगा।

ध्यान दें कि परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता की सेवकाई इस ज्ञान से आरम्भ होती है कि परमेश्वर के लोग उसकी हर्षित का कारण है, उसकी दुल्हन हैं और परमेश्वर अपने लोगों से हर्षित होता है।

दस कुंवारियों का दृष्टांत

दस कुंवारियों के दृष्टांत में (मत्ती 25:1-13), प्रभु यीशु मसीह उसके आगमन के लिए आशा और धीरज के साथ तैयार रहने के महत्व को हमें समझाने के लिए यहूदी विवाह प्रथा को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

उन दिनों, खास यहूदी विवाह समारोह कई रातों तक चलता रहता था, विशेष तौर पर सात रातों तक। दम्पत्तियों के निकटवर्तियों को पहली रात न्योता दिया जाता था और वे आने वालों रातों में भी आनंद उठाते थे।

कलीसिया को तैयारी, तत्परता, अपेक्षा और धीरज के साथ उसके आगमन की बांट जोहना है।

पवित्र कुंवारी

2 कुरिन्थियों 11:2

क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूं, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंआरी की नाई मसीह को सौप दूं।

प्रेरित पौलुस ने आत्मा के द्वारा अपनी सेवकाई की तस्वीर इस रूप में देखी कि वह दुल्हे परमेश्वर मसीह के सामने कलीसिया को एक पवित्र कुंवारी के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

जो भी सेवकाई हम करते हैं उसके साथ यह भी समझ होनी चाहिए कि हम दुल्हा परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह के लिए दुल्हन तैयार कर रहे हैं। वह अपनी दुल्हन को मधुर प्रेम और स्नेह के साथ अपने पास बुलाता है, उसे निकटता के स्थान में अपनी ओर खींचता है।

महिमामय कलीसिया

इफिसियों 5:22-32

22 हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के।
23 क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। 24 परंतु जैसे कलीसिया मसीह के आध ीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के आधीन रहें।
25 हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया,
26 कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए।
27 और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो।
28 इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।
29 क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।

30 इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं।
31 इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।
32 यह भेद तो बड़ा है; परंतु मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं।

कलीसिया के साथ मसीह के रिश्ते की तुलना पत्नी के साथ पति के रिश्ते से की गई है। यीशु ने अपनी दुल्हन को पाने के लिए एक बड़ी कीमत चुकता की।

यीशु कलीसिया के लिए क्या करता हैः

- वह अपनी कलीसिया को अपने वचन से पवित्र और शुद्ध करता है।
- वह बिना किसी दाग और धब्बे के, पवित्रता में परिपूर्ण महिमामय कलीसिया को तैयार कर रहा है।
- वह कलीसिया का पोषण करता है, और हृदय में संजोकर रखता है।

दुल्हन ने खुद को तैयार किया है

प्रकाशितवाक्य 19:6-9
6 फिर मैंने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, हल्लिलूय्याह! इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है,
7 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुंचा, और उसकी पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है।
8 और उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।
9 और उसने मुझ से कहा यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं! फिर उसने मुझसे कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।

आगे क्या होने वाला है इसे देखते हुए प्रेरित पौलुस एक बड़े विवाह भोज को, मेम्ने के विवाह भोज को देखता है। जब दुल्हा परमेश्वर सदाकाल के लिए अपने छुड़ाए गए संतों के साथ, जो उसके लिए तैयार किए गए हैं, विवाह करेगा। ये वे लोग हैं जो मेम्ने के लोहू से धोकर शुद्ध हुए हैं, उन्होंने

उसके धार्मिकता के वस्त्र पहिने हैं और धार्मिकता के कामों में चल रहे हैं (उसकी धार्मिकता को अभिव्यक्त करते हुए)।

आत्मा और दुल्हन

प्रकाशितवाक्य 22:17
और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, आ!

पवित्र आत्मा को दुल्हे यीशु के लिए दुल्हन को तैयार करने का काम सौंपा गया है।

दुल्हन होने के नाते हमें आत्मा के साथ एकता में और अनुरूपता में रहना है—जैसे जैसे हमें दुल्हा परमेश्वर, यीशु मसीह के लिए तैयार करते हुए वह हम में, हमारे मध्य में, हमारे द्वारा काम करता है, उसकी इच्छा के अनुसार हमें वही सुनना, कहना, और करना है, जो वह चाहता है।

दुल्हन और दुल्हा

हमारे प्रभु के साथ हमारे रिश्ते की परिभाषा कई तरह से दुल्हे के साथ दुल्हन के रिश्ते के साथ कई तरह से की गई है। हम पुराने नियम और नये नियमों में जो कुछ देखते हैं, उसका सारांश यहां प्रस्तुत करेंः

1) दुल्हन अपने दुल्हे के प्रति प्रेम, प्रशंसा, समर्पण में खो जाती है।

वह पूर्ण रूप से प्रेम में है—गहरे व्याकुल प्रेम में। वह अपने दुल्हे के लिए प्रेम गीत गाती है। यह आराधना है। दुल्हे के लिए दुल्हन द्वारा प्रेम के गीत। वे गीत जो यह वर्णन करते हैं कि दुल्हा दुल्हन के लिए कितना महान, कितना गौरवशाली, कितना अद्‌भुत, कितना आदर के योग्य है। हम परमेश्वर के हृदय का प्रेम गीत वापस उसे गाकर सुनाते हैं। प्रेम गीत आत्मा द्वारा प्रेरित किए जाते हैं।

दुल्हा परमेश्वर यह चाहता है, जैसा कि हमने यिर्मयाह 20:2,9 में देखा।

टिप्पणी

यहां पर दो बातें हैं जिन्हें हमें सम्बोधित करने की ज़रूरत हैः

अ) स्त्रियां इसका यह अर्थ न निकालें कि उन्हें शारीरिक तौर पर यीशु से रोमांस करने के विषय में समझना है, मानो वह उनका स्वाभाविक प्रेमी, या पति हो।

आ) पुरुषों के लिए, इसका अर्थ यह नहीं है कि इस सत्य को स्वीकार करते समय हम अपना स्वाभाविक पौरुष खो बैठते हैं, बल्कि यीशु के साथ हमारे आत्मिक रिश्ते में हम उसके अर्थ और उपयोग को समझते हैं।

2) दुल्हन खुद को इस तरह से सजाती है जिससे उसके दुल्हे को प्रसन्नता हो ताकि वह खुद को दुल्हे के लिए अति सुंदर रूप में प्रस्तुत कर सके।

इसलिए कलीसिया हमारे विषय में या हमें कौन सी बात प्रसन्न करती है इस विषय में नहीं है। जो कुछ परमेश्वर को प्रसन्न करता है, उस विषय में यह है।

कलीसिया मुझे क्या पसंद है इस विषय में नहीं है, परंतु वह हम में और हमारे मध्य में क्या देखना चाहता है इस विषय में है।

कलीसिया एक दूसरे के सामने अच्छे दिखने और दूसरों को प्रभावित करने के विषय में नहीं है। कलीसिया परमेश्वर की दृष्टि में प्रसन्नतादायक रहने के विषय में है।

3) दुल्हन दुल्हे का बिनशर्त प्रेम प्राप्त करती है

हम बार बार देखते हैं कि दुल्हा परमेश्वर अपनी दुल्हन को अपने बिनशर्त प्रेम के विषय में आश्वस्त करता है।

दुल्हा परमेश्वर, यीशु अपनी दुल्हन कलीसिया के प्रति मृदु प्रेम, स्नेह, सौम्यता, करूणा, विश्वसनीयता, न्याय, स्थायी प्रेम से परिपूर्ण है।

हम खुद को सत्य के प्रति समर्पित करें और उसकी भावनाओं को, हमारे लिए बिनशर्त प्रेम से युक्त उसके हृदय को अनुभव करें।

4) दुल्हन दुल्हे के हृदय के करीब–निकटता के स्थान में प्रवेश पाती है

दुल्हा परमेश्वर इस बात की चाह रखता है। वह हमें ऐसे स्थान में बुलाता है जहां हम उसे जानेंगे (होशे 2:20)।

5) दुल्हन खुद को अपने दुल्हे के लिए पवित्र रखती है। वह किसी अन्य पुरुष से रिश्ता नहीं रखती।

मसीह ऐसी दुल्हन के लिए आ रहा है जो बेदाग और बेझुर्री होगी–जो उसके वचन से धोकर शुद्ध हुई है, जिसने खुद को पवित्र रखा है और खुद को तैयार किया है।

जब हम देखते हैं कि वह किस प्रकार अपनी दुल्हन के रूप में हमसे प्रेम करता है, तब हम खुद को पूर्ण रूप से और पूर्णता के साथ उसके हाथों में सौंप देते हैं।

हम उसके प्रेम के कारण शुद्ध किए गए हैं (पवित्र किए गए हैं)।

परमेश्वर दुल्हे के हृदय की सही समझ हमें शुद्धता और भक्ति के स्थान में ले जाएगी जो शुद्ध प्रेम से जन्मे हैं।

6) हमें उस दुल्हन के समान बनने के लिए बुलाया गया है जो दुल्हे के साथ विवाह करने के लिए तैयार है। वह उम्मीद के साथ इंतजार करती है।

धीरज के साथ अपेक्षा, तैयार के साथ तत्परता का बोध हमारे हृदयों को थाम लेता है।

7) जब हम मसीह की देह की सेवा करते हैं, तब हम मसीह की दुल्हन की सेवा करते हैं–ऐसे लोग जिनसे परमेश्वर बिनशर्त प्रेम करता है। ऐसे लोग जिनमें में वह अपनी दुल्हन के रूप में हर्षित होता है। ऐसे लोग जिनसे उसका विवाह हुआ है। सारी सेवकाई, मध्यस्थी भी, इस समझ में से प्रवाहित होनी चाहिए।

सेवकाई और मध्यस्थी का जन्म दुल्हा परमेश्वर और उसकी दुल्हन के प्रति उसके प्रेम की समझ से होता है। जब हम दुल्हा परमेश्वर, यीशु से भेंट करते हैं, और उसकी दुल्हन के लिए उसके प्रेमयुक्त हृदय को समझते हैं, तब हमारी सेवकाई और मध्यस्थी एक नया अर्थ प्राप्त करती है। हम देखते हैं कि जो कुछ हम करते हैं, वह दुल्हन को तैयार करने के लिए और दुल्हा समक्ष उसे बेदाग प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। हम परमेश्वर के लोगों के सामने क्रोध, आलोचना आदि के साथ नहीं जाते। हम दुल्हन के लिए उसके प्रेम को अपना आधार बनाते हैं।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे जुनुन से भरे प्रेमी और प्रभु के आराधक बनें।
- लोगों को यह सिखाएं कि जो कुछ भी हम करते हैं वह उसके प्रति शुद्ध प्रेम से उत्पन्न हुआ है और न कि विवशता के कारण। हम उसकी दुल्हन हैं।
- सेवकों को यह सिखाएं कि सारी सेवकाई इस समझ से प्रवाहित होनी चाहिए कि हम दुल्हा परमेश्वर के लिए दुल्हन तैयार कर रहे हैं। हम यह उसी प्रेम की खातिर कर रहे हैं जो दुल्हन के लिए दुल्हे के हृदय में है।
- पवित्र आत्मा के संचरण के प्रति संवेदनशील बनें। वह हमें अपने निकट खींचता है, परंतु वह हमें बाहर भी भेजता है। हमें आत्मा की उन ऋतुओं और समयों के साथ आगे बढ़ना है जिसमें वह स्थानीय

कलीसियाई मण्डली को ले जा रहा है। ऐसे ऋतु हो सकते हैं जब प्रभु हमें केवल अपनी उपस्थिति में ठहरे रहने के लिए और अपने हृदय की बातों को उस पर उण्डेलने के लिए बुलाता है। ऐसे भी ऋतु हो सकते हैं जब वह हमें मिशन क्षेत्र में कठोर परिश्रम करने हेतु बाहर भेजता है।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- हमें आने और जाने के मध्य संतुलन बनाने की ज़रूरत है। दुल्हा परमेश्वर हमें खुद की ओर गहराई के लिए बुलाता है। फिर भी फसह के प्रभु के रूप में उसने हमें जाने की आज्ञा दी है। यदि स्थानीय कलीसियाई मण्डली केवल आने का आनन्द उठाती है और जाने की ओर नज़रअंदाज करती है तो हम पूर्ण रूप से उसकी आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हैं।

- कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो प्रभु की बाट जोहने का आनन्द अनुभव करने के प्रति रूझान रखते हैं, परंतु कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका झुकाव जाकर फसल लाना होता है। आपके साथ कौन बात कर रहा है इसके आधार पर पासबान/अगुवा होने के नाते, आप या तो आगे बढ़ा सकते हैं (बाहर भेज सकते हैं) या अंदर खींच सकते हैं (निकट ता की ओर)। आपको इस प्रकार मज़बूत होना है जिससे कि आप लोगों की पसंदगी से प्रभावित न हों, बल्कि किस समय में प्रभु क्या कहता है इसका आपको ध्यान रखना है। लोगों की सुनें, परंतु प्रभु की सुनें और जो कुछ वह कहता है उसे करें।

- स्त्रियों में यह प्रवृत्ति हो सकती है कि वे इस आत्मिक सत्य के साथ भावनात्मक रूप से बह जाती हैं, जहां वे कल्पना करने लगती हैं कि उन्होंने प्रभु से विवाह कर लिया है। फिर वे अपने पतियों का या अगुवे के स्थान पर कार्यरत् पुरुषों का अनादर, और उपेक्षा करने लगती हैं। अतः इस सत्य को समझाते समय, हमें स्पष्ट रूप से उसकी दुल्हन होने के सही और गलत मायने भी समझाना है।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. हम प्रभु के लिए आवेषी प्रेम के तेल को बनाए रखने में विष्वासियों की कैसे सहायता कर सकते हैं ताकि उनकी असीम भक्ति और आराधना के दीपक हमेशा दुल्हा परमेष्वर के समक्ष भेंट के रूप में चढ़ाए जाते रहें?

13

स्थानीय कलीसिया–प्रार्थना और आराधना का भवन

राजपदधारी याजकों का समाज

नया नियम और पुराना नियम दोनों में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहता था जो उसके राजपदधारी याजक बनें।

निर्गमन 19:3-6

3 तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्त्राएलियों को मेरा यह वचन सुना,
4 कि तुमने देखा है कि मैंने मिस्त्रियों से क्या क्या किया; तुमको मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं।
5 इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरी निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है।
6 और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्त्राएलियों से कहनीं है वे ये ही है।

1 पतरस 2:5

तुम भी आप जीवित पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओं, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं।

हम पवित्र याजकगण हैं जिन्हें आत्मिक बलिदान चढ़ाने के लिए बुलाया गया है।

हमारी आराधना और हमारी प्रार्थना महत्वपूर्ण आत्मिक बलिदान हैं जो हम परमेश्वर के सम्मुख चढ़ाते हैं।

शाश्वत अग्नि

लैव्य व्यवस्था 6:12,13

12 और वेदी पर अग्नि जलती रहे, और कभी बुझने न पाए; और याजक भोर भोर उस पर लकड़ियां जलाकर होमबलि के टुकड़ों को उसके ऊपर सजाकर धर दे; और उसके ऊपर मेलबलियों की चरबी को जलाया करे।
13 वेदी पर आग लगातार जलती रहे; वह कभी बुझने न पाए।

एक बार मूसा ने मिलाप का तम्बू बनाया, मिलाप के तम्बू के उद्घाटन के समय, पीतल की वेदी पर पहली आग स्वर्ग से उतर आई (लैव्यय व्यवस्था 9:24), ताकि लगातार लकड़ी डालकर इसे जलते रखा जाता है, उनकी सारी पीढ़ियों में उनके सारे होमबलि स्वर्ग से उतरी हुई आग से भस्म हो जाते थे।

आग होमबलि पर गिरती है। हम बलिदान चढ़ाते हैं, परमेश्वर आग देता है। आराधना और प्रार्थना के हमारे निरंतर बलिदान परमेश्वर की आग से जलते हैं। परमेश्वर चाहता है कि यह निरंतर होता रहे, कभी बंद न हो।

पवित्र धूप

निर्गमन 30:34-38

34 फिर यहोवा ने मूसा से कह, बोल, नखी और कुन्दरू, ये सुगन्ध द्रव्य निर्मल लोबान समेत ले लेना, ये सब एक तौल के हों,
35 और इनका धूप अर्थात् लोन मिलाकर गन्धी की रीति के अनुसार चोखा और पवित्र सुगन्ध द्रव्य बनवाना;
36 फिर उसमें से कुछ पीसकर बुकनी कर डालना, तब उसमें से कुछ मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के आगे, जहां पर मैं तुझसे मिला करूंगा वहां रखना; वह तुम्हारे लिये परमपवित्र होगा।
37 और जो धूप तू बनवाएगा, मिलावट में उसके समान तुम लोग अपने लिये और कुछ न बनवाना; वह तुम्हारे आगे यहोवा के लिये पवित्र होगा।
38 जो कोई सूंघने के लिये उसके समान कुछ बनाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए।

- परमेश्वर को जो कुछ भी चढ़ाया जाता है वह पवित्र और शुद्ध हो (वचन 35,36)।
- जो हम परमेश्वर को चढ़ाते हैं, किसी और को न चढ़ाएं (वचन 37)।
- परमेश्वर से हमारी भेंट पवित्रता के मध्य होती है (वचन 36)।

दाऊद का तम्बू

ई. पू. 1000 में, अपने हृदय की इच्छा से दाऊद ने आज्ञा दी कि वाचा का संदूक गीतों के स्वरों और संगीत वाद्यों की ध्वनि के साथ लेवियों के कांधों पर रख कर उसकी नई राजधानी यरूशलेम में लाया जाए। वहां पर उसने उसे एक तम्बू में रखा जिसे दाऊद का तम्ब कहा जाता है (1 इतिहास 15:1)। इस तम्बू में आराधना की एक नई व्यवस्था स्थापित की गई, ऐसा इस्राएल में पहले कभी नहीं हुआ था। लेवी और याजकों के गोत्र से दाऊद ने 4000 वादकों, 4000 पहरूओं (1 इतिहास 23:5) और 288 नबूवत करने वाले गायकों (1 इतिहास 23:7) को नियुक्त किया कि वे रात और दिन "निवेदन करें, धन्यवाद दें और प्रभु यहोवा की स्तुति करें", दिन के 24 घंटे, सप्ताह के सातों दिन, और साल के 365 दिन वे सेवा करते रहे और यह 33 वर्षों तक चलता रहा (1 इतिहास 16:37; 2 शमुएल 5:5)। पहले लिखे गए कई भजन पहले दाऊद के तम्बू में आराधना के भविष्यात्मक गीतों के रूप में लिखे गए थे।

दाऊद के तम्बू में आराधना की महत्वपूर्ण विशेषताएं

बहुतायत की आराधना और सामर्थी मध्यस्थी

सब कुछ बहुतायत में है, उत्तम से उत्तम जो वे प्रभु को चढ़ा सकते हैं। कल्पना करें 4000 संगीत वादक, 288 गायक परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित किए गए ताकि दिन के 24 घंटे, सप्ताह के सातों दिन परमेश्वर के सम्मुख आराधना और मध्यस्थी की जाए। ऐसा करने का हर प्रयास किया गया।

भविष्यात्मक आराधना

1 इतिहास 25:1-8

1 फिर दाऊद और सेनापतियों ने आसाप, हेमान और यदूतून के कितने पुत्रों को सेवकाई के लिये अलग किया कि वे वीणा, सारंगी और झांझ बजा बजाकर नबूवत करें। और इस सेवकाई के काम करनेवाले मनुष्यों की गिनती यह थी:
2 अर्थात् आसात के पुत्रों में से तो जक्कूर, योसेप, नतन्याह और अशरेला, आसाप के ये पुत्र आसाप ही की आज्ञा में थे, जो राजा की आज्ञा के अनुसार नबूवत करता था।
3 फिर यदूतून के पुत्रों में से गदल्याह, सरी यशायाह, हसब्याह, मत्तित्याह, ये ही दः अपने पिता यदूतून की आज्ञा में होकर जो यहोवा का धन्यवाद और स्तुति कर करके नबूवत करता था, वीणा बजाते थे।
4 और हेमान के पुत्रों में से, मुक्किय्याह, मत्तन्याह, लज्जीएल, शबूएल, यरीमोत, हनन्याह, हनानी, एलीआता, गिद्दलती, रोममतीएजेर, योशबकाशा, मल्लोती, होतीर और महजीओत।
5 परमेश्वर की प्रतिज्ञानुकूल जो उसका नाम बढ़ाने की थी, ये सब हेमान के पुत्र थे जो राजा का दर्शी था; क्योंकि परमेश्वर ने हेमान को चौदह बेटे और तीन बेटियां दी थीं।
6 ये सब यहोवा के भवन में गाने के लिये अपने अपने पिता के अधीन रहकर, परमेश्वर के भवन, की सेवकाई में झांझ, सारंगी और वीणा बजाते थे। और आसाप, यदूतून और हेमान राजा के अधीन रहते थे।
7 इन सभों की गिनती भाइयों समेत जो यहोवा के गीत सीखे हुए और सब प्रकार से निपुण थे, दो सौ अठासी थी।
8 और उन्होंने क्या बड़ा, क्या छोटा, क्या गुरू, क्या चेला, अपनी अपनी बारी के लिये चिट्ठी डाली।

तम्बू की आराधना मात्र प्रतिदिन का भजन और गीतों का गाना नहीं था। इनका स्वरूप भविष्यात्मक था, आत्मा से प्रेरित था, अक्सर स्वयंभूत था, या आत्मा की प्रेरणा से प्राप्त गीत जो लिखे जाते थे और प्रभु के लिए गाए जाते थे। बहुसंख्य भजनों का जन्म दाऊद के तम्बू में हुआ।

क्रमबद्ध आराधना

- गायकों या वादकों के 24 दल या टीमें थीं जिन्हें प्रतिदिन एक नियत कार्यसूची का पालन करना पड़ता था (1 इतिहास 24:18,19)।

- जो कुछ निर्धारित किया गया था उसमें दर्जा (अगुवे) और क्रम था। लोग अपने अगुवे की आधीनता में चलते थे (1 इतिहास 25:6,8)।
- वे अत्यंत कुशल संगीत वादक थे। जो कुछ किया जा रहा था, उसमें उत्तमता थी (1 इतिहास 25:7)।

बेदारी और दाऊद की आराधना व्यवस्था

यद्यपि मंदिर के स्थान पर तम्बू रखा गया था, फिर भी इस्राएल और यहूदा के इतिहास में सात उत्तरकालीन अगुवों ने दाऊद की आराधना व्यवस्था को अपनाया और पुनर्स्थापित किया। जितनी बार यह आराधना का क्रम पुनर्परिचित किया गया, उतनी बार आत्मिक बेदारी, छुटकारा और युद्ध में विजय प्राप्त हुई।

- **सुलैमान** ने निर्देश दिया कि मंदिर की आराधना दाऊद की व्यवस्था के अनुसार होनी चाहिए (2 इतिहास 8:14,15)।
- **यहोशापात** ने दाऊद की व्यवस्था के अनुसार गायकों को नियुक्त कर मवाबियों और अम्मोनियों को पराजित किया : सेना के आगे आगे महान हालेल गाते हुए गायक। यहोशापात ने मंदिर में दाऊद की आराधना पुनर्स्थापित की (2 इतिहास 20:20-22,28)।
- **योआश** (2 इतिहास 23:1-21; 24:1-27)।
- **हिजकिय्याह** मंदिर को शुद्ध किया और उसका पुनर्निमाण किया, और दाऊद की आराधना विधी को फिर संस्थापित किया (2 इतिहास 29:1-36; 30:21)।
- **योशिआ** ने दाऊद की आराधना विधी को फिर संस्थापित किया (2 इतिहास 35:1-27)।
- **एज्रा और नहेम्याह** ने बाबुल से लटकर दाऊद की आराधना विधी को फिर संस्थापित किया (एज्रा 3:10; नहेम्याह 12:28-47)।

परमेश्वर की उपस्थिति के लिए निवास बनाने के द्वारा, परिवर्तन आता है।

आमोस की भविष्यद्वाणी

दाऊद के बाद करीब 250 वर्षों पश्चात्, आमोस भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की:

आमोस 9:11-13
11 उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूंगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूंगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊंगा, और जैसा वह प्राचीन काल में था, उसको वैसा ही बना दूंगा;
12 जिससे वे बचे हुए एदोमियों को वरन सब अन्यजातियों को जो मेरी कहलाती है, अपने अधिकार में लें, यहोवा जो यह काम पूरा करता है उसकी यही वाणी है।
13 यहोवा की यह भी वाणी है, देखो, ऐसे दिन आते हैं, कि हल जोतनेवाला लवनेवाले को और दाख रौंदनेवाला बीज बोनेवाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा और पहाड़ियों से बह निकलेगा।

परमेश्वर ने आमोस भविष्यद्वक्ता के द्वारा बातें की और यह घोषणा की कि वह दाऊद का तम्बू फिर बनाएगा और उसे फिर पुनर्स्थापित करेगा जैसा वह पिछल दिनों में था। वह ऐसा करेगा ताकि अन्यजातियों को भी प्रवेश दिया जाए। एदोम उद्धार न पाए हुए, अन्यजाति संसार को सम्बोधित करता है। इस समय, ऐसी फसह होगी, कि बीज बोने वाला कटनी काट नेवाले से आगे बढ़ जाएगा। फसह इतनी प्रचुर होगी, कि कटनी काटने वाले पिछले ऋतु की फसल काटने में व्यस्त रहेंगे, और बीज बोने वाले आकर अगली ऋतु के लिए काम करने लगेंगे।

हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि जो कुछ शाब्दिक रूप में इस्राएल में पूरा हुआ वह परमेश्वर आत्मिक रीति से कलीसिया में पूरा करता है। उदाहरण के तौर पर, आत्मा के उण्डेले जाने की योएल नबी की भविष्यद्वाणी (योएल 2:28,29), प्रथमतः कलीसिया द्वारा अनुभव की गई (प्रेरितों के काम 2:16-18) और भविष्य में वास्तविक इस्राएल में पूरी होगी।

प्रारम्भिक कलीसिया में जब अन्यजातियों के मध्य सुसमाचार फैला, तब प्रेरितों में यह बहस छिड़ गई कि यीशु के पीछे चलने वाले अन्यजातियों का

यहूदी प्रथाओं का भी पालन करना चाहिए या नहीं। यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा याकूब आमोस की भविष्यद्वाणी का उल्लेख करता है (आमोस 9:11,12) और अपना फैसला सुनाता है:

प्रेरितों के काम 15:16,17

16 इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा।

17 इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूंढ़ें।

उस समय दाऊद का भौतिक तम्बू अस्तित्व में नहीं था। परंतु, आमोस भविष्यद्वक्ता का संदर्भ लेते हुए (आमोस 9:11,12) और पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, याकूब यह दर्शाता है कि कलीसिया दाऊद के तम्बू के पुनर्निर्माण की आत्मिक परिपूर्णता है। दाऊद के निवास में सप्ताह के सातों दिन और चौबीसों घण्टे परमेश्वर की स्तुति और आराधना होती थी। प्रारम्भिक कलीसिया आत्मिक अर्थ से दाऊद का तम्बू बन गई थी और परमेश्वर को आराधना और मध्यस्थी की भेंट चढ़ा रही थी। इसलिए, प्रभु के पास अन्यजाति लोग आ रहे थे। अतः निरंतर आराधना और मध्यस्थी करने और प्रभु के लिए आत्माओं को जीतने के मध्य एक प्रत्यक्ष सम्बंध था।

हम मानते हैं कि जब स्थानीय कलीसियाएं खुद को लगातार आराधना और मध्यस्थी के लिए समर्पित करेंगी, तब हम उनके क्षेत्र में आत्माओं की बड़ी भीड़ को परमेश्वर के राज्य में आते हुए देखेंगे। कटनी इतनी अधिक होगी कि बीज बोने वाला कटनी काटने वाले आगे बढ़ जाएगा।

प्रार्थना और आराधना का घर

यशायाह 56:6,7

6 परदेशी भी जो यहोवा के साथ इस इच्छा से मिले हुए हैं कि उसकी सेवा टहल करें और यहोवा के नाम से प्रीति रखें और उसके दास हो जाएं, जितने विश्रामदिन को अपवित्र करने से बचे रहते और मेरी वाचा को पालते हैं,

7 उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आकर अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा;

उनके होमबलि और मेलबलि मेरी वेदी पर ग्रहण किए जाएंगे; क्योंकि मेरा भवन सब देशों के लोगों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा।

मत्ती 21:12-14
12 यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर उन सबको, जो मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतर बेचनेवालों की चौकियां उलट दी।
13 और उनसे कहा, लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।
14 और अन्धे, और लंगड़े मन्दिर में उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा किया।

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर बनें। हम राष्ट्रों के लिए प्रार्थना में लगे हैं।

ध्यान दें कि यशायाह 56 के संदर्भ का सम्बंध अन्यजातियों को प्रार्थना के घर में लाने से है। इससे यह प्रगट होता है कि परमेश्वर के लोग जब सारे राष्ट्रों के लिए खुद को प्रार्थना के घर के रूप में स्थापित करेंगे, तब उसके परिणामस्वरूप लोग प्रभु से प्रेम करने लगेंगे और उसके सेवक बनेंगे।

आराधनालय से सर्राफों को खदेड़कर निकालते समय प्रभु यीशु ने यशायाह से संदर्भ लिया। फिर उसने अंधे और लंगड़े को चंगा किया। प्रभु का उद्देश्य यह है कि सारे राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर राष्ट्रों की चंगाई का मरूद्यान बने। लोग चंगाई पाने के लिए प्रार्थना के घर में आएंगे।

सिंहासन कक्ष को भेंट

भजन 141:2
मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्याकाल का अन्नबलि ठहरे!

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें परमेश्वर के सिंहासन कक्ष में ले जाती है और हमें उस आराधना की झलक देती है जो परमेश्वर के सिंहासन कक्ष के पास चल रही है।

स्वर्ग की आराधना निरंतर चलती रहती है। *"और चारों प्राणियों के छः छः पंख हैं, और चारों ओर, और भीतर आंखें ही आखें हैं; और वे रात दिन बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है" (4:8)!*

आराधना और मध्यस्थी दोनों निरंतर प्रभु के सामने चढ़ाए जाते हैं। *"और जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। और वे यह नया गीत गाने लगे कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध होकर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं"* (प्रकाशितवाक्य 5:8-10)। बिना परमेश्वर की आराधना को दर्शाती है। कटोरा, प्रार्थना को दर्शाता है। सिंहासन कक्ष में लगातार आराधना और प्रार्थना चलती रहती है। *"फिर एक और स्वर्गदूत सोने का धूपदान लिए हुए आया, और वेदी के निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ उस सोनहली वेदी पर जो सिंहासन के सामने हैं, चढ़ाए। और उस धूप का धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुंच गया" (प्रकाशितवाक्य 8:3,4)।*

हर प्राणी प्रभु की आराधना करता है। *"और जब मैंने देखा, तो उस सिंहासन और उन प्राणियों और उन प्राचीनों की चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और करोड़ों की थी। और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है"* (प्रकाशितवाक्य 5:11,12)।

आराधना परमेश्वर को सात गुणा अधिक आदर देती है। *"और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और महिमा, और धन्यवाद के योग्य है"* (प्रकाशितवाक्य 5:12)। सात यह संख्या पूर्णता या सिद्धता को दर्शाती है। राजा के लिए सिद्ध आदर तब होता है जब वह सातों क्षेत्रों में आदर पाता है: अधिकार, धन, बुद्धि, बल, आदर, महिमा, और आशीष।

- अधिकार, प्रभाव, सत्ता, प्रभुता, समप्रभुता है।
- धन सारी सम्पत्ति है।
- बुद्धि सारा ज्ञान, समझ, कौशल है।
- बल सारी शक्ति और योग्यता है।
- आदर सारा आदर, भययुक्त आदर, और राजा को दी जाने वाली आधीनता है।
- महिमा सारी शान, वैभव, महानता और वह जो कुछ है और जो कुछ करता है उस विषय में भययुक्त आदर है।
- आशीष सारी स्तुति, आराधना, सराहना, प्रशंसा, भक्ति, और प्रेम है जो राजा को दिया जाता है।

पवित्रजनों की बड़ी भीड़ सिंहासन के सामने आराधना में शामिल होती है। *"इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिए हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय जयकार हो। और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं। फिर वे सिंहासन के सामने मुंह के बल गिर पड़े, और परमेश्वर को दण्डवत करके कहा, आमीन! हमारे परमेश्वर की स्तुति, और महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और*

सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन!" (प्रकाशितवाक्य 7:9-12)।

जैसे स्वर्ग में वैसे ही पृथ्वी पर भी आराधना और मध्यस्थी हो।

प्रार्थना और आराधना का आंदोलन

इतिहास बताता है कि सदियों से ऐसा समय रहा है जब विश्वासियों के समुदायों ने सप्ताह के सातों दिन चौबीसों घण्टे आराधना और प्रार्थना की।

सन 400 एलेक्ज़ैंडर एकिमिटस और स्लीपलेस वन्स

सन 400 के दौरान एलेक्ज़ैंडर एकिमिटस नामक एक साधु ने कॉन्स्टैटिनोपल में 300 से 400 मठवासियों साधुओं को इकट्ठा किया जहां पर उसने निरंतर प्रार्थना करते रहने के पौलुस के उपदेश को पूरा करने हेतु लॉस पेरेनिस की स्थापना की (थिस्सलुबीकियों 5:18)। कॉन्स्टैटिनोपल से निकाल दिए जाने के बाद, इन साधुओं ने काला समुद्र के मुख पर स्थित गॉर्मन नामक स्थान में एक मठ की स्थापना की। एकोमेटे (शब्दशः, न सोने वाले) और स्लीपलेस वन्स की परम्परा के अनुसार यह एक बुनियादी मठ बन गया।

1727 मोरावियन्स 100 वर्षों की प्रार्थना सभा और अनुवर्ती मिशन

सन 1727 में, काऊंट ज़िन्ज़ेन्डॉर्फ की अगुवाई में हेर्नहट में छोटे मोरावियन समुदाय ने वह अनुभव किया जिसे मोरावियन पिन्तेकुस्त के रूप में देखा जाता है। ज़िन्ज़ेन्डॉर्फ ने कहा कि 13 आगस्त मण्डली पर पवित्र आत्मा के बड़े उण्डेले जाने का दिन था; वह पिन्तेकुस्त था। पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के दो सप्ताह के अन्दर 24 पुरुष और 24 स्त्रियों ने हर घण्टे मध्यस्थी की प्रार्थना करने की वाचा बांधी, इस प्रकार वे रात और दिन हर घण्टे प्रार्थना करने लगे। वे यह देखने के प्रति समर्पित थे कि *"वेदी पर आग लगातार जलती रहे; वह कभी बुझने न पाए"* (लैव्यव्यवस्था 6:13)। इस प्रयास के प्रति समपित लोगों की संख्या जल्द ही बढ़कर उस समुदाय के 70 लोगों में बदल गई। यह प्रार्थना सभा अगले 100 वर्षों तक बिना रूके चलते रहने वाली थी और कई लोग मानते हैं कि मोरावियन लोगों ने संसार पर जो प्रभाव डाला उसके पीछे यही एक आत्मिक सामर्थ थी।

हेर्नहट के प्रार्थना कक्ष से वह मिशनरी उत्साह उदय हुआ जो कलीसिया के इतिहास में सर्वश्रेष्ठ रहा है। इस समुदाय के कई लोगों ने संसार में जाकर प्रचार किया, यहां तक कि महान आदेश को पूरा करने के लिए उन्होंने खुद को गुलामों के रूप में बेच दिया। यह समर्पण एक साधारण आकड़ेवारी से दिखाई देता है। विशिष्ट तौर पर, जब विश्व मिशन की बात आती है, तब प्रोटेसटंट विश्वासी और मिशनरी के बीच का अनुपात 5000:1 होता है। परंतु मोरावियन विश्वासियों ने और अधिक अनुपात देखा–60:1। 1776 तक, हेर्नहट के इस समुदाय से 226 मिशनरी बाहर भेजे गए थे। आधुनिक मिशनों के जनक विलियम कैरी की शिक्षा के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि मिशनरी कार्य के लिए उनके उत्साह के पीछे मोरावियन का गहरा प्रभाव था। मिशन मानसिकता रखने वाले मोरावियन के द्वारा ही जॉन वेस्ली भी विश्वास में आए। सॅक्सनी में इस छोटे समुदाय का प्रभाव सचमुच अतुलनीय है, जो रात और दिन प्रभु के मुख का अवलोकन करने के प्रति समर्पित हैं।

सेऊल, कोरिया का प्रार्थना पर्वत

1973 में, सेऊल, दक्षिण कोरिया के योईडो फुल गॉस्पल चर्च के पासबान डेविड यॉंगी चो ने प्रार्थना पर्वत की स्थापना की जहां पर रात और दिन प्रार्थना की जाती है। यह प्रार्थना पर्वत जल्द ही प्रतिवर्ष लाखों भेंटकर्ताओं को आकर्षित करने लगा क्योंकि इस पर्वत पर तैयार किए गए प्रार्थना की कोठरियों में वे प्रार्थना में समय बिताने लगे। चो अपनी कलीसिया में निरंतर प्रार्थना के प्रति, विश्वास के प्रति और छोटी शिष्यता सेल्स स्थापन करने के प्रति समर्पित थे। शायद इसी के परिणामस्वरूप चो की कलीसिया तेजी से बढ़कर इस संसार की सबसे विशाल कलीसियाई मण्डली बन गई। जिसमें अभी 780,000 इतने सदस्य हैं।

द इन्टरनॅशनल हाऊस ऑफ प्रेयर, कैन्सस सिटी

19 सितम्बर 1999 को कैन्सस सिटी, मिसूरी के इन्टरनॅशनल हाऊस ऑफ प्रेयर ने प्रार्थना और आराधना सभा की शुरूवात की जो उस समय से सप्ताह के सातों दिन चौबीसों घण्टे चलती रही है। ज़िन्ज़ेन्डॉर्फ समान

दर्शन रखकर कि वेदी की आग कभी बुझने न पाए, कभी ऐसा समय नहीं रहा जब उस दिन से आराधना और प्रार्थना स्वर्ग की ओर नहीं पहुंच पाई।

समस्त संसार में बहुत कुछ हो रहा है, विश्वासी लोग सप्ताह के सातों दिन और चौबीसों घण्टे आराधना और प्रार्थना करने वाले स्थानीय समुदायों को स्थापित करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

रात और दिन

यशायाह 62:6,7

6 हे यरूशलेम, मैंने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन-रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करनेवालो, चुप न रहो,
7 और, जब तक वह यरूशलेम को स्थिर करके उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो।

लूका 18:1,7

1 फिर उसने इसके विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए, उनसे यह दृष्टान्त कहा:
7 इसलिए क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं, और क्या वह उनके विषय में देर करेगा?

भजन 134:1-3

1 हे यहोवा के सब सेवको, सुनो, तुम जो रात रात को यहोवा के भवन में खड़े रहते हो, यहोवा को धन्य कहो!
2 अपने हाथ पवित्रस्थान में उठाकर, यहोवा को धन्य कहो।
3 यहोवा जो आकाश और पृथ्वी का कर्त्ता है, वह सिय्योन में से तुझे आशीष देवे।

हम ऐसे लोग बनें जो रात और दिन परमेश्वर को पुकारेंगे।

प्रार्थना और आराधना का भवन स्थापित करना

स्थानीय कलीसिया होने के नाते, हमें इसमें आगे बढ़ना है। हमें दाऊद का तम्बू स्थापित करने हेतु प्रोत्साहन देना है, जिसमें में निरंतर प्रार्थना और स्तुति होती रहेगी ताकि हमारे समाजों में, शहरों और प्रांतों में उसका राज्य

आए। सारी सेवकाई जो प्रार्थना और आराधना के द्वारा परमेश्वर के साथ निकटता की ऐसी जीवनशैली से प्रभावित होती है, सामर्थी होगी।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- लोगों को प्रार्थना और आराधना का महत्व समझना सिखाएं।
- स्थानीय कलीसिया को भविष्यात्मक आराधना और सामर्थीपूर्ण, रणनीतिक प्रार्थना और मध्यस्थी में बढ़ाएं। शहर/समाज में होने वाली बातों की युद्धनीतिक जानकारी प्राप्त करें (उदाहरण सामाजिक समस्या, दुष्टात्माओं के गढ़) और इन्हें प्रार्थना का लक्ष्य बनाएं।
- सामुहिक आराधना और प्रार्थना का नियमित समय निर्धारित करें, उदा. प्रतिदिन या साप्ताहिक प्रार्थना सभाएं, सम्पूर्ण रात्री की आराधना और प्रार्थना के नियमित समय, आराधना और प्रार्थना की लम्बी अवधि (दिन)।
- लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे लक्ष्य के रूप में आराधना, प्रार्थना और मध्यस्थी के लिए छोटे समूहों में इकट्ठा हों।
- आपकी स्थानीय कलीसिया में जहां पर लोग दो दो घण्टे का समय लेकर आराधना और प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं, सप्ताह के सात दिन और चौबीस घण्टे प्रार्थना और आराधना का भवन स्थापित करें।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- धीरे धीरे आगे बढ़ते जाएं। जहां लोग हैं वहां से आरम्भ करें। तुरंत किसी नये कार्य को आरम्भ करने का प्रयास न करें (उदाहरण 24X7 प्रार्थना भवन) जो मण्डली के लोग नहीं कर पाते हैं।
- लोगों को शारीरिक रीति से विश्राम करने हेतु भी समय दें। लम्बे घण्टों तक आराधना और मध्यस्थी करना उन लोगों के लिए शारीरिक दृष्टि से थकाने वाला हो सकता है जो आराधना और मध्यस्थी में अगुवाई करते हैं। इसलिए अगुवों को विश्राम के लिए पर्याप्त समय दें।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. स्थानीय कलीसियाई मण्डली को प्रार्थना और आराधना करने वाले लोगों के रूप में स्थापित करना कैसे प्रत्यक्ष रूप से आत्माओं के उद्धार में परिणत होगा?

2. आप आराधना टीमों को, मध्यस्थों को और स्थानीय कलीसियाई मण्डली को आराधना और मध्यस्थी में संवेदनशील रहना कैसे सिखा सकते हैं ताकि आराधना और मध्यस्थी भविष्यात्मक हो (पवित्र आत्मा से प्रेरित हो)?

14

स्थानीय कलीसिया–परमेश्वर का आराधनालय

मंदिर, पवित्र स्थान जहां परमेश्वर वास करता है

1 कुरिन्थियों 3:16,17

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुममें वास करता है?
17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

हम अक्सर इन पदों का व्यक्तिगत तौर पर उल्लेख और व्याख्या करते हैं। यह व्यक्तिगत तौर पर लागू हैं, परंतु साथ ही साथ पौलुस विश्वासियों के स्थानीय समुदाय को लिख रहा है, और इसलिए यह संदर्भ विश्वासियों की सामुहिक देह को संबोधित करता है। हम परमेश्वर का मंदिर है, वह स्थान जहां परमेश्वर वास करता है। हम परमेश्वर का निवास स्थान हैं। हमें उसकी उपस्थिति से परिपूर्ण होना है।

परमेश्वर का मंदिर पवित्र है। इसे पवित्र बनाए रखना है। एक साथ मिलकर हमारे पास इस मंदिर को पवित्र और गंदगी से मुक्त रखने की ज़िम्मेदारी है। अगुवों और विश्वासियों में स्थानीय कलीसियाई मंडली के प्रति एक गहरे आदर का भाव होना चाहिए। यह सच्चाई की स्थानीय कलीसिया पवित्र है और हम उसका भाग हैं, हमें पाप करने से और अन्य लोगों को पाप करने हेतु उकसाने से रोकने पाए, क्योंकि हम परमेश्वर के भवन को अशुद्ध करने हेतु जिम्मेदार नहीं रहना चाहते।

मूसा का तम्बू

परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह मिलाप का तम्बू बनाए। इब्रानियों की पत्री हमें सिखाती है कि जिस निवास स्थान को बनाने की परमेश्वर ने

मूसा को आज्ञा दी, वह उस सच्चे निवासस्थान की जो स्वर्ग में है नकल थी। मूसा का तम्बू स्वर्गीय निवासस्थान का नमूना था (इब्रानियों 8:1-5)।

मूसा के तम्बू में वाचा का संदूक था जो यह वह स्थान था जहां परमेश्वर महायाजक के साथ भेंट करता था।

निर्गमन 25:8
और वे मेरे लिये एक पवित्रस्थान बनाएं, कि मैं उनके बीच निवास करूं।

निर्गमन 25:21,22
21 और प्रायश्चित के ढकने को सन्दूक के ऊपर लगवाना; और जो साक्षीपत्र मैं तुझे दूंगा उसे सन्दूक के भीतर रखना।
22 और मैं उसके ऊपर रहकर तुझ से मिला करूंगा; और इस्राएलियों के लिये जितनी आज्ञाएं मुझ को तुझे देनी होंगी, उन सभों के विषय में प्रायश्चित के ढकने के ऊपर से और उन करूबों के बीच में से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुझसे वार्तालाप किया करूंगा।

निर्गमन 30:6
और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने है, अर्थात् प्रायश्चित वाले ढकने के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर है, वहीं मैं तुझसे मिला करूंगा।

इसके अतिरिक्त, मिलाप का तम्बू वह स्थान था जहां परमेश्वर की महिमा समय समय पर प्रगट होती थी। यह परमेश्वर की महिमा थी जिसने विास के तम्बू को पवित्र किया था।

निर्गमन 29:43
और मैं इस्राएलियों से वहीं मिला करूंगा, और वह तम्बू मेरे तेल से पवित्र किया जाएगा।

निर्गमन 40:34,35
34 तब बादल मिलापवाले तम्बू पर छा गया, और यहोवा का तेज निवासस्थान में भर गया।
35 ओर बादल जो मिलापवाले तम्बू पर ठहर गया, और यहोवा का तेज जो निवासस्थान में भर गया, इस कारण मूसा उसमें प्रवेश न कर सका।

इस्राएल की यात्रा के दौरान कई बार हम उन उदाहरणों को पढ़ते हैं जब मिलाप के तम्बू में परमेश्वर का तेज भर गया (लैव्यव्यवस्था 9:23; गिनती 14:10; गिनती 16:19,42; गिनती 20:6)।

पुराने नियम का मिलाप का तम्बू वह स्थान था जहां परमेश्वर अपने लोगों के साथ भेंट करता था और जहां परमेश्वर की महिमा प्रगट होती थी।

सुलैमान का मंदिर

हम सुलैमान के मंदिर के समर्पण के समय ऐसा ही तेज प्रगट हुआ था। वास्तविक मंदिर पर परमेश्वर की महिमा के प्रगट होने का यह अनोखा चित्र है।

2 इतिहास 5:13,14
13 तो जब तुरहियां बजानेवाले और गानेवाले एक स्वर से यहोवा की स्तुति और धन्यवाद करने लगे, और तुरहियां, झांझ आदि बाजे बजाते हुए यहोवा की यह स्तुति ऊंचे शब्द से करने लगे, कि वह भला है और उसकी करूणा सदा की है, तब यहोवा के भवन में बादल छा गया,
14 और बादल के कारण याजक लोग सेवा-टहल करने को खड़े न रह सके, क्योंकि यहोवा का तेज परमेश्वर के भवन में भर गया था।

प्रभु की महिमा परमेश्वर के भवन में छा गई! परमेश्वर यही चाहता है। पुराना नियम, जो कि नए नियम की वास्तविकताओं का प्रतीक और छाया है, परमेश्वर के हृदय को प्रगट करती है कि उसके लोगों के द्वारा उसकी महिमा प्रगट हो।

उसकी महिमा से भरा हुआ भवन

सुलैमान का मंदिर बाबुल के हमलावारों ने नष्ट कर दिया था। 70 वर्षों की बंधुवाई के अंत में, यरूशलेम का फिर निर्माण करने हेतु यहूदी लोगों को वापस उनके देश आने के लिए आज़ाद कर दिया गया था।

यरूशलेम में मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य ई. पू. 536 में बुनियाद से आरंभ हो गया। यह काम करीब 16 वर्षों तक जारी रहा, और फिर

उसमें रुकावट आई। इसी समय के दौरान, हाग्गै ने मंदिर के पुनर्निर्माण कार्य को पूरा करने हेतु लोगों को उत्साहित करने के लिए इन शब्दों में भविष्यद्वाणी कीः

हाग्गै 2:7-9
7 और मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊंगा, और सरी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।
8 चान्दी तो मेरी है, और सोना भी मेरा ही है, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।
9 इस भवन की पिछली महिमा इसकी पहली महिमा से बड़ी होगी, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है, और इस स्थान में मैं शांति दूंगा, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है।

परमेश्वर ने अपने लोगों से यह प्रतिज्ञा की कि यदि वे मंदिर बनाएंगे, तो वह उसे अपनी महिमा से भर देगा। वस्तुतः, उसने यह प्रतिज्ञा की कि इस बाद वाले मंदिर की महिमा पिछले मंदिर से अधिक होगी।

परमेश्वर की महिमा जो कुछ वह है और जो कुछ वह करता है इसकी अभिव्यक्ति है

परमेश्वर की महिमा वह जो कुछ है और वह जो कुछ करता है इसकी अभिव्यक्ति है, ताकि लोग उसके अदृश्य गुणों की अभिव्यक्ति देख सकें। इसलिए परमेश्वर की महिमा अनगिनत तरीकों से प्रगट होती है। मूसा के तम्बू में और सुलैमान के मंदिर के समर्पण में, उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर की महिमा बादल के रूप में प्रगट हुई। हममें से कुछ लोग यह प्रश्न करेंगे, परमेश्वर की महिमा की अभिव्यक्ति के रूप में एक दृश्य बादल से क्या लाभ है। स्वाभाविक मन को, बादल किसी काम का नज़र नहीं आता। परंतु, जिन लोगों ने बादल के रूप में परमेश्वर की महिमा को प्रगट होते हुए देखा, उन लोगों पर इसका बहुत बड़ा असर हुआ। लोग उनके मध्य प्रगट हुई परमेश्वर की उपस्थिति में भययुक्त आदर से भर गए। हम जो कुछ देखते हैं, केवल उसके द्वारा नहीं, परंतु हम जो कुछ महसूस करते हैं उसके द्वारा भी कभी कभी परमेश्वर की महिमा साकार होती है। कभी कभी उसकी महिमा हम जो कुछ सुनते हैं उसके द्वारा प्रगट होती है–जो शब्द कहा जाता है, जो गीत गाया जाता है, उसके द्वारा भी।

हम कुछ तरीकों को देखेंगे जिनके द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट होती है। हमें यह स्मरण में रखना है कि परमेश्वर अपनी महिमा को कई तरह से प्रगट करता है, जिसके विषय में संभवतः हमें एहसास भी नहीं है। अंततः, परमेश्वर की महिमा का प्रकाशन लोगों को जो वह है और जो वह करता है, उसकी ओर संकेत करता है।

परमेश्वर की महिमा के विभिन्न स्तर

परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि बाद वाले मंदिर की महिमा पिछले मंदिर से अधिक होगी। इससे यह सूचित होता है कि लोगों के मध्य उपस्थित परमेश्वर की महिमा के विभिन्न स्तर होते हैं। परमेश्वर के भवन में या बिल्कुल महिमा नहीं होगी, कुछ महिमा होगी या बहुत अधिक महिमा होगी।हम क्या अनुभव कर सकते हैं इसकी कोई सीमा नहीं है। हम केवल यह कह सकते हैं कि हमें उसकी और महिमा की इच्छा रखना है कि परमेश्वर की महिमा हमारे द्वारा प्रगट हो, ताकि उसे और महिमा प्राप्त हो सके।

परमेश्वर ऐसे लोगों को चाहता है जो उसकी महिमा प्रगट करेंगे

अदन की वाटिका के समय से परमेश्वर की यह इच्छा थी कि परमेश्वर की महिमा मानवजाति के द्वारा प्रगट हो और संपूर्ण पृथ्वी को भर दे। आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में जो कुछ अनुभव किया वह परमेश्वर पृथ्वी को जिस महिमा से भरना चाहता था उसका एक नमूना या प्रारूप था। पतन के बाद, परमेश्वर ऐसी जाति को चाहता था जिसके द्वारा यह पूरा हो सके। इस योजना के एक भाग के रूप में, परमेश्वर ने इस्राएली लोगों को चुना। उन्हें उनके वाचा के देश में ले जाने हेतु परमेश्वर उन्हें मिस्र देश से निकाल ले आया। परंतु इसी दौरान, इस्राएल ने कई बार विद्रोह किया। ऐसे ही किसी समय में जब इस्राएली लोग विद्रोह कर रहे थे, तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह संपूर्ण राष्ट्र को नाश कर देगा, और मूसा से फिर आरंभ करेगा। इस समय, मूसा ने लोगों के लिए मध्यस्थी की और प्रभु उनके विद्रोह के लिए उन्हें क्षमा करने सहमत हो गया। उसने मूसा से कहाः

गिनती 14:20,21
[20] यहोवा ने कहा, तेरी बिनती के अनुसार मैं क्षमा करता हूं।
[21] परंतु मेरे जीवन की शपथ सचमुच सारी पृथ्वी यहोवा की महिमा से परिपूर्ण हो जाएगी।

इस समय, परमेश्वर ने अपने मन के उद्देश्य को दोहराया। वह ऐसे लोगों के लिए अपनी मूल योजना को पूरा करेगा जिनके द्वारा वह संपूर्ण पृथ्वी को अपनी महिमा से भर देगा।

कलीसिया और इसलिए प्रत्येक स्थानीय मंडली आज, परमेश्वर की एक विशाल योजना का भाग है। पृथ्वी को परमेश्वर की महिमा से भरा हुआ देखना।

ऐसे लोग जिनके मध्य परमेश्वर वास करता है

परमेश्वर मंदिर वास्तव में वह स्थान है जहां परमेश्वर वास करता है। यह परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान है। इस स्थान मं परमेश्वर की महिमा प्रगट होती है। भजन 132:13-18 एक सुंदर अनुच्छेद है जो इस बात की तस्वीर प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर अपने लोगों के मध्य वास करना चाहता है फिर यह प्रगट करता है कि उनके मध्य वास करते हुए वह क्या करेगा।

भजन 132:13-18
[13] क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।
[14] वह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है; यही मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है।
[15] मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।
[16] इसके याजकों को मैं उध्दार का वस्त्र पहनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे।
[17] वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा; मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।
[18] मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा, परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।

परमेश्वर अपने लोगों के मध्य निवास करने की इच्छा कैसे रखता है इस पर ध्यान दें। *"यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है।"* वह तो युग युग के लिये मेरा विश्रामस्थान है; यही मैं रहूंगा, क्योंकि मैंने इसको चाहा है। परमेश्वर चुनाव करता है कि वह कहां रहना चाहता है और कहां पर अपनी उपस्थिति का निवास करना चाहता है। बेदारी वास्तव में परमेश्वर के लोगों का उसकी ओर फिरना है, ताकि वह उनके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करे और उनके मध्य में निवास करे। कलीसिया के लिए परमेश्वर ने यह योजना बनाई है कि वह आत्मिक सियोन, ऐसे लोग जिनके मध्य वह वास करता है, बनें।

जब हम ऐसे लोग बनते हैं जिनके मध्य परमेश्वर वास करता है, तब क्या होता है:

वचन 15: मैं इसमें की भोजनवस्तुओं पर अति आशीष दूंगा; और इसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।

- वहां पर अलौकिक प्रयोजन, सम्पन्नता, और आशीष आती है।

वचन 16: इसके याजकों को मैं उध्दार का वस्त्र पहनाऊंगा, और इसके भक्त लोग ऊंचे स्वर से जयजयकार करेंगे।

- वहां उद्धार होता है, जिसमें क्षमा, चंगाई, छुटकारा, विजय, और बहुत कुछ होता है। वहां पर उद्धार का आनन्द होता है जो बार बार हमारे मध्य प्रतिध्वनित होता है।

वचन 17: वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा; मैंने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।

- वहां पर निरंतर बल और प्रभुता में वृद्धि होती है ("सींग")।
- वहां पर निरंतर प्रकाशन होता है ("दीपक")।

वचन 18: मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा, परन्तु उसी के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान रहेगा।

- हम अपने शत्रुओं पर विजय पाते हैं और उसके लोगों के रूप में बढ़ते जाते हैं, उन्नति पाते हैं और प्रफुल्लित होते हैं।

सात "मैं करूंगा" प्रतिज्ञाएं

ध्यान दें कि परमेश्वर सात बार "मैं करूंगा" कहता है। यह कितनी अद्‌भुत बात है। जब परमेश्वर हमें अपना निवास बनाता है, तब वह घोषणा करता है कि वह इन सारी बातों को करेगा। परमेश्वर स्वयं यह करेगा। जब स्थानीय कलीसियाई मण्डली ऐसा समुदाय बनती है जहां परमेश्वर उनके मध्य वास करता है, तब उद्धार न पाए हुए अधर्मी लोग आकर उन बातों को अनुभव करना चाहेंगे जो परमेश्वर हमारे मध्य में कर रहा है।

जब परमेश्वर की महिमा (तेज) हम पर प्रगट होती है

यशायाह के 60वे अध्याय का आरम्भ फिर से एक बार अपने लोगों के द्वारा और मध्य परमेश्वर की महिमा प्रगट करने की परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति से होता है। "*उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है। देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा*" (यशायाह 60:1,2)। इस अध्याय में कई बार परमेश्वर इस बात को दोहराता है कि उसकी महिमा उसके लोगों के द्वारा प्रगट होगी।

- मैं अपने शोभायमान भवन को और भी प्रतापी कर दूंगा (वचन 7)।
- उसने तुझे शोभायमान किया है (वचन 9)।
- मैं अपने चरणों के स्थान को महिमा दूंगा (वचन 13)।
- यहोवा तेरे लिए सदा का उजियाला और तेरी शोभा ठहरेगा (वचन 19)।

बाकी का अध्याय वर्णन करता है कि जब परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के मध्य दिखाई देती है, तब क्या होता है।

चिन्ह, चमत्कार और आश्चर्यकर्म परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं

हम यीशु के जीवन में देह रूप में कई तरह से परमेश्वर की महिमा देखते हैं, जो मनुष्यों के मध्य प्रगट हुई थी।

प्रभु यीशु अनुग्रह और सच्चाई में चला और इससे परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई। इसे पुत्र की महिमा कहते हैं, जैसे पिता के एकलौते की महिमा। *"और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर उसने हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा"* (यूहन्ना 1:14)।

जो चिन्ह, चमत्कार, चंगाइयां और आश्चर्यकर्म जो उसने किए, उन्होंने परमेश्वर की महिमा प्रगट की। *"यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया"* (यूहन्ना 2:11)। *"और जब लोगों ने देखा कि गूंगे बोलते हैं और टुण्डे चंगे होते हैं और लंगड़े चलते हैं और अन्धे देखते हैं, तो उन्होंने अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की"* (मत्ती 15:31)।

प्रभु यीशु मसीह जिस पुत्र की महिमा में चला, वह मसीह की देह के लिए मुक्त की गई। अतः हर एक विश्वासी पुत्र की समान महिमा में चलता है और उसे प्रगट करता है। *"और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं"* (यूहन्ना 17:22)। स्थानीय कलीसियाई मण्डली को उसकी महिमा से परिपूर्ण भवन बनना चाहिए। हम में उसकी महिमा हमें आपस में जोड़ती है।जैसे हम एक हैं, वैसे ही वे भी एक हों। जिस प्रमाण में हम आत्मा की एकता में चलते हैं, उसी प्रमाण में हम हमारे मध्य में उसकी महिमा को प्रगट कर पाएंगे। एकता में चलने के अलावा, हमें विश्वास में चलना होगा ताकि उसकी महिमा प्रगट हो। *"...यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी"* (यूहन्ना 11:40)।

जितनी बार हम पवित्र आत्मा से सुनते हैं, और तब जो कुछ वह हमसे कहता है, उसके अनुसार चलेंगे, तो हम उसकी महिमा प्रगट करेंगे। *"वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा"* (यूहन्ना 16:14)। जब हम उन बातों को सुनते हैं, जो पवित्र आत्मा हम पर घोषित करता है, और उसके बाद हम उसे घोषित करते हैं, तो यही भविष्यद्वाणी है। भविष्यद्वाणी उसकी महिमा को प्रगट करती है। पवित्र आत्मा जो कुछ उसका है, उसमें से हम पर प्रगट करता है। *"उसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं"* (कुलुस्सियों 2:3)। पवित्र आत्मा बुद्धि और ज्ञान के इन भण्डारों में से हमें कुछ देता है और उसके बाद जब हम उन्हें संसार के सामने मुक्त करते हैं, तब हम हमारे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं।

हर स्थानीय मण्डली में परमेश्वर के लोगों को ऐसे लोग बनना चाहिए जो अपने आसपास के संसार में परमेश्वर की महिमा को प्रगट करते हैं।

जब उसकी महिमा चली जाती है

दुख की बात है कि पुराने नियम में, हम ऐसे समयों को देखते हैं जब परमेश्वर की महिमा उसके लोगों के मध्य नहीं रही। ऐसी ही एक घटना एली याजक के समय में हुई। फिलिस्तीयों ने इस्राएल को पराजित किया था। एली के दो बेटे मर गए थे और वे लोग वाचा का संदूक उठा ले गए थे। जब एली ने यह समाचार सुना, तब वह भी मर गया। इस समय उसकी बहू को प्रसव पीड़ा हुई, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया, उसने उसका नाम रखा और फिर वह भी मर गई। *"और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने ससुर और पति के कारण उसने यह कहकर उस बालक का नाम ईकाबोद रखा, कि इस्राएल में से महिमा उठ गई"* (1 शमुएल 4:21)।

जब परमेश्वर मंदिर के बाहर खड़ा रहता है

इस्राएल की 70 वर्षों की बाबुल की बंधुवाई के दौरान यहेजकेल ने भविष्यद्वाणी की। यह एक और समय था जब परमेश्वर ने मंदिर में रहने से

इन्कार किया। याजक मूर्तिपूजा में लगे हुए थे। प्रभु ने यहेजकेल से कहा, *"तब उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं? इस्राएल का घराना क्या ही बड़े घृणित काम यहां करता है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊं; परन्तु तू इन से भी अधिक घृणित काम देखेगा"* (यहेजकेल 8:6)। बाद में यहेजकेल के 10वे अध्याय में परमेश्वर फिर एक बार अपने मंदिर को भेंट देता है, और यहेजकेल को एक दर्शन देता है, जिसमें उसकी महिमा मंदिर से निकल जाती है और करूबों के पंखों पर सवार होकर स्वर्ग में उठा ली जाती है। *"यहोवा का तेज भवन की डेवढ़ी पर से उठकर करूबों के ऊपर ठहर गया। और करूब अपने पंख उठाकर मेरे देखते देखते पृथ्वी पर से उठकर निकल गए; और पहिये भी उनके संग संग गए, और वे सब यहोवा के भवन के पूर्वी फाटक में खड़े हो गए; और इस्राएल के परमेश्वर का तेज उनके ऊपर ठहरा रहा"* (यहेजकेल 10:18,19)।

भविष्य का मंदिर

यहेजकेल के 40वें अध्याय से आगे, भविष्यद्वक्ता को नये शहर और नये मंदिर की जानकारी दी जाती है। नये मंदिर के इस दर्शन में परमेश्वर मंदिर में उसकी महिमा के लौट आने को दिखाता है।

यहेजकेल 43:4-7

4 तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया।

5 तब आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में पहुंचाया; और यहोवा का तेज भवन में भरा था।

6 तब मैंने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से मुझ से बोल रहा था, और वह पुरुष मेरे पास खड़ा था।

7 उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यहोवा की यह वाणी है, यह तो मेरे सिंहासन का स्थान और मेरे पांव रखने की जगह है, जहां मैं इस्राएल के बीच सदा वास किए रहूंगा। और न तो इस्राएल का घराना, और न उसके राजा अपने व्यभिचार से, वा अपने ऊंचे स्थानों में अपने राजाओं की लोथों के द्वारा मेरा पवित्र नाम फिर अशुद्ध ठहराएंगे।

यहेजकेल 44:4
फिर वह उत्तरी फाटक के पास होकर मुझे भवन के सामने ले गया; तब मैंने देखा कि यहोवा का भवन यहोवा के तेज से भर गया है; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा।

मंदिर उसके सिंहासन का स्थान है। यह उसके कदमों का स्थान है, वह स्थान जहां पर परमेश्वर उसके लोगों के मध्य वास करता है, उसकी महिमा से परिपूर्ण भवन में। इसमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंतिम भागों में यूहन्ना द्वारा लिखी गई कई बातें दिखाई देती हैं, और *"मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर है"* (प्रकाशितवाक्य 21:22)।

ये सारी बातें परमेश्वर के लोगों के लिए उसके हृदय को दिखाती हैं। हम लोग जो आने वाली युग की सामर्थ को चखते हैं (इब्रानियों 6:5), हमारे दिन और समय में इस बात की आत्मिक बात की परिपूर्णता को अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ है। स्थानीय कलीसिया, विश्वासियों की मण्डली को नये नियम में परमेश्वर का मंदिर कहा गया है, यह उसके समाज में उसके सिंहासन का स्थान है। यह वह स्थान है जहां पर उसका राज्य प्रगट हुआ है। यह उसके कदमों का स्थान है, अर्थात् उसकी प्रभुता का स्थान। परमेश्वर अपने लोगों के मध्य और उनके द्वारा राज्य करता है। यह वह स्थान है जहां परमेश्वर अपने लोगों के बीच वास करता है। स्थानीय कलीसिया वह घर है जो उसकी महिमा से परिपूर्ण है।

कलीसिया–परमेश्वर का मंदिर

हमने मिलाप का तम्बू और मंदिर के विषय में पुराने नियम की समझ का सिंहावलोकन किया, ताकि हम इस बात के महत्व को समझ सकें कि नये विश्वासियों को परमेश्वर का मंदिर कहा गया है। नये नियम के विश्वासी जो कि नई और बेहतर वाचा के अंतर्गत जीवन बिताते हैं, उसी तरह आत्मिक देह के रूप में, हम परमेश्वर का मंदिर, परमेश्वर का निवासस्थान हैं। यह अब भौतिक तम्बू या इमारत नहीं है, परंतु हम विश्वासियों की मण्डली हैं जो सम्पूर्ण संसार भर फैले हुए समुदायों और क्षेत्रों में परमेश्वर के निवास

का स्थान हैं। उसने हमसे प्रतिज्ञा की है कि जब दो या अधिक लोग इकट्ठा होंगे, तो वह उपस्थित रहेगा। *"क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।"* (मत्ती 18:20)। प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्री में इस बात को दोहराया है: *"कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ के साथ इकट्ठे हो, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से"* (1 कुरिन्थियों 5:4)।

परमेश्वर के घराने के सदस्य होने के नाते हम पवित्र मंदिर में इकट्ठा होते हैं ताकि हम परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसका निवासस्थान बन सकें। उसकी महिमा से भरा घर या भवन।

इफिसियों 2:19-22
19 इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।
20 और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो,
21 जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है,
22 जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।

प्रारम्भिक कलीसिया

प्रारम्भिक कलीसिया परमेश्वर हमारे विषय में जो उद्देश्य रखता है उसका प्रारूप या नमूना है। प्रारम्भिक कलीसिया ने बड़ी सामर्थ, बड़ा अनुग्रह, और बड़ी महिमा प्रगट की।

प्रेरितों के काम 4:33
और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

प्रेरितों के काम 6:8
स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।

यह आरम्भ था। हमारी स्थानीय कलीसियाओं को और कितनी अधिक बड़ी सामर्थ, बड़ा अनुग्रह, और बड़ी महिमा को प्रगट करना चाहिए। परमेश्वर ने हमें जिस बात के लिए बुलाया है और जिस बात की योजना उसने हमारे लिए बनाई है, उसमें हम आगे बढ़ें!

मंदिर को पवित्र बनाए रखें

कुरिन्थुस की कलीसिया शायद सबसे अधिक आत्मिक स्थानीय कलीसियाई मण्डली थी जैसा कि हम पौलुस के लेखों में देखते हैं और उसी समय इस कलीसिया में सबसे अधिक आंतरिक समस्याएं थीं। अनैतिकता और पाप ने स्थानीय कलीसिया में प्रवेश किया था और अन्य समस्याओं के साथ ही साथ पौलुस को इन समस्याओं को भी सम्बोधित करना था। कुरिन्थुस के विश्वासियों को शुद्धता औ पवित्रता के जीवन के विषय में समझाते हुए पौलुस उन्हें अपनी दोनों पत्रियों में स्मरण दिलाता है कि वे परमेश्वर का मंदिर हैं।

2 कुरिन्थियों 6:14-18
14 अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?
15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?
16 और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है कि मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला फिरा करूंगा; और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।
17 इसलिए प्रभु कहता है कि उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छुओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा, 18 और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे। यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।

2 कुरिन्थियों 7:1
इसलिए हे प्यारो, जबकि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।

विश्वासी होने के नाते, जब हम इस बात को समझते हैं कि हम परमेश्वर का मंदिर हैं–व्यक्तिगत तौर पर और मण्डली के रूप में सामुहिक रीति से, तब पाप में लिप्त होना हमारी जीवनशैली नहीं रहेगी। हम इस सच्चाई को अनमोल समझेंगे कि वह हमारे मध्य में वास करता है और वह चाहता है कि हम में और हमारे द्वारा उसकी महिमा प्रगट हो। परमेश्वर का मंदिर बनने और उसकी महिमा प्रगट करने की बारी हमारी है–अधिक महिमा।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- लोगों को यह समझ दें कि व्यक्तिगत् और सामुहिक दोनों तरह से हम परमेश्वर का मंदिर है।।
- जब हम परमेश्वर की उपस्थिति का स्थान, परमेश्वर का निवासस्थान बनते हैं, तब हमें क्या अपेक्षा करना चाहिए इस बात की समझ दें। हम परमेश्वर के भवन को शुद्ध और पवित्र बनाए रखें, और जो कुछ बनने के लिए उसने हमें बुलाया है उसमें आगे बढ़ें।
- सभी विश्वासियों को परमेश्वर की महिमा प्रगट करने हेतु सक्षम बनाएं और सुसज्जित करें। हमें और बड़ी महिमा की इच्छा और अपेक्षा रखनी चाहिए।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- पुराने नियम में भौतिक बातों को महत्व दिया गया है, परंतु हमें नये नियम में परमेश्वर का मंदिर होने के आत्मिक पहलू पर ज़ोर देना है। अन्यथा हम एक मृत धर्म का पालन करने लगते हैं, जिसमें भक्ति का भेष तो है, परंतु सामर्थ नहीं है।

- हमें हमेशा इस समझ के साथ काम करना है कि काम पहले ही पूरा हो चुका है और जो कुछ मसीह में परमेश्वर ने हमारे लिए पहले ही कर लिया है, उसके अनुसार जीने का हम प्रयास कर रहे हैं। हम परमेश्वर का मंदिर हैं। हमारे पास परमेश्वर की महिमा है। हम उसका निवासस्थान हैं। ये स्थिति सम्बंधी सत्य है। आत्मिक क्षेत्र में काम पूरा हो चुका है। हम हमारे प्रतिदिन के जीवन में इस वास्तविकता में चलने का प्रयास कर रहे हैं। हम में यह गलत समझ नहीं होनी चाहिए कि हम आत्मा में ऐसा कुछ बनने का प्रयास कर रहे हैं जो परमेश्वर ने पहले ही हमारे लिए नहीं किया है।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. क्या आज स्थानीय कलीसियाओं के लिए कलीसिया के रूप में कार्य करते हुए यह सम्भव है कि परमेश्वर का वास उनमें न हो और परमेश्वर की महिमा उनके मध्य में प्रगट न हो?
2. स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर का निवासस्थान है और परमेश्वर की महिमा उनमें और उनके द्वारा प्रगट होती है यह आप किन बातों से जान सकते हैं।?

15

स्थानीय कलीसिया–सीयोनः परमेश्वर के चुने हुए लोग

पहिलौठे की कलीसिया, सीयोन पर्वत पर आपका स्वागत है

इब्रानियों 12:22-24

22 परंतु तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवित परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास,
23 और लाखों स्वर्गदूतों और उन पहिलौठों की साधारण सभा और कलीसिया जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए हैं; और सब के न्यायी परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं,
24 और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबील के लोहू से उत्तम बातें कहता है।

इब्रानियों का लेखक प्रभु यीशु में वास करने वालों को सम्बोधित करते हुए यह बताता है कि हम जीवित परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम, कलीसिया के अंग हैं, और ऐसे लोग हैं जिनका स्वर्ग में पंजीयन हो चुका है। नए नियम के विश्वासियों को पुराने नियम के शब्दों में "सीयोन पर्वत" के रूप में सम्बोधित किया गया है। पुराने नियम में सीयोन पर्वत दाऊद के नगर को और पुराने नियम के लोगों को दर्शाता है। पुराने नियम में सीयोन पर्वत जीवित परमेश्वर के नगर और परमेश्वर के लोग, कलीसिया को दर्शाता है।

प्रेरित पौलुस कलीसिया का उल्लेख सीयोन के रूप में करता है, और प्रभु यीशु को कोने के सिरे का पत्थर कहता है।

1 पतरस 2:6

इस कारण पवित्र शास्त्र में भी आया है कि देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ और बहुमूल्य पत्थर धरता हूं; और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।

पतरस आगे समझाता है कि सीयोन होन का क्या अर्थ है। सीयोन के रूप में, हम परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। हम पवित्र लोगों का राष्ट्र हैं जो परमेश्वर के लिए याजक हैं। हम उसके गुणों को प्रगट करने वाले उसके अपने विशेष लोग हैं। और इसलिए इस संसार में हमारा आचरण हम कौन है इसे प्रतिबिंबित करता है।

1 पतरस 2:9-12

9 परंतु तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।
10 तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे, परंतु अब परमेश्वर की प्रजा हो; तुम पर दया नहीं हुई थी, परंतु अब तुम पर दया हुई है।
11 हे प्रियो, मैं तुमसे बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युध्द करती हैं, बचे रहो।
12 अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिए कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर, उन्हीं के कारण द्‌भपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।

सियोन–परमेश्वर के चुने हुए लोग

सियोन यह नाम अक्सर यरूशलेम के लिए उपयोग किया जाता है।

यह शब्द प्रथमतः 2 शमुएल 5:7 में पाया जाता है, जो यरूशलेम के निकट स्थित सियोन पर्वत का उल्लेख करता है, जिस पर इसी नाम से संबोधित यबूसियों का किला है, जिसे दाऊद ने जीत लिया था और उसका नाम दाऊद का नगर रखा। "सियोन के गढ़" को दाऊद द्वारा जीते जाने के बाद, सियोन का नाम दाऊद का नगर पड़ा (1 राजा 8:1; 1 इतिहास 11:5; 2 इतिहास 5:2)।

जब सुलैमान ने यरूशलेम में मंदिर बनाया, तब सियोन के अर्थ में विस्तार हो गया और उसमें मंदिर और उसके आसपास के अहाते को शामिल किया गया। (भजन 2:6; 48:2,11,12; 132:13)। अन्ततः सियोन शब्द का उपयोग यरूशलेम नगर, यहूदा के देश, और संपूर्ण इस्राएली लोगों

के नाम के रूप में किया जाने लगा (यशायाह 40:9; यिर्मयाह 31:12; जकर्याह 9:13)।

सियोन शब्द का सबसे अधिक उपयोग ईश्वर विज्ञान के अर्थ से किया जाता है। सियोन का उपयोग अलंकारिक तौर पर परमेश्वर के लोगों के रूप में इस्राएल के लिए किया जाता है (यशायाह 60:14)। सियोन का आत्मिक अर्थ नए नियम में भी उपयोग किया गया है, जहां पहलौठे की कलीसिया, स्वर्गीय यरूशलेम को सियोन के रूप में उल्लेख किया गया है (इब्रानियों 12:22,23; प्रकाशित वाक्य 14:1)। पतरस मसीह को सियोन के कोने के सिरे का पत्थर कहता है (1 पतरस 2:6)।

मसीह की आत्मिक देह, कलीसिया को भी सियोन कहा गया है, तब स्थानीय कलीसिया भी, जो कि आत्मिक शरीर की भौतिक अभिव्यक्ति है, परमेश्वर के चुने हुए लोग सियोन है।

पुराना नियम सियोन के विषय में कई सच्चाइयां प्रगट करता है और यह बताता है कि परमेश्वर सियोन से कैसा व्यवहार करता है, हम यहां उनमें से कुछ का अवलोकन करेंगे, और बताएंगे कि स्थानीय कलीसिया किस प्रकार अपने शहर, समाज और क्षेत्र में सियोन के रूप में अपनी बुलाहट पूरी करती है।

परमेश्वर सियोन में वास करता है और राज करता है

जकर्याह 2:10
हे सिय्योन, ऊंचे स्वर से गा और आनंद कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करूंगा, यहोवा की यही वाणी है।

भजन 2:6-8
6 मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूं।
7 मैं उस वचन का प्रचार करूंगाः जो यहोवा ने मुझ से कहा, तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ।

[8] मुझ से मांग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पति होने के लिए, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूंगा।

परमेश्वर अपने लोगों के मध्य वास करता है और राज्य करता है। हम उसके लोग हैं और वह हमारा राजा है, उसका राज्य संपूर्ण पृथ्वी में फैलेगा। पिता ने पुत्र से प्रतिज्ञा की है, *"यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरूद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं"* (भजन 2:2)। हम यहां पर उसकी प्रभुता और उसके राज्य को राष्ट्रों में और पृथ्वी की छोर तक फैलते हुए देखने के लिए हैं।

सियोन से परमेश्वर की महिमा प्रगट होती है

भजन 50:1,2

परमेश्वर सियोन से अपनी महिमा और प्रताप को प्रगट करता है।

सियोन पर्वत पर छुटकारा

ओबेद्याह 1:17,21

छुटकारा और पवित्रता सियोन में परमेश्वर के लोगों के मध्य होगी। परमेश्वर के लोग उनके वतन पर कैंजा करेंगे। जिन छुड़ाने वालों को परमेश्वर सियोन पर्वत पर खड़ा करता है, वे उद्धार न पाए हुओं और अधर्मियों पर राज्य करेंगे।

प्रभु सियोन से गरजता है

योएल 3:16

प्रभु की आवाज़ सियोन से आती है। वह अपने लोगों के मध्य से अपने बल को प्रगट करेगा।

उसके बल के राजदण्ड को मुक्त करना

भजन 110:1,2

[1] मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, कि तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं।

[2] तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।

हम जानते हैं कि यह वचन प्रभु यीशु को संबोधित करता है (लूका 20:42; पेरितों के काम 2:34)। उसका राज्य और प्रभुता, उसकी सामर्थ का राजदण्ड, सियोन से निकलेगा, अर्थात उसके लोगों में से। उसके लोगों के द्वारा वह अपने शत्रुओं के मध्य राज करेगा।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

परमेश्वर के अपने लोग

सियोन होने के नाते हम परमेश्वर के अपने लोग है। हम उसकी विशेष प्रजा है। हमारी स्वर्गीय नागरिकता है। हम उसके राज्य की संस्कृति और मूल्यों के अनुसार जीवन बिताते हैं। हमें पवित्र होने के लिए बुलाया गया है।

- हर स्थानीय कलीसिया को ऐसे लोगों को खड़ा करना है जो परमेश्वर के राज्य की संस्कृति और मूल्यों का इस संसार में प्रतिनिधित्व करेंगे।
- हर स्थानीय कलीसिया को ऐसे लोगों को तैयार करना है जो पवित्र, पवित्र किए गए हैं और रोमियों 12:1,2 के अनुसार परिवर्वित जीवन बिताते हैं।

परमेश्वर के गुण प्रगट करने हेतु बुलाए गए

परमेश्वर के अपने लोग होने के नाते हम यहां पर परमेश्वर की महानता को प्रगट करने के लिए हैं। हम यहां पर इसलिए हैं ताकि संसार हमारे परमेश्वर की महानता, भलाई, और सद्‌गुणों को देखे।

- हर स्थानीय कलीसिया को ऐसे लोगों को तैयार करना है जो उसके गुणों को प्रगट करते हैं जिसने हमें अंधकार में से निकालकर अपनी अद्‌भुत ज्योति में लाया है।

उसके राज्य को आता हुआ देखने के लिए बुलाए गए

उसके लोग होने के नाते, परमेश्वर हमारे द्वारा उसके राज्य को बढ़ाना चाहता है। हम यहां पर उसके राज्य को आते हुए और उसकी इच्छा को पूरी होते हुए देखने के लिए हैं।

- हर स्थानीय कलीसिया को ऐसे लोगों को तैयार करना है जो परमेश्वर के राज्य की सामर्थ, अधिकार और प्रभुता में चलते हैं।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- यथास्थिति मसीहत इस प्रकार की जीवनशैली का विरोध करेगी। यह बहुत जोखिम भरी है। इसमें समझौता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि हम स्वर्ग के नागरिकों के रूप में जीवन बिताएं। परंतु, पाबसान/अगुवे होने के नाते, हमारे पास प्रचार करने और सिखाने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है ताकि लोग मन के नवीनीकरण के द्वारा बदल जाएंगे।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. कुछ विश्वासी परमेश्वर के राज्य की संस्द्भति और मूल्यों के अनुसार जीवन बिताना मुश्किल क्यों पाते हैं, और इसलिए वे परमेश्वर के लोग होने के व्यवहारिक उपयोग का विरोध करते हैं?
2. विश्वासी परमेश्वर के अपने विशेष लोग लोगों के रूप में जीवन बिताने के लिए कौन कौन से बातों में संघर्ष करते हैं, और इन विषयों को संबोधित करने में हम कैसे सहायता कर सकते हैं?

16

स्थानीय कलीसिया–दाखलता और डालियां

यूहन्ना 15:1-8
1 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है।
2 जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती
है, उसे वह छांटता है ताकि फले।
3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, शुद्ध हो।
4 तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने
आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत
फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख
जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं; और वे जल जाती हैं।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो, और
वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।
8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे
चेले ठहरोगे।

प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों के साथ उसके रिश्ते की यह सुंदर तस्वीर प्रस्तुत की है। वह दाखलता है और हम उसकी डालियां हैं। यह व्यक्तिगत तौर पर विश्वासियों को लागू होता है, उसी तरह स्थानीय कलीसियाई समुदाय के रूप में सभी विश्वासियों को भी।

हम इस अनुच्छेद से कुछ महत्वपूर्ण सच्चाइयों को सारांश रूप में प्रस्तुत करते हैं:

हमें फलवन्त होने के लिए बनाया गया है और परमेश्वर चाहता है कि हम बहुत फल लाएं। फलवन्त होने का अर्थ दाखलता के जीवन को प्रगट करना या अभिव्यक्त करना। हमें अभिव्यक्त करना है कि यीशु कौन है और वह क्या करता है। हम सब को *"प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा,*

भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम" (गलातियों 5:22,23) इन फलों को प्रगट करना है, जो सचमुच हममें परमेश्वर के जीवन की अभिव्यक्ति हैं। हममें से हर एक को परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए व्यक्तिगत रीति से रखी हुई भूमिका, वरदान और बुलाहट में फल लाना है।

फलदायकता उसमें बने "रहने" से और उसके (उसका वचन) हममें बने रहने से आती है। फलदायकता का जन्म घनिष्ठता से होता है।

फलवन्त होने का प्रतिफल है शुद्ध बनाया जाना, ताकि हम और अधिक फलवन्त बन सकें।

2 पतरस 1:5-8
5 और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ,
6 और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति,
7 और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ।
8 क्योंकि यदि ये बातें तुममें वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।

विश्वास, सद्गुण (चरित्र), ज्ञान, आत्म-संयम, यत्नशीलता, भक्तिमानता, भाईयों के प्रति दया, प्रेम, ये सात बातें हैं जिनमें हमें फलवन्त होने के लिए बढ़ते जाना है। हमें छांटने और साफ करने के विषय परमेश्वर का हमारे साथ व्यवहार अक्सर इन सातों में से किसी एक में या और क्षेत्र में उन्नति को सम्बोधित करता है।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- स्थानीय कलीसिया के रूप में, हमें उसके साथ घनिष्टता बनाने पर ज़ोर और ध्यान देना है। सबकुछ हमारे उसमें बने रहने के द्वारा और उसके हम में बने रहने के द्वारा उत्पन्न होना चाहिए।

- स्थानीय कलीसिया के रूप में, हमें फलवंत होने का ध्यान रखना है, ठीक उसी तरह जिस तरह वह हमें जांचता है। हमें विभिन्न कार्यों में व्यस्त नहीं होना है। परमेश्वर हमारे कार्यों का मूल्यांकन नहीं कर रहा, परंतु वह फल खोज रहा है।
- हमें प्रोत्साहन देना है कि प्रत्येक डाली (व्यक्ति) फल लाने पाए।
- स्थानीय कलीसिया के रूप में, हमें साफ करने/छांटने के समयों से होकर गुज़रना है, ताकि हम और फल ला सकें। कभी कभी परमेश्वर पासबान के रूप में प्रचार करने/सिखाने/सेवा करने हेतु आपकी अगुवाई करेगा जिसमें आपको छांटने और साफ करने के विषय में कार्य करना होगा जो वह अपनी कलीसिया के विषय में करना चाहता है ताकि कलीसिया की फलदायकता एक नये स्तर की ओर बढ़े।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- उसमें बने रहना सीखना, घनिष्टता पर ध्यान देना कभी आसान नहीं होता, विशेष तौर पर उन लोगों के लिए जो कार्यों पर ज़ोर देते हैं। कुछ लोग इसे समय की बर्बादी मानेंगे। परंतु हमें इस बात पर ज़ोर देना है कि स्थानीय कलीसिया में जो कुछ किया जाता है वह घनिष्ट ता के स्थान से जन्मा हो।
- व्यक्ति या स्थानीय कलीसियाई मण्डली के लिए पहले से जो फल प्राप्त किए गए हैं, उनमें संतुष्ट होना आसान होता है। हम सोचते हैं कि सबकुछ यहीं रूक जाता है, परंतु, हमें खुद को इस बात का स्मरण दिलाने की ज़रूरत है कि प्रभु हमेशा फलदायकता के ऊंचे स्तरों की खोज में है।
- कुछ लोगों को नये स्तर की ओर बढ़ने के लिए आवश्यक छांटने और साफ करने की प्रक्रिया पसंद नहीं आएगी और इसलिए वे इसका विरोध कर सकते हैं। कुछ मामलों में, वे फल लाना बंद कर देते हैं और वहां से हट जाना चाहेंगे। हमें उन्हें छोड़ने के लिए, और आगे बढ़ते रहने के लिए तैयार रहना चाहिए।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है। स्थानीय कलीसिया के लिए इसका क्या अभिप्राय है?
2. परमेश्वर स्थानीय कलीसिया में छांटने और सफाई करने के विषय में किस रीति से कार्य करेगा?

17

स्थानीय कलीसिया–दीवट

पुराने नियम में दीवट

मूसा को दिया गया मिलाप का तम्बू स्वर्ग के सच्चे तम्बू की नकल और छाया थी (इब्रानियों 8:1,2)। मिलाप के तम्बू में बाहरी आंगन, पवित्र स्थान और महापवित्र स्थान था। बाहरी आंगन में पीतल की वेदी (बलिदान की वेदी) और धोने के लिए पानी रखने की हौदी। पवित्र स्थान में सोने का दीवट (मनोरा), भेंट की रोटी की मेज़ और धूप की वेदी थी। एक परदे के द्वारा महापवित्र स्थान को अलग किया गया था, जिसके पीछे वाचा का संदूक था और उस पर प्रायश्चित का ढंकना था।

सोने का दीवट मूसा के तम्बू का (निर्गमन 25:31-40); और बाद में मंदिर में रखा गया था।

सोने का दीवट (जिसे मनोरा कहा जाता है), निरंतर जलता रहता था (निर्गमन 27:20,21; लैव्यव्यवस्था 24:1-4)। सोने के दीवट में सात शाखाएं (दीप स्तंभ) होते हैं जिसमें शुद्ध जैतून का तेल और बाती होती है। हर एक शाखा बादाम के वृक्ष के समान दिखाई देती है जिसमें कलियां, और फूल होते हैं। पवित्र स्थान में दीवट ही प्रकाश का एकमात्र स्रोत था। उसका प्रकाश रोटी की मेज़ पर (उसकी उपस्थिति की रोटी) और धूप की वेदी पर चमकता था। सोने के दीवट की रोशनी में याजक भेंट की रोटी में भाग लेते थे और धूप की वेदी पर काम करते थे। भेंट की रोटी का मेज़ परमेश्वर के वचन को और प्रभु के साथ हमारी सहभागिता को दर्शाता था, और धूप की वेदी प्रार्थना और परमेश्वर की आराधना का प्रतीक थी। इसलिए सोने का दीवट प्रकाशन का प्रतीक है जो परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने में सहायता करता है, परमेश्वर के साथ संगति करने में सहायता करता है, और परमेश्वर की प्रार्थना और आराधना करने में हमारी मदद करता है।

स्थानीय कलीसिया–दीवट

यूहन्ना जो प्रकाशन पाता है उसमें वह प्रभु यीशु को सोने की सात दीवटों के मध्य चलते हुए देखता है। प्रत्येक दीवट एक स्थानीय कलीसियाई मण्डली का प्रतिनिधित्व करता है। प्रभु यीशु मसीह के पास हर एक स्थानीय कलीसिया के अगुवे के लिए एक संदेश है।

प्रकाशितवाक्य 1:12,13,20
12 और मैंने उसे जो मुझ से बोल रहा था, देखने के लिए अपना मुंह फेरा, और पीछे घूमकर मैंने सोने की सात दीवटें देखीं।
13 और उन दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र समान एक पुरुष को देखा, जो पावों तक का वस्त्र पहने, और छाती पर सुनहला पटुका बान्धे हुए था।
20 अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तू ने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद। वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं।

प्रकाशितवाक्य 2:1,5
1 इफिसुस की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है कि,
5 इसलिए चेत कर कि तू कहां से गिरा है, और मन फिरा और पहले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा।

प्रभु दीवटों के मध्य चलता है और यह देखने के लिए उसका प्रकाश हमेशा जलत रहे, वह हर एक दीवट की जांच करता है।

स्थानीय कलीसिया परमेश्वर का दीवट है जो उसके सामने स्वर्ग में रखा गया है जो पृथ्वी पर अपनी ज्योति और प्रकाशन लाती है। दीवट को हृदयों और मनों का प्रकाशित करना है ताकि वे परमेश्वर के वचन की समझ प्राप्त कर सकें, सहभागिता में आएं, प्रभु यीशु मसीह की प्रार्थना और आराधन करें।

यदि स्थानीय कलीसिया वह सब नहीं कर रही है जो उसे करना चाहिए, जैसा कि इफिसुस की कलीसिया के मामले में था, उनके लिए प्रभु यीशु ने

चेतावनी दी कि यदि वे सबकुछ ठीक न करें, तो उनका दीवट उनके स्थान से हटा लिया जाएगा। जब दीवट उसकी उपस्थिति से हटा लिया जाता है, जब उसमें इस पृथ्वी पर उसकी ज्योति और प्रकाशन लाने की योग्यता नहीं रहती। अपने आसपास के अंधकार पर वह प्रभाव नहीं डाल सकता।

प्रभु यीशु मसीह इस जगत की ज्योति बनने आया (यूहन्ना 8:12; यूहन्ना 12:46)। यह कार्य हम विश्वासियों को भी सौंपा गया है। विश्वासियों के रूप में, हमें इस अंधकार में ज्योति बनने के लिए बुलाया गया है (मत्ती 5:14,16; इफिसियों 5:8; फिलिप्पियों 2:14,15)।

हमारी ज्योति ऐसी चमके जिससे लोग हमारे भले कामों को देखकर हमारे पिता की, जो स्वर्ग में है महिमा करें। यदि हमारे भले काम यीशु की ओर संकेत नहीं करते, तब हमारी ज्योति वास्तव में नहीं चमक रही है। हम वास्तव में दीवट का काम नहीं कर रहे हैं, जैसा परमेश्वर हमारे लिए चाहता है।

मत्ती 5:14-16
14 तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।
15 और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं, परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

हमें ज्योति के लोगों के रूप में चलना है। हम अंधकार के कामों में सहभागी नहीं होते, उन कामों में जो गुप्त रूप से किए जाते हैं (यूहन्ना 3:20)। बल्कि ज्योति की संतान के रूप में, हम अंधकार के कामों को उजागर करते हैं कि वे वास्तव में क्या हैं।

इफिसियों 5:8,11-13
8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, इसलिए ज्योति की सन्तान के समान चलो।
11 और अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहना दो।

[12] क्योंकि उनके गुप्त कामों की चर्चा भी लाज की बात है।
[13] पर जितने कामों पर उलाहना दी जाती है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट करता है, वह ज्योति है।

हमारे जीवन और आचरण से यह प्रगट होना चाहिए कि हम परमेश्वर की संतान हैं, और इस प्रकार हम अंधकार से भरे संसार में ज्योति या दीपक के रूप में चमकते हैं।

फिलिप्पियों 2:14,15
[14] सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो,
[15] ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, (जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो)।

स्थानीय कलीसिया कुछ व्यवहारिक तरीके अपनाकर इन पर अमल कर सकती है

- अपने पहले प्रेम को बनाए रखें ताकि हमारा दीवट उसकी उपस्थिति में प्रखरता के साथ जलता रहे। तब हमारे पास उसकी ज्योति से हमारे संसार को प्रभावित करने की सामर्थ होगी।
- स्थानीय कलीसिया को परमेश्वर के लोगों को प्रकाश प्रदान करना चाहिए ताकि वे परमेश्वर के वचन की समझ प्राप्त करें। संगति स्थान में आएं।
- विश्वासियों को ऐसा जीवन जीने और ऐसे काम करने हेतु प्रोत्साहित करें जो लोगों को प्रभु की ओर संकेत करता है, और अंधकार के कामों को प्रगट करता है।

इन चुनौतियों के लिए तैयार रहें

- समाज सेवा के रूप में भले कामों में लगे हुए विश्वासी, जो प्रभु यीशु को प्रगट नहीं करते और लोगों को उसकी ओर निर्देशित नहीं करते फिर हम भले काम करने वाले उद्धार न पाए हुए लोगों से भिन्न नहीं है।

- जो विश्वासी इस संसार में ज्योति बनने के प्रयास में अपने पहले पेम पर ध्यान देना भूल जाते हैं।

विचार करने योग्य प्रश्न

1. यदि स्वर्ग का दीपक उसके स्थान से हटा दिया जाए, परंतु वह यहां पृथ्वी पर अपना कार्य करना जारी रखता है, तो क्या होगा?
2. स्थानीय कलीसिया और/या विश्वासी उचित रीति से अन्धकार के कामों को कैसे प्रगट कर सकेंगे?

18

परमेश्वर की योजना (डिजाईन) के अनुसार निर्माण करना

प्रारंभिक कलीसिया, हमारा आरंभ बिन्दु

प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसिया हमारा आरंभ बिन्दु है और इसलिए कलीसिया का प्रारूप है जिसे यीशु ने बनाना आरंभ किया। प्रारंभिक कलीसिया कुछ अीय कलीसिया के ब्लू प्रिन्ट के सभी दस पहलुओं में चलती रही।

मसीह की देह के रूप में, उन्होंने मसीह के हाथ और पांवों के रूप में सामर्थी रूप से उसका प्रतिनिधित्व किया।

परमेश्वर के परिवार के रूप में, उन्होने सभी वस्तुओं में साझेदारी की और एक दूसरे की सहायता की।

सत्य के स्तम्भ के रूप में, वे विरोधी परंपराओं, तत्वज्ञान और झूठे धर्म के दबाव विरोध में खड़े रहे।

परमेश्वर की सेना के रूप में, उन्होंने सामर्थ के साथ आगे बढ़कर अन्ध ाकार के कामों को पराजित किया और लोगों को और स्थानों को दुष्ट ात्माओं की प्रभुता से आज़ाद किया।

मसीह की दुल्हन के रूप में, वे अपने दुल्हे परमेश्वर के साथ इतना प्रेम करते थे कि वे उसके लिए मरने के लिए भी तैयार थे और उन्होंने उसके प्रति समर्पित जीवन बिताया, उसके लौट आने की प्रतीक्षा में जीवन बिताते रहे।

प्रार्थना और आराधना के भवन के रूप में, उन्होंने खुद को निरंतर सामर्थी प्रार्थना, आराधना और मध्यस्थी के लिए दे दिया। महिमा को प्रगट होते हुए देखा।

परमेश्वर के लोगों के रूप में, उन्होंने अपने आसपास के लोगों से अलग क्रांतिकारी जीवन बिताया।

सच्ची दाखलता की डालियों के रूप में, वे घनिष्ठता और फलदायकता में चले।

परमेश्वर के द्वारा रखे हुए दीवट के रूप में, उन्होंने अन्धकार में अपनी ज्योति प्रकाशित होने दी।

दस दृष्टिकोण, एक ब्लू प्रिन्ट (रूपरेखा)

हमने इस भाग में मज़बूत स्थानीय कलीसिया के निर्माण में एक ब्लू प्रिन्ट के दस भागों को देखा। स्थानीय मंडली का अगुवा/पासबान होने के नाते, हमें इन तीन बातों को देखना है और देखना है कि स्थानीय मण्डली इनमें से हर एक बात को कैसे पूरा कर रही है।

स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर का ब्लू प्रिन्ट

दुल्हन हमारे दुल्हे परमेश्वर से प्रेम करते हैं।	**प्रार्थना और आराधना का घर** निरंतर आराधना और प्रार्थना	**परमेश्वर का मंदिर** परमेश्वर हमारे मध्य वास करता है और उसकी महिमा हमारे द्वारा प्रगट होती है	**दाखलता और डालियां** घनिष्टता जो फलदायकता को जन्म देती है	**दीवट** उसके समक्ष हमारा खड़े रहना हमें अन्धकारमय संसार के लिए ज्योति बनाता है
मसीह की देह हम उसका प्रतिनिधित्व करते और उसके उद्देश्यों को पूरा करते हैं	**परमेश्वर का परिवार** हम यहां पृथ्वी पर उसके परिवार के रूप में जीते हैं	**सत्य का खम्भा** हम इस संसार में सत्य को थामे रहते हैं	**परमेश्वर के चुने हुए लोग** हम राज्य की संस्द्भति और मूल्यों को प्रगट करते हैं	**सेना** हम अन्धकार के कामों और सार्थ को पराजित करते हैं
प्रारंभिक कलीसिया हमारे अनुसरण और विस्तार के लिए प्रारूप				

स्थानीय कलीसिया के लिए हमारा प्रचार करना, सिखाना, और अन्य सेवकाई पवित्र शास्त्र में हमें दिए गए इन दसों क्षेत्रों में निरंतर परमेश्वर के भवन के निर्माण के लिए नियोजित होनी चाहिए। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम यह भरोसा रख सकते हैं कि हम परमेश्वर के मानचित्र के अनुसार निर्माण कर रहे हैं और हम गलती नहीं करेंगे।

ये दसों क्षेत्र (अ) प्रभु की ओर, स्वर्ग की ओर हमारा लक्ष्य (आ) विश्वासियों को भीतरी तौर पर मजबूत बनाना और (इ) बाहर की ओर जगत में सूसमाचार प्रचार करना, इनके मध्य पूर्ण संतुलन प्रदान करते हैं।

विभिन्न ऋृतुओं में आपकी स्थानीय कलीसिया पर परमेश्वर द्वारा उण्डेले गए अनुग्रह को समझें

2 कुरिन्थियों 8:1

अब हे भाइयो, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं, जो मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ है।

जब आप अपनी कलीसिया को उन्नति और विकास के इन विभिन्न समयों से लेकर जाएंगे, तब आप देखेंगे कि प्रत्येक ऋृतु या समय का अपना विशिष्टअनुग्रह है जो आपकी मंडली को दिया गया है। इसका अर्थ यह है कि वह एक निश्चित ऋृतु है। परमेश्वर विशिष्ट क्षेत्र में या क्षेत्रों में कलीसिया को आगे ले जा रहा है। आप देखेंगे कि लोगों के हृदय कुछ बातों के प्रति खुले हैं। परमेश्वर क्या कर रहा है, वह कहां ले जा रहा है इसे पहचानना महत्वपूर्ण है और उसके साथ हम आगे बढ़े।

कलीसिया का मूल्यांकन एवं उन्नति के लिए योजना

ब्लू प्रिंट के इन दसों क्षेत्रों में से हर एक में आपकी स्थानीय कलीसियाई मंडली कहा है इसका मूल्यांकन करने में समय बिताएं।

पवित्र आत्मा की सुनें और उन व्यवहारिक तरीकों को निर्धारित करें जिसके द्वारा आप इन क्षेत्रों में स्थानीय कलीसिया की उन्नति करने में सहायता कर सकते हैं। फिर पवित्र आत्मा की सहायता से आपके प्रचार, शिक्षा और चाल चलन के द्वारा अपनी मंडली को आगे ले चलना आरंभ करें।

ब्लू प्रिन्ट क्षेत्र	हम कहां हैं	अगले स्तर पर जाने हेतु कदम
मसीह की देह हम उसका प्रतिनिधित्व करते और उसके उद्देश्यों को पूरा करते हैं।		
परमेश्वर का परिवार हम यहां पृथ्वी पर उसके परिवार के रूप में जीते हैं।		
सत्य का खम्भा हम इस संसार में सत्य को थामे रहते हैं।		
सेना हम अन्धकार के कामों और सामर्थ को पराजित करते हैं।		
दुल्हन हमारे दुल्हे परमेश्वर से प्रेम करते हैं।		
प्रार्थना और आराधना का घर निरंतर आराधना और प्रार्थना		
परमेश्वर का मंदिर परमेश्वर हमारे मध्य वास करता है और उसकी महिमा हमारे द्वारा प्रगट होती है		
परमेश्वर के चुने हुए लोग हम राज्य की संस्द्भति और मूल्यों को प्रगट करते हैं		
दाखलता और डालियां घनिष्टता जो फलदायकता को जन्म देती है		
दीवट उसके समक्ष हमारा खड़े रहना हमें अन्धकारमय संसार के लिए ज्योति बनाता है		

भाग 3
ईश्वरीय व्यवस्था

19

कलीसिया के विधि संस्कार

विधि या कलीसिया के संस्कार से हम उन प्रथाओं का उल्लेख करते हैं जो प्रभु द्वारा इसलिए नियुक्त किए गए हैं ताकि कलीसिया उनका स्थाई रूप से पालन करें। जल का बपतिस्मा और प्रभु भोज दो पवित्र विधि हैं जिन्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कलीसिया के लिए नियुक्त किया है।

विश्वासियों द्वारा पालन किए जाने वाले ये विधियां वे माध्यम भी है जिनके द्वारा क्रूस पर मसीह द्वारा पूर्ण किए गए कार्य की सामर्थ विश्वासियों के जीवन में वास्तविक और प्रभावी सिद्ध होती है। जितनी बार हम इन विधियों में भाग लेने के लिए लोगों की अगुवाई करते हैं, उतनी बार हमें उन्हें प्रोत्साहित करना है कि वे परमेश्वर की सामर्थ को अपने जीवनों में ग्रहण करें।

जल का बपतिस्मा

1. पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की घोषणा करते समय पश्चाताप के चिन्ह के रूप में यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने इसका परिचय कराया (मत्ती 3:1-8)।
2. यीशु ने पाप नहीं किया था ताकि वह पश्चाताप करें, फिर भी सारी धार्मिकता को पूरा करने हेतु आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करने के लिए यीशु मसीह ने बपतिस्मा लिया (मत्ती 3:13-16)।
3. बपतिस्मा नए नियम की एक आज्ञा है (मत्ती 28:19,20)।
4. बपतिस्मा यीशु मसीह के पीछे अकेले चलने के आपके निर्णय को अभिव्यक्त करता है (पेरितों के काम 2:38,39)।
5. बपतिस्मा यीशु मसीह के साथ मरने, गाड़े जाने और पुनरुत्थान का आंतरिक अनुभव है (रोमियों 6:4)।

6. बपतिस्मा परमेश्वर के सामने शुद्ध विवेक बनाए रखने की आपकी इच्छा की अभिव्यक्ति है (1 पतरस 3:21)।

7. बपतिस्मा लेने की एक मात्र शर्त है पश्चाताप करों और प्रभु यीशु में विश्वास करो (पेरितों के काम 8:36,37)।

8. बपतिस्मा केवल पानी में डुबाने के द्वारा ही लिया जाता है (प्रेरितों के काम 8:36,37)।

9. बपतिस्मा लेने के लिए आपको बहुत पवित्र होने की आवश्यकता नहीं है। लोगों ने जैसे ही पश्चाताप किया और यीशु में विश्वास किया, वैसे ही उन्होंने बपतिस्मा लिया।

10. जल का बपतिस्मा आपको आत्मिक रीति से महान नहीं बनाएगा। आपको अब भी वचन और प्रार्थना के द्वारा आत्मिक रीति से बढ़ने की ज़रूरत है।

11. बपतिस्मा आज्ञापालन का कार्य है, अतः आप बड़े पैमाने पर आशीष की अपेक्षा कर सकते हैं।

12. बपतिस्मा क्रूस की सांकेतिक घोषणा है, इसलिए आप अपेक्षा कर सकते हैं कि बपतिस्मा के दौरान क्रूस की सामर्थ आपके जीवन को प्रभावित करेगी जिससे आप बंधन बुरी लत आदि को तोड़ सकें, और छुटकारा पा सके।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, हम देखते हैं कि जितनी बार लोगों ने बपतिस्मा लिया, उन्होंने यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया। हम समझते हैं कि इसका अर्थ है "यीशु द्वारा हमें दिए गए अधिकार से।" 'यीशु के नाम में' का अर्थ है हम यहां इस स्थान में, उसका प्रतिनिधित्व करते हैं और उसकी ओर से कार्य करते हैं।

हम यह कहकर जल का बपतिस्मा देते हैं, *"यीशु के नाम में, मैं तुम्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूं।"*

प्रभु की मेज

प्रभु भोज की विधि स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने स्थापित की (मत्ती 26:18-30)। उसके बाद प्रभु यीशु मसीह ने प्रेरित पौलुस को प्रकाशन द्वारा यह आज्ञा दी (1 कुरिन्थियों 11:20-34; 1 कुरिन्थियों 10:16-21)। प्रभु की मेज प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करने वाले सभी विश्वासियों के लिए खुली है।

प्रभु भोज का उत्सव मनानाः

1. प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु, दफनाए जाने और पुन्रुत्थान में हमारे व्यक्तिगत विश्वास की अभिव्यक्ति है।
2. क्रूस पर मसीह द्वारा पूरे किए गए कार्य की घोषणा है। हर एक घोषणा आत्मिक संसार में सामर्थी है और इसलिए हम क्रूस की सामर्थ पाने की हम अपेक्षा कर सकते हैं, जो प्रभु भोज ग्रहण करते समय हमारे जीवन पर आक्रमण करती है।
3. उसके दुबारा लौट आने में हमारे विश्वास की अभिव्यक्ति।
4. यीशु मसीह के साथ हमारे मेल की अभिव्यक्ति (हम यीशु की देह और लोहू के साथ–स्वयं मसीह के साथ सहभागिता की घोषणा करते हैं) (1 कुरिन्थियों 10:16)।
5. एक दूसरे के साथ हमारे मेल (वाचा) की अभिव्यक्ति (1 कुरिन्थियों 10:17)।

वाचा के रिश्ते में, हम खुद को एक दूसरे को सौंपते हैं और जितने पूर्ण रूप से हो सके, परमेश्वर के वचन द्वारा निर्धारित सीमाओं के अनुसार हमारे जीवनों को बांटते हैं। हम निंदा न करने, गलत भरोसा न रखने का दृढ़संकल्प करते हैं और भरोसा और क्षमा का प्रेममय रिश्ता बनाने हेतु समर्पण करते हैं।

हमें अपने हृदयों को इन बातों के द्वारा तैयार करना हैः

- अपने जीवनों को जांचना और ज्ञात पाप का त्याग करना।
- रोटी और दाखरस लेते हुए यह समझना और विश्वास करना कि वे किस बात को दर्शाते हैं, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा क्रूस पर उसके द्वारा पूरे किए गए कार्य को।

प्रभु भोज का उत्सव मनाते समय हमें क्रूस की पूर्ण आशीषों की अपेक्षा करना चाहिएः उद्धार, चंगाई, बंधनों को तोड़ना, छुटकारा, संपूर्णता, आशीष, प्रयोजन और उससे भी अधिक कि वह हमारे जीवन में प्राप्त हो। जितनी बार हम प्रभु की मेज में हिस्सा लेते हैं, उतनी बार हमें क्रूस की सामर्थ को स्वीकार करना है कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ के।

द्वारा हमारे जीवनों में प्रभावी हो।

रोटी और दाखरस प्रतीक स्वरूप हैं। हम इन वस्तुओं के बदलने में विश्वास नहीं करते, अर्थात यह कि जब आप उन्हें खाते हैं, तब वे अचानक यीशु मसीह की वास्तविक देह और लोहू नहीं बन जाते। प्रभु यीशु ने कभी यह नहीं कहा कि ऐसा होगा।

अनुचित रीति से प्रभु भोज लेना

पौलुस जिस विषय को संबोधित कर रहा था, वह कुरिन्थुस की कलीसिया के लोगों का आचरण है। वे दो तरह से प्रभु की मेज का उल्लंघन कर रहे थेः

1. वे प्रभु की मेज में हिस्सा ले रहे थे (आराधना के कार्य के रूप में) और वे मूर्तियों की आराधना के रूप में मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन में भी भाग ले रहे थे जिसे पौलुस मूर्तिपूजा कहता है (1 कुरिन्थियों 10:14-33)। वास्तविक समस्या भोजन से नहीं थी–परंतु उस आदर से थी जो मूर्ति को बलिदान चढ़ाया गया भोजन खाकर मूर्ति को दिया जा रहा था, जो अन्य नए विश्वासियों के लिए ठोकर का कारण था।

2. उन्होंने प्रभु की मेज को एक तरह के उत्सव में बदल दिया था (1 कुरिन्थियों 11:20-22) और इसलिए पौलुस देह को पहचानने और उचित रीति से प्रभु भोज में सहभागी होने के विषय में समझा रहा है। यदि हम उचित रीति से ऐसा करते हैं–तो हम हमारे जीवनों में क्रूस की पूर्ण आशीषों को ग्रहण करते हैं–जिसमें चंगाई भी शामिल है। परंतु यदि हम जो कुछ भी कर रहे हैं उसके महत्त्व को वास्तव में न समझते हुए या उस पर ध्यान न देते हुए प्रभु भोज लेते हैं, तो हम क्रूस की आशीषों को पाने से वंचित रह जाते हैं–और उसका एक परिणाम यह है कि हमारे शरीरों के लिए चंगाई खो बैठते हैं और इसलिए तुम में से बहुतेरे निर्बल और रोगी है, और बहुत से सो भी गए।

एकमात्र योग्यता

पवित्र शास्त्र में इस विषय में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है कि प्रभु भोज में भाग लेने से पहले आपको जल का बपतिस्मा लेना चाहिए। इसलिए सभी ऑल पिपल्स चर्च की मंडलियों में हम सभी नया जन्म पाए हुए विश्वासियों के लिए प्रभु की मेज खुली रखते हैं।

पवित्र शास्त्र में उम्र के विषय में कोई स्पष्ट बंधन नहीं है कि व्यक्ति ने कब जल का बपतिस्मा लेना चाहिए या उसे कब प्रभु भोज में भाग लेना आरंभ करना चाहिए। एक मात्र शर्त यह है कि यीशु मसीह में व्यक्तिगत विश्वास करने के द्वारा उसका नया जन्म हो (वह विश्वासी बने)। अतः बपतिस्मा पाने या प्रभु भोज में सहभागी होने हेतु लोगों का स्वागत करने का हम यह तरीका अपनाते हैं।

सामान्य प्रश्न

1. यदि मैंने नया जन्म पाए बगैर बपतिस्मा लिया था–छिड़काव का या केवल पानी में डुबकी लगाकर, तो क्या मेरे लिए फिर से बपतिस्मा लेना आवश्यक/उचित है?

अब आप विश्वासी है इसलिए, हां, फिर से जल का बपतिस्मा लेना और यीशु मसीह में अपने विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में ऐसा करना उचित है। पेरितों के काम 19:1-6 में हम इसका उदाहरण देखते हैं, जब पौलुस की कुछ शिष्यों से भेंट हुई जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के द्वारा बपतिस्मा पाया था। उसने उन्हें यीशु के विषय में बताया, और उनके विश्वास करने पर उन्होंने यीशु मसीह के नाम में जल का बपतिस्मा लिया।

2. जल का बपतिस्मा पाने से पहले क्या मुझे किसी आत्मिक स्तर या आत्मिक परिपक्वता को पाने की आवश्यकता है?

नहीं। एक मात्र योग्यता जो हम देखते हैं, वह है व्यक्ति का नया जन्म हो, वह यीशु मसीह में विश्वासी बनें। पेरितों के काम की पुस्तक में उनमें से अधिकतर लोगों ने यीशु मसीह में विश्वास करते ही जल का बपतिस्मा पाया था।

3. क्या एक विश्वासी दूसरे विश्वासी को जल का बपतिस्मा दे सकता है या जल का बपतिस्मा केवल पासबान या किसी आत्मिक अगुवे द्वारा ही दिया जाए?

पेरितों के काम की पुस्तक में, हम फिलिप्पुस को, जो यरूशलेम की कलीसिया में डिकन था, नए विश्वासियों को बपतिस्मा देते हुए देखते हैं। हम हनन्याह को भी देखते हैं जो एक विश्वासी था और उसे शाऊल (जो बाद में पौलुस हुआ) को बपतिस्मा दे के लिए भेजा गया था। इसलिए, कोई भी विश्वासी दूसरे विश्वासी को जल का बपतिस्मा दे सकता है।

4. यदि मैं प्रभु भोज लेते समय वास्तव में नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूं या मुझे उसमें विश्वास नहीं है और मैं अनुचित रीति से बपतिस्मा लेता हूं, तो क्या मैं किसी जानलेवा बीमारी का शिकार बनूंगा?

नहीं। केवल यह मान लें कि आपने इसे छोटी बात समझी। प्रभु से कहें कि आपको खेद हैं (अर्थात, अनुचित रीति से यह करने के लिए पश्चाताप करें) और आगे बढ़कर, इसे सही रीति से करें।

5. जब प्रभु भोज देने वाला व्यक्ति स्वयं उस विधि में विश्वास नहीं करता, तब क्या मुझे प्रभु भोज में भाग लेना चाहिए?

सामान्य तौर पर, यदि प्रभु भोज में अगुवाई करने वाला व्यक्ति जो कुछ वह कर रहा है उसमें विश्वास नहीं रखता, तो प्रभु भोज में सहभागी होने का कोई महत्व नहीं है। परंतु, इसके बावजूद, यदि आपके पास दूसरा विकल्प नहीं है, तो आप प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने क्रूस पर आपके लिए किया उसमें आपके अपने व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा अर्थपूर्ण ढंग से ऐसा कर सकते हैं। अन्ततः, हर एक को खुद को जांचना है और प्रभु की देह को खुद के लिए बचाना है।

6. क्या मैं विश्वासी होने के नाते घर में प्रभु भोज में स्वयं हिस्सा ले सकता हूं?

अवश्य। यदि आप ऐसा प्रभु के लिए कर रहे हैं, उसके स्मरण में कर रहे हैं, तो एक या अधिक विश्वासी घर में या और किसी स्थान में प्रभु भोज का उत्सव मना सकते हैं।

20

कलीसिया का अनुशासन

विश्वासियों की स्थानीय मंडली की अगुवाई करते समय आंतरिक समस्याएं आएगी। इनमें से कुछ का संबंध विश्वासियों के मध्य होगा। कुछ का संबंध व्यक्तिगत आचरण, नैतिक और जीवनशैली संबंधी समस्याओं से होगा। अगुवों के साथ भी समस्याएं हो सकती है जिन्हें विभिन्न सेवाओं के लिए नियुक्त किया गया है। और ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। हम कुछ बातों का अध्ययन करेंगे जो कलीसियाई अनुशासन के विषय में पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है।

संघर्षों को सुलझाना

मत्ती 18:15-22

15 यदि तेरा भाई तेरे विरोध में अपराध करे, तो अकेले में जाकर उससे बातचीत करके उसे समझा। यदि वह तेरी सुने, तो तू ने अपने भाई को पा लिया
16 और यदि वह न सुने, तो एक या दो व्यक्तियों को अपने साथ ले जा, ताकि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाए।
17 और यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के समान जान।
18 मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बान्धा जाएगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खोला जाएगा।
19 फिर मैं तुम से कहता हूं कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन के होकर मांगे, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिए हो जाएगी।
20 क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।
21 तब पतरस ने पास आकर उससे कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई मेरे विरोध में अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं? क्या सात बार?
22 यीशु ने उससे कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात के सत्तर गुने तक।

पासबान/अगुवा होने के नाते लोग आपस की समस्याएं लेकर आपके पास आएंगे। प्रभु द्वारा दिए गए निर्देश का अनुसरण करने हेतु लोगों को

प्रोत्साहित करें। लोगों को आपस में शांतिपूर्वक उनका हल करने दे। यदि वह संभव नहीं हुआ, तो अन्य विश्वासी को उनके बीच मध्यस्थी करने कहें। यदि यह भी नहीं हुआ, तो कलीसिया के अगुवे आगे बढ़कर उस समस्या को सुलझा सकते हैं। सारी बातों में, हमें क्षमा और मेल मिलाप के लिए प्रोत्साहन देना है और कार्य करना है। यदि दोनों पक्ष कलीसिया के अगुवों की सलाह सुनने से इन्कार करते हैं, तब उन्हें संगति से स्वतंत्र कर दिया जाए, क्योंकि लड़ाई झगड़े, क्षमाहीनता और विभाजन के चलते किसी को कोई लाभ नहीं होगा।

1 कुरिन्थियों 6:1-8
1 क्या तुममें से किसी को यह हियाव है कि जब दूसरे के साथ झगड़ा हो, तो फैसले के लिए अधर्मियों के पास जाए, और पवित्र लोगों के पास न जाए?
2 क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? इसलिए जब तुम्हें जगत का न्याय करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य नहीं?
3 क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या सांसारिक बातों का निर्णय न करें?
4 इसलिए यदि तुम्हें सांसारिक बातों का निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं समझे जाते हैं?
5 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए यह कहता हूं। क्या सचमुच तुममें एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाइयों का न्याय कर सके?
6 वरन् भाई भाई में मुकद्दमा होता है, और वह भी अविश्वासियों के सामने!
7 परन्तु सचमुच तुममें बड़ा दोष तो यह है कि आपस में मुकद्दमा करते हो, बल्कि अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी हानि क्यों नहीं सहते?
8 बल्कि अन्याय करते और हानि पहुंचाते हो, और वह भी भाइयों को।

कुछ मामलों में, समस्याओं के लिए और गंभीर हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है, उदाहरण के तौर पर, कारोबार का मामला, परिवार/तलाक संबंधी बातें, ज़मीन जायदाद, आर्थिक मामला और अन्य परिस्थितियां

जिसके लिए कानूनी कार्यवाही की जरूरत होती है। पवित्र शास्त्र विश्वासियों से कहता है कि इस प्रकार के मामलों को भी परमेश्वर के लोगों के सम्मुख लाया जाए, विशिष्ट तौर पर मैं तुम्हें लज्जित करने के

लिए यह कहता हूं। *"...क्या सचमुच तुममें एक भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने भाइयों का न्याय कर सके?"* (पद 5)। अर्थात, हम इस बात को लोगों पर लाद नहीं सकते। परंतु पवित्र शास्त्र जो करने की हमें आज्ञा देता है, उसे यदि हम लोगों को सिखाते हैं, तो वे परमेश्वर के वचन का पालन कर सकते हैं।

ऐसे मामलों से निपटते समय कुछ मार्गदर्शनः

अ. यदि संभव (या आवश्यक) हो तो एक या दो प्राचीनों की टीम या लोगों की टीम नियुक्त करें जो परिस्थिति से संबंधित आत्मिक और व्यवहारिक पक्ष में योग्यता प्राप्त और अनुभवी है और समस्या के समाधान में सहायता करने की योग्यता रखते हैं।

आ. यह स्पष्ट रूप से समझाएं कि सभी निर्णय बिना पक्षपात के परमेश्वर के वचन के आधार पर और न्याय, धार्मिकता, क्षमा, और मेलमिलाप के निमित्त किए जाएंगे।

इ. सारी बातों को लिखकर निकालें, ताकि कोई भी व्यक्ति बाद में कुछ और कहें।

कलीसिया के अगुवे (अगुवों) द्वारा निर्णय दिए जाने के बाद, उसमें सहभागी विश्वासियों को उन बातों को अपनाने की ज़रूरत है। यदि विश्वासी अदालत में जाने का निर्णय लेते हैं, तो यह फैसला उन पर छोड़ दिया जाए। कलीसिया के अगुवों ने समस्या सुलझाने में अपनी भूमिका पूरी कर ली है।

यह सब कुछ करते समय हमें परमेश्वर के वचन के विषय में समझौता न करते हुए उस देश के कानून का पालन करना चाहिए।

व्यक्ति में सुधार लाना

जब आप किसी व्यक्ति के जीवन में सुधार लाना चाहते हैं, तो ऐसा गुप्त या व्यक्तिगत तौर पर करें। सामान्य मार्गदर्शन के रूप में, व्यक्ति को गुप्त रूप से और व्यक्तिगत रूप से सुधारने का प्रयास करें। व्यक्तिगत मामलों

को सार्वजनिक तौर पर संबोधित न करें। आवश्यक होने पर ही मंच से उन समस्याओं को संबोधित करें।

सांस्कृतिक समस्याऐं

प्रेरितों के काम 6:1-4

[1] उन दिनों में जब चेले बहुत होते जाते थे, तो यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।
[2] तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने पिलाने की सेवा में रहें।
[3] इसलिए हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।
[4] परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।

प्रेरितों के काम 6:1-4 में, हमारे पास यरूशलेम की कलीसिया के इब्रानी भाषा बालने वाले यहूदी विश्वासी और यूनानी भाषा बोलने वाले यहूदी विश्वासी के मध्य एक समस्या के विषय में लिखा है। बिना पक्षपात के भोजन के वितरण का ध्यान रखने के लिए पवित्र आत्मा से परिपूर्ण सात धर्मी जनों को चुनकर और उनकी नियुक्ति कर इस संसार को दूर किया गया।

फूट और विभाजन

1 कुरिन्थियों 3:3,4

[3] वरन् अब तक शारीरिक हो, इसलिए कि जब तुममें डाह और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?
[4] इसलिए कि जब एक कहता है, मैं पौलुस का हूं, और दूसरा कि मैं अपुल्लोस का हूं, तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

1 कुरिन्थियों 4:21

तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

कुरिन्थुस की कलीसिया में कई अंतर्गत समस्याएं थीं, उनमं से एक था परमश्वर के विभिन्न सेवकों का पक्ष लेने वाले लोगों की वजह से कलह

और विभाजन। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप, पौलुस ने सही आचरण के विषय में लिखकर, सिखाकर और आज्ञा देकर इस विषय को सम्बोधित किया। वह उन्हें प्रोत्साहित देता है कि जो वह कहना चाहता है उसके अनुरूप वे बर्ताव करें और आवश्यकता पड़ने पर वह व्यक्तिगत रीति से उनका सामना करने हेतु तैयार है।

नैतिक समस्याएं

कुरिन्थुस की कलीसिया में उनके सदस्यों में से किसी एक के कारण अनैतिक आचरण की समस्या थी (1 कुरिन्थियों 5:1-13; 2 कुरिन्थियों 2:1-11)। पौलुस इस समस्या को कड़े शब्दों में सम्बोधित करता है, और उन्हें आज्ञा देता है, *"शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए"* (1 कुरिन्थियों 5:5) और कहता है कि, *"परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है; इसलिए उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो"* (1 कुरिन्थियों 5:13)। उन्होंने ऐसा ही किया, और जब उस व्यक्ति के पश्चाताप का समाचार पौलुस को मिला, तब वह कलीसिया को प्रोत्साहित करता है कि वे उस व्यक्ति को वापस कलीसिया में ले लें। ऐसे जन के लिए यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है। *"इसलिए इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। इस कारण मैं तुमसे बिनती करता हूं कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो"* (2 कुरिन्थियों 2:6-8)।

अनुचित आचरण

2 थिस्सलुनीकियों 3:6-15

6 हे भाइयो, हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो अनुचित चाल चलता, और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता।

7 क्योंकि तुम आप जानते हो कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में अनुचित चाल न चले।

8 और किसी की रोटी सेंत में न खाई; परंतु परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम

धन्धा करते थे, ताकि तुममें से किसी पर भार न हो।
9 यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं; परंतु इसलिए कि अपने आप को तुम्हारे लिए आदर्श ठहराएं, कि तुम हमारी सी चाल चलो।
10 और जब हम तुम्हारे यहां थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए।
11 हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, परंतु औरों के काम में हाथ डाला करते हैं।
12 ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।
13 और तुम, हे भाइयो, भलाई करने में हियाव न छोड़ो।
14 यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो, और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो;
15 तौभी उसे बैरी मत समझो, परंतु भाई जानकर चिताओ।

यदि विश्वासी सही जीवन नहीं बिताते, उदाहरण के तौर पर, अपने परिवार की कमाई के लिए काम नहीं करते, निन्दा करते हैं, और ऐसा आचरण करते हैं जो विश्वासियों के लिए अशोभनीय है, तो उन्हें चेतावनी देना और सुधारना ज़रूरी है। यदि वे बदलते नहीं, तो हमें उन्हें प्रोत्साहन देते रहने की या उनके साथ मित्रता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, ताकि वे इस बात को समझ लें कि जो कुछ वे कर रहे हैं वे गलत है।

भाइयों को धोखा देना

कुरिन्थुस और गलातिया में नई कलीसियाओं को स्थापित करते समय पौलुस को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा उनमें से एक मुख्य चुनौती थी झूठे प्रेरित (2 कुरिन्थियों 11:13) और झूठे भाई (गलातियों 2:4) जो कलीसिया में घुस आए थे और अपने ही सिद्धांतों को सिखाने लगे थे। पौलुस ने इन चुनौतियों को सम्बोधित करने के लिए भाइयों को लिखा, उन्हें इन लोगों के विषय में चेतावनी दी और उन्हें प्रोत्साहन दिया कि वे उस सत्य को थामे रहे जो उहें सिखाया गया है। गलातियों की पत्री में, पौलुस ने मसीह में हमारी स्वतंत्रता की सच्चाई को विस्तारपूर्वक समझाया है और वह भाइयों को चुनौती देता है कि वे आत्मा में चलें, व्यवस्था के अनुसार नहीं।

भाइयों का विरोध करना

1 तीमुथियुस 1:19,20

19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रहे, जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।

20 उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं, जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें।

2 तीमुथियुस 2:16-18

16 परंतु अशुद्ध बकवाद से बचा रह; क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएंगे।

17 और उनका वचन सड़े घाव के समान फैलता जाएगा; हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,

18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।

2 तीमुथियुस 4:14,15

14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझ से बहुत बुराइयां की है, प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा।

15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध किया।

इफिसुस में, प्रेरित पौलुस को कुछ लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा जो सम्भवतः नये विश्वासी थे और स्थानीय कलीसियाई मण्डली से थे। वे किसी रीति से विद्रोही बन गए थे और खुले तौर पर पौलुस की शिक्षा को चुनौती दे रहे थे और अपनी गलत शिक्षा को बढ़ावा दे रहे थे। पौलुस इसे सार्वजनिक तौर पर सम्बोधित करता है और विश्वासियों को आज्ञा देता है कि वे उनकी शिक्षा से भमित न हों और उनसे दूर रहें।

फूट डालने वाले लोग

3 यूहन्ना 1:9-11

9 मैंने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता।

10 इसलिए जब मैं आऊंगा, तो उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप

ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है, और मण्डली से निकाल देता है।
[11] हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो। जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है; परंतु जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर के नहीं देखा।

उस स्थानीय कलीसिया में जिसका अगुवा प्राचीन गायस था, दियोत्रेफेस नामक एक व्यक्ति था जिसने प्रेरित यूहन्ना को प्रेरित किया और विश्वासियों को रोका कि वे प्रवासी सेवकों का आतिथ्य न करें। उसने विश्वासियों को इस तरह से प्रभावित किया कि उसने कुछ लोगों को कलीसिया से भी बाहर कर दिया। यूहन्ना अति कठोर शब्दों में इस प्रकार के आचरण के विरोध में लिखता है और वचन देता है कि जब वह व्यक्तिगत् रीति से उस कलीसिया में आएगा, तब अत्यंत कड़ाई से इस व्यक्ति का सामना करेगा।

सुधार लाने वाले अगुवे

1 तीमुथियुस 5:19-22
[19] कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए, तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको न सुन।
[20] पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।
[21] परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूं कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।
[22] किसी पर शीघ हाथ न रखना और दूसरों के पापों में भागी न होना। अपने आपको पवित्र बनाए रख।

पासबान/अगुवे होने के नाते हम उन अगुवों के लिए ज़िम्मेदार हैं जिन्हें हमने हमारे साथ सेवकाई में काम करने के लिए नियुक्त किया है। अगुवे भी गलती कर सकते हैं। परंतु हमें उन्हें दुगुना आदर देना चाहिए (पद 17), गलतियां होने के बाद भी। सर्वप्रथम, हमें केवल एक व्यक्ति के आरोपों के आधार पर अगुवे का न्याय नहीं करना चाहिए। उस व्यक्ति द्वारा किए गए गलती के दो या तीन गवाह हो। उसके बाद हमें गुप्त रूप से और आदर के साथ इस विषय में उस अगुवे से बातचीत करना चाहिए। यदि अगुवा

अपनी गलती स्वीकार करता है, और अपने काम और मार्गों में सुधार लाता है, तो सबकुछ ठीक है। परंतु, यदि अगुवा गलत काम करना जारी रखता है, तब हमें सार्वजनिक तौर पर *"उसे सबके सामने समझा दें ताकि और लोग भी डरें"* (पद 20)। हम नहीं चाहते कि अगुवे की गलती से बाकी के लोग गुमराह हों। यह सबकुछ बड़े सम्मान के साथ करें।

गलती करने वाले सेवकों को वापस लेना

गलातियों 6:1

हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए, तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।

यह सम्भव है कि काफी लम्बे समय से परमेश्वर की सेवा करने वाला पुरुष या स्त्री किसी गंभीर पाप में पड़े, उदाहरण, यौन अनैतिकता, पैसों की हेराफेरी, लोगों के साथ दुर्व्यवहार, या अन्य किसी तरह का अनुचित आचरण। पासबान/अगुवा होने के नाते, जिन लोगों पर आप देखरेख करते हैं या जिनके साथ आप जुड़ गए हैं, वे पाप में गिरते हैं, तो हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि जो कुछ हो रहा है, उसकी ओर नज़रअंदाज न करें, परंतु चंगाई और पुनर्स्थापन के लिए प्रेम के साथ उसमें हस्तक्षेप करें। पाप में गिरे हुए सेवक को वापस लौटा ले आने में कितना समय लगेगा इसकी कोई निर्धारित प्रक्रिया या समय नहीं है। यह उचित है कि हम उस सेवक से कहें कि वह सब प्रकार की सेवकाई से कुछ समय के लिए अवकाश ले ले। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में अपना समय बिताने दें और अन्य सेवकों के साथ चलने दें जो चंगाई और पुनर्स्थापन की प्रक्रिया के द्वारा उनकी सहायता करेंगे। हमें उस आचरण का कारण पहचानना चाहिए जिससे वह व्यक्ति पाप में गिर गया हो। हमें समस्या की जड़ पर कुल्हाड़ी मारने के लिए, उसके चरित्र का फिर निर्माण करने और उसे मज़बूत बनाने, चंगाई और पुनर्स्थापन लाने हेतु उनके साथ काम करने की ज़रूरत है। इसमें कुछ महीने, साल, दो साल या अधिक वर्ष लग सकते हैं। जब हम इस बात को पहचान लेते हैं कि चंगाई और बल का पुनर्स्थापन हुआ है, तब हम उन्हें

वापस सेवकाई में आने के लिए मुक्त करते हैं। कुछ मामलों में, यदि पाप में गिरा हुआ सेवक सहायता पाने, चंगाई और पुनर्स्थापन के लिए अनिच्छुक है, तब हम उनके चुनाव के लिए आगे ज़िम्मेदार नहीं रहेंगे।

बिना दुर्व्यवहार के अधिकार का उपयोग करना

कलीसिया के अंतर्गत उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से निपटते समय, अगुवों/पासबानों के नाते, हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार का उपयोग करने से हिचकिचाना नहीं चाहिए। परंतु, ऐसा हम लोगों की उन्नति के लिए, उन्हें उठाने के लिए करें, उन्हें बर्बाद करने के लिए नहीं।

2 कुरिन्थियों 13:10
इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे ये बातें लिखता हूं कि उपस्थित होकर मुझे उस अधिकार के अनुसार, जिसे प्रभु ने बिगाड़ने के लिए नहीं, पर बनाने के लिए मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ करना न पड़े।

2 कुरिन्थियों 1:23,24
[23] **मैं परमेश्वर को गवाह करता हूं कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिए नहीं आया, कि मुझे तुम पर तरस आता था।**
[24] **यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं, परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।**

सुधार के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाओं के लिए तैयार रहें

जब हम लोगों में सुधार लाने की कोशिश करेंगे, तब कुछ लोग उसका उचित रीति से स्वीकार करेंगे। परंतु कुछ लोग उसे सही रीति से स्वीकार नहीं करेंगे। वे नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। जिन लोगों से आप प्रेम करते हैं, उनकी ओर से नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करना परमेश्वर के सेवकों के रूप में हमारे लिए अत्यंत दुखदायक क्षण हो सकते हैं।

यहां पर कुछ नकारात्मक प्रतिक्रियाएं दी गई हैं जो आपको मिल सकती हैं:

i) **कुड़कुड़ाना:** अचानक उस व्यक्ति की दुनिया पूर्ण रूप से भिन्न हो जाती है जिसने सुधार (ताड़ना) को स्वीकार किया है। जो अति सुंदर और अद्‌भुत था, अचानक उसके लिए जंगल या मरूस्थल बन जाता है। व्यक्ति हर छोटी बात के विषय में शिकायत करने या कुड़कुड़ाने लगता है।

ii) **पीछे हट जाना:** जिस व्यक्ति में सुधार (ताड़ना) लाने की कोशिश की गई, वह पीछे हट जाता है, दूसरों से सम्बंध तोड़ देता है और खुद को औरों से छिपा लेता है।

iii) **बदला:** वह व्यक्ति उसकी समस्याओं, निराशाओं, असंतोष के लिए आप पर दोष लगाने लगता है। अचानक, आपके प्रति जो सम्मान और आदर था, वह अतीत की बात बनकर रह जाती है।

iv) **दूर हो जाना:** वह व्यक्ति बिना किसी पूर्व सूचना के अचानक अदृश्य और गायब हो जाता है।

ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करें?

i) **उसे व्यक्तिगत् तौर पर न लें:** सुधार स्वीकार करने की किसी और की अयोग्यता आपका दोष नहीं है।

ii) **ठोकर न खाएं:** अपने हृदय की रक्षा करें।

iii) **लोगों को बदलने के लिए समय दें:** लोगों को समय की ज़रूरत है कि वह उन बातों का सामना कर सकें जिनमें परिवर्तन की ज़रूरत है।

iv) **उन्हें शांति से बढ़ने की अनुमति दें:** उन्हें परमेश्वर के हाथों में सौंप दें। केवल परमेश्वर ही उन्नति और परिपक्वता लाने हेतु उनके जीवन में कार्य कर सकता है।

समय पर सुधार लाए–विलम्ब न करें

इस बहाने से सुधार लाने में विलम्ब न करें कि हम उस पर अनुग्रह कर रहे हैं। कभी कभी हम सामना करने से बचते हैं क्योंकि हम रिश्तों को हानि पहुंचाने की सम्भावना का खतरा मोल नहीं लेना चाहते। परंतु, हम उसमें जितना विलम्ब करेंगे, उतनी ही वह समस्या बड़ी और दुखद हो जाएगी और बाद में उसका सामना करना मुश्किल होगा।

21

कलीसिया की सभा में व्यवस्था

सभ्यता और क्रमानुसार

कुरिन्थुस की कलीसिया में जब विश्वासी आराधना और संगति के लिए इकट्ठा होते थे, तब कई बातें अनुचित हो रही थी। प्रभु की मेज में सहभागी होने का तरीका अनुचित था। उसी तरह आत्मिक वरदानों का उपयोग करने में भी अनुशासन की आवश्यकता थी। प्रेरित पौलुस अपनी पत्री में इन बातों को सम्बोधित करता है और बताता है कि जब वह अगली बार कुरिन्थुस की कलीसिया को भेट देगा, तब सारी बातों का उचित प्रबंध करेगा।

1 कुरिन्थियों 11:34
यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो; और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूंगा।

1 कुरिन्थियों 14:33
क्योंकि परमेश्वर गड़बडी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।

1 कुरिन्थियों 14:40
पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।

अतः हमें इस बात का ध्यान रखना है कि सारी बातें सभ्यता के साथ और क्रमानुसार, सारी बातों में जो आराधना के दौरान होती हैं और अन्य समयों में भी उत्तमता के साथ पूरी की जाएं। इससे प्रभु को आदर और महिमा मिलती है। हमारी आराधना और सभाओं के लिए जिन बातों में हम उत्त्मता चाहते हैं, वे हैं समय की पाबंदी, नियोजन, उचित समन्वय, समय बर्बाद न करें, अनावश्यक घोषणा नहीं, स्वच्छता, कार्यक्षमता और ऐसी ही बातें जो यह दर्शाती हैं कि हम अपने प्रभु को उत्तम दे रहे हैं। हम लगातार

उन बातों में सुधार लाने का तरीका खोजते हैं जो हम अपनी आराधना में कर रहे हैं।

मण्डली की संख्या के आधार पर, हम कुछ बातें कर सकते हैं या नहीं कर सकते। उदाहरण के तौर पर, घर की सभाओं में जहां 10-15 लोग होते हैं, वहां हर कोई भविष्यद्वाणी कर सकता है, हर कोई अपने विचारों को बांट कर सकता है, हर कोई दूसरों के लिए प्रार्थना कर सकता है और हर एक के लिए प्रार्थना की जा सकती है और हर एक को व्यक्तिगत् सेवकाई प्रदान की जा सकती है। परंतु, कई सैंकड़ों लोगों की विशाल सभा में, और 90 मिनट या ज्यादा से ज्यादा 120 मिनट के लिए आयोजित की गई आराधना में, सामान्यतया हमारे पास बहुत सारे लोगों को पुलपिट के पास आने का अवसर देने के लिए समय नहीं होगा। अतः, सारी बातों का क्रमानुसार प्रबंध करते हुए लोगों को अपने वरदानों का उपयोग करने और उनका परिपोषण करने हेतु अवसर दिया जाएगा।

सामुहिक सभाओं में अन्यान्य भाषाओं का उपयोग

क्या हम सामुहिक सभाओं में अन्यान्य भाषाओं का उपयोग कर सकते हैं? 1 कुरिन्थियों 14 का मुख्य विषय है (अ) जो नहीं समझते कि हम क्या कर रहे हैं, (आ) और अन्यान्य भाषाओं में संदेश देते समय (14:16-19,27,28,32)। यदि ऐसा कोई नहीं है जो अन्यान्य भाषा में दिए जाने वाले संदेश का अर्थ बता सके, चूप रहे, अर्थात, वह अन्यान्य भाषाओं में संदेश न दें, परंतु वह *"शांत रहे और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करें"* (14:28)। इस प्रकार सामुहिक सभा में अन्यान्य भाषाएं बोल सकते हैं, इसलिए जब तक हम सार्वजनिक सभा में अन्यान्य भाषाओं के सही उपयोग की शर्ते पूरी करते हैं, तब तक हम सामुहिक सभा में अन्यान्य भाषाएं बोल सकते हैं। व्यक्तिगत विश्वासियों का सामुहिक सभा में अपने और परमेश्वर के मध्य अन्यान्य भाषाओं में बातें करना उचित है। क्योंकि वे अन्यान्य भाषाओं में लोगों को संदेश नहीं दे रहे हैं और जो अन्यान्य भाषा बोलना क्या है यह नहीं समझते, उन पर उसका असर नहीं होता। वे खुद के और प्रभु के बीच

बातें कर रहे हैं। उसी तरह, हम ऐसे परिवेष में हैं जहां हर कोई जानता है कि अन्यान्य भाषा क्या है, और 1 कुरिन्थियों 14 में जो कुछ बताया गया है उसका अनुसरण करता है, तो ऊंची आवाज़ में हर एक के लिए अन्यान्य भाषाओं में बातें करना पूर्ण रूप से उचित है, क्योंकि सभी जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। पेरितों के काम 2,10,19 में हम उन लोगों के समूहों के उदाहरण देते हैं जिन्होंने एक ही समय में अन्यान्य भाषाएं बोली।

सुव्यवस्था और ईश्वरीय अव्यवस्था

यूहन्ना 3:8
हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

भजन 115:3
हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है।

जब हम व्यवस्था और अनुशासन का पालन करते हैं, तब हमें परमेश्वर को उसकी इच्छा के अनुसार प्रभुता करने देना चाहिए और कार्य करने देना चाहिए। हमारे अनुशासन से परमेश्वर को बाहर रखा न जाए। यदि कभी हमें महसूस होता है कि प्रभु इस तरह से हमारा मार्गदर्शन कर रहा है जिसकी हमने योजना नहीं बनाई है, तो हमें हमारी योजनाओं को उसके आत्मा की अधीनता में लाना चाहिए।

ऐसे समय रहे हैं जब हमने प्रभु की उपस्थिति को इतने सामर्थी तरीके से महसूस किया कि हमने संपूर्ण समय आराधना में बिताया। हमने अपना नियोजित और नियत आराधना विधि, संदेश और अन्य बातों को हटाकर रख दिया। हमने अपनी योजनाओं से बढ़कर परमेश्वर को आदर देने का चुनाव किया।

शरीर की बातों से निपटना

यह संभव है कि जब हम आत्मा के स्वतःप्रवर्तित कार्य का स्वागत करते हैं, तब कुछ लोग अपने दैहिक उमंग के द्वारा आत्मा के कार्य की नकल करने का प्रयास कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में पासबान का कार्य करने और अगुवाई करने हेतु बुद्धि और अनुग्रह लगता है। हमारा तरीका हमेशा प्रोत्साहन देने वाला होना चाहिए। लोगों को गलतियां करने का मौका दें। उन्हें निराश न करते हुए या दोष न देते हुए पेम के साथ सुधार करें। यदि कोई व्यक्ति गलत रीति से पेरित होते हैं, और आत्मा के अनुसार कार्य करने के बजाए शरीर के अनुसार कार्य करते हैं, तो गुप्त रूप से उनके साथ बातचीत करें। उनके हृदय के उद्देश्यों को जांचें। सच्चाई यह है कि कोई भी सिद्ध स्थानीय कलीसिया नहीं है, इसलिए, पूर्ण संभावना है कि आपके पास हमेशा किसी न किसी समय देह की बातें सामने आएगी। हमें सतर्क रहना चाहिए कि केवल इसलिए कि हम शरीर की बातों को पूर्ण रूप से मिटाना चाहते हैं, हम आत्मा के कार्य को न बुझाएं।

22

सेवकाई में स्त्रियां

इस अध्याय में हम सेवकाई में स्त्रियों की भूमिका के विषय में चर्चा करेंगे।

सेवकाई में महिलाएं–अवलोकन

संपूर्ण पवित्र शास्त्र में, परमेश्वर के आत्मा ने स्त्रियों के द्वारा कई तरह से कार्य किया है। पवित्र आत्मा ने स्त्रियों की अगुवाई करने, भविष्यद्वाणी करने, छुटकारा आदि लाने में सहायता की है। यहां पर कुछ उदाहरण है।

मरियम

निर्गमन 15:20,21

[20] और हारून की बहन मरियम नाम नबिया ने हाथ में डफ लिया; और सब स्त्रियां डफ लिए नाचती हुई उसके पीछे हो ली।
[21] और मरियम उनके साथ यह टेक गाती गई - यहोवा का गीत गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है।

दबोरा

न्यायियों 4:4,5

[4] उस समय लप्पीदोत की स्त्री दबोरा जो नबिया थी इस्राएलियों का न्याय करती थी।
[5] वह एप्रैम के पहाड़ी देश में रामा और बेतेल के बीच में दबोरा के खजूर के तले बैठा करती थी, और इस्राएली उसके पास न्याय के लिये जाया करते थे।

हुल्दा

2 राजा 22:14,15 (2 इतिहास 34:22,23 भी देखें)।

[14] हिलकिय्याह याजक और अहीकाम, अकबोर, शापान और असाया ने हुल्दा नबियों के पास जाकर उससे बातें की, वह उस शल्लूम की पत्नी थी जो तिकवा का पुत्र और हर्हस का पोता और वस्त्रों का रखवाला था, (और वह स्त्री यरूशलेम के नये टोले में रहती थी)।

[15] उसने उनसे कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जिन पुरुष ने तुमको मेरे पास भेजा, उससे यह कहो।

यशायाह की पत्नी को भविष्यद्वक्तिन कहा गया है। परंतु, उसके द्वारा की गई सेवकाई का कोई लेखा नहीं है (यशायाह 8:1-3)।

एस्तेर

परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए एस्तेर का उपयोग किया।

हन्ना

लूका 2:36-38
[36] और अशेर के गोत्र में से हन्नाह नाम फनूएल की बेटी एक भविष्यद्वक्तिन थी। वह बहुत बूढ़ी थी, और विवाह होने के बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह पायी थी।
[37] वह चौरासी वर्ष की विधवा थी, और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी; परंतु उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी।
[38] और वह उस घड़ी वहां आकर प्रभु का धन्यवाद करने लगी, और उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें करने लगी।

फिलिप्पुस की बेटियां

पेरितों के काम 21:8,9
[8] परन्तु अन्य चेले नाव पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।
[9] जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने कोयले की आग, और उस पर मछली रखी हुई, और रोटी देखी।

क्या महिला सेवक बन सकती है?

सबसे पहले, हमें यह समझना है कि मसीह में, अनुग्रह में वह समानता है जो स्त्री व पुरुष दोनों को दी गई है।

गलातियों 3:28
अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

1 पतरस 3:7
वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं।

दूसरी बात, नए नियम की सेवकाई मात्र पुरुषों तक सीमित नहीं है।

मत्ती 4:4
...मनुष्य ("*anthropos*") **केवल रोटी से नहीं...**

यूनानी भाषा का अँथ्रोपॉस यह शब्द लिंग भेद के विषय में निष्क्रिय है।

2 तीमुथियुस 2:2
और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

यूनानी भाषा का (*"anthroopois"*) यह शब्द (*"nthropos"*) का बहुवचन है जिसका अर्थ है मानवजाति, चाहे स्त्री हो या पुरुष। पौलुस पुरुष के लिए प्रयुक्त (*"aner"*) इस शब्द का उपयोग नहीं करता जो पूर्ण रूप से पुल्लिंगी है, परंतु लिंग भेद के विषय में निष्क्रिय शब्द (*"anthroopois"*) का उपयोग करता है।

इफिसियों 4:8,11
8 **...उसने मनुष्यों को दान दिए** ("*anthropos*")**।**
11 **और उसने कितनों को (कितने स्त्री या पुरुष दोनों हो सकते हैं)।**

पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना स्त्री और पुरुष दोनों के लिए है (पेरितों के काम 2:17,18)। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का उद्देश्य सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा और पश्चाताप और छुटकारे की घोषणा करने के द्वारा यीशु मसीह के गवाह बनने के लिए सामर्थ पाना है (पेरितों के काम 1:8; लूका 24:48,49)। पुरुषों के समान सेवा करने हेतु स्त्रियां भी पुरुषों के समान आत्मा की सामर्थ पाती हैं।

1 कुरिन्थियों 12:1-7 के आत्मिक वरदानों का उपयोग केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है। सेवा पद केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है। (1 कुरिन्थियों 12:28)। नए नियम में, हम आत्मा की सामर्थ और अनुग्रह पाने में और आत्मिक वरदानों और सेवा पदों के अभ्यास में स्त्री और पुरुष दोनों के संबंध में समानता पाते हैं। अतः, स्त्रियां भी पुरुषों के समान ही सेवा और सेवकाई कर सकती है।

पौलुस के पास उसकी सेवकाई के एक भाग के रूप में अक्विला के साथ ही साथ उसकी पत्नी प्रिसिल्ला भी थी (पेरितों के काम 18) और दोनों ने सेवकाई की। पौलुस ने फीबी नामक एक स्त्री को (रोमियों 16:1) सेविका (डिकनेस) कहा और जुनिया नामक एक स्त्री की एक विशिष्ट पेरित के रूप में प्रशंसा की (रोमियों 16:1), और वह कई स्त्रियों की सूची प्रस्तुत करता है जिन्होंने दूसरों के साथ सेवा की।

अगुवे के पद पर स्त्रियां

रोमियों 12:4-8

4 क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं,

5 वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

6 और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।

8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

अगुवे पन का वरदान दोनों को दिया गया है, जिस प्रकार बाकी सारे वरदानों की यहां सूची प्रस्तुत की गई है। ये वरदान मसीह की देह में विश्वासी की भूमिका और कार्य को पूरा करने हेतु सामर्थ देते हैं। अतः स्त्री अगुवे की भूमिका और कर्तव्य पूरा कर सकती है, और इसलिए अगुवे के वरदान के द्वारा इस कार्य को पूरा करने हेतु सामर्थ पा सकती है।

जैसा कि हमने पिछले भाग में देखा, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान, शिक्षक या सुसमाचार प्रचारक ये सेवापद, जिनकी सूची इफिसियों 4:11 और 1 कुरिन्थियों 12:28 में प्रस्तुत की गई है, स्त्री और पुरुष दोनों को दिए गए हैं। इनमें से किसी एक पद पर सेवा करने वाली स्त्री सामान्य तौर पर अगुवे के रूप में सेवा करेगी। कलीसिया में, हमने देखा है कि परमेश्वर ने स्त्रियों को उनकी सेवकाई के प्रमुखों के रूप में उपयोग किया। उदाहरण, कैथरिन कुलमन, एमी सेम्पल मैकफर्सन जो कि सुसमाचार प्रचारक और फोर स्क्वेयर चर्च की संस्थापक थी, मारिया वुडवर्ड एटर, जॉईस मेयर और अन्य।

सिर और प्रधानता

1 कुरिन्थियों 11:3
इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है; और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

पिता और पुत्र समान हैं। वे परमेश्वर हैं। फिर भी, परमेश्वर के व्यवहार और परमेश्वर की योजना में, पुत्र स्वेच्छा से पिता के अधीन होता है। इसलिए, मसीह का सिर परमेश्वर है।

1 कुरिन्थियों 11:11,12
11 तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष, और न पुरुष बिना स्त्री के है।
12 क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं।

उसी तरह, पुरुष स्त्री दोनों समान हैं और एक साथ परमेश्वर के अनुग्रह के वारिस हैं (गलातियों 3:28; 1 पतरस 3:7), परमेश्वर के प्रशासन में पुरुष प्रधान है (सिर)। उदाहरण के तौर पर, परिवार के लिए परमेश्वर के प्रशासन में, पति पत्नी का सिर है।

ऐसी परिस्थितियों में जहां पुरुष नहीं हैं, स्त्री को किसी पुरुष की अधीनता में आने के लिए जबरदस्ती करना उचित नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि ऐसी स्त्री जिसका विवाह नहीं हुआ है, सेवकाई की अगुवाई करती है,

तो हमें इस बात को स्वीकार करना है कि परमेश्वर न केवल सेवक के रूप में खड़ा किया है, बल्कि उसकी सेवकाई अगुवे/प्रधान के रूप में भी। यदि विधवा स्त्री अब सेवकाई में अगुवाई करती है, तो हमें उसे महिला सेवक के रूप में और उस सेवकाई के अगुवे के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

हमें प्रधानता (प्रमुख होने) की सीमाओं को भी समझना है। पुरुष अपनी पत्नी का सिर है। स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में, पुरुष पासबान उन।

क्षेत्रों में कदम नहीं रख सकता जहां पर पति अपनी पत्नी का सिर है। अतः पासबान होने के नाते आपको अपनी सीमाओं को जानना है, और उन क्षेत्रों में प्रवेश नहीं करना है, जो उसके पति के अधिकार क्षेत्र में आती हैं। जब उसकी सेवकाई के क्षेत्र की बात आती है, तब आप उसे निर्देश और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं, परंतु बाकी सभी क्षेत्रों में उसका पति उसका ज़िम्मेदार है। जब पासबान इस क्षेत्र में सावधान नहीं रहते, और ऐसे काम करने लगते हैं, जिससे उन बातों में हस्तक्षेप हो जहां स्त्री के पति को उसे मार्गदर्शन देना चाहिए, वहां पर स्त्री उलझन में पड़ जाएगी कि उसे किसकी सुनना है—उसके पति की या उसके पासबान की। परंतु बाइबल अत्यंत स्पष्ट है: हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के (इफिसियों 5:22)।

स्त्रियां चुप रहें

इन दो अनुच्छेदों की हमारी व्याख्या उस संदर्भ के अनुसार होनी चाहिए जिसमें ये बातें लिखी गईं, उसी तरह बाकी के पवित्र शास्त्र के अनुसार भी।

1 कुरिन्थियों 14:34,35

34 स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है।

35 और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।

1 कुरिन्थियों 14 का मूल उद्देश्य कलीसिया की सभा में आत्मिक वरदानों के उपयोग में प्रोत्साहन देना है, परंतु सभ्यता और शालिनता बनाए रखने के लिए।

इस अध्याय में, पौलुस आज्ञा देता है कि तीन विभिन्न परिस्थितियों के विषय में चुप रहें: अन्य अन्य भाषाओं में बोलना, भविष्यद्वाणी और स्त्रियां।

- यदि अर्थ बताने वाला हो, तो कलीसिया के श्रोताओं के साथ अन्य अन्य भाषाओं में बोलें। अन्यथा चुप रहें (1 कुरिन्थियों 14:27,28)।
- बारी बारी से भविष्यद्वाणी करें, भविष्यद्वाणी के वचन कहने के बाद, जब और कोई भविष्यद्वाणी करने हेतु प्रेरित होता है, तो आप चुप रहें (1 कुरिन्थियों 14:29,30)।
- महिलाओं, यदि आपके पास प्रश्न हैं, तो कलीसिया में चुप रहें। बाद में घर में अपने पति से पूछें (1 कुरिन्थियों 14:34,35)

उद्देश्य सुव्यवस्था या अनुशासन है, आत्मिक वरदानों के उपयोग को रोकना नहीं। हम चुप रहने की आज्ञा का उपयोग अन्य अन्य भाषाओं में बोलना या भविष्यद्वाणी को रोकने के लिए नहीं करते। इसलिए हम स्त्रियों को इसी आज्ञा का उपयोग कर प्रचार करने से क्यों रोकने की कोशिश करें? इस अनुच्छेद की सही समझ यह है कि यदि स्त्रियों के पास प्रश्न हैं, तो वह कलीसिया की सभा में उनके विषय में पूछने के बजाए, उचित समय में पूछें।

"मैं स्त्रियों को सिखाने की अनुमति नहीं देता"

1 तीमुथियुस 2:11-15

11 और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए।

12 और मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे, और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।

13 क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।

14 और आदम बहकाया न गया, परंतु स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।

[15] **तौभी यदि वे संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहें, तो बच्चों को जन्म देने के द्वारा उद्धार पाएगी।**

ऐसा प्रतीत होता है कि ये वचन स्त्रियों को सिखाने से पूर्ण रूप से रोकते हैं। हमें पौलुस की अपनी सेवकाई की परम्पराओं के प्रकाश में इसकी व्याख्या करनी चाहिए, वह संदर्भ जिसमें पौलुस द्वारा तीमुथियुस को यह पत्री लिखी गई थी, और अन्य वचनों के प्रकाश में।

आय सफर नॉट अ वूमन नामक अपनी पुस्तक में रिचर्ड और कैथरीन क्लॉक क्रोजर समझाते हैं कि कुछ सम्प्रदायों (कल्ट) की आराधना परम्परा में डायना की पुजारिन की प्रथा ने पहली सदी की कलीसिया पर आक्रमण किया था। ये पुजारिन स्त्रियां यौन और आध्यात्मिकता के विषय में ईश्वर निंदात्मक विचारों को बढ़ावा देती थीं और कभी कभी ऐसी रस्में करती थीं जिनमें वे पुरुषों के विरूद्ध श्राप का उच्चारण करती थी और स्त्रियों की श्रेष्ठता की घोषणा करती थी। इफिसुस की कलीसिया से सम्भवतः पौलुस यह कहना चाहता थाः मैं स्त्री को इन सम्प्रदायों के पाखण्डों की शिक्षा देने की अनुमति नहीं देता, न ही मैं उन्हें मूर्तिपूजक रस्मों को पूरा कर पुरुषों के अधिकार को छिनने की अनुमति देता हूं। वह यह नहीं कह रहा था जैसा कुछ मसीही लोग मानते हैं, मैं धर्मी मसीही स्त्रियों को बाइबल सिखाने की अनुमति नहीं देता। (आय. ली ग्रेडी, टेन लाईज़ द चर्च टेल्स विमेन में, लेख 20050204105114 www.spiritledwoman.com स्ट्रैन्ग कम्यूनिकेशन्स द्वारा)

स्त्रियों की वरीयता की सांस्कृतिक शिक्षा के प्रकाश में, बात यहां पर आधीनता की और पुरुषों के अधीन होने की हैं जहां पर अगुवेपन और शिक्षा की आती है। पौलुस उन्हें परमेश्वर के प्रशासन में पुरुष के सिर या प्रमुख होने को स्मरण दिलाता है, यह कहते हुए कि आदम पहले सिरजा गया। अतः यह सेवा में रहकर परमेश्वर की सेवा करने से स्त्रियों को मना नहीं करता, परंतु यह पुरुषों के प्रति सक्रिय आधीनता की और उस सांस्कृतिक संदर्भ में स्थानीय कलीसिया की पृष्ठभूमि में उचित आचरण की बात है।

1 तीमुथियुस 2:14
और आदम बहकाया न गया, परंतु स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।

इससे यह सूचित नहीं होता कि स्त्रिया अधिक आसानी से धोखा खाती हैं। प्रेरित पौलुस उत्पत्ति 3:1-7 में जो हुआ उसे मात्र निवेदन कर रहा है। सांप ने सीधे हव्वा से बातें की, उससे झूठ बोला, परमेश्वर ने जो कहा था उसे तोड़ मरोड़कर कहा, उसे धोखा दिया (2 कुरिन्थियों 11:3) और उसे पहला निवाला खाने पर विवश किया। सांप को आदम से बोलने की आवश्यकता नहीं पड़ी। हव्वा` वह फल आदम को दिया और उसे बिना सवाल पूछे वह फल खाया। दोनों ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, दोनों ने पाप किया और दोनों गिर गए।

1 तीमुथियुस 2:15
तौभी यदि वे संयम सहित विश्वास, पेम, और पवित्रता में स्थिर रहें, तो बच्चों को जन्म देने के द्वारा उद्धार पाएगी।

इसकी सरल समझ यह है कि उत्पत्ति 3:16 के प्रकाश में पत्नी प्रसव के दौरान सुरक्षित रहेगी।

समापन

उस कलीसिया की कल्पना करें जहां स्त्रियों ने किसी भी रीति से परमेश्वर की सेवा न की हो? हमें यह समझना है कि परमेश्वर ने अपने राज्य के उद्देश्यों के लिए विभिन्न तरीकों से स्त्रियों का हमेशा उपयोग किया है और कर रहा है।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए

'I Suffer Not a Woman', Richard and Catherine Clark Kroeger.

'Code of Honor,' Ashish Raichur, free publication from All Peoples Church (Read the chapter on 'Women.')

भाग 4

सेवकाई, संगठन और विकास

23

स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत पद्धतियां और प्रक्रियाएं

इस भाग में, हम सेवा संस्था के व्यवहारिक पहलूओं की चर्चा करेंगे। सेवकाई के लिए स्थानीय कलीसिया को संगठित करने के क्या तरीके हैं और संस्था का विकास या उन्नति कैसे करें? अ. उत्तमता, ब. उचित कार्य संचालन और क. जो कुछ किया जा रहा है उसकी बहुलता और बढ़ौतरी के लिए उचित संगठन महत्वपूर्ण है। यदि सारी बातों का उचित प्रबंध न किया जाए, तो सभी अद्भुत वरदान, अभिषेक और अनुग्रह जो परमेश्वर देता है, आसानी से बरबाद हो सकते हैं। उचित संगठन के द्वारा हम प्रभावी तरीके से उस प्रभाव को और परमेश्वर स्थानीय कलीसियाई मंडली को जो देता है, उस पहुंच को बढ़ा सकते हैं।

सेवकाई के संगठन में और संस्था के विकास में हमारी प्रेरणा यह है कि हम परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार हमारी स्थानीय कलीसियाओं का निर्माण कर सकते हैं, और उसके द्वारा यीशु मसीह की महिमा कर सकते हैं। इस प्रकार हम परमेश्वर द्वारा हमें पवित्र शास्त्र में दिए गए ब्लू प्रिन्ट के आधार पर संगठन बनाते हैं।

हम यहां पर कुछ विचार और व्यवहारिक तरीके प्रस्तुत कर रहे हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है। ये स्थानीय कलीसिया की सेवकाई को मात्र संगठित करने के तरीके नहीं हैं। परमेश्वर अलग तरह से संगठन करने और स्थापित करने हेतु परमेश्वर आपकी अगुवाई कर सकता है और यह पूर्ण रूप से उचित है। हम केवल उन बातों को और विचारों को बांट ना चाहते हैं जो हमने सीखी हैं और जिन्हें अन्य कलीसियाओं में उपयोग और लागू किया जा सकता है।

कलीसिया देह है जो मानव देह के सदृश्य है। मानव देह में विभिन्न प्रणालियां (संस्थान या तन्त्र) होती हैं, कुल नौ। सभी प्रणालियों का

ध्यान रखना स्वास्थ्य, बल और फलोत्पादकता के लिए आवश्यक है। हम मानव देह से एक दिलचस्प समान्तर तैयार कर सकते हैं और स्थानीय कलीसिया की प्रणालियां और प्रक्रियाओं को संगठित कर सकते हैं ताकि समान उद्देश्यों को पूरा किया जा सके। हम पूरे नौ प्रणालियों पर विचार करेंगे।

रक्तवह तन्त्रः देखभाल और परिपोषण

इस बात का ध्यान रखें कि प्रत्येक व्यक्ति को देखभाल और परिपोषण मिले। प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त देखभाल और परिपोषण मिले इसलिए और नसों, कोशिकानलियों और धमनियों का विकास करें।

- व्यक्तिगत तौर पर सिखाना
- छोटे समूह
- सदस्यों की निगरानी रखने वाली टीम
- व्यक्तिगत ज़रूरतों को सम्बोधित करने वाले विशेषज्ञ सलाहकार
- विशेष ज़रूरतों को सम्बोधित करने वाले विषयों के नियमित सेमिनारः उदाहरण, विवाह, पैसा, कार्य स्थल

अस्तिपंजर प्रणालीः आकार और रचना

उचित नेतृत्व, संगठन और प्रशासन के द्वारा रचना, आकार और आधार का ध्यान रखना।

अगुवे कलीसिया के खम्भे हैं।

पवित्र आत्मा आपकी स्थानीय कलीसिया में जुड़ने के लिए लोगों को भेज सकता है। आपको उनका स्वागत करना चाहिए और उन्हें ग्रहण करना चाहिए।

- आत्मिक तौर पर शिक्षा देना (मेन्टरींग)
- अवसर तैयार करें, और लोगों को ज़िम्मेदारी स्वीकार करने, सीखने और बढ़ने के लिए समय दें। जब वे सेवकाई करते हैं, तब उन्हें प्रशिक्षित करें।
- उत्तम प्रशासनिक सहायता कर्मचारी
- उत्तम कलीसियाई प्रबंधन पद्धति अपनाएं

स्नायु तन्त्रः बल और गतिशीलता

हर एक सेवक बने इस बात का ध्यान रखते हुए शरीर में बल, हरकत और गति का ध्यान रखें।

विश्वासियों को सुसज्जित करना कई प्रक्रियाओं से हो सकता है। कुंजी है इसे दृढ़ बनाए रखना।

- प्रशिक्षण देना, शिक्षा देना (मेन्टरींग) और छोटे समूह के अगुवों को कार्य के लिए मुक्त करना
- पुलपिट से उद्देश्यपूर्ण शिक्षा और प्रचार
- प्रत्येक को सेवा करने का अवसर
- लोगों को तैयार करने और सक्रिय बनाने हेतु नियमित कार्यक्रम, सप्ताह के अंत में प्रशिक्षण शालाएं

पाचन तन्त्रः मज़बूत पोषण

वचन की मज़बूत, अभिषिक्त और समयोचित सेवकाई का ध्यान रखें ताकि लोग ठोस आत्मिक आकार को लेकर उसका पाचन और अवशोषण कर सकें।

- पुलपिट से वचन की लगातार मज़बूत सेवकाई
- लोगों को सीखे के लिए अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराएं
- लोगों को अन्य सेवकों से सीखने और प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहन दें

- सीखने का अवसर तैयार करें
- छोटे समूहों के माध्यम से लागूकरण पर ज़ोर दें और उसे मज़बूत बनाएं

श्वसन प्रणालीः नूतन प्रेरणा

पवित्र आत्मा की लगातार, ताजी, श्वास, प्रेरणा और कार्य का ध्यान रखें।

- व्यक्तिगत और सामुहिक प्रार्थना और आराधना पर ज़ोर
- अधिक समय तक प्रार्थना और आराधना के लिए समय निर्धारित करें
- आत्मा की अगुवाई और कार्य के प्रति अधीन रहें
- आत्मिक वरदानों, भविष्यद्वाणी, अन्यान्य भाषाओं और अन्य बातों के उपयोग के लिए प्रोत्साहन दें

तन्त्रिका तन्त्रः संवेदनशीलता और प्रतिक्रिया

स्थानीय मंडली में क्या हो रहा है इस विषय में संवेदनशीलता और समझन का ध्यान रखें औ समय पर प्रतिक्रिया प्रदान करें।

उदाहरण, प्रार्थना के साथ और बाइबल की शिक्षा के साथ शैतान के किसी कार्य (निंदा की लहर) को विफल करना।

- ऐसी प्रक्रियाओं का निर्माण करना जिससे लोग सीधे अगुवों को जानकारी दे सकें।
- छोटे समूह के अगुवों द्वारा नियमित रिपोर्ट
- स्थानीय कलीसियाई मंडली में आप जो कुछ देखते और सुनते हैं उनके प्रति संवेदनशील रहें ताकि आप तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें
- तुरंत कार्यवाही करें
- पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील रहें जो आवश्यकता पड़ने पर तुम्हें सतर्क कर सके

हारमोन प्रणालीः साधारण नियंत्रण

समय पर दर्शन, सेवकाई के मूल्यों, टीम कार्यों और कलीसिया की संस्द्भति आदि बातों का स्मरण दिलाएं, जैसे, सृजनशीलता, समकालीन होना, लोगों को समर्थ बनाना, आत्मिक शिक्षा प्रदान करना (मेन्टरिंग) आदि। यद्यपि ये हारमोन कम प्रमाण में होते हैं, फिर भी वे रासायनिक नियंत्रण संस्थान के रूप में कार्य करते हुए वृद्धि, स्वास्थ्य और संतुलन को प्रेरित करते हैं।

- इन पर आवश्यकता से अधिक ज़ोर न देते हुए, समय समय पर मंच और अन्य माध्यमों से, जैसे, ब्रोशर, वेबसाईट, विडियो घोषणाएं, लोगों को स्मरण दिलाते रहें।

मलोत्सर्ग संस्थानः गंदगी दूर करना

इस बात का ध्यान रखें कि कलीसिया प्रभावी रूप से व्यक्तिगत् एवं सामुहिक तौर पर अस्वस्थ और हानिकारक वस्तुओं का निष्कासन करे।

- लोगों को यह सिखाएं कि बकवास, निंदा, फूट, कलह, प्रतिस्पर्धा, स्वार्थपूर्ण उद्देश्य, खुद को बढ़ावा देना, और इस प्रकार की बातें गलत हैं, और स्थानीय कलीसिया की मण्डली में नहीं होनी चाहिए।
- प्रार्थना, पश्चाताप, और सहभागिता के समयों के माध्यमों से स्थानीय कलीसियाई मण्डली से नियमित रूप से इन बातों का निकास करें।

प्रजनन प्रणालीः लगातार संख्या वृद्धि

इस बात का ध्यान रखें कि व्यक्ति और स्थानीय कलीसिया आत्माओं को जीतने, शिष्यता प्रदान करने, कलीसियाओं का रोपण करने आदि को जन्म देती रहे।

- लोगों को आत्माओं को जीतने, मिशन और शिष्यता के लिए लोगों को प्रोत्साहित करें और इन बातों के लिए उनका उपयोग करें।
- स्थानीय और दूर के स्थानों में विभिन्न प्रकार के आऊटरीच अगुवाई और प्रोत्साहन प्रदान करें।

- कलीसिया स्थापित और मिशन कार्यों के लिए लोगों को तैयार कर भेजें।

स्थानीय कलीसिया की सेवकाइयां और मिनिस्ट्री टीमें

ऑल पीपल्स चर्च में, हम लोगों को स्वयंसेवकों के रूप में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। हमारे पास पूर्णकालीन वेतन प्राप्त कर्मचारी बड़ी संख्या में हैं, उसके बावजूद हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो अपना सारा समय कुछ बातों के लिए दे सकें, हमारे पास स्वयंसेवकों के रूप में कार्य करने वाले लोग बड़ी संख्या में हैं। हम लोगों को टीमों में संगठित करते हैं जो विशिष्ट कलीसिया की सेवकाइयों में सेवा करती हैं। टीम सेवकाई और टीम कार्य पर हम ज़ोर देते हैं। हर एक टीम के पास एक टीम अगुवा होता है, जो उस टीम की देखरेख करता है।

मिनिस्ट्री टीमें सम्बंधों को बनाने, समाज का विकास करने और आत्मिक रीति से एक दूसरे की सहायता करने हेतु सहायक होती है। लोग एक साथ कार्य करते हैं, अतः वे नियमित रूप से और बार बार एक दूसरे के साथ वार्तालाप और बातचीत करते हैं। हम टीमों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे न केवल अपने कामों को करें, बल्कि प्रार्थना और आत्मिक महत्व के साथ भी उसे करें। अतः सेवकाई की टीमें सेवकाई भी करती हैं और वास्तव में आत्मिक परिपोषण का स्थान बन जाती हैं।

कुछ टीमों को अन्य टीमों की तुलना में अधिक प्रशिक्षण की ज़रूरत होती है। इसलिए हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि पर्याप्त प्रशिक्षण और निरंतर योगदान दिया जाए। जो कुछ भी हम करते हैं उसमें हम उत्तमता पर भी ज़ोर देते हैं, और इसलिए लगातार फीड बैक प्रदान करते हैं ताकि जो कुछ भी किया जा रहा है, उसमें सुधार लाया जा सके।

हमारे पास विभिन्न प्रकार की स्थानीक सेवकाइयां और टीमें हैं जो उस क्षेत्र में कार्य करती हैः

- सेवकाइयां और टीमें जो सेवाकार्यों पर केन्द्रित किया गया है।
- सेवकाइयां और टीमें जो उन ज़रूरतों पर केन्द्रित हैं जिन्हें महसूस किया गया है।
- सेवकाइयां और टीमें जो विशिष्ट घटनाओं पर केन्द्रित हैं।

नीचे कुछ सेवकाई के क्षेत्र दिए गए हैं जिन्हें हम सम्बोधित कर रहे हैं और कुछ जिन पर हम समय के साथ ध्यान देना चाहेंगे। इनमें से कुछ क्षेत्रों में हमारे पास सुविकसित टीमें हैं और अन्य कुछ सेवा क्षेत्रों में, अभी ट ीमों का विकास हो रहा है। कुछ नये सेवा क्षेत्र हो सकते हैं और जो भविष्य में उत्पन्न होंगे और उन सेवकाई के क्षेत्रों में सेवा करने हेतु हम और एक टीम की सम्भवतः स्थापना करेंगे।

कलीसिया की सेवाएं सेवा कार्यों पर केन्द्रित

- आराधना टीम
- प्रार्थना और मध्यस्थी टीम
- जीवन समूह, अल्फा समूह
- मिशन टीम
- करतब करने वाली कला टीमें
- स्कूल आऊटरीच टीमें (उत्प्रेरक)
- कॉलेज आऊटरीच टीमें (कैम्पस एलेवेट्स)
- परामर्श (क्रिसॅलिस परामर्श सेवा)
- सदस्यों की निगरानी
- संचार माध्यम
- टेलीविजन
- इंटरनेट

- ◦ पुस्तक प्रकाशन सुसमाचारीय टीमें
- ◦ चंगाई और छुटकारा टीमें
- ◦ भविष्यद्वक्ता की सेवकाई टीमें
- ◦ बाज़ार के स्थानों में सेवकाई
- ◦ सामाजिक कार्य टीमें
- ◦ विपदा राहत टीमें (कारूण्यालय)
- ◦ चंगाई और पुनर्स्थापन
- सभी उम्र के लोग टीमों में एक साथ मिलकर कार्य करते हैं।
- हम कई टीमें रख सकते हैं (उदाहरण, कई सुसमाचार टीमें, कई प्रार्थना टीमें, आदि) और इस कारण हम और लोगों को अगुवे के पदों में कार्य करने का अवसर प्रदान करते हैं।
- जहां उचित हो वहां हम हर एक सेवाकार्य के लिए औपचारिक या अनौपचारिक अंतःकार्य प्रशिक्षण (ऑन द जॉब) प्रदान करते हैं।
- लोग किसी सामान्य आत्मिक दिलचस्पी या वरदान के कारण उस सेवकाई के क्षेत्र में जुड़ जाते हैं।

कलीसिया की सेवाएं उम्र और महसूस की गई ज़रूरतों पर केन्द्रित

- ◦ बच्चों की कलीसिया
- ◦ युवा सेवकाई
- ◦ युवा प्रौढ़
- ◦ वैवाहिक जीवन समृद्ध बनाना पुरुषों की सेवकाई
- ◦ स्त्रियों की सेवकाई
- ◦ माताएं
- ◦ तलाकशुदा या परित्यक्त दम्पत्ति

- जिस ज़रूरत को महसूस किया गया है, उसे सीधे सम्बोधित करना।
- लोग इसलिए बेहतर रीति से जुड़ जाते हैं क्योंकि वे ऐसे लोगों के साथ होते हैं जिनके साथ उम्र, जीवन की अवस्था और सामान्य समस्याओं के कारण वे समानता महसूस करते हैं।

कलीसिया की सेवाएं विशिष्ट घटनाओं पर केन्द्रित

रविवार की आराधना और अन्य सभाएं (इसका ध्यान रखने के लिए कई छोटी टीमें तैयार की गई हैं)

- परिवहन
- आतिथ्य और स्वागत करने वाले
- गाड़ियों की रखने की व्यवस्था
- ध्वनि और मंच
- स्थान का रखरखाव
- रिसोर्स टेबल
- सूचना टेबल
- स्वयंसेवक–पहली बार आने वालों का स्वागत, भेंट देना, प्रभु भोज रविवार की कलीसिया में घोषणा
- विज्युएल एड्स और प्रस्तुति
- ऑडियो और विडियो रेकॉर्डिंग, लाईव्ह स्ट्रीमिंग
- अतिथियों का स्वागत कक्ष
- दान इकट्ठा करना और रिकार्ड रखना
- जवानों का कैम्प
- चर्च कैम्प

रचना बनाम स्वाभाविकता

जकर्याह 4:6

तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, जरुब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन हैः न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओ के यहोवा का यही वचन है।

रचना प्रदान करना महत्वपूर्ण है, परंतु साथ ही साथ जो कुछ भी हम करते हैं उसमें हमें पवित्र आत्मा से जन्मी हुई सहजता को प्रोत्साहन देना चाहिए। स्थानीय कलीसिया का निर्माण मुख्य रूप से एक आत्मिक कार्य है और केवल प्रबंधन और नेतृत्व कौशल का अभ्यास नहीं। हमें हर समय पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील, निर्भर और उसकी आधीनता में रहना चाहिए।

जिस रचना और संगठन को हम अमल में लाते हैं उसका जन्म आत्मा से, उसके मार्गदर्शन और नेतृत्व की आधीनता में होना चाहिए। हमें प्रार्थना और पवित्र आत्मा द्वारा दी गई बुद्धि से इन्हें मज़बूत बनाने की ज़रूरत है।

पवित्र आत्मा स्थानीय कलीसिया में काम करने हेतु लोगों के जीवन पर संचरण करेगा। वह कुछ लोगों को कुछ निश्चित सेवकाई करने हेतु, कुछ निश्चित लोगों के पास जाने आदि के लिए प्रेरित कर सकता है। हो सकता है कि ये हमारे द्वारा निर्धारित रचना के अनुकूल न हो। फिर भी, यदि यह आत्मा की ओर से है, तो हमें उसे बुझाना नहीं चाहिए। बल्कि, पासबान, अगुवे के रूप में हमें इस बात के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। सहजता को प्रोत्साहन दें। पवित्र आत्मा को उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करने दें! हमारा संगठन या रचना किसी रीति से लोगों को पवित्र आत्मा उनके द्वारा और उनमें जो करने की इच्छा रखता है, उसमें आगे बढ़ने से रोकने न पाए।

24

विश्वासियों का पोषण और परिशिक्षण

इफिसियों 4:11-13
11 और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया,
12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए,
13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।

स्थानीय कलीसिया में पासबान/अगुवे के लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य

क्षेत्र है सेवा के कार्य के लिए विश्वासियों का पोषण करना और उन्हें तैयार करना। विश्वासियों की परवरिश करके उन्हें नए विश्वासी से शिष्य बनाना है, और उसके बाद उन्हें परमेश्वर के भवन में सेवक बनाना है। उनमें से कुछ लोग और आगे बढ़ेंगे और स्थानीय कलीसिया में अगुवे बनेंगे। इस अध्याय में हम परमेश्वर के लोगों को तैयार करने और उनका परिपोषण करने हेतु कुछ सरल व्यवहारिक मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं।

हर एक विश्वासी को सेवक बनने हेतु तैयार करें

हमें हर एक विश्वासी को भविष्य के परमेश्वर के सेवक के रूप में देखने की ज़रूरत है। सेवक से, हमारा अर्थ यह नहीं है कि उन्हें अपनी नौकरी त्यागना होगा और पूर्णकालीन सेवक बनना होगा। हमारा उद्देश्य यह है कि वे किसी न किसी रीति से प्रभु यीशु मसीह की सेवा करें और अपनी बुलाहट और वरदानों के क्षेत्र में फलवन्त हों।

हमें निरंतर इस बात पर ज़ोर देना है कि प्रत्येक विश्वासी सेवक है। हमें प्रत्येक को सेवा करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। हमें अपनी

व्यक्तिगत असुरक्षाओं को हटाकर रखना है और परमेश्वर के वचन का पालन करना है जो हमें इसलिए मिला है ताकि हम पवित्र जनों को सेवा के कार्य के तैयार करें।

विश्वासियों को अपने वरदान, स्थान और कर्तव्यों को खोजने में सहायता करें

हर एक विश्वासी को परमेश्वर द्वारा एक वरदान दिया गया है। उसके अलावा प्रभु के पास एक स्थान (भूमिका) और कार्य है। हमें लोगों को उनके वरदानों को ढूंढ़ने और उनके स्थान में आगे बढ़ने और उनके कर्तव्यों को पूरा करने में सहायता करना है। यह एक यात्रा है और मात्र एक कदम वाली बात नहीं। इसलिए हमें इस यात्रा को पूरा करने में धीरज के साथ लोगों की सहायता करने की ज़रूरत है। पासबान/अगुवा होने के नाते, हम कई रीति से लोगों की सहायता कर सकते हैं। कभी कभी हम पवित्र आत्मा से व्यक्ति के लिए परमेश्वर की योजना और क्षमता के विषय में सुनते हैं। कभी कभी उन्हें विभिन्न कार्य करने की कोशिश करने में सहायता करने के द्वारा, लोग अंततः एक या दो बार खोज निकालेंगे जो वे कर सकते हैं। कुछ लोग पहले से अपने वरदानों को जानते हैं और वे सेवा करना आरम्भ करने के अवसरों का इंतजार कर रहे हैं। कुछ लोग डरते और हिचकिचाते हैं और उन्हें भय में से बाहर निकलने हेतु प्रोत्साहन देने की ज़रूरत है।

अपना स्थान और कर्तव्य खोजते समय अपनी यात्रा में लोग गलती कर सकते हैं। वे विभिन्न बातों का प्रयास कर सकते हैं और कुछ में फलवंत हो सकते हैं और कुछ में नहीं। कुछ लोग उस स्थान में पहुंचने से पहले जहां पर परमेश्वर उनसे सेवा करवाना चाहता है, विभिन्न प्रकार के अनेक परिवर्तनों से होकर गुज़रते हैं। कुछ लोग मात्र कुछ समय के लिए सेवा करते हैं और आगे बढ़ते हैं। लोग जब यह यात्रा करते हैं, तब कई बातें घटित हो सकती हैं। परंतु हम लोग उनकी सहायता करते हुए उनके साथ ये यात्रा में हिस्सा लेते हैं, उन्हें हमेशा प्रोत्साहन देते हैं।

विश्वासियों को उनके जीवन के कार्य को खोज निकालने में सहायता करें

परमेश्वर के पास हम में से हर एक के लिए योजना और उद्देश्य है। उसने हमें एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए तैयार किया है। उसने भले कामों की योजना बनाई है जिन्हें वह चाहता है कि हम पूरा करें। पासबान/अगुवा होने के नाते हमारा लक्ष्य परमेश्वर के लोगों को सुसज्जित करना है ताकि वे उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को खोज सकें और पूरा कर सकें। इसलिए हमें परमेश्वर के लोगों को सिखाने की और उन्हें यह समझ देने की ज़रूरत है कि परमेश्वर के पास एक योजना और उद्देश्य है। उसके बाद हम उन्हें इस समझ में से लेकर जाते हैं कि उनके लिए परमेश्वर के जीवन कार्य को कैसे खोजें और उसमें प्रवेश करने हेतु उन्हें किस प्रकार तैयारी करने की ज़रूरत है। जब हम ऐसा करते हैं, तब मसीह की देह का निर्माण होगा और वह मज़बूत बनेगी।

सेवा के अवसर प्रदान करें और नई सेवकाइयों को आरम्भ करें

विश्वासियों को स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत सेवकाई के अवसर सौंपे जाने चाहिए। स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत आने वाली अधिकतर सेवकाइयां तब आरभ हुई जब हमने ऐसे लोगों को खोज निकाला जिन्होंने किसी सेवा क्षेत्र में वरदान और बुलाहट पाई है। कुछ मामलों में, भले ही आरम्भ में हमने किसी विशिष्ट सेवकाई में जाने की योजना नहीं बनाई थी, फिर भी जब हमने देखा कि परमेश्वर लोगों को उस वरदान और बुलाहट के साथ खड़ा कर रहा है, तब हमने उनके वरदानों का उपयोग करने हेतु उन्हें अवसर और प्रोत्साहन प्रदान किया और एक सेवकाई का जन्म हुआ।

कुछ विश्वासी बाज़ार के स्थान में भी सेवक बनेंगे

कुछ विश्वासियों के लिए उनकी सेवकाई मात्र स्थानीय कलीसिया के अंतर्गत नहीं होगी, परंतु वे पूर्ण रूप से मुख्य रूप से स्थानीय कलीसिया के बाहर सेवा कर सकते हैं, जैसे कारोबार के क्षेत्र में, प्रशासन, शिक्षा, मनोरंजन, कला, संचार माध्यम, खेलकूद आदि। वे बाज़ार के स्थानों में सेवक बनेंगे।

वे परमेश्वर के राज्य के लिए लोगों को प्रभावित करने हेतु नये तरीके ले आ सकते हैं। वे बाज़ार के स्थान में ऐसे क्षेत्रों में जा सकते हैं जहां अन्य प्रचारकों को प्रवेश नहीं होगा। वे प्रार्थना समूह आरम्भ कर सकते हैं, बाज़ार के स्थान में बाइबल कक्षाओं और सेवकाई के अन्य स्वरूपों को आरम्भ कर सकते हैं। पासबान/अगुवे होने के नाते, हमें आवश्यकता पड़ने पर प्रोत्साहन देना है, समर्थन करना है और मार्गदर्शन देना ताकि जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए दिया है उसमें वे फलवंत हो सकें।

विश्वासियों को अलौकिक बातों में सुसज्जित करें

विश्वासियों को पवित्र आत्मा की सामर्थ में चलने हेतु, अलौकिक सामर्थ प्रगट करने हेतु, आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ने हेतु, चिन्ह, अद्‌भुत कार्य, चमत्कार करने और अंधकार के कामों को नाश करने हेतु समर्थ बनाया जाए। हमें अपनी स्थानीय कलीसियाओं को छोटे बच्चों की परवरिश करने वाले बालगृहों से बदलकर ऐसे केन्द्र बनाना है, जो विश्वासियों को परमेश्वर की सामर्थ से सुसज्जित कर प्रभु यीशु मसीह के लिए संसार को प्रभावित करने हेतु भेज सकें।

नेतृत्व प्रदान करें और आवश्यकता पड़ने पर छोड़ दें

पासबान/अगुवा होने के नाते हम में बुद्धिमानी और परख के साथ मार्गदर्शन करने, रक्षा करने, और शासन करने की शिक्षा पाना है। हमें यह जानने की ज़रूरत है कि कब मार्गदर्शन करें और कब पीछे हटें और लोगों को स्वयं ही खोजने दें। हमें यह जानने की ज़रूरत है कि लोगों को गलतियां करने से रोकने के लिए कब उनकी रक्षा करें और कब उन्हें स्वयं प्रयोग करने दें और अपनी गलतियों से सीखने दें। हमें

यह जानने की ज़रूरत है कि हमें कब शासन करना है और कब स्पष्ट निर्देश देना है और कब लोगों को अपने निर्णय लेकर स्वतंत्रता का आनन्द उठाने देना है। हमें अगुवाई तो करना है, परंतु हमारा नेतृत्व उनके विकास में बाधा न बनने पाए। हमें यह भी समझना है कि ऐसा समय आएगा जब

हमें छोड़ देना है, उकाब अपने घोंसले से उड़ने के तैयार है और उन्हें ऐसा करने की आज़ादी होनी चाहिए। केवल तब, संसार परमेश्वर के राज्य से प्रभावित होगा।

(ऑल पीपल्स चर्च द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पुस्तक–संतों को तैयार करें पढ़ें।)

25

परिपोषण करना और अगुवों को तैयार करना

अंततः, हमें हमारे साथ कई अगुवों को खड़ा करने की आवश्यकता है। जो विश्वासी उनके सेवा के कार्य को करने में विश्वासयोग्य हैं, उन्हें अब अगुवे बनाना है। अगुवों को तैयार करने के विषय में यहां पर कुछ व्यवहारिक मार्गदर्शन है।

संभवनीय अगुवों में किस बात की अपेक्षा करें

हमें संभवनीय अगुवों में अनेक महत्वपूर्ण गुणों को खोजने की आवश्यकता है।

- ***व्यक्तिगत जीवन का उदाहरणः*** जो लोग प्रतिदिन अपने विश्वास के अनुसार जीवन बिताते हैं। परमेश्वर के साथ स्थिर व्यक्तिगत जीवन से अधिक महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है जो ईश्वरीय जीवन और उत्तम गवाही के द्वारा प्रगट होता है।
- ***आत्मिक और भावनात्मक परिपक्वताः*** अगुवों को परिपक्व होने की आवश्यकता है। जो लोग खुद की और दूसरों की आत्मिक रीति से और भावनात्मक तरीके से देखभाल करना जानते हैं। वे लोकप्रियता, और खुद की तरक्की और अन्य बचकानी बातों से आगे बढ़ चुके हों।
- ***पंक्तिबद्धता (अनुरूपता):*** जो लोग स्थानीय कलीसिया के दर्शन, अभिदिशा, शिक्षा, और मानकों के साथ पंक्तिबद्ध हुए हैं। ऐसा अगुवा पाना खतरनाक जो लोगों को उस दिशा में ले जाए जहां आप उन्हें भेजना नहीं चाहते।
- ***ज़िम्मेदारः*** जो लोग समर्पण और गंभीरता के भाव से अगुवे की भूमिका को ग्रहण करेंगे और उसे साधारण नहीं समझेंगे।
- ***निर्भरताः*** वे लोग जिन पर आप हर समय सौ प्रतिशत निर्भर रह सकते हैं। आप जानते हैं कि वे उन्हें सौंपा गया काम पूरा करेंगे, वे

व्यक्तिगत तौर पर अतिरिक्त मील चलकर जाएंगे और किसी प्रकार का बहाना नहीं बनाएंगे।

- ***उत्तमता:*** वे लोग जिन्हें कुछ कार्य करने का सौंपा गया है उसमें वे अपना सर्वोत्तम और अधिक से अधिक योगदान देंगे। आप जानते हैं कि वे काफी परिश्रम करते हैं, और उत्तमता की ओर बढ़ते हैं।
- ***निरंतर वृद्धि:*** लोग जो स्वयं अपने व्यक्तिगत जीवन के सभी पहलूओं में बढ़ते जा रहे हैं। अगुवे को नये स्तर की ओर बढ़ते रहना चाहिए। तभी वह दूसरों को ऊंचे स्तर पर ले जा सकता है।
- ***कोई व्यक्तिगत कार्यसूची नहीं:*** जिन लोगों के पास उनकी कोई अपनी कार्य-सूची नहीं है वे दूसरों के सामने आने के लिए अगुवा बनने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, ताकि वे अपने हितों के लिए उसका उपयोग कर सकें। उन्हें ऐसी बातों से मुक्त होना चाहिए।
- ***वरदान और बुलाहट:*** वे लोग जिन्हें उस क्षेत्र के लिए उचित वरदान और बुलाहट प्राप्त है जिसमें वे अगुवों के रूप में नियुक्त किए जाएंगे।
- ***उत्तम अनुयायी:*** अगुवे उत्तम अनुयायी हो सकते हैं। वे निर्देशों को लेकर अपने "गंदे काम" कर सकते हैं, अन्य अगुवों की अधीनता में होकर सेवा करते समय वे अत्यंत नीचले स्तर पर भी जाकर काम करते हैं क्योंकि वे अपनी सहायता के मूल्य को जानते हैं।
- ***उत्तम परवरिश करने वाले:*** जिन लोगों के पास अन्य अगुवों का परिपोषण करने वाला ह्रदय हो। अंततः, एक अगुवे को अन्य अगुवों को तैयार करना चाहिए।

उनकी वृद्धि के लिए उनका पोषण करना

पासबान/अगुवा होने के नाते, हम अन्य अगुवों का परिपोषण करने और उनकी उन्नति को प्रोत्साहित करने हेतु ज़िम्मेदार हैं। अगुवे का विकास कई अवस्थाओं से होकर पूरा होता है।

तैयारी की अवस्था: प्रारम्भिक समय में आप अपने दर्शन को बांटते हैं, सेवकाई के निश्चित क्षेत्र में आपने जो कुछ किया है और किस उत्तम रीति से आप उस ओर बढ़ सकते हैं, उस विषय में बताते हैं। आप चरित्र, ज़िम्मेदारी, और अन्य बातों पर ज़ोर देते हैं, जिसकी आप उस अगुवे से अपेक्षा करते हैं।

प्रारंभिक अवस्था: सही समय में, आप लोगों को उनकी अगुवे की भूमिका में कदम रखने की अनुमति देते हैं। आप प्रारम्भ में आवश्यक मार्गदर्शन, प्रशिक्षण, तैयार करने और अभिदिशा प्रदान करने में शामिल होते हैं। आप दूसरों को ढूंढ़ने में उनकी सहायता करते हैं जो उनके साथ काम कर सकें और उनकी टीम बनाने में उनकी सहायता कर सकें। आरम्भ में टीम के पास यह चुनौतियां होती हैं कि वे एक दूसरे के साथ काम करना सीखें। कभी कभी ऐसा समय आएगा जब आपको उनमें सुधार लाना होगा और उन्हें फिर सही मार्ग पर लाना होगा।

स्थायी होने की अवस्था: धीरे धीरे अगुवा अपनी भूमिका में आगे बढ़ने लगता है और उन्नति करता है। अगुवा अपनी टीम के साथ अपने निर्णय लेने की योग्यता रखता है। फिर आप एक कदम पीछे हट जाते हैं और उन्हें आगे बढ़ने देते हैं। वे अपनी सेवकाई के क्षेत्र में आरामदेह महसूस करने लगते हैं। इस समय के दौरान आपको नियमित जानकारी प्राप्त करते रहें, और आवश्यकता पड़ने पर अपना योगदान दें, चाहे मार्गदर्शन हो या सुधार।

उन्नति की अवस्था: जल्द ही अगुवा अपने कार्य को नये स्तर की ओर ले जाता है, और अपने स्तर से आगे बढ़ जाता है। उनकी टीम एक साथ काम करने लगी है। आप उनकी उन्नति पर ध्यान रखते हैं, परंतु आपका सहभाग कम है। आप ऊंचे स्तर का दर्शन और अभिदिशा प्रदान कर रहे हैं, जबकि अगुवा अब आपके द्वारा निर्धारित ढांचे में सारी बातों को आगे बढ़ा रहा है। इस अवस्था के दौरान आवश्यकता पड़ने पर आप केवल आवश्यक जानकारी (सुझाव आदि) देते हैं।

परिपक्वता की अवस्था: कुछ समय में अगुवा अपनी टीम के अन्य अगुवों को उठाने लगता है और उनकी ज़िम्मेदारी के कार्यों का प्रतिनिधित्व करने

हेतु उन्हें प्रोत्साहित करता है। सेवकाई अब नये स्तर की ओर बढ़ना आरम्भ होती है क्योंकि कई लोग और उत्तमता के साथ काम करने लगे हैं। अब आप उस अगुवे से अन्य स्थान में और बड़ी भूमिका के विषय में बात करने लगते हैं, शायद सेवकाई का नया क्षेत्र, या सेवकाई के उसी क्षेत्र में ऊंचे स्तर की ओर ऊपर चढ़ते जाना।

परिवर्तन की अवस्था: कुछ समय के बाद, अगुवा अपनी भूमिका में अतिरिक्त हो जाता है क्योंकि उनकी टीम के कई लोग वास्तव में उस सेवकाई को आगे बढ़ा सकते हैं। अब आप अगुवे की सहायता करें कि वह नई भूमिका की ओर बढ़े जो आप उनके लिए तैयार कर रहे हैं, और किसी और को उनके वर्तमान अगुवे की भूमिका में प्रवेश करने दें।

उन्नति के लिए अवसर तैयार करना

अगुवों को तैयार करने का एक उत्तम तरीका यह है कि उन्हें अगुवा बनने के लिए अवसर निर्माण करना। इसलिए अनुमति देने से न डरें और लोगों को उनके अगुवे की भूमिका में स्थान दें। कई लोग हिचकिचाएंगे। परंतु उन्हें आगे बढ़ने हेतु आवश्यक प्रोत्साहन और सहारा और सहायता प्रदान करें।

दूसरा महत्वपूर्ण तरीका है, लोगों को आपके साथ साथ यात्रा करने दें, और सेवा और सेवकाई करने दें। ऐसा करते हुए लोग आपके जीवन के उदाहरण को देखेंगे कि आप कैसे आचरण करते हैं, कैसे बर्ताव करते हैं, आप कैसे सेवा करते हैं, आप मुश्किल परिस्थितियों से कैसे निपटते हैं। अगुवों को तैयार करने का यह सर्वोत्तम तरीका है। लोगों के लिए आपके साथ सेवा करने के अवसर तैयार करें। वे तुरंत बढ़ेंगे।

जानकारी (फीडबैक), प्रोत्साहन और सुधार

अगुवों की बढ़ौत्तरी के लिए और जो कुछ वे कर रहे हैं, उसमें उन्हें बेहतर बनाने हेतु फीडबैक, प्रोत्साहन और सुधार प्रदान करना आवश्यक है। यह सबकुछ प्रेम, प्रोत्साहन और सहायता के वातावरण में किया जाना चाहिए। यह सबकुछ यह जानते हुए करें कि हम अगुवे की और जिनकी हम सेवा

कर रहे हैं उन लोगों की भलाई, और परमेश्वर की महिमा चाहते हैं। यह ऐसा वातावरण है जहां मूल्यांकन करने हेतु और रचनात्मक सुझाव की आज़ादी है ताकि लोग जल्द ही उन्नति कर सकें। लोग भी यह जानकर सुरक्षित महसूस करते हैं कि गलतियां करना स्वीकारणीय है जब तक कि वे उन गलतियों से सीखते हैं और आगे बढ़ते हैं।

पौलुस और तीमुथियुस से सबक

प्रेरित पौलुस को लुस्त्रा में तीमुथियुस नाम का एक जवान व्यक्ति मिला (प्रेरितों के काम 16:1-3)। पौलुस ने तीमुथियुस को अपने साथ लिया,और समय के साथ अपने सहकर्मी के रूप में और जिस तरह से पौलुस सेवकाई करता था, उस तरह से सेवा का काम करने हेतु, उसका परिपोषण किया (1 कुरिन्थियों 16:10)। यहां पर कुछ मुख्य बातें बताई गई हैं जिस तरह से पौलुस ने तीमुथियुस के परिपोषण में सहायता की है।

- एक विशेष बंधनः पौलुस के पास तीमुथियुस के लिए हृदय था। वह तीमुथियुस को विश्वास में अपना पुत्र कहता था। वहां पर एक विशेष बंधन था।
- निकटता और पारदर्शिताः पौलुस तीमुथियुस को अपने साथ यात्रा पर ले जाता था और उसने उसे अपने जीवन को निकटता से देखने का उसे अवसर दिया। पौलुस के जीवन का अवलोकन कर तीमुथियुस ने बहुत लाभ पाया होगा।
- विशिष्ट बातें सिखाईः पौलुस ने तीमुथियुस को सेवकाई में विशिष्ट बातें सिखाई ताकि तीमुथियुस उन बातों को सीखा सके और कर सके।
- उसे प्रोत्साहन दिया और सुधार लायाः पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहन दिया और उसे सुधारा।
- कीमतों को स्पष्ट कियाः पौलुस ने तीमुथियुस को यह समझाया कि हमेशा ही प्रभु की सेवा करना आसान नहीं होता और उसे उसके लिए एक कीमत चुकता करना होगा।

- उसका अत्यंत आदर कियाः पौलुस तीमुथियुस के विषय में दूसरों के साथ उत्तम बातें करता था, उसने उसे अपना पुत्र कहा। पौलुस ने तीमुथियुस के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया मानो वह कुछ भी न हो या मात्र एक सामान्य सहायक हो।
- प्रतिनिधित ज़िम्मेदारीः पौलुस ने तीमुथियुस को अपने कुछ विशिष्ट कामों के लिए भेजा।
- सकारात्मक सिफारिशः पौलुस ने तीमुथियुस को जब बाहर भेजा, तब सम्पूर्ण हृदय से उसकी सिफारिश की।
- सेवकाई के लिए मुक्त कर दियाः जब समय आया, तब पौलुस ने तीमुथियुस को अपने कदमों पर खड़े रहने हेतु और स्वयं काम करने हेतु सेवकाई के लिए मुक्त कर दिया।

(पौलुस और तीमुथियुस के विषय में विस्तारपूर्वक अध्ययन के लिए, ऑल पीपल्स चर्च द्वारा प्रकाशित राज्य का निर्माण करने वाले इस पुस्तक का यह भाग पढ़ेंः अध्याय 7–राज्य की सेवा के लिए अगली पीढ़ी को तैयार करना।)

परिपोषण की प्रक्रिया को बढ़ाना

अगुवे नए अगुवों को बढ़ाने पाएं और नए अगुवे और अगुवों को बढ़ाने पाएं। ऐसी संस्द्भति का निर्माण करें जहां अगुवों को और अगुवों को तैयार करने हेतु प्रोत्साहन मिले।

सभी पांच प्रकार की सेवकाइयों का विकास करना

स्थानीय कलीसिया वह स्थान होना चाहिए जहां सब प्रकार की सेवकाइयों का जन्म हो और उन्हें प्रोत्साहन मिले। इसमें पांच प्रकार के सेवा वरदानों का पोषण शामिल हैः प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान या चरवाहा, शिक्षक और सुसमाचार प्रचारक।

पांच प्रकार के सेवकों की उन्नति एक प्रक्रिया है और केवल परमेश्वर की बुलाहट और नियुक्ति से होती है। स्थानीय कलीसिया को उस प्रकार का वातावरण प्रदान करने की ज़रूरत है जहां पांच प्रकार की सेवाओं में बुलाए गए सेवकों का विकास हो सके।

अन्य विश्वासपात्र सेवकों को आकर सेवा करने के लिए स्थानीय कलीसिया को खोलें। जब पांच प्रकार की सेवा में बुलाए गए सेवक आकर सेवा करते हैं, तब वे अपने वरदानों और अपने जीवन के अभिषेक को प्रदान कर सकते हैं (रोमियों 1:11)।

पासबान/अगुवा होने के नाते, आपको उन लोगों को पहचानने की आवश्यकता है जिन्हें परमेश्वर पांच प्रकार के सेवाकार्य के लिए बुला रहा है। उनके साथ साथ चलें और उनकी परवरिश करें। स्थानीय कलीसिया परवरिश करने का स्थान और ऐसा घर होना चाहिए जहां पर आकर वे ताज़गी पा सकते हैं।

सही समय में, पांच प्रकार के सेवा वरदानों को पाए हुए कई होंगे, जो स्थानीय कलीसिया में उठ खड़े होंगे। कुछ लोग इसलिए भेजे जाएंगे ताकि वे अपनी कलीसिया और सेवकाई स्थापित कर सकें। अन्य लोग स्थानीय कलीसियाई मंडली की और उसके बाहर सेवा करने तैयार हो सकते हैं। वरिष्ठ पासबान/अगुवा अगुवाई करना जारी रखता है और देखरेख प्रदान करता है ताकि स्थानीय कलीसिया में सब प्रकार के सेवाकार्यों का उदय हो सके, उनका पोषण हो सके और उन्हें सेवा के लिए मुक्त किया जा सके।

26

कलीसियाई प्रशासन

उत्तम और स्वस्थ स्थानीय कलीसियाई सेवकाई के लिए उचित प्रशासन अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रशासन रीढ़ की हड्डी के समान है जो छिपा रहता है, परंतु स्थानीय कलीसियाई सेवकाई को बल देने और उसके उचित कार्य संचालन के लिए आवश्यक होता है।

हम में से कुछ लोग यह सोचकर उत्तम प्रशासन से बचते हैं कि ऐसा करना शरीर का काम है। परंतु पवित्र शास्त्र में हम 1 कुरिन्थियों 12:28 में *"उपकार करने वाले और प्रधान"* (सहायता और प्रशासन प्रदान करने वाले) को सेवा कार्य के रूप में सूचीबद्ध किया गया है और इस कारण मसीह की देह में यह एक उचित बुलाहट है जिसके लिए कुछ लोगों को वरदान, बुलाहट और अभिषेक प्रदान किया गया है। आगे जिस परमेश्वर की हम सेवा करते हैं वह परमेश्वर योजना, सुव्यवस्था, और नियोजन का परमेश्वर है। परमेश्वर स्वच्छंदता से, मनमौजी तरीके से, बिना किसी नियोजन या बिना पूर्व ज्ञान के कार्य नहीं करता। बल्कि हम देखते हैं कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर को सुव्यवस्था, नियोजन, योजना के परमेश्वर के रूप में प्रगट करता है, जो पूर्व ज्ञान के साथ काम करता है और समयोचित तरीके से काम करता है और सारी बातों को सही समय में पूरा करता है।

यहां पर कुछ व्यवहारिक बातें बताई गई हैं जिनका आप अपनी स्थानीय कलीसिया में उपयोग कर सकते हैं।

अपनी कलीसिया के लिए एक योजना (प्लान) बनाए

प्रार्थनापूर्वक पवित्र आत्मा की सुनें और स्थानीय कलीसियाई मण्डली के रूप में जो कार्य करने हेतु परमेश्वर ने आपको बुलाया है, उसके लिए योजना तैयार करें।

- **दर्शन और मिशनः** परमेश्वर ने आपको दर्शन और उद्देश्य दिया है उसे स्पष्ट रूप से परिभाषित करें।
- **लक्ष्य तैयार करें:** आप जिन लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ रहे हैं उन विशिष्ट लक्ष्यों को निवेदन करें। इन समय समय पर सुधार लाया जा सकता है।
- **रणनीतिपूर्ण सेवकाई की योजना तैयार करें:** यह बताने के लिए कि आप इन लक्ष्यों को किस प्रकार हासिल करने वाले हैं, एक योजना तैयार करें। इसमें भी समय के साथ और जैसे जैसे काम आगे बढ़ता है आप संशोधन कर सकते हैं।
- **आर्थिक नियोजन/बजट तैयार करनाः** परमेश्वर आपसे जो कुछ करवाना चाहता है, उसे पूरा करने हेतु आवश्यक पैसों के विषय में योजना बनाएं। उत्तम भण्डारी बनें और धन का बुद्धिमानी से उपयोग करें।

परमेश्वर के लिए विस्फोटक शक्ति बनने हेतु सब बातों का संगठन करें

उचित प्रशासन और संगठन न केवल कानूनी और व्यवहारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सेवकाई के प्रभाव को बढ़ाने हेतु भी।

- **कानूनी संस्था तैयार करें:** हमें स्थानीय शासकों के प्रति उत्तरदायी रहना है। अतः हमारा उचित पंजीकृत ट्रस्ट या संस्था होनी चाहिए।
- **संगठनात्मक रचना तैयार करें:** संगठनात्मक रचना को परिभाषित करें जो आपकी स्थानीय कलीसियाई सेवकाई के लिए उत्तम है। आप इस संगठनात्मक रचना को समय के साथ बदल सकते हैं और उसमें सुधार ला सकते हैं। सरल से आरम्भ करें और उसे वहां से बढ़ने दें। संगठनात्मक रचना को अधिक से अधिक सरल बनाएं रखें।
- **प्रणालियां, लोग, प्रक्रियाएंः** संगठनात्मक रचना के अंतर्गत प्रणालियों को (जिस तरह से आप काम करना चाहते हैं) लोग (यह करने के लिए कौन ज़िम्मेदार है) और प्रक्रियाओं (इन कामों को कैसे पूरा करना है) इसकी स्पष्ट परिभाषा तैयार करें।

- **कार्य/भूमिका विवरण तैयार करें:** आपके पास जब विभिन्न सेवकाई की भूमिका के लिए विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं, तब आप स्पष्ट रूप से लिखकर निकालें कि उन अगुवों की भूमिका से क्या अपेक्षित है। पूर्णकालीन कर्मचारी के लिए हर एक कर्मचारी की भूमिका का विवरण हो जिसमें उनकी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र का, उन्हें क्या करना है, और उनके काम को करने हेतु अन्य सूचनाओं का विवरण हो।

- **संगठनात्मक निर्देशों और नीतियों को स्थापित करें:** निर्देशों और नीतियों को लिखें कि संस्था किस प्रकार सेवकाई के विभिन्न कार्यक्षेत्रों का संचालन करेगीः जो लोग पूर्णकालीन सेवा में हैं उनके लिए कर्मचारी निर्देशिका; जो स्वयंसेवकों के रूप में सेवा कर रहे हैं उनके लिए स्वयंसेवकों की निर्देशिका; सेवकाई में नियमित रूप से होने वाली विभिन्न बातों के लिए नीतियां; पैसा–पैसे को खर्च के लिए कैसे मंजूर किया जाएगा, विभिन्न कामों के लिए कितना खर्च किया जाना चाहिए, आदि।

- **नियोजन और कार्य-निष्पादन सर्वेक्षण:** सभी सेवकाई के अगुवों को और कर्मचारियों को प्रोत्साहन दें कि वे अपने कार्यक्षेत्र और सेवकाई के लिए वार्षिक योजना तैयार करें। समयानुसार (हर छः महीने) उन्नति का पुनरावलोकन करें। कलीसियाई कर्मचारियों के लिए कार्यनिष्पादन सर्वेक्षण का आयोजन करें ताकि कार्य पर नियंत्रण रखा जा सके, सुझाव दिया जा सके और सुधार लाया जा सके।

- **निर्णय लेने की क्षमता को समर्थ बनाएं:** ऊपर्युक्त सारी बातें सही स्थान में आने के बाद, ज़िम्मेदारी का प्रतिनिधित्व करना और निर्णय लेने हेतु लोगों को समर्थ बनाना आसान होता है। वे उस प्रक्रिया और निर्देशों का अनुसरण कर सकते हैं जो निर्धारित की गई हैं और वे सुरक्षित रीति से निर्णय ले सकते हैं।

- **परिस्थिति के अनुसार बदलाव के लिए तैयार रहें:** जैसे जैसे स्थानीय कलीसिया की सेवकाई बढ़ती जाती है, आपको सारी बातों को कार्यक्षम और सुरक्षित करने हेतु अपने कार्य करने के तरीके का पुनरावलोकन एवं संशोधन करने की आवश्यकता होगी। बदलाव के अनुसार अनुकूलन करते रहें।

मौलिक संगठनात्मक रचना का उदाहरण

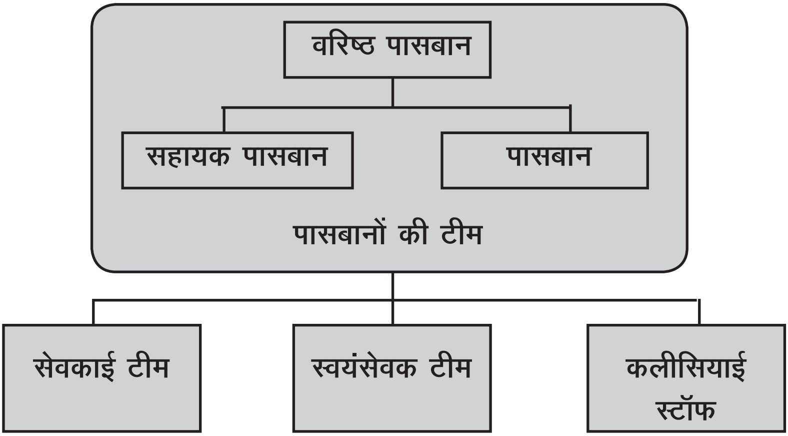

पासबानों की टीम

इसमें पासबानों की ऐसी टीम शामिल है जो कलीसिया की आत्मिक सेवकाई पर अपना ध्यान केंद्रित करती है। पासबानों की टीम में अधिकतर पूर्णकालीन और कुछ बाय-वोकेशनल अधिकारी होते हैं। ये लोग मुख्य रूप से इन बातों के लिए ज़िम्मेदार होते हैं जैसेः प्रचार, शिक्षा, प्रार्थना, आराधना, बच्चों की सेवकाई, जवानों की सेवकाई, मिशन, सुसमाचार प्रचार आदि।

स्वयंसेवकों की टीम

यह स्वयंसेवकों की टीमें हैं जो स्थानीय कलीसिया से सम्बंधित कार्यक्रमों के संचालन के कुछ निश्चित पहलुओं के लिए ज़िम्मेदार होते हैं। हर एक स्वयंसेवक की टीम का एक स्वयंसेवक अगुवा होता है जिसके साथ सहायक अगुवा और कई स्वयंसेवक होते हैं। स्वयंसेवकों की टीम सामान्य तौर पर उस सेवकाई के लिए ज़िम्मेदार होती है जिसका स्वरूप प्रशासनीक होता है।

उदाहरणः रविवार की सभाएं—स्वागत करने वाले, गाड़ियों के रखने की व्यवस्था करने वाले, परिवहन, ध्वनि प्रबंध, मंच प्रबंध, सूचना डिस्क, पुस्तकों की मेज, अतिथियों का स्वागत, स्वयंसेवक भेंट उठाना, संचार माध्यम।

सेवकाई टीम

सेवकाई की टीमें एक तरह से पासबान की सेवकाई का विस्तार है जो उस सेवकाई पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं जिसका स्वरूप विश्वासियों की आत्मिक उन्नति के लिए प्रायः आत्मिक होता है। सेवकाई टीमों में कई मामलों में स्वयंसेवक भी होते हैं। प्रत्येक सेवकाई टीम का एक टीम अगुवा, सहायक टीम अगुवा और कई टीम सदस्य होते हैं। कुछ मामलों में सेवकाई टीम की अगुवाई कोई एक पासबान करता है या पासबान सेवकाई टीम का हिस्सा बनकर सहायता करता है। उदाहरण के तौर परः ऑल्टर कॉल प्रार्थना टीम, सदस्यों की निगरानी, लाईफ ग्रुप लीडर्स, पुरुषों की सेवकाई, स्त्रियों की सेवकाई, बाइबल कॉलेज।

कलीसियाई कर्मचारी

कलीसियाई कर्मचारियों में या तो पूर्णकालीन वेतन प्राप्त कर्मचारी होते हैं या ऐसे सलाहगार होते हैं जिन्हें वेतन दिया जाता है और वे कलीसिया के विभिन्न प्रशासनीक कार्यों में सहायता करते हैं। उदाहरण, अतिथी जानकारी, कलीसिया का रिकार्ड (बपतिस्मा, विवाह, मृत संस्कार, बच्चों का समर्पण), हिसाब किताब, घर किराया, वेतन रजिस्टर, स्थानों का आरक्षण, ऑडियो/व्हिडियो बनाना, प्रकाशन, तरक्की।

मज़बूत अगुवा बनें

मजबूत अगुवे के और उत्तम नेतृत्व के कुछ महत्वपूर्ण संगठनात्मक गुणः

- *दर्शन*—परमेश्वर की ओर से सुनने की योग्यता।
- *बुद्धि*—सही निर्णय लेने की योग्यता।
- *संचार या वार्तालाप*—लोगों को दर्शन समझाने में सहायता करने की योग्यता।
- *प्रतिनिधित्व*—दर्शन में सहभागी होने में लोगों को समर्थ बनाने की योग्यता।

- *जनविकास*—लोगों को व्यक्तिगत् उन्नति के उच्च स्तरों पर उठने में सहायता करने की योग्यता।
- *जन प्रबंधन*—लोगों के हृदयों, बुलाहट, वरदान पहचान कर उन्हें सही समय में सही स्थान पर नियुक्त करने की योग्यता। आपसी कलहों को सुलझाने की योग्यता।
- *नियोजन*—इच्छित परिणाम हासिल करने हेतु किसी निश्चित समय तक संसाधनों का उत्तम रीति से कैसे उपयोग करें यह निर्धारित करने की योग्यता।
- *योजना को पूरा करना*—उसमें योजना को पूरा करने की योग्यता।
- *निरंतरता*—आगे बढ़ना मुश्किल होते हुए भी आगे चलते रहने की योग्यता।
- *मूल्यांकन*—परिस्थिति की ओर निष्पक्ष भाव से देखने की, कमजोरियों को पहचानने और सुधारात्मक कार्यवाही करने की योग्यता।
- *समस्या सुलझाना*—अगुवा समस्या के मध्य उसका समाधान खोजता है।
- *निरंतर सीखते रहना*—सुधार लाने हेतु निरंतर तरीकों की खोज में रहना। परमेश्वर की वर्तमान योजनाओं के सम्पर्क में रहना।
- *अनुकूलता*—परिवर्तन, आवश्यकता पड़ने पर पुनः प्रबंध करने की योग्यता।
- *अनुसरण करना*—महान अगुवा एक अच्छा अनुयायी भी होता है।
- *उत्तराधिकारियों को तैयार करना*—ऐसे लोगों को तैयार करने की योग्यता जो दर्शन को आगे बढ़ा सकते हैं।

फलवंत बनें—मात्र व्यस्त न रहें

संगठन करने और उचित रीति से सेवकाई करने का लक्ष्य यह नहीं है कि हर कोई केवल व्यस्त हो जाए, बल्कि हमें फलवंत भी बनना है। अतः, यदि

हम परमेश्वर के राज्य के लिए फलवंत बनना चाहते हैं तो यह देखने के लिए हम क्या कर रहे हैं इसका हमें मूल्यांकन करना चाहिए।

विभिन्न सेवकाइयों के लिए सही समय में सही स्थान में लोगों को नियुक्त करें। प्रत्येक सेवकाई की प्रभावकारिता का निरंतर मूल्यांकन करें। यदि विशिष्ट सेवकाई फलवंत नहीं होती है, तो उसके कई कारण हो सकते हैं और आपको कारण पहचानने की ज़रूरत है। शायद सही व्यक्ति उसका प्रमुख न हो, ऐसे समय हमें सही व्यक्ति को आगे लाना है। शायद सेवकाई के प्रमुख को सहायता और प्रशिक्षण की ज़रूरत हो, ऐसे समय में हमें उसे सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। शायद टीम अच्छी तरह से एक साथ काम नहीं कर रही है, ऐसे में टीम की समस्याओं को पहचानकर समस्या को सुलझाने की ज़रूरत हो। चाहे जो हो, पासबान/अगुवा होने के नाते आपको फलदायकता का ध्यान रखना है और निर्णय लेना है।

कभी कभी आपको विशिष्ट सेवाक्षेत्र को बंद करने की ज़रूरत पड़ेगी। या तो सेवकाई का समय पूरा हो गया हो, या उसका उद्देश्य पूरा हो गया हो, और उसमें बदलाव की ज़रूरत हो, या और भी कारण हो सकते हैं। परंतु, पवित्र आत्मा की अगुवाई में और परमेश्वर की बुद्धि से, आपको कठोर निर्णय लेने होंगे, ताकि समय, बल, और संसाधनों की बर्बादी न हो। हमारा लक्ष्य व्यस्त रहना नहीं है, परंतु परमेश्वर के राज्य के लिए फलवंत होना है।

अपने पैसों का हिसाब रखें

अर्थ-व्यवस्था या पैसों का मामला स्थानीय कलीसिया की सेवकाई का महत्वपूर्ण भाग है। पैसों का दुरूपयोग सेवकाई के लिए हानिकारक हो सकता है और उस कारण सेवकाई/स्थानीय कलीसिया पर ताला लग सकता है। इसके अलावा, पैसों का अनुचित उपयोग प्रभु के नाम का अनादर करता है। अतः यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि स्थानीय कलीसियाई के इस कार्यक्षेत्र में अत्यंत सावधानी के साथ काम करना चाहिए।

- सही हिसाब रखें।
- कानूनी शर्तों को पूरा करें।
- जो आपके पास नहीं है उसे खर्च न करें–अनुचित कर्ज से बचें जल्दबाजी न करें।
- जल्दबाजी न करें। जो कुछ आपके पास है उससे आरम्भ करें। परमेश्वर के समय में निर्माण करें।
- बजट रखें।
- परमेश्वर की अगुवाई में विश्वास का कदम बढ़ाएं।

हिसाब-किताब रखना

- यदि इसे करने हेतु आवश्यक हो तो, विश्वसनीय लेखापाल (एकाउन्टंट) की मदद लें।
- सभी आय और व्यय (खर्च और आमदनी) का सही हिसाब रखें।
- इस बात का ध्यान रखें कि किसी प्रकार का नुकसान न हो इसलिए पर्याप्त कार्यविधियां हों।
- कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन करने हेतु नियमित रूप से आर्थिक परिणामों का मूल्यमापन करें।

धार्मिक ट्रस्ट के कानूनी एवं आर्थिक कर्तव्य

अपनी कलीसिया का धार्मिक ट्रस्ट के रूप में पंजीयन कराने के बाद आपको निम्नलिखित कानूनी एवं आर्थिक योग्यताओं को पूरा करना हैः (भरोसेमंद ऑडिटर की सहायता प्राप्त करें)

- परमानेंट एकाउन्ट नम्बर के लिए आवेदन करें (पैन)।
- टॅक्स एकाउन्ट नम्बर के लिए आवेदन करें (टैन)।
- अधिनियम 12अ के अंतर्गत पंजीयन कराएं और आयकर आयुक्त से आयकर में छूट प्राप्त करें।

- व्यवसायिक कर के लिए आवेदन भेजें। (प्रोफेशन टॅक्स)।
- यदि लागू हो तो, धार्मिक स्थानों का पंजीयन के अंतर्गत पंजीयन कराएं।
- ट्रस्टियों की सभाओं के मिनिट लिखें और उनके नत्थी करें।
- नियमित रूप से ऑडिट कराना ज़रूरी है।
- आवश्यक कर अदा किए जाएं।

सारी बातों को लिखकर रखें, कानूनी पक्ष को पूरा करें

देश का कानून आपकी ओर से कार्य कर सकता है या विरोध में कार्य कर सकता है। यह इस बात पर निर्भर है कि आप रेखा के किस पार खड़े हैं। यह बुद्धिमानीपूर्ण होगा कि आप जमीन मालिकों, विक्रेताओं और अन्य ठेकेदारों से सब प्रकार के करारनामे और समझौते लिखित रूप से तैयार करवा लें और दोनों पक्षों के उस पर हस्ताक्षर किए जाएं। वे अपनी बातों को बदल सकते हैं और परिस्थितियां आपके लिए मुश्किल हो सकती हैं।

27

छोटे समूहों को संगठित करना

छोटे समूह की सभाएं स्थानीय कलीसिया का एक अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। विशेष तौर पर जब संख्या बढ़ने लगती है। छोटे समूह सहभागिता करने, अर्थपूर्ण ढंग से अपने जीवनों को आपस में बांटने में लोगों की सहायता करते हैं। छोटे समूह कई लोगों को सेवा करने, सेवकाई करने और अपने वरदानों का उपयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं। छोटे समूह सुसमाचार प्रचार करने, आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने का एक उत्तम तरीका है। अधिकतर नये लोग छोटे परिचित पृष्ठभूमि में सहज महसूस करते हैं। उसी तरह, जिन क्षेत्रों में सताव होता है, जो विशाल समूहों की सभाओं को अपना लक्ष्य बनाता है, वहां छोटे समूहों में इकट्ठा होना जारी रखते हैं और कलीसिया बढ़ती रहती है।

व्यापक तौर पर, हमारे पास कम से कम दो तरह के छोटे समूह होते हैं।

- ***लाईफ ग्रुप्स*:** छोटे समूह जिनका मुख्य उद्देश्य शिष्यता और सहभागिता होता है, मुख्य रूप से उन लोगों के लिए जो पहले से स्थानीय कलीसियाई मंडली के अंग होते हैं। हम इन्हें 'लाईफ ग्रूप्स' कहते हैं।
- ***अल्फा ग्रुप्स*:** छोटे समूह जिनका मुख्य उद्देश्य आत्माओं को जीतना और नए विश्वासियों का पोषण करना होता है, ताकि बाद में वे स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बन सकें। हम इन्हें "अल्फा ग्रुप्स" कहते हैं।

जीवन समूह (लाईफ ग्रुप्स)

12 लोगों के (वयस्कों) छोटे समूह जो नियमित रूप से इकट्ठा होते हैं, अर्थपूर्ण मित्रता बढ़ाते हैं, एक साथ बढ़ते हैं और परमेश्वर के उद्देश्यों में एक साथ सेवा करते हैं।

उद्देश्य

लाईफ ग्रुप्स का उद्देश्य निम्नलिखित बातों में विश्वासियों को तैयार करना है :

(1) संगति, (2) शिष्यता, (3) सदस्यों की देखभाल, (4) सुसमाचार प्रचार, (5) सेवकाई

लाईफ ग्रूप की सभा

डेढ़ से दो घण्टों की। साप्ताहिक तौर पर या दो सप्ताहों में एक बार। इसमें स्वागत, आराधना, गवाही देना, वचन के विषय में चर्चा (सामान्य तौर पर, रविवार के संदेश को लागू करने के विषय में चर्चा होती है), प्रार्थना और सेवकाई का समय, उसके बाद कुछ नाश्ता। इन बातों का क्रम बदल सकता है। कुछ लाईफ ग्रूप्स आरंभ में नाश्ता देते हैं।

लाईफ ग्रुप के अगुवे की ज़िम्मेदारियां

लाईफ ग्रुप से जुड़ने के लिए चर्च के नए लोगों को निमंत्रित करें।

- सप्ताह में जिन लोगों ने लाईफ ग्रुप की सभा में हिस्सा लिया उनका फॉलो-अप करें।
- प्रार्थना करें और जो लोग लाईफ ग्रुप में आते हैं उनके जीवनों में आत्मिक विकास की देखरेख करें।
- सदस्यों की निगरानी, सुसमाचार प्रचार और लाईफ ग्रुप के अंतर्गत सेवकाई के लिए प्रोत्साहन दें।
- हर सप्ताह पासबान को ई-मेल द्वारा रिपोर्ट भेजें।

लाईफ ग्रुप डायनैमिक्सः संगति

- आपस में जीवन बांटना—सहज से परे जाना।
- प्रश्न पूछना और उत्तर देना।

- आत्मिक उन्नति के लिए सहायता और प्रोत्साहन।

लाईफ ग्रुप डायनैमिक्स: शिष्यता

- मसीह की समानता में परिपक्व होने में हर एक की सहायता करना।
- इन विषयों का सामना करना—पाप, चरित्र विकास, जीवन योजना, परिपक्वता लोगों को आवश्यकता पड़ने पर पासबानों या सलाह देने वालों के पास सहायता पाने हेतु भेजें

लाईफ ग्रुप डायनैमिक्स: सदस्यों की निगरानी

- एक दूसरे के प्रति वास्तविक प्रेम, निगरानी और दिलचस्पी प्रगट करें।
- ज़रूरत के समय में एक दूसरे को सहारा देने और एक दूसरे की सहायता करने के लिए इकट्ठा होते हैं।
- विशेष ज़रूरत या आपात्काल की स्थिति में पासबानों को सूचना दें।
- दूसरों पर निर्भर रहने से बचें (गलत जीवनशैली)।

लाईफ ग्रुप डायनैमिक्स: सुसमाचार प्रचार

- आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने पर ध्यान केंद्रित करें
- प्रत्येक के प्रभाव क्षेत्र से नये लोगों को निमंत्रित करें
- नयी आत्माओं को प्रभु के पास लाने के लिए विशेष सुसमाचार सभाओं और आऊटरीचेस का आयोजन करें

लाईफ ग्रुप डायनैमिक्स: सेवकाई

- लाईफ ग्रूप्स के सदस्यों को उनके वरदान खोजने और कलीसिया में सेवा करने हेतु प्रोत्साहन दें।
- कलीसिया के आऊटरीच और मिशन यात्रा पर जाएं।
- स्थानीय सेवकाई में सहभाग लें (झुग्गी झोपड़ी, वृद्धाश्रम, पाठशाला आदि)।

सामान्य निर्देश

- लाईफ ग्रुप के अगुवों को किसी और के हाथों में नेतृत्व नहीं सौंपना है।
- समुदाय का विकास करें, फूट और विभाजन का नहीं प्रत्येक लाईफ ग्रुप में करीब 12 लोग हों।
- लोगों को आत्मिक बालक बने न रहने दें। उनकी बढ़ने में सहायता करें।
- विवादों, बहस, चर्चा के दौरान विवादपूर्ण विषयों से बचें।
- जल्दी बढ़ें और परिपक्व सदस्यों को नये लाईफ ग्रुप आरम्भ करने हेतु भेजें। नये लाईफ ग्रुप अगुवों की परवरिश करें और उन्हें सेवा के लिए मुक्त करें।

28

विशाल कलीसिया और विभिन्न स्थानों में कार्यरत् कलीसिया

विशाल कलीसिया (मेगाचर्चेस)

हाल ही के समयों में कलीसिया के एक नये वर्ग का उदय हुआ है; अति विशाल कलीसिया जिसे अक्सर मेगा चर्च कहा जाता है। ये स्थानीय कलीसियाओं के पास विशिष्ट तौर पर 2000 या उससे अधिक लोगों की मण्डली उपस्थित होती है

कई लोग मेगा चर्च की कल्पना से बचना चाहते हैं परंतु हमें मेगा चर्च की ज़रूरत और लाभों को समझना है। शहरों में जहां लाखों लोग होते हैं, वहां छोटी सी और आरामदेह कम संख्या वाले लोगों की स्थानीय कलीसिया के रूप में बने रहने की चाह रखना अनुचित है। प्रभु यीशु मसीह शहर के हर व्यक्ति के लिए मर गया और हमें आत्माओं को जीतने के लिए और उन्हें शिष्य बनाने के लिए सुसमाचार प्रचार करना है। दूसरी बात, मेगा चर्चेस लोगों के संसाधनों, बल, समय, और धन के माध्यम से बहुत कर सकते हैं। तीसरी बात, मेगा चर्चेस एक विशेष रीति से समाज पर प्रभाव डालते हैं, वे मीडिया, उच्च स्तरीय अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करते हैं और जहां आवश्यकता हो, वहां अपनी आवाज़ उठा सकते हैं। चौथी बात, छोटी मण्डलियों की तुलना में मेगा चर्चेस उपलब्ध विशाल संसाधनों का उपयोग करते हुए मिशन में बड़े पैमाने पर सहभागी हो सकते हैं। अंत में, मेगा चर्चेस छोटे समूह के प्रभावी उपयोग के द्वारा निकटता और सहभागिता प्रदान करते हैं, इस प्रकार उन्हें समुदाय के लिए विशाल मण्डलियों का और छोटे समूहों का भी लाभ प्राप्त होता है।

शोध रिपोर्ट से यह ज्ञात होता है कि मेगा चर्च में मुख्य अगुवा अंतर लाता है। कई तरह से मेगा चर्च का अगुवा महत्वपूर्ण अंतर ले आता है।

सीनियर पासबान विशिष्ट तौर पर एक दृष्टता अगुवा होता है और वह वातावरण तैयार करता है और मण्डली के आत्मिक विकास, लक्ष्य, और अभिदिशा का निर्माण करता है।

अधिकतर मेगा चर्चेस कई आराधना विकल्प पेश करते हैं। इसमें आराधना के विभिन्न समय और भाषा के विकल्प होते हैं।

विभिन्न स्थानों में कार्यरत् कलीसिया (मल्टीसाईट चर्चेस)

मल्टीसाईट चर्च वह होता है जहां मुख्य कलीसिया विभिन्न स्थानों में, शहर में, और शहर से बाहर आराधना प्रदान करता है। मल्टीसाईट कलीसिया कई तरह से चलाई जा सकती है। एक सामान्य तरीका है, सैटेलाईट के माध्यम से विडियो शिक्षा प्रदान करना। विडियो शिक्षा को या तो पहले से रिकार्ड किया जा सकता है या आराधना के समय उसका लाईव प्रदर्शन किया जाता है। अन्य मल्टीसाई कलीसियाओं के पास पासबानों की टीम के एक सदस्य द्वारा व्यक्तिगत् शिक्षा (इन-पर्सन टिचिंग) होती है, इस पासबान को कभी कभी "कैम्पस पास्टर" कहा जाता है।

बैंगलोर के ऑल पीपल्स चर्च द्वारा मल्टीसाईट मॉडल को अपनाया गया है। हम एक ही कलीसिया हैं जिसकी विभिन्न स्थानों में या विभिन्न मण्डलियां हैं। हमारे पास मुख्य ए.पी.सी.–सेन्ट्रल कॉन्ग्रिगेशन है जो समय के साथ पांच स्थानों में फैल गई हैः ए.पी.सी. उत्तर, ए.पी. सी. दक्षिण, ए.पी. सी. पूर्व, ए.पी.सी. पश्चिम मण्डलियां। हमने इन-पर्सन शिक्षा शैली अपनाई है जिसमें सहायक पासबान प्रत्येक स्थान में मण्डली की अगुवाई करता है जो केंद्रिय कलीसिया के द्वारा रोपण की गई है।

एक कलीसिया, कई स्थान

ए.पी.सी. दक्षिण	ए.पी.सी. मध्य	ए.पी.सी. उत्तर
टीम	**टीम**	**टीम**
सहायक पासबान	सहायक पासबान	सहायक पासबान
पासबान	पासबान	पासबान
स्वयंसेवक टीम अगुवा	स्वयंसेवक टीम अगुवा	स्वयंसेवक टीम अगुवा
एल.जी. अगुवे	एल.जी. अगुवे	एल.जी. अगुवे
युवा अगुवे	युवा अगुवे	युवा अगुवे
स्वयंसेवक	स्वयंसेवक	स्वयंसेवक
सेवकाई	**सेवकाई**	**सेवकाई**
रविवार की आराधना	रविवार की आराधना	रविवार की आराधना
प्रार्थना	प्रार्थना	प्रार्थना
लाईफ ग्रुप	लाईफ ग्रुप	लाईफ ग्रुप
सदस्यों की निगरानी	सदस्यों की निगरानी	सदस्यों की निगरानी
सुसमाचार प्रचार	सुसमाचार प्रचार	सुसमाचार प्रचार

ए.पी.सी. अगुवे और प्रशासनीक टीम

पुलपिट प्लान, जल का बपतिस्मा, सप्ताह अंत शाला, बाइबल कॉलेज, बच्चों की महासभा, युवा कैम्प, चर्च कैम्प, कैम्पस एलिवेट्स, कॉफी चर्चा, कारूण्यालय, मिशन, इन्टरनेट/मिडिया, प्रशासन, प्रकाशन, अध्ययन केंद्र, आदि।

कलीसिया रोपण की हमारी प्राथमिक प्रेरणा सुगम्यता और आऊट रीच थी। इतने विशाल और विस्तार पा रहे शहर में, लोगों के लिए अपने निवासस्थान से नज़दीक वाले स्थान में जाना सुविधाजनक होता है। उसी

तरह, विभिन्न स्थानों में कलीसिया होने के कारण हम सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार कार्य कर सकते हैं जिसमें वह रोपी गई है और युद्धनीतिक तरीके से निकट पड़ोस में सुसमाचार सुना सकते हैं।

प्रत्येक स्थान की अपनी पासबानों की टीम, सेवकाई अगुवे और स्वयंसेवक होते हैं। प्रत्येक स्थान में हम विशिष्ट सेवकाई के क्षेत्रों का विकास करने हेतु प्रोत्साहन देते हैं। सभी स्थानों को सहायता देने हेतु एक सामान्य टीम है जिसमें सीनियर पासबान, आम पासबानों की टीम (उदाहरण, आराधना पासबान, बच्चों की कलीसिया के पासबान, युवा समन्वयक), और प्रशासनीक टीमें शामिल हैं।

सामान्य तौर पर, सभी स्थानों में सहायक पासबानों द्वारा समान रविवार का संदेश दिया जाता है। अतिथी/भेंट देने वाले प्रचारक दो स्थानों में जा सकते हैं, इस समय अन्य स्थानों के सहायक पासबान अलग संदेश देंगे।

सारा पैसा साझा होता है और मुख्य निर्णय मध्य कलीसिया द्वारा लिए जाते हैं।

हम एक कलीसिया के रूप में कार्य करते हैं जहां कई सेवकाइयां, आऊटरीच, और मिशन विभिन्न स्थानों के लोगों के साथ मिलकर किए जाते हैं। हम सामुहिक कार्यक्रमों के लिए नियमित रूप से इकट्ठा होते हैं जिससे हम आपस में जुड़े रहते हैं और एक ही कलीसिया के प्रति अपनत्व की भावना होती है, भले ही हम विभिन्न स्थानों में इकट्ठा होते हों।

Useful information on Megachurch and Multisite Church cab be found at: Leadership Network www.leadnet.org

भाग 5

बाहर जाकर सुसमाचार सुनाना

29

अन्य कलीसियाओं की तुलना में स्थानीय कलीसिया

स्थानीय कलीसिया के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह बाहरी लक्ष्य रखे और अन्य कलीसियाओं, मसीही संस्थाओं और समाज के लिए आशीष बनें, चाहे उसके पड़ोस में हो या उस क्षेत्र से परे। हम नए नियम में इसके कई उदाहरण देखते हैं।

यरूशलेम की कलीसिया ने बाहर जाकर सामरिया की कलीसिया के मध्य सेवा की जो फिलिप्पुस की सेवकाई से जन्मी थी (प्रेरितों के काम 8:14-17,25)। पतरस और यूहन्ना ने जाकर सामरिया के नये विश्वासियों के मध्य सेवा की।

यरूशलेम की कलीसिया में बाहर जाकर अंताकिया की कलीसिया की सेवा की (प्रेरितों के काम 11:19-30)। उन्होंने उस कलीसिया के पासबान के रूप में बरनबास को भेजा। बाद में, भविष्यद्वक्ताओं की एक ट ीम अंताकिया की कलीसिया की सेवा करने हेतु आई।

बाद में अंताकिया की कलीसिया ने यहूदिया के विश्वासियों की सहायता के लिए आर्थिक मदद भेजी जो उस समय अकाल से पीड़ित क्षेत्र था। कुरिन्थुस और मासेदोनिया की कलीसियाओं (फिलिप्पी, थिस्सलुनीका और बेरिया) में भी धन इकट्ठा किया और यरूशलेम के निर्धन विश्वासियों को सहायता भेजी (2 कुरिन्थियों 8:1-14; रोमियों 15:26)।

पौलुस और पतरस और अन्य यात्री प्रचारकों ने इन स्थानीय कलीसियाओं की यात्रा करते हुए उन्हें आत्मिक रीति से मज़बूत बनाया।

इसके द्वारा निम्नलिखित पाठ सीखेंः

- परिपक्व कलीसियाएं नई कलीसियाओं के विश्वासियों को आत्मिक रीति से सहायता कर उन्हें मज़बूत बना सकती हैं।
- स्थानीय कलीसियाओं को अपनी भौतिक वस्तुओं को देकर और ज़रूरत के समय में दूसरों की सहायता करते हुए एक दूसरे से सम्बंध बनाना चाहिए।
- स्थानीय कलीसियाओं के पासबान एक दूसरे के साथ सम्पर्क रखते हुए या उन प्रेरित/भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से स्थानीय कलीसियाओं के मध्य रिश्तों को कायम कर सकते हैं, जो ईश्वरीय रिश्तों से इन कलीसियाओं को जोड़ने में सहायता करते हैं।
- मसीह ने देह में जिन यात्री सेवकों को नियुक्त किया है, उनके माध्यम से स्थानीय कलीसियाओं को शिक्षा प्राप्त करना चाहिए। परंतु, यह बड़ी सावधानी से किया जाना चाहिए ताकि गलत सेवकों को स्थानीय कलीसिया में प्रवेश की अनुमति प्राप्त न हो।
- हमें एक साथ काम करते समय ईश्वरीय व्यवस्था का पालन करना चाहिए। अन्य स्थानीय कलीसियाओं के डिनॉमिनेशन/सलंग्नता का सम्मान करते हुए हम एक साथ काम करते हैं। हमें एक दूसरे की स्थानीय कलीसियाओं के अगुवों का आदर करना चाहिए। विश्वासियों को अन्य स्थानीय कलीसियाओं के साथ सही सम्बंध बनाना सिखाया जाए।

(अधिक जानकारी के लिए, ऑल पीपल्स चर्च की विनामूल्य पुस्तक - ईश्वरीय व्यवस्था (डिवाईन ऑर्डर) पढ़ें।)

30

शहर के चरवाहे बनना

बाहर देखने के एक भाग के रूप में, स्थानीय कलीसियाओं को शहर के प्रति (या गांव, देहात, या प्रांत) जिसमें वे रहते हैं, अपनी ज़िम्मेदारी और बुलाहट को पहचानना चाहिए। संसार की आधी जनसंख्या शहरों में रहती है। यह अनुमानित है कि संसार की 75 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहती है। इसलिए यदि हम राष्ट्रों को जीतना चाहते हैं, तो हमें उनके शहरों को जीतना होगा।

पासबान/अगुवा होने के नाते, हमें हमारी स्थानीय कलीसियाओं से परे देखने की ज़रूरत है और जिस शहर/समाज में हम रहते हैं, उसके आत्मिक ज़िम्मेदारी हमें उठाना है। परमेश्वर हमें शहर के चरवाहे बनने के लिए बुलाता है। हमें शहर के अपनत्व के लिए और शहर के परिवर्तन के लिए एक साथ मिलकर काम करना है।

शहरव्यापी कलीसिया और शहर का परिवर्तन

शहरव्यापी कलीसिया को जीतने के लिए शहरव्यापी युद्ध की ज़रूरत है। हमारी स्थानीय कलीसिया यह अकेले नहीं कर सकती। परंतु, शहर की कई स्थानीय कलीसियाएं यदि एक साथ हो लेती हैं और एक साथ काम करती हैं, तो हम शहर के परिवर्तन को देख सकते हैं और देखेंगे।

प्रभाव के सात क्षेत्र या सात पहाड़ हैं जो हमारे समाज को आकार दे सकते हैंः धर्म, शिक्षा, सरकार, परिवार, कारोबार, मिडिया और कला, मनोरंजन (इसमें खेलकूद्द भी शामिल है)। ये सात क्षेत्र हैं जो हमारे समाज को निर्धारित करते हैं, जिस समाज में हम रहते हैं, उसे आकार देते हैं। “बाज़ार का स्थान” यह संज्ञा प्रभाव के सारे क्षेत्रों को अपनाती है। यदि हम संसार के लिए नमक और ज्योति बनना चाहते हैं, तो हमें प्रभाव के

इन सातों क्षेत्रों में कार्य करना है। परमेश्वर को प्रभाव के इन सातों क्षेत्र में उसके लोगों की ज़रूरत है। हमें प्रभाव के इन सातों क्षेत्र में परमेश्वर का राज्य लाने की ज़िम्मेदारी उठाना है। जैसे जैसे समाज के इन क्षेत्रों पर शहरव्यापी कलीसिया प्रभाव डालना आरम्भ करेगी, वैसे वैसे हम शहर के परिवर्तन को देखेंगे।

शहरव्यापी कलीसिया में एकता

मरकुस 3:24,25
24 और यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है?
25 और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?

प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि जो घर या राज्य आपस में बटा है वह खड़े नहीं रह सकता। दुख की बात यह है कि शहरव्यापी कलीसिया में से अधिकतर कलीसियाएं मज़बूत डिनॉमिनेशनल एवं स्थानीय कलीसियाओं की सीमाओं में विभाजित है। स्थानीय कलीसिया के पासबान/अगुवे होने के नाते, हमें शहर में और शहर के लिए एक राज्य की मानसिकता का विकास करना चाहिए। हमें उसके राज्य को आते देखने की इच्छा रखना चाहिए और जितनी बार उस शहर में परमेश्वर का राज्य आता है, उतनी बार उत्सव मनाना चाहिए। यदि पासबान और मसीही अगुवे अपने दिलों और हाथों को जोड़ेंगे और एक साथ मिलकर काम करेंगे, तो शहरव्यापी कलीसिया मज़बूत होकर उस पर सामर्थी प्रभाव डालेगी।

शहरव्यापी कलीसिया वास्तव में बिना दीवारों की कलीसिया है। कलीसिया सर्वत्र है। यह महत्वपूर्ण है कि हम मानसिकताओं की अदृश्य दीवारों को और डिनॉमिनेशन की बाधाओं को गिरा दें जो शहरव्यापी कलीसिया को विभाजित करती हैं और इस कारण शहर पर प्रभाव डालने में नाकाम सिद्ध होती है।

शहर परिवर्तन के लिए कलीसिया में सुधार

शहरव्यापी कलीसिया अधिकतर समय अपने नियमित रविवार की सभाओं से अधिक बाज़ार के स्थानों में इकट्ठा होती है। विभिन्न स्थानीय कलीसियाओं

के पवित्रजन सप्ताह के पांच से छः दिन बाज़ार के स्थानों में मिलते हैं और अपनी स्थानीय कलीसियाओं में वे सप्ताह में एक या दो दिन मिलते हैं। यदि इन सभी पवित्र संतों को बाज़ार के स्थान में परमेश्वर को प्रगट करने हेतु सुसज्जित किया जाए, तो हमारा एक बड़ा प्रभाव पड़ेगा। हमें परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों को प्रोत्साहन देना है कि वे समस्त संसार में परमेश्वर को महिमा देने हेतु सामुहिक पहल लेने हेतु बाज़ार के स्थान की कलीसिया के मध्य उठ खड़े हों। जब हम ऐसा करेंगे, तो तब हम शहर पर प्रभाव डालने हेतु स्थानीय कलीसियाओं के पूरक संसाधनों के साथ सामुहिक पहल को देखेंगे। अब वह मात्र एक स्थानीय कलीसिया नहीं होंगी जो शहर में कुछ करने हेतु कार्य करती हो।

जब शहरव्यापी पहल ली जाएगी, तब हम हमारे शहर पर एक सामर्थी प्रभाव देखेंगे। जिसमें स्थानीय कलीसियाओं के पवित्रजनों के सामुहिक संसाधन होंगे, परमेश्वर द्वारा नियुक्त प्रेरित अगुवे होंगे जो प्रत्येक पहल में अगुवाई करेंगे!

तब शहरव्यापी कलीसिया समाज में एक मज़बूत आवाज बनेगी और शहर पर परिवर्तनकारी प्रभाव डालेगी। जब शहरव्यापी कलीसिया में परिवर्तन आएगा, तब शहर में परिवर्तन आएगा।

राज्य की मानसिकता का विकास करना

हम कलीसिया में सेवा के लिए सुसज्जित और मुक्त किए गए विश्वासियों से परिपूर्ण शहरव्यापी कलीसिया को खड़ा करने हेतु एक साथ कैसे परिश्रम करते हैं?

जैसा कि हमने पहले कहा है, विभिन्न कलीसियाओं के विश्वासी एक आम अखाड़े में मिलते हैं—कार्यस्थल में। उन्हें अपने कार्यस्थल में प्रभाव डालने हेतु साम्प्रदायिक मेरी-कलीसिया-बेहतर-है वाला रवैय्या रखने के बजाए ट ीम के रूप में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन देना चाहिए। यदि विश्वासियों को कार्यस्थल में, शहरव्यापी कलीसिया की ईश्वरीय व्यवस्था का उल्लंघन किए बगैर अन्य स्थानीय कलीसियाओं से आए हुए विश्वासियों के साथ मिलकर

परिश्रम करने की शिक्षा और प्रशिक्षण नहीं दिया गया, तो परमेश्वर के राज्य के उद्देश्य आगे नहीं बढ़ेंगे।

प्रेरित अगुवों को वह शहरव्यापी पहल लेने के लिए, जो स्थानीय कलीसिया की सीमाओं से परे संसाधनों (लोग, समय, पैसा) को जुटाएगी, अगुवाई करने के लिए तैयार रहना चाहिए, केवल उसके राज्य को शहर में स्थापित होते हुए देखने के उद्देश्य से। इसमें किसी एक व्यक्ति, सेवकाई या स्थानीय कलीसिया को ऊंचा उठाने का प्रयास न हो।

जब इन सामुहिक प्रयासों से आत्माएं उद्धार पाएगी और जीवनों में परिवर्तन आएगा, तब इन नये विश्वासियों को एक उत्तम बाइबल पर विश्वास करने वाली स्थानीय कलीसिया, जो उनके लिए अत्यंत उचित है, जहां पर वे शिष्यता पा सकते हैं और सेवा के कार्य के लिए तैयार हो सकते हैं ऐसी स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनने हेतु प्रोत्साहन मिलेगा। जिस स्थानीय कलीसिया से वे जुड़ जाएंगे, वह महत्वपूर्ण नहीं होगी क्योंकि हम लोगों के हृदयों और जीवनों में उसके राज्य का विस्तार देखना चाहते हैं। सभी स्थानीय कलीसियाओं की उन्नति और विस्तार एक स्वाभाविक परिणाम होगा।

रचना के बजाए सम्बंधों के द्वारा एकता

शहरव्यापी कलीसिया को कार्यक्रमों/कॉन्फ्रन्सेस/सभाओं के आयोजन के मूल सहयोग से आगे बढ़कर, आत्मा में एकता के स्थान पर आना चाहिए। आत्मा में एकता कार्यक्रमों/कॉन्फ्रन्सेस/सभाओं के आयोजन पर निर्भर नहीं होती। यह हृदय और मन का परिवर्तन है। यह एकता के इस स्थान में रहना है जो हमें शहर के परिवर्तन की ओर आवश्यक कदम बढ़ाने हेतु हमें योग्य बनाएगी।

शहरव्यापी कलीसिया यदि आत्मा की एकता में जीवन बिताती और कार्य करती और इसके साथ बाज़ार के स्थान में सेवा करने वाले विश्वासियों का जुड़ना होगा, तो हम देखेंगे कि हमारे शहर प्रभु यीशु मसीह के लिए सामर्थी रूप से छू लिए गए हैं।

अगुवों और शहर के विश्वासियों में राज्य की मानसिकता के रिश्ते स्थापित होने के बाद, यदि आवश्यक हो तो रचना पीछे आ सकती है।

शहर में परमेश्वर के भवन की स्थापना

हमें स्थानीय कलीसिया के अगुवों और मण्डलियों को प्रोत्साहन देना चाहिए कि वे शहर में परमेश्वर के भवन की स्थापना के लिए आराधना और प्रार्थना के समयों में इकट्ठा हों। हम एक साथ मिलकर शहर पर व्याप्त अंधकार की सामर्थ से लड़ सकते हैं। हम एक साथ मिलकर यीशु मसीह को प्रभु के रूप में शहर पर ऊंचा उठाएं। जब हम ऐसा करेंगे, तब शहर पर सामर्थी आत्मिक परिवर्तन होगा।

31

शहर में सुसमाचार प्रचार कार्य

शहरों के पास आत्माओं के उद्धार के लिए उनके अनोखे अवसर होते हैं और कुछ चुनौतियां भी होती हैं।

परमेश्वर शहरों में दिलचस्पी रखता है

शहर की पुकार परमेश्वर के पास आती है। शहर में क्या हो रहा है इस विषय में परमेश्वर जानता है। उदाहरणः सदोम और अमोरा (उत्पत्ति 13:13; उत्पत्ति 18:17,18,20,21), नीनवे (योना 1:2)। परमेश्वर शहर की निराशजनक दशा पर तरस खाता है।

योना 4:11
फिर यह बड़ा नगर नीनवे, जिसमें एक लाख बीस हजार से अधिक मनुष्य हैं जो अपने दाहिने बाएं हाथों का भेद नहीं पहचानते, और बहुत घरैलू पशु भी उसमें रहते हैं, तो क्या मैं उस पर तरस न खाऊं?

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग शहर की शांति के लिए प्रयास करनें और शहर के लिए प्रार्थना करें।

यिर्मयाह 29:7
परन्तु जिस नगर में मैंने तुम को बंधुआ कराके भेज दिया है, उसके कुशल का यत्न किया करो, और उसके हित के लिये यहोवा से प्रार्थना किया करो। क्योंकि उसके कुशल से तुम भी कुशल के साथ रहोगे।

परमेश्वर ऐसे लोगों की खोज में है जो शहर की पुकार को उत्तर देंगे।

श्हेजकेल 9:4
और यहोवा ने उस से कहा, इस यरूशलेम नगर के भीतर इधर उधर जाकर जितने मनुष्य उन सब घृणित कामों के कारण जो उसमें किए जाते हैं, सांसे भरते और दुःख के मारे चिल्लाते हैं, उनके माथों पर चिन्ह कर दे।

भारत

भारत देश में 48 शहरी संकुलन हैं जिनकी जनसंख्या 10 लाख या उससे अधिक है।

श्रेणी 1
दिल्ली/एन सी आर, मुंबई, कलकत्ता, हैदराबाद, बैंगलोर

श्रेणी 2 (17 मुख्य दो श्रेणी के शहर)
पुणे, भुवनेश्वर, चंडिगढ़, लखनऊ, सूरत, जयपूर, विशाखापटनम्, इंदौर, नागपुर, कोची, लुधियाना, भोपाल, अमृतसर, ग्वालियर

श्रेणी 3 (33 मुख्य तृतीय श्रेणी के शहर)
अलाहाबाद, उदयपुर, आग्रा, अजमेर, कोटा, मेरठ, शिलाँग, धनबाद, होशियारपुर, अंबाला, विजयवाड़ा, जलंधर, रायपुर

भारत की जनसंख्या का 70 प्रतिशत अब तक देहातों में रहता है, परंतु देहातों से लगातार शहरों की ओर स्थानान्तरण चल रहा है।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते, हमें ऐसी रणनीति चाहिए जो न केवल हमारे शहर पर प्रभाव डालेगी, बल्कि हमारे राष्ट्र के अन्य शहरों पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा।

स्थानीय कलीसिया शहर में कैसे सुसमाचार सुना सकती है?

आत्मिक, कूटनीतिक, परिवर्तनशील

शहरी/नागरी समुदाय को सुसमाचार सुनाने हेतु तिहरा दृष्टिकोण अपनाना।

आत्मिक	कूटनीतिक	परिवर्तनशील
• शहर और शहर के विभिन्न भागों के आत्मिक स्वरूप को समझना • परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से युद्ध में लगना	• शहर जनसांख्यिकी को समझना (सामाजिक वितरण, उद्यम, शिक्षासंबंधी आदि) • शहर की आम समस्याएं और चुनौतियां और संभवनीय दृष्टिकोण	• शहर के लोगों तक पहुंचने के नए तरीके मालूम करना • जुड़ जाएं, सुसमाचार सुनाएं, संगठित करें

सबसे प्रभावी तरीका लोग लोगों तक पहुंचे। स्थानीय कलीसियाओं को सुसमाचार सुनाने हेतु, आत्माओं को जीतने और नए विश्वासियों की परवरिश करने हेतु परमेश्वर के लोगों को समर्थ बनाना है। यह चिरस्थायी, दीर्घ-कालीक अविरत प्रक्रिया है जो बहुत फल लाएगी।

नए दृष्टिकोण–उदाहरण

1) सामरिक कलीसिया स्थापन

शहर के विभिन्न भागों में कलीसिया स्थापन–प्रत्येक भिन्न प्रकार के लोगों को सुसमाचार सुनाने वाली. हमें शहरों में या शहर के भागों में जहां परमेश्वर के राज्य का आक्रमण हो, कलीसिया स्थापन करने के द्वारा नागरी मिशनों के विषय में उद्देश्यपूर्ण बनना चाहिए। हमें विभिन्न भाषा समूहों को सुसमाचार सुनाने हेतु मण्डलियों को आरम्भ करने/रोपण करने का विचार करना चाहिए।

2) सामुहिक प्रार्थना संगतियां

लोग कार्यस्थल पर या कार्यस्थल के निकट किसी स्थान में प्रार्थना करने के लिए इकट्ठा होते हैं, यह उद्धार न पाए हुए लोगों तक पहुंचने का एक मार्ग है।

3) कॉफी चर्चा

कॉफी शॉप में सभाएं लेना जहां विश्वासी (जवान लोग) अपने उद्धार न पाए हुए मित्रों को न्योता दे सकते हे। युवा लोगों से सम्बंधित जीवन की समस्याओं के विषय में चर्चा करें।

4) उत्प्रेरक

विश्वासियों की टीम जो पाठशालाओं में विद्यार्थियों को पवित्र शास्त्र और बाइबल के मूल्य सिखाती है। बहुसंख्य विद्यार्थी उद्धार न पाए हुए हैं और यह आत्माओं को जीतने और शिष्य बनाने का उत्तम अवसर है। हम इसे सम्पूर्ण पाठशाला को शिष्य बनाना कहते हैं।

5) कॅम्पस एलेवेट्स

कॉलेज/पाठशाला के आवासों में जीवन की समस्याओं को सम्बोधित करने वाली जवानों की आराधना सभाएं।

6) क्रिसॅलिस कार्यशाला

लोगों की ज़रूरतों को सम्बोधित करना, उदाहरण, पेशेवर मसीही परामर्शदाताओं द्वारा बच्चों की परवरिश पर कार्यशाला, विवाह कार्यशाला। ये कार्यशालाएं आम लोगों के लिए खुली होती हैं।

7) नागरी युवा सभाएं

शहर के जवानों से सम्बंधित जीवन समस्याओं को सम्बोधित करने वाली सभाएं।

8) विशेष अवसरों का लाभ उठाना

अपार्टमेंट, मॉल आदि में क्रिसमस आऊटरीच।

सामुहिक क्रिसमस ब्रेकफास्ट।

9) बिग संडेज़ (विशेष रविवार)

तीन महीने में एक बार विशेष रविवार का आयोजन करें जिसमें आराध ाना का विषय उद्धार न पाए हुए लोगों के लिए दिलचस्पी का विषय हो। विश्वासी इस अवसर का लाभ उठाकर उद्धार न पाए हुए मित्रों को कलीसिया में निमंत्रित करें।

10) आश्चर्यकर्म और चंगाई की सभाएं

विशेष रविवार की सभाओं में चंगाई और छुटकारे की सेवाएं प्रदान की जा सकती हैं।

32

कलीसिया स्थापन और मिशन

जब हम मिशन शब्द का उपयोग करते हैं, तब हम इन बातों के विषय में बोलते हैं:

- यीशु मसीह का संदेश उन लोगों तक पहुंचाना जिन्होंने अब तक वह नहीं सुना है, उनके मध्य नई स्थानीय कलीसियाओं का रोपन करना।
- उन लोगों को शिष्य बनाना और सुसज्जित करना जिन्होंने विश्वास किया है, ताकि वे अपने लोगों/समाज के मध्य कलीसिया की उन्नति का स्वयं-पोषित आंदोलन चला सकें।
- इन बातों में शामिल लोगों को सशक्त बनाना/उनके साथ मिलकर काम करना।

स्थानीय कलीसिया को नए लोगों को जन्म देना है। मिशन के कार्य को करने के द्वारा स्थानीय कलीसिया नए लोगों को जन्म दे सकती है।

स्थानीय कलीसिया इस तरह से मिशन कार्य में सहभागी हो सकती है

हम पिता स्थानीय कलीसियाई मंडली के विश्वासी कई तरह से मिशन कार्यों में शामिल हो सकते हैं:

1. कलीसिया रोपनः कलीसिया स्थापन के लिए दर्शन प्रदान करें।
2. नए विश्वासियों को और स्थानीय कलीसियाओं को मज़बूत बनाना।
3. अन्य स्थानीय कलीसियाओं/विश्वासियों के समुदाय की विशिष्ट भौतिक ज़रूरतों को पूरा करना।
4. सुसमाचार की उन्नति के लिए कार्य करना।

5. मिशन में सहभागी लोगों के साथ साझेदारी करनाः मिशन कार्य में लगे हुए लोगों को आर्थिक रीति से और अन्य रीति से सहायता करना
6. नए समुदायों को यीशु मसीह के विषय में बताने के अन्य तरीकेः उदाहरण मेडिकल मिशन, सामाजिक कार्य, आदि।

एक अर्थ से प्रत्येक विश्वासी भेजा गया है। हम सबको भेजा गया है (यूहन्ना 20:21)। हम उसके राजदूत हैं (2 कुरिन्थियों 5:20)। प्रत्येक विश्वासी जीवन में उनके वर्तमान व्यवसाय के संदर्भ के अंतर्गत प्रेरित हो सकता है और नया आरम्भ करने, निर्माण करने और प्रशासन करने हेतु अपने अंदर प्रेरित का स्वभाव प्रगट करता है।

कलीसिया स्थापन की तैयारी करना

यहां पर कुछ मूल बातें हैं जिनमें हम विश्वासियों की सहायता कर सकते हैं कि वे कलीसिया स्थापन मिशन हेतु बाहर जाने के लिए खुद को तैयार कर सकेंः

- **बुलाहट को पहचाननाः** निश्चित जानें कि प्रभु आपको इस कलीसियाई रोपण मिशन की ओर निर्देश कर रहा है।
- **आत्मिक रीति से तैयार होंः** परमेश्वर के वचन और आत्मा के कार्य के साथ खुद को सुसज्जित करें।
- **भू-क्षेत्र को पहचानेंः** उस क्षेत्र का आत्मिक, रणनीतिक सर्वेक्षण करें जहां पर आप जाने वाले हैं। आत्मिक, जनसांख्यिकीय और अन्य कारकों को समझें जो लोगों को प्रभावित करते हैं।
- **एक योजना तैयार करें, बदलाव के लिए तैयार रहेंः** प्रार्थनापूर्वक पवित्र आत्मा की सुनें और योजना तैयार करें कि आप उस क्षेत्र में कलीसिया रोपण कैसे आरम्भ करेंगे। परंतु यात्रा करते समय बदलाव के लिए तैयार रहें।
- **टीम के रूप में जाएंः** यदि सम्भव हो तो टीम के रूप में जाएं।

यदि दो या तीन परिवार एक साथ मिलकर प्रारम्भिक कलीसिया स्थापन टीम बनाते हैं, तो उत्तम होगा। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपकी टीम में सही लोगों को जोड़ें।

स्थानीय कलीसिया का मार्ग प्रशस्त करना

तम्बू बनाने पर विचार करें

हम मानते हैं कि मिशनों की बुलाहट में अपना व्यवसायिक करियर छोड़कर कहीं और पूर्णकालीन मिशनरी के रूप में जाना शामिल है। यह सच है कि परमेश्वर हम में से कुछ लोगों को ऐसा करने के लिए बुला सकता है, परंतु हमें यह भी समझना है कि परमेश्वर हमारे व्यवसायिक जीवनों का भी मिशन में उपयोग करता है।

प्रेरित पौलुस कलीसिया स्थापन और अपनी व्यवसाय को एक साथ जोड़ने का एक उत्तम उदाहरण है। उसने कम से कम तीन स्थानों में यह तरीका अपनाया, अक्विला और प्रिसिल्ला के साथ कुरिन्थुस में (प्रेरितों के काम 18:1-11), इफिसुस में (प्रेरितों के काम 20:33-35) और थिस्सलुनीका में (1 थिस्सलुबीकियों 2:9-12)।

कुछ विश्वासी भारत के दूसरे शहर में अपने कारोबार को ले जा सकते हैं और वहां कलीसिया स्थापन कर सकते हैं या किसी रीति से सामरिक तरीके से मिशन में शामिल हो सकते हैं।

उन लोगों को पहचानें और उन लोगों के साथ कार्य करें जिन्हें परमेश्वर ने उस स्थान में स्पर्श किया है।

सामान्य तौर पर वहां ऐसे लोग होंगे जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया है और वे सुसमाचार सुनने के लिए तैयार हैं।

कुरिन्थुस में, पौलुस और उसकी टीम ने अक्विला और प्रिसिल्ला के साथ, युस्तूस के साथ काम किया और बाद में परमेश्वर ने अप्पुलोस को उनके पास भेजा (प्रेरितों के काम 18:24-28)।

फिलिप्पी में पौलुस और उसकी टीम को एक व्यापारी महिला लुदिया मिली (प्रेरितों के काम 16:12-15) जिसके द्वारा उन्हें उस शहर में प्रवेश मिला।

इफिसुस में, पौलुस ने तुरन्नुस नामक व्यक्ति की पाठशाला का उपयोग किया (प्रेरितों के काम 19:9)।

सुसमाचार की सामर्थ प्रगट करें।

कई बार हम सोचते हैं कि शहर पर सामर्थी प्रभाव कैसे डाला जा सकता है? शहर के लोगों के हृदयों को खोलने की एक महत्वपूर्ण कुंजी है बाजार के स्थान में परमेश्वर की सामर्थ प्रगट करना। यीशु ने गांव, देहात और शहरों में परमेश्वर की सामर्थ प्रदर्शित की (मरकुस 6:56)।

शहरों में सामर्थी कामों के प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप यीशु ने पश्चाताप की अपेक्षा की। (मत्ती 11:20-24)

अधिकतर शहरों के लोगों के जीवनों पर झूठे धर्म प्रभुता करते हैं। उनके निकट पहुंचने का हमारा तरीका परमेश्वर के सामर्थ का प्रदर्शन है। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में निम्नलिखित उदाहरण देखते हैं:

- **पाफुस में पौलुस (प्रेरितों के काम 13:6-12):** शहर के अधिकारी ने जब परमेश्वर की सामर्थ को देखा, तब वह प्रभावित हुआ।
- **फिलिप्पी में पौलुस (प्रेरितों के काम 16:16-19):** जब शहर के लोगों पर प्रभुता करने वाली दुष्टात्मा की सामर्थ पराजित हुई, तब शहर प्रभावित हुआ।
- **इफिसुस में पौलुस (प्रेरितों के काम 19:8-20):** आश्चर्यकर्मों के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ के प्रदर्शन ने इय शहर को प्रभावित किया।

यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने हेतु अतिरिक्त पद्धतियों का उपयोग करें

- संचार माध्यम (समाचार पत्र दूरदर्शन आदि)
- वर्तमान बुराइयों को, ज़रूरतों को सम्बोधित करें (ड्रग्ज़ लेना, शराब आदि)

- समाज कार्य/समाज परिवर्तन
- शिक्षा
- जन स्वास्थ्य सुधार

कलीसिया स्थापनः व्यवहारिक मार्गदर्शन

नए स्थान/क्षेत्र में स्थानीय कलीसिया का आरंभ करने हेतु या नई सेवकाई आरंभ करने हेतु जाते समय नीचे दिए गए कुछ महत्वपूर्ण निर्देशों का हम पालन कर सकते हैं।

प्रार्थना, सर्वेक्षण, कार्यवाही

1. उस क्षेत्र का सर्वेक्षण करें, उस क्षेत्र और वहां के लोगों के लिए प्रार्थना करे हम आपको प्रोत्साहन देते हैं कि जहां तक संभव है, नई कलीसिया की स्थापना के लिए बहुत पहले से प्रार्थना में और क्षेत्र और प्रांत के भौतिक सर्वेक्षण में योजना बनाएं और तैयारी करें, परंतु पहले इसके लिए परमेश्वर के आत्मा की ओर से स्पष्ट और तुरंत निर्देश होने चाहिए।
2. प्रार्थना और सर्वेक्षण के द्वारा, एक स्पष्ट कार्य योजना तैयार करें। कार्य योजना समय के साथ बदल सकती है, परंतु आपके पास आरंभ करने के लिए कुछ तो है।
3. आगे अभिदिशा और परामर्श पाने हेतु, अपनी वर्तमान स्थानीय कलीसिया के अगुवे को इस विषय में बताएं और चर्चा करें। उनके मार्गदर्शन और आशीष के साथ कदम आगे बढ़ाएं।

उस क्षेत्र के स्थानीय कलीसियाई अगुवों से संबंध बनाना

1. स्थानीय कलीसिया के पासबानों और मसीही सेवा संस्थाओं के अगुवों से मिलें और उनके साथ उत्तम संबंध बनाएं। हमेशा स्थानीय मसीही अगुवों के साथ उत्तम संबंध बनाकर रखें।
2. उस क्षेत्र में जाने के बाद, स्थानीय पासबानों की सभा और संगति का हिस्सा बनें

अपने प्राथमिक उद्देश्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करें

1. हमेशा जो कुछ आप करने की योजना बना रहे हैं, उसके प्राथमिक उद्देश्य को स्पष्ट रूप से निवेदन करें। यदि आप स्थानीय कलीसिया का रोपण करने वाले हैं, तो हर एक को स्पष्ट रूप से बताएं कि आप एक स्थानीय कलीसिया आरंभ करने की योजना बना रहे हैं।

2. ऐसा न कहें कि आप प्रार्थना सभा, घरेलु सभा, चंगाई की सभा, छोटी संगति आदि आरंभ करने वाले हैं। स्पष्ट रूप से बताएं कि आप एक मजबूत स्थानीय कलीसिया आरंभ करने जा रहे हैं और आशा करते हैं कि वह बढ़ेगी और कई जीवनों पर अपना प्रभाव डालेगी।

प्रारंभिक समय

1. उस क्षेत्र में जाने के बाद, तुरंत बिना किसी विलंब के काम शुरु करें। काम के आरंभ में विलम्ब की वजह से अन्य बातों की ओर ध्यानाकर्षण हो जाता है और ऐसे दिशाओं में बढ़ने की प्रवृत्ति हो जाती है जो प्राथमिक दर्शन से दूर होती हैः अतः उस क्षेत्र में जाने के बाद जल्द से जल्द उस कार्य को आरंभ करें।

2. आप कई तरह से कार्य आरंभ कर सकते हैं। आप कुछ समय सुसमाचार सुना सकते हैं (रास्ते पर, घर घर जाकर) और उसके बाद रविवार की सभाओं का आरंभ कर सकते हैं। आप कई सुसमाचार सभाएं आदि ले सकते हैं। जब आपने अपनी कार्य योजना तैयार की, तब यह निर्धारित किया गया होगा।

3. आप आरंभ में अपने घर में अपने घर में सभाएं और रविवार की आराधनाएं ले सकते हैं। और उसके बाद समय के साथ बड़े सभागार में जा सकते हैं या आप हॉल से ही शुरुवात कर सकते हैं। इनमें से कोई भी विकल्प उचित है।

4. आप हाऊस चर्च का नमूना उपयोग कर सकते हैं और माह में एक दिन संयुक्त रूप से विशाल सभा बुला सकते हैं। या सप्ताह के दौरान होने वाली अन्य सभाओं के साथ रविवार की विशाल सभा के रूप में कर सकते हैं।

5. जो लोग पहले से दूसरी स्थानीय कलीसिया के सदस्य है उनके मध्य सेवा करते समय उनके मध्य सेवा करते समय सावधान रहें। जहां तक संभव हो इससे बचने का प्रयास करें। यदि ऐसा होता है, तो इस तरह से सेवा करें जिससे ऐसे लोग हमेशा वापस अपनी स्थानीय कलीसिया में जाए और अपने अगुवों के प्रति विश्वासयोग्य रहें। ऐसे लोगों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने पासबानों को बुलाकर कहे कि वे आकर उन्हें सेवा प्रदान करें।

6. उन विश्वासियों के घरों में अपनी सेवकाई आरंभ न करें जो दूसरी स्थानीय कलीसिया के सदस्य हैं।

7. इस समय के दौरान कुछ लोग ऐसे होंगे जो आपके साथ आकर जुड़ जाएंगे और महसूस करेंगे कि जो दर्शन आपके पास है, उसमें भागी हो। परमेश्वर ने ऐसे लोगों को पहले से आपके लिए तैयार किया होगा। और यदि परमेश्वर ने उन्हें वास्तव में भेजा है और वे आपके दर्शन के प्रति समर्पित है, तो उनके साथ खुले दिल से बात करें और उन्हें आने दें। दूसरी ओर ऐसे भी लोग हो सकते हैं जो गलत कारणों से आपके साथ जुड़ना चाहेंगे। इसलिए, (अ) विवेक का उपयोग करें और धीरे धीरे काम करें। (आ) अगुवे का पद, वेतन, ट्रस्ट की सदस्यता आदि देने की प्रतिज्ञा न करें, इस समय (इ) उन पर भरोसा रखने से पहले और उन पर निर्भर होने से पहले लगातार उनके इरादों और रवैयों का मूल्यांकन करें।

8. यदि आप अपने घर में सभाओं का आरंभ कर रहे हैं, तो द्भपया इस बात का ध्यान रखें कि आप अपने पड़ोसियों के लिए परेशानियों का कारण न बनें। आप व्यर्थ ही खुद के लिए मुश्किल का कारण बन जाएंगे। यदि आपको लगता है कि आपके जोर से गाने से, प्रार्थना करने से, प्रचार करने से और बहुत सारे लोगों के आने जाने से आपके पड़ोसियों को परेशानी होगी, तो एक स्वतंत्र स्थान (पड़ोस से दूर कोई सभागार या घर) खोजकर उसमें सभाएं लें।

स्थानीय कलीसियाई सभाओं के लिए स्थान ढूंढ़ना

1. हम सिफारिश करेंगे कि सबसे मसीही स्कूलों या संस्थाओं के हॉल का उपयोग करने की संभावना को खोजे। इससे सामान्य तौर पर पैसों की बचत होती है, और उतना किराया नहीं देना पड़ता जितना व्यपारी स्थानों में देना पड़ता है। इस विकल्प को ध्यान में रखें।
2. यदि किसी स्कूल का हॉल मिलना संभव न हो, तो कमर्शियल हॉल किराए पर लें।
3. मकान मालिक के साथ बातचीत करते समय उन्हें स्पष्ट रूप से बताए कि आप वहां चर्च/प्रार्थना सभा चलाएंगे और वहां कइ जोग आते जाते रहेंगे। इस विषय में कोई गलतफहमी न हो।
4. हमेशा मकान मालिक या स्कूल अधिकारियों के साथ लीगल स्टॅम्प पेपर पर लीज़ समझौते पर हस्ताक्षर करें, जिसमें आपके द्वारा जमा की गई रकम और किराए की रकम का उल्लेख हो। केवल मुंह के शब्दों पर भरोसा न रखें, क्योंकि लोग भूल जाते हैं या आसानी से अपनी बात को बदल देते हैं।

आराधना और सभाओं का औपचारिक आरंभ

1. कलीसिया की आराधना/सभाओं का आयोजन जिस तरह से किया जाता है, उसमें उत्तमता बरती जाए। समय से आरंभ करें, सारीबातें सुनियोजित और उचित रीति से की जाएं।
2. आप दूसरी कलीसिया के लोगों को आपकी कलीसियाई आराधना में आने से नहीं रोक सकते हैं, नियमित रूप से घोषणा करें, *"यदि आप पहले ही स्थानीय कलीसिया का भाग हैं जहां पर परमेश्वर के वचन के प्रचार में समझौता नहीं किया जाता, तो द्भपया वहां विश्वासयोग्य रहें। परंतु यदि आप होम चर्च की खोज में हैं, तो हम आपका स्वागत करते हैं, कि आप फिर आएं"।*

भाग 6

अंतिम विचार

33

इन फन्दों से बचें: सात कलीसियाओं से सबक

प्रकाशित वाक्य की पुस्तक, जो कि बाइबल की अंतिम पुस्तक है, कलीसिया का सिर प्रभु यीशु की ओर से आशिया की सात कलीसियाओं के लिए दिए गए एक संदेश से आरंभ होती है। इन कलीसियाओं से प्रभु ने जो कुछ कहा उनसे हम सबक सीख सकते हैं।

इफिसुस की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 2:1-7): अपना पहला प्रेम बनाए रखें

तूने अपना पहला प्रेम खो दिया है।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते, हमारा ध्यान प्रभु पर होना चाहिए –उससे प्रेम करने, उसकी आराधना करने और उसकी सेवा करने पर होना चाहिए।

स्मुरना की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 2:8-11): मरने तक विश्वासयोग्य रहें

मृत्यु तक विश्वासयोग्य रहें।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते, हमें सताव के बीच दृढ़ बने रहने के लिए तैयार रहना है।

पिरगमुन की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 2:12-17): गलत शिक्षाओं से बचें

कलीसिया में ऐसे लोग हैं जो "बलाम की शिक्षा" और "नीकुलइयों की शिक्षा" पर चलते हैं।

लोगों के दो गुट हैं जिन्होंने मूर्तिपूजा और अनैतिकता की जीवनशैली अपनाई है।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते हमें परमेश्वर के भवन को/लोगों को शुद्ध बनाए रखना है। जो शिक्षा लोगों को मूर्तिपूजा और अनैतिकता में रहने की अनुमति देती है, उससे बचें।

थुआतीरा की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 2:18-19): दुष्टात्माओं के विरोध में सुरक्षा

खुद को भविष्यद्वक्तिन घोषित करने वाली स्त्री इज़ेबेल को अनुमति देना कि वह लोगों को अनैतिकता और मूर्तिपूजा की ओर भरमाकर ले जाए।

पौलुस ने अंतिम दिनों के विषय में चेतावनी दी थी:

1 तीमुथियुस 4:1
परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कई लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।

इज़ेबेल की आत्मा

हम इज़ेबेल नामक एक स्त्री को देखते हैं जो खुद को भविष्यद्वक्तिन बताती है, शायद वह "गहरी सच्चाइयों" (जो केवल "शैतान की गहरी बातें" या दुष्ट ात्माओं की शिक्षाएं हैं) को घोषित करने का दावा करती है और उसने परमेश्वर के लोगों को भरमाकर अनैतिकता और मूर्तिपूजा की ओर गुमराह किया। अनैतिकता और मूर्तिपूजा स्वाभाविक के बजाय आत्मिक स्वरूप हैं, जिसका अर्थ यह है कि इन लोगों ने जीवित परमेश्वर को छोड़ कुछ और अपनाया है।

भरमाने का मतलब गलत शिक्षा की ओर ले जाना है।

"इज़ेबेल की आत्मा" स्त्री या पुरुष के द्वारा कार्य करती है। पुराने नियम की इज़ेबेल अहाब को झूठे देवताओं की आराधना की ओर ले गई (1 राजा 16:31; 1 राजा 21:25), उसने परमेश्वर के सच्चे भविष्यवक्ताओं की हत्या की (1 राजा 18:4), झूठे भविष्यद्वक्ताओं का समर्थन किया (1 राजा 18:19), परमेश्वर के सच्चे भविष्यद्वक्ताओं को धमकियां दीं (1 राजा 19:2), जायदाद के लिए हम्या की (1 राजा 21:5-15) और जादूटोने को बढ़ावा दिया (2 राजा 9:22)।

स्थानीय कलीसिया के रूप में, हमें सावधान रहना है और ऐसी शिक्षा की अनुमति नहीं देना है जो भमित करती है - जो शिक्षा लोगों को अनैतिकता और मूर्तिपूजा की ओर ले जाती है, जहां पर लोगों का लगाव (अनैतिकता) आराधना (मूर्तिपूजा) का स्थान सच्चे और जीवित परमेश्वर को छोड़ और किसी बात के द्वारा लिया जाए।

धार्मिक आत्मा

हम यीशु मसीह के दिनों में शास्त्रियों और धार्मिक अगुवों के द्वारा ऐसा होते हुए देखते थे।

यीशु वचन था जो देह बन गया। वह परमेश्वर का पुत्र था—और फिर भी फरीसी, धर्म के अगुवों ने उसे नहीं पहचाना। वस्तुतः, उन्होंने उसका विरोध किया।

धार्मिक आत्मा की कई विशेषताएं होती हैः

- **खुद को धोखा देने वालीः** सच को झूठ कहती है (यूहन्ना 7:40-49)। धोखे का भय आपको सच्चाई को अपनाने से रोकती है, यही अपने आप में एक बड़ा धोखा है!
- **पाखण्डीः** दूसरे व्यक्ति के आंखों के तिनके की ओर उंगली दिखाता है, और खुद की आंखों के लट्ठे को नज़रअन्दाज़ करती है (मत्ती 7:3-5)।

- **मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला:** परमेश्वर की ओर से आने वाले आदर के बजाए मनुष्यों से आदर पाना चाहती है (यूहन्ना 5:44)।
- सच्चे धर्म का अनुसरण करने के बजाए (याकूब 1:26-27), खुद को धर्मी समझता है, धार्मिकता का भेष धारण करती है या अति आत्मिकता (मत्ती 23)।

हमें इस प्रकार धोखा देने वाली आत्माओं से (भरमाने वाली) और दुष्टात्माओं की शिक्षा से, जिनके विरोध में पौलुस ने चेतावनी दी, स्थानीय कलीसिया की रक्षा करना चाहिए।

सरदीस की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 3:1-6): नाम से धोखा न खाएं

तू जीवता तो कहलाता है, परंतु है मरा हुआ।

स्थानीय कलीसिया होने के नाते, हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हम परमेश्वर के सामने सही हैं। मनुष्य की राय महत्व नहीं रखती। परमेश्वर हमारे विषय में जो कुछ कहता है, वह महत्वपूर्ण है।

फिलदिलफिया की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 3:7-13): बने रहें, थामे रहें

जो कुछ तेरे पास है उसे थामें रह।

लौदीकिया की कलीसिया (प्रकाशित वाक्य 3:14-22): लाल तप्त, आवेशी बनें

तू न तो ठण्डा है और न गर्म।

आत्म-संतुष्टि से बचे रहे! वह यीशु को उसके भवन से बाहर रखती है। हमें हमेशा प्रभु के लिए गर्म रहना है, आवेशी रहना है।

नमूने जिन्हें आप बदल सकते हैं

ऑल पीपल्स चर्च को हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित दस्तावेजों की विनामूल्य इलेक्ट्रॉनिक प्रतियां देते हुए प्रसन्न होती है (मायक्रोसॉट वर्ड डॉक्यूमेंट)

- चर्च स्टाफ गाईड-लाइन्स
- चर्च स्टाफ पर्फामन्स रिव्ह्यू डॉक्यूमेंट
- चर्च वॉलन्टियर गाईड-लाइन्स
- लाइफ ग्रुप लीडर्स ट्रेनिंग मेन्यूएल
- चर्च मेम्बरशिप-बुकलेट
- मेन्टरिंग गाईड लाइन्स
- रोल डिस्क्रिप्शन सॅम्पल

आप ई-मेल द्वारा इन्हें मंगा सकते हैंः contact@apcwo.org

आप अपनी कलीसिया और सेवकाई के लिए अपनी इच्छा के अनुसार उसे संशोधित कर उसे उपयोग कर सकते हैं।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है - जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपकेलिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु,

जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वाासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एक पारिवारिक कलीसिया के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।

- एक सुसज्जित करने वाले केंद्र के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक मिशन के आधार के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक विश्व सुसमाचार प्रचारक के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।
- एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं।

हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि

पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आ चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **www.apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Order in the Citywide Church
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses-Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work It's Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस परामर्श

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

किशोरों	**व्यवहार सम्बंधी विकार**
व्यक्तिगत समायोजन	**व्यक्तित्व विकार**
संबंधपरक चुनौतियां	**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले	**तनाव / आघात**
कार्य संबंधित मुद्दे	**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
परिवार /दम्पत्ति - विवाह पूर्व, वैवाहिक	**आत्मिक समस्याएं**
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी	**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

Website: **chrysalislife.org**
Phone: +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
Email: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 0057213809
IFSC Code: CITI0000004
Bank: Citibank N.A., No. 5, M.G. Road, Bengaluru,
Karnataka 560001

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

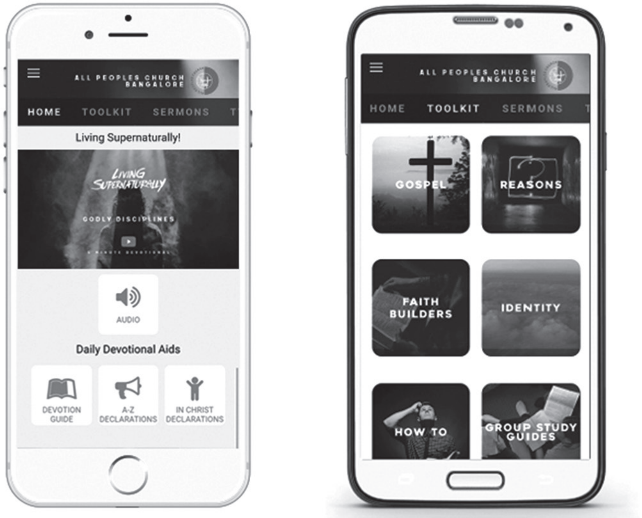

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत केबैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं:

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपस:** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइन:** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंग:** ऑनलाइन पोर्टल apcbiblecollege.org/elearn.

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट दें: apcbiblecollege.org

ब्लू प्रिन्ट (नक्शा)

जब हम कुछ बनाना चाहते हैं, तब मार्गदर्शक के रूप में उसका ब्लू प्रिन्ट तैयार करते हैं। यह एक अभिकल्पना या नमूना होता है, जिसका अनुसरण किया जा सकता है। जब हम बैठकर किसी कार्य का निर्माण करते हैं, तो सामान्य तौर पर हम उसका नक्शा बनाते हैं, और उस डिज़ाईन के अनुसार आगे बढ़ते हैं। नक्शा या ब्लू प्रिन्ट यह निर्धारित करने में आपकी सहायता करता है कि क्या किया जाए। 'परमेश्वर का भवन' नामक इस पुस्तक में, हमारा लक्ष्य स्थानीय कलीसियाओं और विश्वासियों के स्थानीक समुदायों के लिए परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट को खोज निकालना है। हम परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार स्थानीय कलीसियाओं के निर्माण करने के व्यवहारिक तरीके भी बताना चाहेंगे।

हमारा लक्ष्य 'प्रणालियां' या 'तकनीकें' प्रस्तुत करना नहीं है, परंतु यह जानना है कि परमेश्वर स्थानीय कलीसियाओं को क्या बनाना चाहता है। हम में से हर एक को परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार हमारी स्थानीय मण्डलियों का विकास करते समय परमेश्वर के साथ अपना सफर तय करना है। हम में से हर एक को हमारे स्थानीय समुदायों में अपने इस ब्लू प्रिन्ट की अभिव्यक्ति खोज निकालना होगा। क्योंकि परमेश्वर सृजनहार परमेश्वर है, उसके पास उसके ब्लू प्रिन्ट के कई तरीके और कई अभिव्यक्तियां हैं।

एक सामान्य बात यह है कि हम सभी प्रत्येक स्थानीय कलीसिया के लिए समान ब्लू प्रिन्ट का अनुसरण कर रहे हैं। ब्लू प्रिन्ट परमेश्वर की अभिकल्पना का वर्णन करता है। यह परमेश्वर का मूल उद्देश्य है। वह मुख्य विशेषताओं को महत्व देता है। वह मुख्य गुणों का वर्णन करता है। वह मुख्य लक्ष्य क्षेत्रों की ओर निर्देश करता है। जब हम उसके ब्लू प्रिन्ट का अनुसरण करते हैं, तब हम जानते हैं कि हम सही दिशा में जा रहे हैं और अंततः हमारी स्थानीय कलीसियाओं के लिए सही स्थान में पहुंच जाएंगे।

आपकी सेवकाई और परमेश्वर का ब्लू प्रिन्ट

आंतरिक तौर पर या स्थानीय कलीसिया के सम्बंध में आपकी सेवकाई चाहे जो भी हो, यह महत्वपूर्ण है कि जो कुछ आप कर रहे हैं, वह परमेश्वर के लोगों के लिए उसके ब्लू प्रिन्ट के अनुसार हो। पासबान/वरिष्ठ पासबान होने के नाते, आपकी ज़िम्मेदारी इस बात का ध्यान रखना है कि स्थानीय कलीसिया परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट के अनुसार सभी दृष्टि से बढ़ रही है और उन्नति कर रही है। प्रवासी सुसमाचार प्रचारक, शिक्षक, भविष्यद्वक्ता या प्रेरित होने के नाते, जब कभी आप मण्डली की सेवा करते हैं, आपका लक्ष्य होता है, स्थानीय कलीसिया के लिए परमेश्वर के अभिकल्प के अनुसार कलीसिया को किसी तरह दान वरदानों का प्रतिदान करना और उसकी बढ़ौत्तरी करना। चाहे आप युवा पासबान हो, आराधक अगुवे हों, बच्चों की कलीसिया में, महिलाओं की सेवकाई में हों, पुरुषों की सेवकाई में या छोटे समूहों में हों, आप उस स्थानीय कलीसिया में उसके लोगों के जीवनों में परमेश्वर के ब्लू प्रिन्ट को स्थापित कर रहे हैं।

परमेश्वर के डिज़ाईन या योजना का सूक्ष्मता के साथ अनुसरण करें और आप कभी गलत नहीं होंगे!

परमेश्वर आपको आशीष दे!

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org